आदर्श संस्कृत दर्पण

मथुरा प्रकाशन मंदिर

उत्तर-प्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्य क्रमानुसार

आदर्श

संस्कृत दर्पण

द्वितीय भाग

हाईस्कूल कक्षा ९ व १० के लिये

संस्कृत विषय के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित व्याकरण, अनुवाद तथा निबन्ध रचना की अद्वितीय पुस्तक

Yogesh Kumar Achary
K. K. College, MATHUR

लेखक :

चन्द्रप्रकाश आचार्य

एम. ए. (हिन्दी व संस्कृत), एल. टी.

किशोरी रमण इन्टर कालेज, मथुरा

प्रकाशक :

मथुरा प्रकाशन मन्दिर, मथुरा

प्रथम संस्करण १९७०] [मूल्य २·५०

प्रकाशक :
मथुरा प्रकाशन मन्दिर,
मीतल निवास, डेम्पीयर पार्क,
मथुरा ।

संस्करण : १९७०

सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन

मूल्य : २·५०

मुद्रक :
त्रिलोकीनाथ मीतल,
अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।

दो शब्द

संस्कृत हमारे देश की बहुत प्राचीन भाषा है। लेकिन इस भाषा का बहुत कम प्रसार है। इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य संस्कृत भाषा को सरल, सुबोध तथा सर्व प्रिय बनाना है तथा संस्कृत व्याकरण की कठिनाईयों को दूर कर सुगम मार्ग प्रदर्शन करना है।

प्रस्तुत पुस्तक में नवीन शैली द्वारा संस्कृत व्याकरण जैसे—सन्धि, समास, शब्दरूप, धातुरूप, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, सूक्तियाँ वाक्य रचना सम्बन्धी आवश्यक एवं विस्तृत नियम, परीक्षोपयोगी निबन्ध सरल रीति से प्रस्तुत किये गये हैं। यह पुस्तक कतिपय नवीनतम विशेषताओं के साथ प्रस्तुत की गई है।

आशा है यह पुस्तक हाईस्कूल के छात्रों के लिये परम प्रिय तथा उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रस्तुत संस्करण में जो भी त्रुटियाँ यदि शीघ्रता के कारण रह गई हों तो विद्वद्जन क्षमा करेंगे तथा अपने संशोधन एवं सुझाव प्रकाशक अथवा मेरे पास भेजने की कृपा करेंगे। हम उनके इस सहयोग का सहर्ष स्वागत करेंगे।

सहयोग के लिये धन्यवाद।

—लेखक

उत्तर प्रदेशीय परीक्षा के संस्कृत विषय का पाठ्य-क्रम *Syllabus*

(१) सन्धियाँ निम्न सूत्रों पर आधारित

(अ) स्वर सन्धि—(१) इकोयणिच, (२) एचोऽयवायावः, (३) आद्गुणः (४) वृद्धिरेचि. (५) एङ् पदान्तादति, (६) अंकः सवर्णे दीर्घः।

(ब) हल सन्धि—(१) स्तोश्चुनाश्चुः, (२) ष्टुनाष्टुः, (३) झलां जशोन्ते, (४) झलांजश झशि। (५) खरि च, (६) मोऽनुस्वार।

(स) विसर्ग सन्धि—(१) विसर्जनी यस्स सः, (२) सषजुषो रुः। (३) अतोरोरप्लुता-दप्लुते, (१) हशि च, (५) एतत्तदोः सुलोपोऽकोस अ समासे हलि, (६) भो भगो अघोअपूर्वस्योऽशि।

(२) शब्दरूप प्रकरण

(अ) संज्ञा—पुल्लिग—राम, हरि, सखि, गुरू, पितृ, गो, भूमृत, भगवत, करिन्।

स्त्रीलिंग—रमा, मति, नदी, धेनु, वधू, वाच्, सरित्।

नपुंसकलिंग—गृह, वारि, दधि, मधु, पयस्, शर्मन, जगत्, नामन्, मनस।

सर्वनाम—सर्व, पूर्व, तद्, यद्, किम्, युष्मद्, अस्मद, इदम्

विशेषण—एक से दस तक।

(३) धातुरूप प्रकरण

लट् लकार, लङ्, लोट्, विधिलिङ्, लृट्लकार में—

(अ) भ्वादिगण—(परस्मैपदी)—भू, हस्, पठ्, रक्ष, वद्, पच्, नम्, गम्, दृश्, सद्, स्था, स्मृ, पा, जि, सेव्, (आत्मनेपदी) लभ्, वृध्, मुद, सह्, (उभयपदी) याच्, नी, हृ,।

(ब) अदादि—(प०) अद, अस्, रुद, स्वप्, हन्, ई, (आ०) आस, शा (उ०) ब्रू, दुह।

(स) जुहोत्यादि—(प) हु, भो, (उ०) दा ।
(द) दिवादि —(प०) दिव्, नृत, नश्, (आ०) युध, जन् ।
(ङ) स्वादि— (प०) आप्, शक्, (उ०) सु ।
(क) तुदादि— (प०) तुद्, इष्, स्पृश्, प्रच्छ (आ०) मृ, (उ०) मुच् ।
(ख) रुधादि— (उ०) रुध्, भूज् ।
(ग) तनादि (उ०) तन्, कृ ।
(घ) क्र्यादि-- (प०) ज्ञा (उ०) क्रीङ् ग्रह ।
(ञ) चुरादि —(उ०) चुर्, चित्त, कथ्, भक्ष् ।

(४) समास—तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्वन्द ।

द्वितीय पत्र

अनुवाद—निबन्ध तथा पाठ्य पुस्तक ।

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

प्रथम प्रश्न पत्र

अध्याय-प्रथम १—२५

व्याकरण

प्रस्तावना

व्याकरण तथा वर्ण विचार १

पारिभाषिक शब्द ३

सन्धि प्रकरण ४

अ—स्वर सन्धि ५

ब—व्यंजन सन्धि १०

स—विसर्ग सन्धि १३

समास के भेद—तत्पुरुष, द्विगु, कर्मधारय, द्वन्द १७

द्वितीय अध्याय

शब्द प्रकरण

शब्द विचार— २६

लिंग का विवरण, वचन, पुरुष, कारक, २६

शब्दरूप-पितृ, गौ, संज्ञा, राम, हरि, सखि, कर्तृ, भूमृत्, भगवत्, ३२

करिन् आत्मन्, राजन, विद्वान् ३३

स्त्रीलिंग—रमा, मति, नदी, धेनु, वधू, वाच्, सरित्, ४१

नपुंसकलिंग—गृह, वारि, दधि, मधु, पयस् शर्मन्, जगत्, नामन्, मनस, ४५

सर्वनाम—सर्व, पूर्व, तत्, यत्, किम्, इदम्, युमष्द, अस्मद ४८

विशेषण—संख्यावाचक, एक, द्वि, त्रि, चतुर्थ, पंचम् षष्ठ्, सप्तम्, अष्ठम्, ५४

नवम्, दशम् संस्कृत की गिनती १ से करोड़ ५६

विशेषणों की अवस्था ६०

शब्दरूप अभ्यास

विषय पृष्ठ

चतुर्थ अध्याय

क्रिया धातु विचार

	६१
१. क्रिया के भेद	६१
२. लकार, पुरुष, वचन, लिंग, पद, गण	६२
३. भ्वादिगण—भ, हस्, रक्ष, वद्, पठ्, नम, गम्, हृश्, सप, तिष्ठ्, स्म्, पा, जि, सेव, लभ्, वृध् मुद्, सद्, पच्, याच्, भी, हृ,	६८
४. अदादिगण—अद्, अस्, ब्रू, पा, कद्, दुह, स्वप्, हन्, इ, आस्, शी, सू,	८४
५. जुहोत्यादिगण—हु, भी, दा, धा,	९२
६. दिवादिगण—दिव्, नृत, नश् भ्रम्, युध्, जन्	९७
७. स्वादिगण—सु, आप्, शक्	१०२
८. तुदादिगण—तुद्, इषे, स्पृश्, पुच्छ, मृ, मुच्	१०५
९. रुधादिगण—रुध्, भुंज	११०
१०. तनादिगण—तन्, कृ	११३
११. क्रयादिगण—की, गृह, ज्ञा,	११५
१२. चुरादिगण—चुर, चिन्त्, कथ, भक्ष्,	११९
१३. अभ्यास	१२६

पंचम अध्याय

अविकारी शब्द 'अव्यय'

१. उपसर्ग	१२७
२. क्रियाविशेषण	१२८
३ समुच्चय बोधक	१३२
४. मनोविकार	१३३

द्वितीय प्रश्न पत्र

प्रथम अध्याय

वाक्य विभाग

१. रचना प्रकरण
अनुवाद के नियम १
२. क्रिया-वर्तमान, भविष्य, भूत ४
३. अव्ययों का प्रयोग ११
४. सर्वनामों का प्रयोग ११
५. लोट् तथा विधि० १२
६. कारक-प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, सम्बोधन १४
७. लिंग का विवरण ३०
८. वचन का विवरण ३०
९. पुरुष का विवरण ३१
१०. उपसर्ग युक्त धातुओं का प्रयोग ३२
११. विशेषण का प्रयोग, संख्यावाचक विशेषण ३३
१२. कर्मवाच्य तथा भाव वाच्य ३६
१३ समास का प्रयोग ३७
१४. प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग ३८
१५. कृदन्त प्रयोग-क्तवतु, क्त तयत्, अनीयर, शतृ, शानच्, तुमन् क्त्वा, ल्यप ३९
१६. कुछ व्यावहारिक नियम ४८
१७. कारकों के नियम एक दृष्टि में ५०
१८. मुख्य क्रियाओं के संक्षिप्त रूप ५४
१९. अभ्यास के प्रश्न ५७

द्वितीय अध्याय

निबन्ध प्रकरण

१. इन्दिरा गान्धी १
२. जवाहरलाल नेहरू २
३. लाल बहादुर शास्त्री ३
४. मम अध्यापकः ५
५. विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः ६
६. कृषकः ८
७. प्रिय पुस्तकम्

८.	यात्रा	१०
९.	प्रसिद्ध मेलकं	१२
१०.	वैज्ञानिक आविष्काराणि	१३
११.	संघे शक्ति कलौयुगे	१५
१२.	कः परः प्रियवादिनम्	१७
१३.	जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादिपि गरीयसी	१८
१४.	जन्तुशाला	२०
१५.	अस्माक राष्ट्रपति	२१
१६.	देशाटनं	२२
१७.	गोपालनम्	२४
१८.	महात्मा गान्धेः मार्गत्	२५
१९.	स्वार्थ त्याग	२७
२०.	संस्कृतस्य कश्चित् कपिः	२८
२१.	पठनं क्रीडनं च	२९
२२.	सत्संगति	३१
२३.	उद्योगः	३३
२४.	भगवान बुद्ध	३४
२५.	वायुयानम्	३६
२६.	सत्पुरुष के लक्षण	३७
२७.	सदाचार	३९
२८.	परोपकार	४१
२९.	विद्या सर्वस्व भूषणम्	४२
३०.	विद्या धर्मेण शोभते	४४
३१.	वसन्त ऋतु	४६
३२.	वर्षा ऋतु	४७
३३.	शरद ऋतु	४९
३४.	ग्रीष्म ऋतु	५०
३५.	शिक्षायाः महत्व	५१
३६.	संस्कृत भाषा	५३
३७,	दानम्	५४
३८.	गौः	५६
३९.	गजः	५८
४०.	मयूरः	५९
४१.	उद्यान	६०
४२.	व्यायाम	६२

संस्कृत

संस्कृत भारत की बहुत प्राचीन भाषा है। इसका साहित्य अत्यन्त समृद्ध एवं विशाल साहित्य है। आर्य सभ्यता के परिचालक अधिकांश ग्रन्थ इसी भाषा में पाये जाते हैं। क्योंकि यह समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। अतः भारतीयों के लिये संस्कृत का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक समझा जाता है।

व्याकरण

भाषा और व्याकरण में बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध होता है। किसी भी भाषा का पूर्ण ज्ञान तब तक नहीं हो सकता जब तक कि उसके व्याकरण का ठीक-ठीक ज्ञान न हो। अतः संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये तो उसके व्याकरण का अध्ययन और भी आवश्यक है, क्योंकि वह व्याकरण प्रधान भाषा।

भाषा वाक्यों का समूह होती है। वाक्य शब्दों से बनते हैं और शब्द अक्षरों (वर्णों) से। इसलिए व्याकरण शास्त्र में भाषा के इन्हीं तीनों अंगों वर्ण (अक्षर, शब्द और वाक्य पर ही विचार किया है।

वर्णविचार

वर्ण का अर्थ है, अक्षर या ध्वनि। ध्वनियों में वह छोटी से छोटी मुख से निकली हुई ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसका विभाग न हो सके। जैसेः—अ, इ, उ, क, च, ट, त, प आदि।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं—(१) स्वर (अच्), (२) व्यंजन (हल्)।

(१) स्वर—जिस वर्ण का उच्चारण स्वयं विना किसी अन्य की वर्ण की सहायता से होता है, उसे स्वर कहते हैं। जैसेः—

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर तीन होते हैं—(१) ह्रस्व, (२) दीर्घ, (३) प्लुत।

(१) ह्रस्व स्वर-- जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगे। जैसे—अ इ, उ, ऋ, लृ।

(२) दीर्घ स्वर- जिन स्वरों को बोलने में कुछ अधिक समय (दुगना) समय लगे। जैसे—आ, ई, ऊ, ॠ, ऐ, ओ, औ।

(३) प्लुत स्वर—जिन स्वरों के बीच ह्रस्व या दीर्घ से अधिक समय लगे वे लुप्त स्वर कहलाते हैं। इनके आगे '३' का अंक बना होता है जैसे—ओ३म् में 'ओ' प्लुत है। इसके बोलने में अधिक (तिगुना) समय लगता है।

(२) व्यंजन—जिन वर्णों का उच्चारण बिना स्वर की सहायता से न हो वे व्यंजन अथवा हल् कहलाते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं—

(१) स्पर्श, (२) अन्तस्थ, (३) ऊष्म।

स्पर्श व्यंजन ये हैं—

कवर्ग—क, ख, ग, घ, ङ।	अन्तस्थ—य, र, ल, व।
चवर्ग—च, छ, ज, झ, ञ।	ऊष्म—श, ष, स, ह।
टवर्ग—ट, ठ, ड, ढ, ण।	संयुक्त व्यंजन—ज्+ष=क्ष।
तवर्ग—त, थ, द, ध, न।	त्+र=त्र
पवर्ग—प, फ, ब, भ, म।	ज्+ञ=ज्ञ

क से लेकर म तक २५ व्यंजन होते हैं इनमें पाँच वर्णों की पंक्तियों को कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग कहते है। य, र, ल, व को अन्तस्थ और श, ष, स, ह को ऊष्म कहते हैं।

अनुस्वार—स्वर के ऊपर (ं) जो विन्दु लगा होता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे—हंस, कंस, वंश आदि।

विसर्ग—स्वर के आगे (:) के दो विन्दुओं को विसर्ग कहते हैं जैसे—प्रातः, रामः आदि।

अनुनासिक—ङ, ञ, ण, न तथा म को अनुनासिक व्यंजन कहते हैं।

किसी व्यंजन को स्वर में मिलाते समय हल् (्) चिन्ह हटा देते हैं और उसे जिस स्वर से मिलाना हो, उसकी मात्रा व्यंजन के साथ जोड़ देते है। जैसे--प्+ए=पे, य्+उ=यु।

स्वरों की मात्रायें ये हैं—

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

× ा ि ी ु ू ृ ॄ े ै ो ौ

व्यंजनों के साथ मात्राओं का संयोग—

क, का, कि, की, कु, कू, कृ, कॄ, के, कै, को, कौ।

पारिभाषिक शब्द

संस्कृत व्याकरण में स्थान-स्थान पर बहुत से परिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है। जिन्हें जान लेना छात्रों के लिये आवश्यक है। जैसे—

पद—शब्द अथवा धातुओं के साथ जब प्रत्यय लगकर उनका एक रूप बन जाता है, तब उसे पद कहते हैं। जैसे—रामः पठति आदि। 'राम' में सु प्रत्यय लगा और 'पठति' में ति प्रत्यय।

पदान्त—पद के अन्त वाले वर्ण को पदान्त कहते हैं। जैसे—'रामः' और 'पठति' में क्रमशः 'मः' और 'ति' पदान्त हैं।

मात्रा—जब स्वरों के चिन्ह व्यंजनों में जुड़ते हैं तब वे मात्रा कहलाते हैं। जैसे—अ की मात्रा जब क् से मिलती है तब 'क' बन जाता है।

सम्प्रसारण—य्, व्, र्, ल् के स्थान पर आने वाले इ, उ, ऋ लृ, वर्ण की सम्प्रसारण संज्ञा होती है।

लोप—प्रत्यय आदि का अपने स्थान पर न दिखाई पड़ना लोप कहा जाता है।

आदेश—किसी वर्ण को हटाकर उसके स्थान पर किसी दूसरे वर्ण का शत्रुवत् आना आदेश कहलाता है। जैसे—सुधी+उपास्यः में 'इ' के स्थान पर 'य' होकर 'सुध्युपास्यः' रूप बन गया है।

आगम—किसी वर्ण के साथ अन्य वर्ण का मित्रवत् आकर जुड़ना आगम कहलाता है। जैसे—लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया। यहाँ 'च्' का आगम हुआ।

उपधा—अन्तिम वर्ण के ठीक पहले वाले वर्ण को उपधा कहते हैं।

पररूप—पूर्व और पर वर्णों के मिलने पर जहाँ पर वर्ण ही हो वहाँ पररूप कहलाता है। जैसे—प्र+एजते=प्रेजते।

पूर्वरूप—पर और पूर्व वर्ण के मिलने पर जहाँ पूर्व वर्ण हो जाय वहाँ पूर्वरूप होता है। जैसे—हरे+अव=हरेऽव में ए और अ मिलकर ए के रूप में वदल गये।

प्रकृतिभाव—जहाँ दो स्वरों की परस्पर सन्धि का निषेध कर दिया गया हो वहाँ प्रगृह्य संज्ञा होती है। जैसे—विष्णू+एतौ=विष्णूएतौ।

सुप्—संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों में जुड़कर जो प्रत्यय क्रिया से उनके विभिन्न प्रकार के सम्वन्धों को प्रकट करते हैं उन्हें 'सुप्' प्रत्यय कहते हैं। सुप् प्रत्यय से युक्त शब्द के 'सुवन्त' कहते हैं। जैसे—राम+सु=रामः। यहाँ 'सु' प्रत्यय सुप् प्रत्यय हैं और इसके मिलने से वना हुआ 'रामः' सुवन्त पद है।

तिङ्—जो प्रत्यय धातुओं से जुड़ कर क्रिया पद वनाते हैं उन्हें तिङ् प्रत्यय कहते हैं। जैसे—पठ+ति=पठति। यहाँ 'ति' प्रत्यय तिङ् प्रत्यय है और इससे मिलकर वना हुआ 'पठति' पद तिङन्त पद है।

कृत्—जो प्रत्यय धातु क साथ जुड़ कर संज्ञा, विशेषण अथवा अपव्यय वनाते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय और उनसे मिलकर वने हुए को कृदन्त शव्द कहते हैं। जैसे—कृ+क्त प्रत्यय है और इससे मिलकर वना हुआ 'कृत' शव्द कृदन्त शव्द है।

तद्धित—जो प्रत्यय संज्ञा सर्वनाम और विशेषण शव्दों के साथ जुड़कर अन्य अर्थ प्रकट करते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे—दिति+राय=दैत्य। यहाँ 'राय' प्रत्यय तद्धित प्रत्यय है। दिति शव्द के साथ 'राय' प्रत्यय के लग जाने से 'दैत्य' शव्द वनता है जिसका अर्थ होता है—दिति की सन्तान।

सन्धि प्रकरण

जब दो शव्द एक दूसरे के समीप आ जाते हैं तो अति निकटता के कारण प्रथम शव्द के अन्तिम वर्ण में अथवा द्वितीय शव्द के प्रथम वर्ण में अथवा दोनों में कुछ परिवर्तन हो जाता है। इस परिवर्तन को सन्धि कहते हैं। जैसे—विद्यालयः (विद्या+आलयः) यहाँ 'विद्या' के अन्त का "अ" और 'आलयः' के आरम्भ का 'आ"का मिलकर "आ" होगया है। अन्तः यहाँ सन्धि है।

सन्धि के भेद

सन्धिया तीन प्रकार की होती हैं—(१) स्वर या अच् सन्धि, (२) व्यंजन या हल् सन्धि, (३) विसर्ग सन्धि।

१—स्वर सन्धि

स्वर के साथ स्वर के मिलने से जो विकार होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे—विद्या + आलयः = विद्यालयः।

यहाँ 'आ' और 'आ' मिलकर "आ" होगया है 'आ' और 'आ' दोनों ही स्वर हैं। अतः यहाँ स्वर सन्धि है।

(१) दीर्घ सन्धि (सूत्र—अकः सवर्णे दीर्घः)

नियम—(क) यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद इनका समान वर्ण आये तो दोनों का मिलकर दीर्घ (बड़ा) हो जाता है।

अ और आ, इ और ई, उ और उ और ऊ तथा ऋ और लृ आपस में समान स्वर कहे जाते हैं।

अ + अ = आ, धन + अर्थी = धनार्थी।
अ + आ, = आ, शुभ + आगमनम् = शुभागमनम्।

नियम—(ख) यदि इ या ई के बाद इ या ई आये तो दोनों मिलकर दीर्घ (बड़ी) 'ई' हो जाती है। जैसे—

इ + इ = ई, कपि + इन्द्रः = कपीन्द्रः
ई + इ = ई, नदी + इन्द्रः = नदीन्द्रः

नियम—(ग) यदि उ या ऊ के बाद उ या ऊ आवे तो दोनों का मिलकर दीर्घ (बड़ा) 'ऊ' हो जाता है। जैसे—

उ + उ = ऊ, भानु + उदयः = भानूदयः
ऊ + उ = ऊ, वधू + उत्सवः = वधूत्सवः

नियम—(घ) यदि ऋ, ॠ या लृ के बाद ऋ, ॠ या लृ आयें तो दोनों का मिलकर 'दीर्घ (बड़ा) 'ॠ" हो जाता है।

ऋ + ऋ = ॠ, पितृ + ऋणम् = पितॄणम्।
ऋ + लृ = ॠ, होतृ + लृकारः = होतॄकारः।

अभ्यास—१

(क) नियम निर्देशपूर्वक सन्धि कीजिए :—

शरण + आगतः । पुस्तक + अध्यक्षः । मुर + अरिः । तथा + अपि । मही + ईशः । श्री + ईशः । मही + ईश्वरः । द्रोपदी + इतिः । साधु + उन्नतिः । मधु + उत्सवः । गुरु + उपदेशः । लघु + ऊर्मिः । मातृ + लृकारः । पितृ + ऋषिः ।

(ख) नियम निर्देशपूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

परीक्षार्थी । छात्रावासः । पठनार्थम् । रामाज्ञा । गिरीशः । महीन्द्रः । विष्णुदयः । त्रिपुरारिः । सत्याग्रहः । गगनाकारम् ।

(२) गुणस्वर सन्धि (सूत्र—आद्गुणः) ।

नियम—(क) यदि अ अथवा आ के बाद ह्रस्व (छोटा) या दीर्घ (बड़ी) इ, उ, ऋ, लृ आयें तो अ+इ=ए, अ+उ=ओ, अ+ऋ=अर् और अ+लृ=अल् हो जाते हैं। जैसे—

अ + इ = ए, सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः ।
आ + ई = ए, महा + ईश्वर = महेश्वरः ।

सारांश—ह्रस्व या दीर्घ (छोटा या बड़ा) किसी तरह का 'अ' और ह्रस्व या दीर्घ (छोटी या बड़ी) किसी प्रकार की 'ई' मिलकर "ए" हो जाती है ।

अन्य उदाहरण—

अ + उ = ओ, पर + उपकारः = परोपकारः ।
आ + उ = ओ, गंगा + उदकम् = गंगोदकम् ।
अ + ऋ = अर्, देव + ऋषिः = देवर्षिः ।
अ + लृ = अल्, तव + लृकारः = तवल्कारः ।

अभ्यास—२

(क) नियम निर्देशपूर्वक सन्धि कीजिए—

महा + ईशः । देव + ईशः । नर + इन्द्रः । महा + इन्द्रः । परम + ईश्वरः । हित + उपदेशः । सरल + उपायः । महा + उपदेशकः । विद्यालय + उद्घाटनम् । पुत्र + उत्सवः । सुर + ऋद्धिः । मम + लृकारः ।

(ख) नियम निर्देशपूर्वक सन्धि विच्छेद कीजिए—

ज्ञानेन्दुः । उपेन्द्रः । मन्दोदरी । सज्जनोन्नतिः । चन्द्रोदयः । शुभेच्छा । राजर्षिः । सर्वोदयः । गंगार्मिः । गणेशः । ममोदयः । यमुनेशः ।

(३) वृद्धिस्वर सन्धि (सूत्र—वृद्धिरेचि)

नियम—(क) यदि 'अ या आ' के बाद 'ए या ऐ' आये तो दोनों मिलकर "ऐ" हो जाता है । जैसे—

आ+ए=ऐ, सदा+एव=सद्+आ+एव=सद्+ऐव=सदैव ।

आ+ऐ=ऐ, सदा+ऐक्यम्=सद्+आ+ऐक्यम=सदैक्यम् ।

नियम—(ख) यदि 'अ या आ' के बाद 'ओ या औ' आये तो दोनों मिलकर "औ" जाता है । जैसे—

अ+ओ=औ, जल+ओकः = जल्+अ+ओकः = जल्+औकः = जलौकः ।

आ+औ=औ, महा + औषधिः=मह् + आ+औषधिः=मह्+औषधिः=महौषधिः ।

सारांश—यदि 'अ अथवा आ' के बाद 'ए अथवा ऐ' आवे तो दोनों मिलकर "ऐ" हो जाते हैं तथा 'ओ अथवा औ' आवे तो दोनों मिलकर "औ" हो जाते हैं ।

अभ्यास—३

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

मम+एव । सदा+एव । मम+एकता । पुत्र एषणा । जन+एकता । न+एतत् । गंगा+ओघः । सुर+ओकः । शीत+औषधम् ।

(ख) नियम निर्देशपूर्वक सन्धि विच्छेद कीजिए—

अत्रैव । अनौघः । ममैष । तथैक्यम् । रामैकत्वम् । तस्यैव । शिवौदार्यम् । काष्ठौषधम् ।

(४) यणस्वर सन्धि (सूत्र—इकोयणचि) ।

नियम—(क) यदि 'इ अथवा ई' के बाद कोई असमान स्वर आये, तो 'इ या ई' का "य्" हो जाता है । जैसे—

इ+आ=य्+आ = या, इति+आदिः = इत् + इ+आदिः=इत्+ य्+आदिः=इत्यादिः ।

ई+ओ=य्+ओ=यो, नदी + ओघः=नद्+ई+ओघः=नद्+य्+ ओघः= नद्योघः ।

नियम—(ख) यदि 'उ अथवा ऊ' के बाद कोई असमान स्वर आये, तो 'उ या ऊ' का "व" हो जाता है । जैसे—

उ+आ=व्+आ=वा, सु+आगतम् =स्+उ+आगतम्=स्+व्+ आगतम्=स्वागतम् ।

नियम—(ग) यदि 'ऋ' के बाद कोई असमान स्वर आये, तो 'ऋ' का "र्" हो जाता है । जैसे—

ऋ+आ=र्+आ=रा, पितृ+आज्ञा=पित् + ऋ+आज्ञा=पित्+ र्+आज्ञा=पित्राज्ञा ।

नियम—(घ) यदि 'लृ' के बाद कोई असमान स्वर आये, तो 'लृ' का "ल्" हो जाता है । जैसे—

लृ+आ=ल्+आ=ला,लृ+आकृतिः=ल् + ल्+आकृतिः=लाकृतिः ।

सारांश—यदि ह्रस्व या दीर्घ (छोटी या बड़ी) इ या ई, उ या ऊ; ऋ या ॠ तथा लृ के बाद असमान स्वर आये तो इनके स्थान पर क्रमशः य्, व्, र् तथा ल् हो जाता है ।

अभ्यास—४

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

यदि + अपि । हरि+आगमनम् । नदी+अम्बु । रवि + उदयः । जननी+ अपि । अति+उदारः । हरि+आज्ञा । अनि+अत्र । भानु+अस्त्रः । मातृ+उत्सवः ।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

इत्यत्र । पित्रधिकारः । अत्यावश्यकः । मध्वरिः । नद्यम्बु । अध्यादेशः । यद्यपि । गुर्वादेशः । भान्वन्तः ।

(५) अयादिस्वर सन्धि (सूत्र—एचोऽयवायावः) ।

नियम—(क) यदि 'ए' के बाद कोई स्वर आये तो 'ए' का "अय्" हो जाता है। जैसे—

ए+अ=अय्+अ=अय, ने+अनम्=न्+ए+अनम्=न्+अय्+अनम्=नयनम्।

ए+ए=अय्+ए=अये, हरे+ए=हर्+ए+ए=हर्+अय्+ए=हरये।

नियम—(ख) यदि ऐ के बाद कोई स्वर आये, तो 'ऐ' का "आय्" हो जाता है। जैसे—

ऐ+अ=आय्+अ=आय, नै+अकः=न्+ऐ+अकः=न्+आय्+अकः=नायकः।

नियम—(ग) यदि ओ के बाद कोई स्वर आये तो 'ओ' का "अव्" हो जाता है। जैसे—

ओ+इ=अव्+इ=अवि, पो+इत्रः=प्+ओ+इत्रः=प्+अव्+इत्रः=पवित्रः।

नियम—(घ) यदि औ के बाद कोई स्वर आये तो 'औ' का "आव्" हो जाता है। जैसे–

औ+अ = आव्+अ = आव, पौ+अकः = प्+औ+अकः=प्+आव्+अकः=पावकः।

सारांश—यदि 'ए, ऐ, ओ, औं' के बाद कोई स्वर आयें, तो उनके स्थान पर क्रमशः 'अय्, आय्, अव् तथा आव्' हो जाते हैं।

अभ्यास—५

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

कवे+ए। पो+अनः। गुरौ+अपि। नै+अनः। मौ+उकः। गौ+इकः। रै+ए। मतौ+अपि। करौ+इव।

(ख) नियम निदश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

मुनये। मतये। जयः। पवित्रम्। शयनम्। भावकः। दायकः। पावनम्। चयनम्। गायनम्।

(६) पूर्वरूप स्वर सन्धि (सूत्र—एङः पदान्तादति)।

नियम—जिन शब्दों के अन्त में 'ए या ओ' के बाद ह्रस्व 'अ' आये तो 'अ' अपने पूर्व स्वर के रूप में मिल जाता है। उस लुप्त 'अ' के स्थान पर ऽ चिन्ह लगा देते हैं। जैसे—

ए + अ = ए, हरे + अव = हरेऽव ।
ओ + अ = ओ, प्रभो + अव=प्रभोऽव ।

अभ्यास—६

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए--

पुस्तके+अस्मिन् । प्रभो+अत्र । गते+अपि । देवो+अपि । हरे + अव । गृहे+अस्मिन् ।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए--

एकोऽपि । शेषेऽस्मिन् । ग्रामेऽस्मिन् । प्रभोऽनुकम्पा । विष्णोऽव ।

स्वर सन्धियों का अभ्यास—७

(१) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए--

शुभ+इच्छुः । वधू+आगमनम् । भो+अनम् । द्वौ+अपि । राम+ऋद्धिः । लते+इमे । शिष्ट+आचारः । मोक्ष+इच्छा । हेमन्त+ऋतुः । कन्ये+इमे । इति+एतत् । प्र+एधते । गै+अनम् । लोके+अस्मिन् ।

(२) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि विच्छेद कीजिए—

स्वरोदयः । एकैव । उपैधते । भानोऽत्र । वनौषधि । सुरेशः । वारीशः । शीततुः । अध्यस्तु । भावुकः । विष्णुदयः ।

२—व्यंजन सन्धि

जब कोई व्यंजन वर्ण किसी स्वर या व्यंजन वर्ण के साथ मिलकर कोई विकार उत्पन्न करता है तो उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं । जैसे— वाक्+ ईशः =वागीशः ।

इसके प्रधान भेद निम्न हैं—

(१) श्चुत्व सन्धि । (२) ष्टुत्व सन्धि । (३) जश्त्व सन्धि । (४) अपदान्त जश्त्व सन्धि । (५) चर्त्व सन्धि । (६) अनुस्वार सन्धि ।

(१) श्चुत्व सन्धि (सूत्र—स्तोः श्चुनाश्चुः) ।

नियम—यदि सकार अथवा तवर्ग (त, थ, द, ध, न) से पहले या पीछे शकार या चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) के आने पर स का श् तथा तवर्ग का चवर्ग होता है । जैसे—

सत् + चित् = सच्चित् (त् + च = च) ।

सद् + जनः = सज्जनः (द् + ज = ज)।
निस् + चयः = निश्चयः (स् + च = च)।

विशेष—इस सन्धि में तवर्ग का जो वर्ण होता है उसके स्थान पर चवर्ग का वही वर्ण क्रम से होता है। जैसे—विद्वन+जयः=विद्वञ्जयः। यहाँ 'न' तवर्ग का पाँचवां वर्ण है, अतः इसके स्थान पर चवर्ग का पाँचवां वर्ण 'ञ' होगा।

अभ्यास—८

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

रामस्+शेते। सत्+चरित्रम्। निस्+छलः। तपस्+चर्या। महान्+जयः। महत्+जालम्। जगत्+जननी। हरिस्+चिनोति।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

सच्छात्रः। शरच्चन्द्रः। अन्यच्च। तज्जतः। मज्जयः। दुश्चरित्रः। कश्चित्। भवज्जेत।

(२) ष्टुत्व सन्धि (सूत्र—ष्टुनाष्टुः)।

नियम—यदि स अथवा तवर्ग के योग में प या ट वर्ग आवे तो स् का ष् और त वर्ग का ट वर्ग हो जाता है। जैसे—

रामस् + टीकते = रामष्टीकते (स् + ट = ष्)।
भवत् + टीका = भवट्टीका (त् + ट = ट्)।
इष् + तम् = इष्टम् (ष + त = ट)।

विशेष—इस सन्धि में भी त वर्ग का जो वर्ण होता है उसके स्थान पर टवर्ग का वही वर्ण होता है। जैसे—उद्+डीयते=उड्डीयते। यहाँ तवर्ग का तीसरा वर्ण 'द' है अतः उसके स्थान पर ट वर्ग का तीसरा वर्ण 'ड' होगया है।

अभ्यास—९

(क) नियम निर्देशपूर्वक सन्धि कीजिए—

तत्+टीका। रामस्+षष्ठः। धनुस्+टंकारः। पप्+थः। पृष्+तवान्। धन्+टा। दृस्+तः।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

दुष्टः। पुष्टः। उड्डीनम्। तट्टीकते। दृष्टवान्। उड्डयनम्।

(३) जश्त्व सन्धि (सूत्र—झलां जशोऽन्ते)।

नियम—यदि पदान्त (शब्द के अन्त) में वर्ग के प्रथम वर्ण (अक्षर) के बाद स्वर या मृदु व्यंजन (वर्ग का तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण तथा य, र, ल, व, ह) आवे तो प्रथम वर्ण का अपने वर्ण का तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे—सत्+आचारः=सदाचारः।

यहाँ पर 'त' त वर्ग का प्रथम वर्ण (अक्षर) है अतः उसके स्थान पर तृतीय वर्ण (अक्षर) 'द' हो गया है।

जगत् + ईशः = जगदीशः (त् + इ = द्)।
दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः (क् + अ = ग्)।
सुप् + अन्तः = सुबन्तः (प् + अ = ब्)।

अभ्यास—१०

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

वाक्+ईशः। जगत्+अम्बा। सत्+बन्धु। जगत्+आधारः। अच्+अन्तः। सत्+धर्मः। वाक्+हरिः। वाक्+जालम्।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

उद्गमः। सद्गतिः। जयद्रथः। कृदन्तः। वाग्यतः। जगद्बन्धु।

(४) अपदान्त जश्त्व सन्धि (सूत्र—झलांजश्झशि)।

नियम—यदि वर्ग का प्रथम या द्वितीय अथवा चतुर्थ वर्ण (अक्षर) के बाद किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण (अक्षर) आवे तो प्रथम, द्वितीय या चतुर्थ अपने वर्ग का तृतीय वर्ण (अक्षर) हो जाता है। जैसे—

भवत्+भ्याम्=भवद्भ्याम् (त्+भ=द्) वर्ग का तीसरा वर्ण
लभ्+धम्=लब्धम् (भ्+ध=ब्) वर्ग का तीसरा वर्ण

अभ्यास—११

(क) नियम निर्देशपूर्वक सन्धि कीजिए—

बुध्+धः। सिध्+धम्। क्रुध्+धः। क्षुभ्+धः। सरित्+भिः।

(ख) नियम निर्देशपूर्वक सन्धि विच्छेद कीजिए—

भगवद्भ्याम्। सिद्धि।

(५) चर्त्व सन्धि (सूत्र—खरिच)।

नियम—यदि वर्ग के तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण के आगे कोई कठोर व्यंजन (वर्ग के प्रथम और द्वितीय वर्ण और श, ष, स) आवें तो तृतीय और चतुर्थ का अपने वर्ग का प्रथम वर्ण (अक्षर) हो जाता है। जैसे—

लिभ्+सा=लिप्सा (भ्+स=प्)
भवद्+सु=भवत्सु (द्+स=त्)

अभ्यास—१२

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—
लभ+स्यते। तद्+पत्रम्। तद्+कृतम्। हृद+स्थलम्। युध्+सु।
(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—
छेत्ता। तत्कारणम्।

(६) अनुस्वार सन्धि (सूत्र—मोऽनुस्वारः)।

नियम - यदि शब्द के अन्त (पदान्त) में स्थित म् के बाद कोई व्यंजन आवे, तो म् का अनुस्वार (ं) हो जाता है। जैसे—

रामम्+वन्दे=रामंवन्दे (म्+व=ं)।
मातरम्+वन्दे=मातरंवन्दे (म्+व=ं)।

अभ्यास—१३

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—
रामम्+नमामि। त्वम्+करोषि। गृहम्+गच्छति। जलम्+पिवति।
(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—
हरिवन्दे। गृहंगत। कृष्णं वन्दे। कार्यंकरोति।

व्यंजन सन्धियों के अभ्यास—१४

(१) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—
एतत्+जलम्। पुष्+तः। त्वत्+शरीरम्। उत्+गमः। छेद्+ता। वाक्+दानम्। अन्यत्+च। तत्+श्रुत्वा। तत्+जलम्। भवान्+जयतु।
(२) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—
एतज्जलम्। शत्रूञ्जयति। पृष्टवान्। छेता। ककुबन्तः। उच्चारणम्।

(३) विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने से जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे – मनः+रथः=मनोरथः।

विसर्ग सदा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे—'दुखः' तथा 'रामः' में विसर्ग क्रमशः 'उ' और 'अ' के बाद है। अतः विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले आने वाले स्वर तथा बाद के स्वर अथवा व्यंजन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

इसके प्रधान नियम निम्न हैं।

(१) सूत्र—विसर्जनीयस्य सः।

नियम—यदि विसर्ग के बाद चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग के प्रथम या द्वितीय वर्ण (अक्षर) आवें, तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। जैसे—

नमः + ते = नमस्ते (: + त = स्)

भवतः + थूत्कारः = भवतस्थूत्कार (: + थ = स्)।

नियम—(क) यदि विसर्ग के बाद च, छ आये, तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है। जैसे—

मृगाः+चरन्ति=मृगास्+चरन्ति=मृगाश्चरन्ति।

तरोः+छाया=तरोस्+छाया=तरोश्छाया।

नियम--(ख) विसर्ग के बाद ट, ठ आयें, तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है। जैसे –

धनुः+टङ्कारः=धनुस्+टङ्कारः=धनुष्टङ्कारः।

वृद्धः+ठक्कुरः=वृद्धस्+ठक्कुरः=वृद्धष्ठक्कुरः।

अभ्यास—१५

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

इतः+ततः। निः+चलः। हरिः+तरति। भानुः+छलति।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

रामस्तिष्ठति। नद्यास्तीरम्। यशस्तनोति। निष्ठरः। भूमेस्तलम्।

(२) सूत्र—ससजुषोरुः।

नियम—यदि पदान्त (शब्द के अन्त) में स आवे, तो 'स' का र् (रु) हो जाता है। अगर 'र्' के बाद यदि वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण या स, ष, श में से कोई वर्ण हो या कोई भी वर्ण न हो तो 'र्' के स्थान में विसर्ग (:) हो जाता है। जैसे—

मुनिस्+आगतः=मुनिरागतः (स्+अः=र्)।

बालकस्+पठति=बालकर्+पठति=बालकःपठति।

अभ्यास--१६

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

श्वेस्+दर्शनम्। कविस्+अयम्। गोस्+इव। मुनिस्+उवाचः।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

मुनिरिव। प्रभोराज्ञा। विधेराज्ञया।

(३) सूत्र—अतो रोरप्लुतादप्लुते।

नियम—यदि विसर्ग के पूर्व (पहले) और पश्चात् (बाद में) दोनों ओर ह्रस्व 'अ' हो तो विसर्ग (:) का 'उ' हो जाता है। इसके पश्चात् 'उ' का गुण और 'ल' का पूर्व रूप हो जाता है। जैसे—

रामः+अत्र=राम+उ+अत्र=रामोऽत्र (:+अ=ओ)।
कः+अपि=क+उ+अपि=कोऽपि (:+अ=ओ)।

अभ्यास-१७

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

रामः+अस्ति। कः+अयम्। सिंहः+अपि। विघ्नः+अत्र। कः+अत्र।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

सोऽपठत्। रामोऽवदत्। जनोऽपि। सर्वोऽयम्। नरोऽयम्।

(४) सूत्र—हशि च।

नियम—यदि ह्रस्व 'अ' के बाद विसर्ग हो और उसके बाद कोई मृदु व्यंजन (वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण तथा य, र, ल, व, ह) हो तो विसर्ग का "उ" हो जाता है। इसके बाद गुण सन्धि के द्वारा "ओ" हो जाता है। जैसे—

रामः+रथः=(मन+उ+रथः)=मनोरथ (:+र=ओ)।
बालः+हसति=(बाल+उ+हसति)=बालोहसति (:+ह=ओ)।

अभ्यास-१८

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

पुत्रः+वदति। देवः+जयति। नृपः+रक्षति। नरः+याति। कृष्णः+लिखति।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

को मनुष्यः । अद्योजातः । रामोगतः । नृपोजयति । वयोवृद्ध ।

(५) सूत्र—एतत्तदोः सुलोपोऽकोऽनञ् समासेहलि ।

नियम—सः (तद्), एषः (एतद्) के विसर्ग के बाद यदि कोई भी व्यंजन आवे तो विसर्ग का लोप हो जाता है । जैसे—

सः+गच्छति=स गच्छति (:+ग =विसर्ग का लोप) ।

एषः+वदति=एष वदति (: +व=विसर्ग का लोप) ।

अभ्यास--१९

(क) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

सः+लिखति । एषः+पुरुष । सः+पठति । एषः+करोति ।

(ख) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

स शिव । एष कवि । स शेते । एष गच्छति । सयाति ।

(६) सूत्र—(भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि ।

नियम—भगोः, भोः, अघोः के बाद कोई स्वर या व्यंजन हो तो उनके विसर्ग का लोप हो जाता है । जैसे—

भोः+देवाः=भोदेवाः । अघोः+यादि=अघो यादि ।

भगोः+नमस्ते=भगो नमस्ते ।

विसर्ग सन्धि का अभ्यास—२०

(१) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

श्यामः+कथयति । कः+अत्र । नद्याः+तटम् । रमेशः+आयाति । गजः+अयम् । शिवः+वन्द्यः । कविः+रटति । मतिः+भ्रमति । सः+अपि ।

(२) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

कोऽपि । मनोरमा । यशस्तनोति । नमश्शिवाय । कश्चलति । इतस्ततः । गुरुर्गतः । कृष्णोनमति । गौरागच्छति ।

सन्धियों का अभ्यास

(यू० पी० बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा में पूछी गयी सन्धियाँ)

(१) निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सन्धि-विच्छेद कीजिए—

१—करम्यहम्, गत्वैतत्, एतन्निशम्य, प्रथमोपगतस्य, तस्मादयम्, येनैषः, एष दोषः, तत्वज्ञोऽपि, वनैकदेशे, देवेन्द्रातिकरान् । (१९६३)

२—किन्त्वबुद्धिः, स्वकीयोहेन, योऽहर्निशम्, भिक्षार्जितैः, नागदन्तेऽवलम्ब्य, अचिराच्च, धनाढ्यः, सोऽत्र, सदैवादर्शभूतम्, अत्याश्चर्यम् । (१९६४)

३—सर्वोच्छेदनम्, आश्चर्यान्विता, अद्यापि, जन्मशतेष्वपि, प्रत्युद्गम्य, निर्विण्णोऽस्मि, अर्थैभिः, नोपसर्पति, गुणाञ्छ्रुत्वा । (१९६५)

४—इन्द्रादयोऽपि, राजाऽपि, रात्रावेव, भवतेति, कस्मिश्चिदपि, सत्स्वपि । (१९६६)

५—ततोऽहम्, ततश्चाहम्, जानात्येव, प्रत्युपकारेण, तस्योद, राभ्यन्तरे, कुत्राऽपि, ममेति, दत्तास्तस्य । (१९६७)

६—दुष्टवचसा, श्मशानाश्रयः, करुणार्द्रचित्तास्तेन, सिहायोऽयं, षडदोषाः, पुरुषेणेह, समोवीर्ये, निष्क्रियाश्च, गतायुषः । (१९६८)

७—तस्मादुत्तिष्ठाय, उत्थायाचम्य,आवासमायान्ति, जगच्यक्षुः । (१९६९)

(२) नियम निर्देश पूर्वक सन्धि कीजिए—

(१) भव + ईशः, वारि+आनय, विष्णु + उदकम्, सुर+ वन्द्यः, भव+ऐश्वर्यम् । (१९६३)

(२) जल + ओघः, रिक्तः + असि, पुष्प + अवचयः, रमा+ ईश, कः+निवत् । (१९६४)

(३) तेन+उक्तम्, यः+अपि, सुर + ऐश्वर्यम्, कथयामि + इति, देवः+याति । (१९६५)

निम्नांकित शब्दों में से किन्हीं दो में नियम बतलाते हुए सन्धि कीजिए–

(४) यदि+अपि । रमा+ईशः । द्वौ+एव । सत् + चित् । कः+चित् । (१९६६)

(५) सदा + एव, पितृ + आज्ञा, विद्युत + लते, जगत् + नाथः, नृपः+अवदत्, रामः+वदहि । (१९६७)

(६) पर+उपदेशः, नृप + अपत्यम्, समित्+ लता, गौ+चरति, तत्+श्रृणोति, हरिः+शेते, रामः+अगच्छत् नृपः+अहपत् । (१९६८)

(७) तस्मिन्+ अरण्ये, वि + अतिगच्छतु, वीरवरः + चिन्तयामास, जयतु+आयुष्मान्, प्रीतिमान्+चक्रवाकः । (१९६९)

समास

परिभाषा—जब दो या दो से अधिक शब्दों (पदों) की विभक्तियों (कारकों) का लोप करके एक शब्द बना लिया जाता है । दो या दो से अधिक

पदों को मिलाकर एक शब्द बनाने की इस क्रिया को समास कहते हैं। समास का अर्थ होता है—संक्षेप।

दो या दो से अधिक पदों के मेल से बने हुए एक पद को समस्त पद या सामासिक शब्द कहते हैं। समस्त पदों (शब्दों) को अलग कर विभक्ति-चिन्ह सहित लिखने की प्रक्रिया (रीति) को "विग्रह" कहते हैं। जैसे—राजपुत्रः एक समस्त पद है। राजः पुत्रः (राजा का पुत्र) इसका विग्रह है।

समस्त पद का पहला पद 'पूर्वपद' कहलाता है और दूसरा पद 'उत्तरपद'। जैसे 'राजः' पूर्वपद और 'पुत्रः' उत्तरपद है।

समास भेद

समास के सामान्यतया ६ भेद होते हैं—(१) अव्ययीभाव, (२) तत्पुरुष, (३) कर्मधारय, (४) द्विगु, (५) बहुव्रीहि, (६) द्वन्द्व।

हाईस्कूल पाठ्यक्रम में स्वीकृत न होने के कारण अव्ययीभाव का विवरण नहीं दिया जा रहा है।

(२) तत्पुरुष समास

परिभाषा—उत्तर पद प्रधानः तत्पुरुषः।

जिस समास में उत्तर पद (अन्तिम शब्द) प्रधान होता है। अर्थात् अन्तिम पद के अनुसार ही लिंग, वचन और विभक्ति (कारक) होती है। जैसे—रामजननी (रामस्य जननी—राम की जननी) इसमें राम और जननी दो पद हैं, किन्तु रामजननी का अर्थ कौशल्या होने से इसका जननी पद ही प्रधान है और किसी वाक्य में प्रयोग करने पर उस वाक्य में इसके विशेषण, क्रिया आदि 'जननी' के ही अनुसार होंगे 'राम' के अनुसार नहीं।

प्रथमा विभक्ति को छोड़कर शेष सभी विभक्तियों के नाम से तत्पुरुष समास प्रसिद्ध हैं।

(क) **द्वितीया तत्पुरुष**—इसका पहला पद (पूर्वपद) द्वितीया विभक्ति का होता है। जैसे—

समास का नाम	शब्द	विग्रह
द्वितीया तत्पुरुष	गजारूढ़ः	गजम् आरूढ़ः (हाथी पर आरूढ़)।
,, ,,	धनप्राप्त	धनं प्राप्तः (धन को प्राप्त)।
,, ,,	शरणागतः	शरणम् आगतः (शरण में आगया)।

(ख) **तृतीया तत्पुरुष**—इसमें पहला पद तृतीया विभक्ति का होता है। जैसे—

तृतीय तत्पुरुष	नेत्रहीनः	नेत्रेण हीनः (नेत्र से हीन)।
,, ,,	बुद्धि रहितः	बुद्ध्या रहितः (बुद्धि से रहित)।
,, ,,	हरित्रातः	हरिणा त्रातः(हरि से रहित अर्थात् हरि द्वारा रक्षा की)

(ग) चतुर्थी तत्पुरुष—इसमें पहला पद चतुर्थी विभक्ति का होता है। जैसे—

चतुर्थी तत्पुरुष	दानपात्रम्	दानाय पात्राम् (दान के लिए पात्र)।
,, ,,	सुखार्थम्	सुखाय इदम् (सुख के लिए)।
,, ,,	भूतबलिः	भूतेभ्यः बलिः (भूतों के लिए बलि)।

(घ) पंचमी तत्पुरुष—इसमें पहला पद पंचमी विभक्ति का होता है। जैसे—

पंचमी तत्पुरुष	धर्मभ्रष्टः	धर्मात् भ्रष्टः (धर्म से भ्रष्ट)।
,, ,,	वृक्षपतितः	वृक्षात् पतितः (वृक्ष से पतित)।
,, ,,	गुरुपठितम्	गुरोः पठितम् (गुरु से पठित)।

(ङ) षष्ठी तत्पुरुष—इसमें पहला पद षष्ठी विभक्ति का होता है। जैसे—

,, ,,	राजपुत्रः	राज्ञः पुत्रः (राजा का पुत्र)।
,, ,,	वृक्षच्छाया	वृक्षस्य छाया (वृक्ष की छाया)।
,, ,,	देवपतिः	देवानां पतिः (देवों का पति)।

(च) सप्तम तत्पुरुष—इसमें पहला पद सप्तमी विभक्ति का होता है। जैसे—

सप्तमी तत्पुरुष	नरोत्तमः	नरेषु उत्तमः (नरों में उत्तम)।
,, ,,	पितृस्नेहः	पितरि स्नेहः (पिता पर स्नेह)।
,, ,,	शास्त्रनिपुणः	शास्त्रे निपुणः(शास्त्र में निपुण)।

तत्पुरुष के उक्त भेदों के अलावा अन्य ३ भेद हैं—

(१) उपपद तत्पुरुष, (२) नञ् तत्पुरुष, (३) अलुक् तत्पुरुष।

(१) उपपद तत्पुरुष—जब तत्पुरुष समास में उत्तर पद (दूसरा पद) किसी क्रिया का होता है, तब उसे उपपद तत्पुरुष कहते हैं। जैसे—कुम्भं करोति-इति कुम्भकारः—घड़ा को बनाने वाला।

समास का नाम	शब्द	विग्रह
उपपद तत्पुरुष	जलदः	जलं ददाति (जो जल देता है)।
,, ,,	धर्मज्ञः	धर्मं जानाति(जो धर्म को जानता है)।
,, ,,	आसनस्थः	आसने तिष्ठति(जो आसन पर बैठा है)

(२) नञ् तत्पुरुष--जिस समास के आदि में निषेधवाचक 'न' का कोई रूप (आ अथवा अन्) होता है, उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं। जिन शब्दों के आदि में कोई स्वर होता है, उनमें 'अन्' और अन्यों में 'अ' जुड़ता है। जैसे—न धर्मः—अधर्मः।

समास का नाम	शब्द	विग्रह
नञ् तत्पुरुष	अगजः	न गजः (जो हो न गज)।
,, ,,	अनर्थः	न अर्थः (जो ठीक न हो)।
,, ,,	अब्राह्मणः	न ब्राह्मण (जो ब्राह्मण न हो)।

(३) अलुक् तत्पुरुष--जब तत्पुरुष में पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता, तब उसे अलुक् तत्पुरुष कहते हैं।

समास का नाम	शब्द	विग्रह
अलुक् तत्पुरुष	दिवंगतः	दिवंगतः (दिवं स्वर्ग को गत)।
,, ,,	युधिष्ठिरः	युधि स्थिरः (युद्ध में स्थिर)।
,, ,,	वाचस्पतिः	वाचः पतिः (वाच का पति)।

अभ्यास—२०

विग्रह पूर्वक समास बताइए--

रथकारः। वनवासः। धनहीनः। विप्रधेनुः। रोगमुक्तः। अश्वपतितः। जलमग्नः। सुरसरित्। नदीशः। राजगृहम्। स्वर्गप्राप्तः। श्येनभीतः।

३—कर्मधारय समास

परिभाषा--विशेषणं विशेष्येण बहुलम्।

इस समास में पहला पद (पूर्व पद) विशेषण तथा दूसरा पद (उत्तर पद) विशेष्य (संज्ञा) होते हैं।

विशेष–इस समास में विग्रह करने में विशेष्य की विभक्ति, वचन, लिंग के अनुसार तत्, इदम् अथवा एतत् के रूप लगाये जाते हैं। इनके न लगाने पर भी काम चल जाता है। जैसे—

समास का नाम	शब्द	विग्रह
कर्म धारय	कुपुत्रः	कुः च असौ पुत्रः (खराब जो लड़का)।
,, ,,	महापुरुषः	महाः च ते पुरुषाः (महान जो पुरुष)।
,, ,,	कृष्ण सर्पः	कृष्णः च असौ सर्पः (कृष्ण जो सर्प)।

विशेष—कर्मधारय समास निम्न रूपों में भी होते हैं। जैसे—

(१) **उभयपद विशेषण कर्मधारय**—इस समास में विशेषण का विशेषण के साथ समास होता है अर्थात् दोनों पद विशेषण होते हैं। जैसे—

समास का नाम	शब्द	विग्रह
कर्म धारय	पीत कृष्णः	पीतः कृष्णः (पीला और काला)।
,, ,,	सुप्तोत्थितः	पूर्वसुप्तः पश्चात् उत्थितः (पहले सोया फिर उठा)।

(२) **रूपक कर्मधारय**—इसमें एक पद उपमेय (जिससे उपमा दी जाती है।) और दूसरा पद उपमान होता है। जैसे—

समास का नाम	शब्द	विग्रह
कर्मधारय	विद्या धनम्	विद्या एवं धनम् (विद्या रूपी धन)।
,, ,,	मुख कमलम्	मुखमेव कमलम् (मुख रूपी कमल)।

(३) **उपमान कर्मधारय**—इस समास में पूर्व पद (पहला पद) में उपमान रहता है और उत्तर पद (दूसरा पद) में सामान्य धर्म रहता है इसके विग्रह 'इव' या 'वत्' का प्रयोग होता है। जैसे—

समास का नाम	शब्द	विग्रह
कर्मधारय	घनश्यामः	घनव श्यामः (घन के समान श्याम)
,, ,,	नरसिंह	नरः सिंहः इव (मनुष्य सिंह के सम)

अभ्यास—२१

(४) **विग्रह पूर्वक समास बतलाइए**—

महादेवः। मधुर स्वभावः। श्वेत वाहनः। देवपुरुषः। मुखचन्दः शोकाग्नि। नरव्याघ्रः। नीलोत्पलम। मुख कमलम्। सुफलम्।

४—द्विगु समास

परिभाषा—संख्या पूर्वो द्विगुः।

जिस समास में पूर्व पद (पहला पद) संख्यावाचक हो, उसे द्विगु समास कहते हैं।

जब द्विगु समास का अर्थ समूह वाचक होता है और सम्पूर्ण पद स्त्रीलिंग या नंपुसकलिंग एकवचन होता है तब समाहार द्विगु होता है। जैसे—

समास नाम	शब्द	विग्रह
द्विगु	पञ्चगम्	पञ्चानां गवां समाहारः (पाँच गायों का समूह)
,,	त्रिलोकी	त्रयाणां लोकानां समाहारः (तीनों लोकों का समूह)

(क) तद्वित द्विगु—जब द्विगु समास के पश्चात तद्वित प्रत्यय हो या वह किसी और शब्द के साथ समास में आता हो। जैसे—

समास नाम	शब्द	विग्रह
द्विगु	पञ्चगु.	पञ्चभिः गोभिः क्रीतः (पाँच गायों से खरीदा गया)
,,	पञ्चगवधनः	पञ्चगावः धनं यस्य सः

(ख) उत्तर द्विगु—जब द्विगु समास में कोई उत्तर पद रहता है तब उसे उत्तर द्विगु कहते हैं। जैसे—

त्रिमास जातः—त्रयाणां मासानां जातः (तीनों मासों में उत्पन्न)

अभ्यास—२२

२—विग्रह पूर्वक समास बतलाइए

सप्ताह। त्रिफला। त्रिवेणी। सप्तशती। नवरत्नम्
अष्टाध्यायी। त्रिभवनम्। सप्ताहजातः। पञ्चवटी। पञ्चपात्रम्

५—बहुव्रीहि समास

परिभाषा—अनेक मन्य पदार्थे।

जिस समास में अन्य पद प्रधान हो, अर्थात् जहाँ अनेक प्रथमान्त पद किसी अन्य शब्द के विशेषण के रुप में आते हैं, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। इसके विग्रह करने पर 'यत्' शब्द के रुप (यस्य, येन, यस्मिन्) लगते हैं। जैसे महान आत्मा यस्य सः—महात्मा (महान हैं आत्मा जिसकी)।

इनके निम्न भेद हैं। १. समानाधिकरण बहुव्रीहि। व्यधिकरण बहुव्रीहि।

(क) **समानाधिकरण बहुव्रीह**—जिस बहुव्रीहि समास के दोनों पदों में समान विभक्ति होती है, अर्थात् विग्रह दशा में दोनों पद प्रथमान्त हों उसे

समानाधिकरण कहते हैं। इसका विग्रह करते समय 'यत्' शब्द की द्वितीया आदि विभक्तियों का प्रयोग होता है। इस तरह का सम्पूर्ण समस्त शब्द एक विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है। जैसे—

द्वितीया—प्राप्तम् उदकं यं सः—प्राप्तोदकः (मिल गया है जल जिसको)
तृतीया—हताःशत्रवः येन सः—हतशत्रुः (जिसने शत्रुओं को मारा है, ऐसा राजा)
चतुर्थी—दत्तं भोजनं यस्मै सः—दत्त भोजनः [जिसको भोजन दिया गया है, ऐसा भिक्षुक]
पंचमी—पतितं पर्णं यस्मात् सः—पतितपर्णं (जिसके पत्ते गिर गये है, ऐस वृक्ष)
षष्ठी—दश आननानि यस्य सः—दशाननः (दसमुँह वाला, रावण)
सप्तमी—वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः—वीरपुरुषः (वीरपुरुषों वाला ग्राम)

(ख) **व्याधिकरण बहुव्रीहि**—जिस बहुव्रीह समास में दोनों पद अलग २ विभक्ति के हों अर्थात् दोनों शब्द समान [प्रथमान्त] न हों। उसे व्याधिकरण बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे—

बहुव्रीहि चन्द्रशेखरः चन्द्रशेखरे यस्य सः (चन्द्र हैं शेखर पर जिसके, ऐसे शिव)
,, गदा हस्तः गदा हस्ते यस्य सः (गदा है हाथ में जिसके ऐसे, भीम)

अभ्यास—२३

१—विग्रह पूर्वक समास बतलाइये—

लम्बोदरः, । पीयूषपाणिः । वक्रदन्तः । सकुलः । कृतकार्यः । कृत प्रतिज्ञः । कल्पीपाणिः । वज्रदेहः । महाशयः । वृकोदरः ।

६—द्वन्द समास

परिभाषा—उभय पद प्रधानो द्वन्द्वः, चार्थे द्वन्द्वोवा।

जिस समास में दोनों पद या सभी पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर च (और) से जुड़े रहते है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। इस समास में बाद वाले पद (शब्द) का लिंग होता है। यदि दो पदों में समास होता है तब द्विवचन का शब्द बनता हैं और दो से अधिक पदों में समास होता है तब बहुवचन का शब्द बनता है। जैसे—

स्त्री च पुरुषश्च—स्त्रीपुरुषौ-स्त्री और पुरुष।

रामश्च कृष्णश्च मोहनश्च-रामकृष्ण मोहनाः-राम, कृष्ण और मोहन।

द्वन्द समास तीन प्रकार के होते हैं-(१) इतरेतर द्वन्द, (२) समाहार-द्वन्द; (३) एक शेष द्वन्द।

(१)इतरेतर द्वन्द—इस समास में दो या दो से अधिक पदों का योग होता है। इसमें दो का बोध होने पर द्विवचन और दो से अधिक होनेपर बहुवचन होता है। इसमें लिंग अन्तिम पद के अनुसार होता है। जैसे—

द्वन्द गंगायमुने गंगा च यमुना च (गंगा और यमुना)
,, माता पितरौ माता च पिता च (माता और पिता)
,, रामकृष्णमोहनाः रामश्च कृष्णश्च मोहनश्च (राम-कृष्ण और मोहन)

(२) समाहार द्वन्द्व—जिस द्वन्द्व समास में अनेक पदों के योग से समहार (समूह) सूचित हो, वह समाहार द्वन्द्व कहलाता है। तथा सम्पूर्ण समस्त पद नपुंसक लिंग एक वचन में होता है। जैसे—

द्वन्द हस्तापादम् हस्तौ च पादौ च (हाथ और पैर)
,, रथाश्वरम् रथाश्च अश्वाश्च (रथ और घोड़े)

(३) एक शेष द्वन्द्व—जिस समास में समान रुप से आने वाले शब्दों में से केवल एक ही पद शेष रह जाता है। तब उसे एक शेष द्वन्द कहते हैं। इसमें सम्पूर्ण पद अपनी विभक्ति के द्वारा अपने भाव को बतलाता है।

द्वन्द पितरौ माता च पिता च (माता और पिता)
,, ब्राह्मणौ ब्राह्मणी च ब्राह्मणश्च (ब्राह्मणी और ब्राह्मण)

अभ्यास—२४

१—विग्रह पूर्वक समास बतलाइये—

भ्रातरौ। नरनार्यः। बालवृद्धौ। स्त्रीपुरूषौ। मूनिमूषको। मार्जारौ। भीमार्जुनौ। शीतोष्णम्। श्वसुरौ। भगिन्यौ।

(समासों का अभ्यास)

नीचे लिखे समस्त पदों में से किसी एक का विग्रह करके समास का नाम बतलाइए।

१—अजापुत्रः, पीताम्बरः, पितरौ, चन्द्रमुखम्। (हाई० स्कूल १९६०)

२—वटपत्रम्, शुक्लश्वरा, घटपटौ, नीलोत्पलम् । (,, ,, १९६१)
३—वृक्षच्छाया, कृपोदरः, दीर्घआष्ठम्, मुद्गभाषौ । (,, ,, १९६२)
४—राजपुरुषः, शिवकेशवौ, वीणापणिः, नीलाम्बरम् । (,, ,, १९६३)
५—धनाढ्यः, पीताम्बरः कृतकृत्यः पार्वतीपरमेश्वरो । (,, ,, १९६४)
६—भार्यासहायः, सन्तोषवारिणा, अवाप्त मनोरथः, रामलक्ष्मणौ, सर्व-शास्त्रविचक्षणः ।(,, ,, १९६५)
७—रामकृष्णौ, नीलकमलम्, कविकुलगुरुः, त्रिभुवनम्, विशालवाहुः (,, ,, १९६६)
८—न्यायनिपुणः, घनश्याम, पीताम्बरः, कृष्णार्जुनौ, अज्ञानम् । (,, ,, १९६७)
९—श्वशुरभवने, सुधामधुरायाः स्वल्पयोयं, (,, ,, १९६८)
१०—ईशस्तुतिः चिन्तामुक्तः, महर्षिदयानन्द, रामलक्ष्मणौ, कृष्णकेशः अशुभम् । (,, ,, १९६९)

द्वितीय अध्याय | शब्द विचार

भाषा का आधार वाक्य होते हैं और वाक्यों के आधार शब्द। दो या दो से अधिक अक्षरों के एक जगह मिलने से शब्द बनता है। शब्द दो प्रकार के होते हैं। —जैसे —र+अ + मः = रामा।

शब्द दो प्रकार के होते हैं — (१) सार्थक, (२) निरर्थक।

सार्थक — जिन शब्दों का कोई अर्थ निकलता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं। जैसे— यमुना (एक नदी का नाम)।

निरर्थक — जिन शब्दों का कोई अर्थ न जाना जाय, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। जैसे — बादल की गर्जना।

व्याकरण में सार्थक शब्दों का प्रयोग होता है इनके दो भेद होते हैं — (१) विकारी (२) अविकारी।

(१) **विकारी** — जिन शब्दों के रूप बदलते हैं, उन्हें विकारी कहते हैं। जैसे — बालकः (लड़का), बालकौ (दो लड़के)।

(२) **अविकारी**— जिन शब्दों के रूप सदा एक ही तरह रहते हैं, जिनमें कभी कोई परिवर्तन नहीं होते हैं। जैसे— यदा कदा आदि। अविकारी शब्दों को अव्यय कहते हैं।

विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं-(१) संज्ञा (२) सर्वनाम (३) विशेषण और (४) क्रिया।

संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों के रूपों में परिवर्तन लिंग, वचन और कारक के कारण होते हैं और क्रिया के रूपों में परिवर्तन काल, पुरुष तथा वचन के कारण होते हैं।

(लिंग का विवरण)

संज्ञा और सर्वनाम के स्त्री या पुरुष, दो जातियों को बतलाने वाले रूप लिंग कहलाते हैं।

संस्कृत में तीन लिंग होते हैं— (१) पुलिंग, (२) स्त्रीलिंग, (३) नपुंसकलिंग ।

संस्कृत भाषा में लिंग का ज्ञान एक कठिन विषय है । क्योंकि संस्कृत में एक ही अर्थ वाले विभिन्न शब्द भिन्न-भिन्न लिंगों में पाये जाते हैं । उदाहरण — भार्या के समानार्थक दार, शब्द पुल्लिग, 'पत्नी', शब्द स्त्रीलिंग और 'मित्र शब्द नपुंसकलिंग हैं। इसी प्रकार , सखा शब्द पुल्लिग और मित्र शब्द नपुंसकलिंग है । अतः लिंग सम्बन्धी साधारण ज्ञान के लिए कुछ नियम लिखे जा रहे हैं —

(१-पुल्लिग)

१—कृदन्त घञ्, अप प्रत्यय से बने शब्द पुल्लिग होते हैं। जैसे — पाकः (भोजन), गोचरः ।

२—इमनिच प्रत्यय वाले शब्द पुल्लिग होते हैं। जैसे—महिमा लघिमा।

३—देवता (स्त्रीलिंग) शब्द को छोड़ कर देववाचक शब्द, राक्षस (नपुंसकलिंग) शब्द की छोड़कर असुरवाची शब्द तथा सुर और असुरों के नाम। पुल्लिग होते हैं। जैसे—अमरः; सुरः; दानवः; रावणः; असुरः आदि।

४—अच् प्रत्ययान्त शब्द । जैसे - चोरः, करः, सर्पः, ।

५—अण् प्रत्ययान्त शब्द । जैसे—स्वर्णकारः, कलाकारः, आदि ।

६—घन और कि प्रत्ययान्त शब्द । जैसे— स्वच्छंदः, निधिः, ।

७—अन् में अन्त होने वाले शब्द । जैसे— राजन् , आत्मन आदि ।

८—दिन तथा अहन (नंपु०) को छोड़कर शेष कालवाचक शब्द । जैसे— मासः, पक्षः, कालः, समयः. दिवसः, आदि ।

(९) यज्ञ, पर्वत तथा समुद्र के पर्यायवाची शब्द । जैसे—मरवः, शैलः, गिरि आदिः, सिन्धूः. आदि ।

(२—स्त्रीलिंग)

(१) आकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त (आ, ई, उ से समाप्त होने वाले) शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे – रमा, कन्या, नदी, पृथ्वी, वधू आदि ।

(२) क्तिन् (ति) ता प्रत्यय से युक्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे— मति देवताः लघुता, सुन्दरता आदि ।

(३) एक अक्षर वाले ईकारान्त ओर अकारान्त शब्द । जैसे — श्रीः, भू ।

(४) विंशति से लेकर नवतिः तक संख्यावाचक शब्द स्त्रीलिंग होते हैं । जैसे—त्रिंविशत्, चत्वार्विंशत् ।

३—नपुंसकलिंग

१— क्रिया पदों से बने हुऐ (ल्युट प्रत्ययान्त) नकारान्त शब्द और प्रायः अन्य शब्द जिनके अन्त में न या ला हो, नपुंसकलिंग होते हैं । जैसे – गमनम्, कमलम्, वसनम् आदि ।

(२) त्व, क्त, और ष्यत्र (य) प्रत्ययान्त शब्द । जैसे - महत्वम्, रक्तम् माधुर्यम् आदि ।

(३) अस से अन्त होने वाले शब्द जिनमें दो स्वर हों । जैसे—पयः, मनः तपः, आदि ।

वचन

संज्ञा और सर्वनाम के संख्या (गिनती) बतलाने वाले रूप वचन कहलाते हैं ।

संस्कृत में वचन तीन होते हैं – १) एक वचन, (२)द्विवचन, (३) बहु वचन ।

एक के लिए एक वचन, दो के लिए द्विवचन और दो से अधिक के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है । जैसे—सः (वह), तौ (वे दोनों), ते (वे सब) ।

संस्कृत में वचनों के प्रयोग में निम्न विशेषताएं हैं --

(१) एक–वचन

(१) जाति के अर्थ में एक वचन का प्रयोग होता है, परन्तु कभी–कभी बहुवचन भी होता है । जैसे–बालः चपलः भवति एवं (बालक जाति-चंचल होती है) । – अस्माभि; अत्र किं कर्तव्यम् (हम यहाँ क्या करेंगे)

(२) द्वयम्, द्वितयम्, युगम्, युग्मम् आदि शब्द द्विवचन बोध कराने पर तथा त्रयम्, त्रितयम् आदि शब्द तीन का बोध कराने पर भी एकवचन में प्रयुक्त होते हैं । जैसे—करद्वयम्, कन्या युगलम्. मुनित्रियम् ।

(३) वर्ग, गण, समुदाय, चतुष्टय आदि शब्द बहुवचन होते हुऐ भी

एकवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—अध्यापक वर्गः, छात्रगणः, जन समुदाय वेद चतुष्टम्।

(४) आस्पद, पद, पात्र. प्रमाण, भाजन और स्थान आदि शब्द जब 'विधेय' के रूप में आते हैं, तब वे नपुंसकलिंग एक वचन में होते हैं। जैसे—सज्जनाः विश्वास पात्राः भवन्ति— गुणः पूजा स्थानं भवन्ति।

(५) समाहार द्विगु बहुत्व बोधक होते हुए भी एक वचन में प्रत्युक्त होता है। जैसे— पंचपात्रम् (पाँच बर्तन)।

(२) द्विवचन

(१) नेत्र,श्रोत्र, हस्त, पाद वाचक शब्द प्रायः द्विवचन में प्रत्युक्त होते हैं। जैसे — अहम् नेत्राभ्यां पश्यामि— मैं आँखों से देखता हूँ।

(२) एक शेष द्वन्द समास से बने हुए शब्द एक पुरुष और एक स्त्री के बोधक होते हुए सदा द्विवचन पुल्लिग में प्रत्युक्त होते है। जैसे-—भ्रातरौ — भाई बहिन।

(३) बहुवचन

(१) दारा (पत्नी), अक्षत् (चावल), प्राण आदि शब्द पुल्लिग बहुवचन में ही आते हैं। जैसे –रामस्य दाराः (राम की पत्नी) अक्षतान् उरानय (चावलों को लाओ)

(२) प्रदेशों के नाम प्रायः बहुवचन में आते है। जैसे– अस्ति काश्मीरेषु विजयास्व्यं क्षेत्रम्।

(३) सिकता (बालू) सभा (वर्ष) अप (जल), वर्षा, दशा आदि शब्द नित्य बहुवचन और स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे – वर्षासु मेघाः गर्जन्ति (बरसात में बादल गरजते हैं)।

(४) कति (कितने) यति (जितने) तति (उतने) शब्द बहुवचन में आते हैं। जैसे – तत्र विद्यालये कति अध्यापकाः सन्ति ? (उस विद्यालय में कितने अध्यापक हैं)।

(५) जब एक शब्द का अर्थ कोई कोई या कुछ लोग होते हैं तब उसका प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे — एके इत्थं कथयन्ति (कुछ लोग ऐसा कहते हैं)

(६) आदर सूचित करने लिये एकवचन में भी बहुवचन का प्रयोग है। जैसे —गुरुवः समागताः (गुरूजी आ गये)।

(७) त्रि से लेकर अष्टादशन् तक के सभी संख्यावाचक शब्द बहुवचन में आते हैं। जैसे=नवतिः पुरुषाः।

पुरुष

कहने वाले, सुनने वाले और जिसके बारे में बात की जाती है, उसके लिए जो संज्ञा या सर्वनाम हों वे पुरुष कहलाते हैं।

पुरुष तीन प्रकार के होते हैं— (१) प्रथम पुरुष,(२) मध्यम पुरुष, (३) उत्तम पुरुष।

(१) **प्रथम पुरुष**—जिसके विषय में बात की जाय, उसके लिए प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) आता है।

प्रथम पुरुष के लिए तद् (वह) इदम्(यह) किम् किम् (कौन) यद् (जो) भवत् (आप) आदि सर्वनाम शब्द और सभी संज्ञा शब्द आते हैं। जैसे — सः (वह) तौ (वेदों को) ते (वे सब), रामः आदि।

(२) **मध्यम**— जिससे बात की जाती है, उसके लिए कहा गया शब्द मध्यम पुरुष कहलाता है जैसे— त्वम् (तुम, तू) आवाम् (तुम दोनों) वयम् (तुम सब)।

(३) **उत्तम पुरुष**— जो शब्द बात कहने वाले के लिऐ आते हैं, उन्हें उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे—अहम् (में), आवाम् (हम दोनों) वयम् (हम सब)।

विशेष—संस्कृत में उत्तम पुरुष के लिए 'अस्मद्', शब्द के रूप तथा मध्यम पुरुष के लिए 'युष्मद्' शब्द के रूप आते हैं।

(पुरुष चक्रम्)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सः (वह)	तौः (वे दोनों)	ते (वे सब)
	कः (कौन)	कौ (कौन दोनों)	के (कौन सब)
	सा (वह) स्त्री०	ते (वे दोनों)	ताः (वे सब)
	रामः (राम)	रामौ (दो राम)	रामाः (बहुत राम)

बालकः (लड़का) बालकौ (दो लड़के) बालकाः(बहुतसेलड़के)
भवान् (आप) भवन्तौ (आप दोनों) भवन्तः (आप सब)
मध्यम त्वम् (तू, तुम) युवाम् (तुम दोनों) यूयम् (तुम सब)
उत्तम अहम् (मैं) आवाम् (हम दोनों) वयम् (हम सब)

कारक विभक्ति

क्रिया से साक्षात् (सीधा) सम्बन्ध रखने वाले विभक्ति युक्त पदों को कारक कहते हैं। जैसे–''ऋषी ने स्कूल में पशपाल के लिए पेन से पत्र लिखा।''

ऊपर के वाक्य में 'लिखा' क्रिया है। ऋषी ने इसे किया है, इसका फल 'पत्र' पर पड़ा है पेन इसमें सहायक है 'स्कूल' इसका आधार है और 'यशपाल' इसका प्रयोजन है।

इस प्रकार ''ऋषी, पत्र, पेन स्कूल तथा यशपाल'' का क्रिया से साक्षात् (सीधा) सम्बन्ध है, अतः ये सब कारक हैं।

हिन्दी मे कारकों की संख्या आठ हैं लेकिन संस्कृत में इनमें से ६ को कारक कहा जाता है अर्थात् सम्बन्ध और सम्बोधन का क्रिया से सीधा सम्बन्ध न होने के कारण कारक नहीं कहा जाता हैं।

इस प्रकार संस्कृत में छः कारक (कर्त्ता, कर्म. करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण) तथा सात विभक्तियों (प्रथमा, द्वितीया, तृतीया चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी एवं सप्तमी) होती हैं।

हिन्दी में कारकों के चिन्ह निम्नलिखित हैं—

	विभक्ति	कारक	हिन्दी चिन्ह
१	प्रथमा	कर्ता	ने
२	द्वितीया	कर्म	को
३	तृतीया	करण	से, के, द्वारा
४	चतुर्थी	सम्प्रदान	के, लिए
५	पंचमी	अपादान	से
६	षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी

७	सप्तमी	अधिकरण	में, पर
८	सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अरे, ओ आदि।

संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों के रूपों में परिवर्तन इन्हीं लिंग, वचन और कारक के कारण ही होते हैं।

(शब्द रूप)

विकारी शब्दों के रूप, लिंग तथा अन्तिम स्वर या व्यजन के अनुसार वदलते हैं। लेकिन वदलने वाले शब्दों के साथ कर्त्ता, कर्म, करण आदि का सम्वन्ध दिखाने के लिए हिन्दी में 'ने, को, से' आद्रि शब्द जोड़े जाते हैं, किन्तु संस्कृत में यह सम्वन्ध शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम आदि) का रूप वदल कर ही प्रकट किया जाता है। जैसे– वालक ने=वालकः, वालक को—वालकम्, वालक से–वालकेन आदि। इसी प्रकार एक ही शब्द के कई रूप हो जाते हैं। अतः कुछ साधारण नियम दिवे जा रहे हैं–

(१) नपुंसकलिङ्ग के केवल अकारन्त तथा पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के सम्पूर्ण शब्दों के द्वितीया एकवचन के अन्त में 'म्' आता है।

(२) नपुंसकलिंग में प्रथमा और द्वितीया विभक्ति एक सी होती हैं।

(३) सर्वनाम, संख्यावाचक विशेषण और अकारान्त पुल्लिग शब्दों को छोड़ कर अन्य शब्दों में पंचमी तथा षष्ठी के एकवचन एक से होते हैं।

(४) सम्बोधन के द्विवचन और वहुवचन प्रायः प्रथमा के द्विवचन और वहुवचन के अनुकूल होते हैं।

(५) प्रायः चतुर्थी तथा पंचमी के वहुवचन एकसे होते हैं।

(६) षष्ठी के वहुवचन में अन्त में अधिकतर 'नाम्' या 'णाम' आता है।

(७) प्रायः प्रथमा और द्वितीया के द्विवचन, तृतीया, चतुर्थी तथा पंचमी के द्विवचन तथा षष्ठी तथा सप्तमी के द्विवचन एकसे होते हैं।

(८) सप्तमी के वहुवचन में अन्त में 'सु' या 'षु' का प्रयोन होता है।

(९) प्रायः सम्पूर्ण सर्वनामों के रूप एक समान ही चलते हैं।

विशेष–ऊपर के नियमों के अपवाद (विपरीत नियम) भी होते हैं।

रूपों को स्मरण करने का तरीका भी यह है कि पहले किसी एक शब्द या धातु को अच्छी तरह समझ कर याद कर लिया जाय, फिर अन्य शब्द को या धातुओं के रूपों को समझते समय पहले वाले रूपों से शब्द का क्या लिंग हैं और उसके अन्त में कौनसा स्वर या व्यंजन को अन्त में रखने वाले शब्द के अनुसार उसके रूप चला देने चाहिये। जैसे–हमें 'विद्यालय' शब्द का पंचमी के 'एकवचन' का रूप ज्ञात करना है अतः 'विद्यालयात्' हुआ।

(संज्ञा)

किसी के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे–हरिः, लता, वाक् आदि।

संज्ञा में तीन लिंग (पुल्लिग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग), तीनों वचन (एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन) तथा सम्पूर्ण विभक्तियां होती हैं और इनके कारण इनमें परिवर्तन होता हैं। जैसे–रामः, रामौ, रामाः आदि।

कुछ शब्द अपने अन्त में स्वर रखते हैं, इन्हें अजन्त या स्वरान्त कहते हैं। जैसे—राम, हरि, लता, गुरु आदि।

कुछ शब्दों के अन्त में व्यंजन होते हैं, इन्हें हलन्त या व्यंजनान्त कहते है। जैसे–दिश्, वाक् आदि।

स्वरान्त (अजन्त) संज्ञाओं में भी अलग-अलग नाम हैं। जिस शब्द के अन्त में जो स्वर रहता है उसी मे 'अन्त' जोड़ देने से उसका नाम बन जाता है। जैसे– 'राम' संज्ञा में अन्त में 'अकार' है, 'अकार' में 'अन्त' जोड़ देने से 'अकारान्त' हो गया। अतः 'राम' को हम अकारान्त संज्ञा कह सकते हैं।

स्वरान्त संज्ञाओं में प्रायः अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, ,ईकारान्त उकारान्त, ऊकारान्त और ऋकारान्त ही हुआ करती हैं।

एकारान्त, ऐकारान्त, ओकारान्त आदि संज्ञायें बहुत कम पायी जाती हैं।

सम्पूर्ण शब्दों को ६ भागों में बाँटा जाता है, जिन्हें षड्लिंग कहते हैं–
(१) अजन्त पुल्लिग, (२) हलन्त पुल्लिग, (३) अजन्त स्त्रीलिंग,

(४) हलन्त स्त्रीलिंग, (५) अजन्त नपुंसकलिंग, (६) हलन्त नपुंसकलिंग।

अजन्त (स्वरान्त) पुल्लिग शब्द

(अकारान्त पुल्लिग शब्दों के लिए संक्षिप्त रूप)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	अः	औ	आः
द्व०	अम्	,,	आन्
तृ०	एन, एण	आभ्याम्	ऐ
च०	आय	,,	एभ्यः
प०	आत्	,,	,,
ष०	अस्य	अयोः	आनाम्, आणाम्
स०	ए	,,	एषु
सम०	अ	औ	आः

विशेष—र् और ष् के बाद न का ण हो जाता है, यदि बीच में स्वर ह, य, व, र, कवर्ग, पवर्ग, न् बीच में हो तो भी। इन शब्दों में यह नियम लगेगा—राम, ईश्वर, नृप, ग्राम, पुत्र, नर, सूर्य, चन्द्र, शिष्य। अतः इनमें तृतीया एकवचन में 'एण' और षष्ठी बहुवचन में 'आजाम्' लगेगा।

निर्देश—सभी अकारन्त पुल्लिग शब्दों का अन्तिम 'अ' हटाकर उसमें उपयुक्त प्रत्यय (संक्षिप्त रूप) जोड़ने से, इनके रूप सुगमता से बन जाते हैं—

'राम' अकारान्त पुल्लिग के साथ सक्षिप्त रूप जोड़ने पर—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	राम+अ	राम+औ	राम+आः
द्व०	राम+अम्	राम+औ	राम+आन्
तृ०	राम+एण	राम+आभ्याम्	राम+ऐः
च०	राम+आय	राम+आभ्याम्	राम+एभ्यः
प०	राम+आत्	राम+आभ्याम्	राम+एभ्यः
ष०	राम+अस्य	राम+अयोः	राम+आणाम्
स०	राम+ए	राम+अयोः	राम+एषु
सम०	हे राम+अ	हे+राम+औ	हे रासे+आः

मिलाकर रखने पर 'राम' शब्द के रूप—

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	राम	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

विशेष—निम्न अकारान्त शब्दों के रूप भी "राम" की तरह चलते हैं। (केवल 'र' और 'ष' नहीं रखने वाले शब्दों के तृतीया एक वचन तथा षष्ठी बहुवचन में 'ण' के स्थान पर 'न' ही रहता है। जैसे—बालक शब्द का तृतीया एक वचन में "बालकेन" तथा षष्ठी बहुवचन में "बालकानाम्" होता है।)

मनुष्यः	=	आदमी	पुत्रः	=	पुत्र	जनकः	=	पिता
चतुरः	=	चतुर	गजः	=	हाथी	कुक्कुरः	=	कुत्ता
सर्पः	=	साँप	मीनः	=	मछली	पवनः	=	हवा
विद्यालयः	=	स्कूल	नृपः	=	राजा	मूर्खः	=	मूर्ख
अश्वः	=	घोड़ा	मूषकः	=	चूहा	हंसः	=	हंस
सूर्यः	=	सूर्य	पर्वतः	=	पहाड़	शिक्षकः	=	अध्यापक
छात्रः	=	विद्यार्थी	खरः	=	गदहा	सिंहः	=	शेर
शुकः	=	तोता	खगः	=	पक्षी	चन्द्रः	=	चन्द्रमा
देवः	=	देवता	ग्रामः	=	गाँव	नखः	=	नाखून आदि।

इकारान्त-हरि (भगवान) शब्द

एक०	द्वि०	बहु०
हरि	हरी	हरय
हरिम्	,,	हरीन्

इकारान्त के संक्षिप्त रूप

विभक्ति	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	इ	ई	अयः
द्वि०	इम्	,,	ईन्

हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः
हरये	,,	हरिभ्यः	च०	अये	,,	इभ्यः
हरेः	,,	,,	पं०	एः	,,	,,
,,	हर्योः	हरीणाम्	ष०	,,	योः	ईनाम्
हरौ	,,	हरिषु	स०	औ	,,	इषु
हे हरे	हे हरी	हे हरयः	सं०	ए	ई	अयः

निर्देश—सभी इकारान्त पुल्लिग शब्दों का अन्तिम 'इ' हटाकर उनमें प्रत्यय (संक्षिप्त रूप) जोड़ देने से इनके रूप सुगमता से बन जाते हैं।

निम्न इकारान्त शब्दों के रूप भी 'हरि' की तरह ही चलते हैं। (केवल 'र' तथा 'ष' नहीं रखने वाले शब्दों के तृतीया एक० तथा बहु० में 'ण' के स्थान पर 'न' ही रहेगा।

मुनिः	=	तपस्वी	कपिः	=	बन्दर	ऋषिः	=	ऋषि
गिरिः	=	पर्वत	अग्निः	=	आग	रविः	=	सूर्य
निधिः	=	खजाना	कविः	=	कवि	भूपतिः	=	राजा
अतिथिः	=	मेहमान	यतिः	=	सन्यासी	अरिः	=	शत्रु आदि।

अपवाद—यद्यपि सभी इकारान्त पुल्लिग शब्दों के रूप 'हरि' की तरह चलते हैं, किन्तु 'पति' और 'सखि' के रूप निम्न प्रकार से चलते हैं—

इकारान्त पुल्लिग—सखि (मित्र) शब्द (अपवाद) (पति)

प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	,,	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	,,	सखिभ्यः
पंचमी	सख्युः	,,	,,
षष्ठी	,,	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	,,	सखिषु
सम्बोधन	हे सखा	हे सखायौ	हे सखायः

उकारान्त पुं०—गुरू (अध्यापक) शब्द **उकारान्त के संक्षिप्त रूप**

गुरुः	गुरू	गुरवः	प्र०	उः	उ	अवः

गुरुम्	,,	गुरून्	द्वि०	उम्	,,	ऊन्
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः	तृ०	उना	उभ्याम्	उभिः
गुरवे	,,	गुरुभ्यः	च०	अवे	,,	उभ्यः
गुरोः	,,	,,	पं०	ओः	,,	,,
,,	गुर्वो	गुरूणाम्	ष०	,,	वोः	ऊनाम्
गुरौ	,,	गुरुषु	स०	औ	,,	उषु
हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः	सं०	ओ	ऊ	अवः

निर्देश—सभी उकारान्त पुल्लिग शब्दों का अन्तिम 'उ' निकाल कर उनमें प्रत्यय (संक्षिप्त रूप) जोड़ देने से इनके रूप सुगमता से बन जाते हैं।

निम्न उकारान्त पुल्लिग शब्दों के रूप 'गुरु' के समान ही चलते हैं। (केवल 'र' ओर 'ष' रखने वाले शब्दों में तृ० एक० तथा षष्ठी बहु० में 'न' की जगह 'ण' रहेगा)।

भानुः	= सूर्य	शिशुः	= बालक	साधुः	= सज्जन
वायुः	= हवा	पशुः	= जानवर	तरुः	= पेड़
इन्दुः	= चन्द्रमा	प्रभुः	= भगवान	मृदुः	= कोमल
ऋतुः	= मौसम	बाहुः	= भुजा	मृत्युः	= मौत आदि।

पुं०—ऋकारान्त—कर्तृ (करने वाला) शब्द पुं० ऋकारान्त के सं० रूप

कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	प्र०	आ	आरौ	आरः
कर्तारम्	,,	कर्तॄन्	द्वि०	आरम	,,	ऋन्
कर्त्ता	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	तृ०	रा	ऋभ्याम्	ऋभिः
कर्त्रे	,,	कर्तृभ्यः	च०	रे	,,	ऋभ्यः
कर्तुः	,,	,,	पं०	उः	,,	,,
,,	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्	ष०	,,	रोः	ऋणाम्
कर्तरि	,,	कर्तृषु	स०	अरि	,,	ऋषु
हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः	सं०	अः	आरौ	आरः

निर्देश—सभी ऋकारान्त पुं० शब्दों का अन्तिम 'ऋ' हटाकर उनमें प्रत्यय (संक्षिप्त रूप) जोड़ देने से इनके रूप सुगमता से बन जाते हैं।

इसी प्रकार अन्य ऋकारान्त शब्दों के रूप 'कर्तृ' के समान चलेंगे।

दातृ = दाता श्रोतृ = सुनने वाला भर्तृ = स्वामी
नेतृ = नेता धातृ = ब्रह्मा सवितृ = सूर्य आदि।

(पिता) पितृ—ऋकारान्त पुं० शब्द

				संक्षिप्त रूप		
पिता	पितरौ	पितरः	प्र०	आ	अरौ	अरः
पितरम्	,,	पितॄन्	द्वि०	अरम्	,,	ऋन्
पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	तृ०	शेष 'कर्तृवत्' की तरह		
पित्रे	,,	पितृभ्यः	च०			
पितुः	,,	,,	पं०			
,,	पित्रोः	पितॄणाम्	ष०			
पितरि	,,	पितृषु	स०			
हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः	सं०			

विशेष—इसी प्रकार भ्रातृ (भाई), नृ (मनुष्य), जामातृ (दामाद), देवृ (देवर) आदि शब्दों के रूप 'पितृ' के समान चलेंगे।

ओकारान्त—गो (गाय या बैल) पुं० स्त्री०

गोः	गावौ	गावः	प्र०
गाम्	,,	गाः	द्वि०
गवा	गोभ्याम्	गोभिः	तृ०
गवे	,,	गोभ्यः	च०
गोः	,,	,,	पं०
,,	गवोः	गवाम्	ष०
गवि	,,	गोषु	स०
हे गौः	हे गावौ	हे गावः	सं०

सूचना

साधारणतया (द्यो शब्द को छोड़कर) अन्य शब्द गो शब्द के तुल्य नहीं चलता।

(हलन्त (व्यंजनान्त) पुल्लिग)

तकारान्त—भूभृत् (राजा, पहाड़) शब्द

भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः	प्र०	त्	तौ	तः
भूभृतम्	,,	,,	द्वि०	तम्	,,	,,

भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः	तृ०	ता	द्भ्याम्	द्भिः
भूभृते	,,	भूभृद्भ्यः	च०	ते	द्भ्याम्	द्भ्यः
भूभृतः	,,	,,	पं०	तः	,,	,,
,,	भूभृतोः	भूभृताम्	ष०	,,	तोः	ताम्
भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु	स०	ति	,,	त्सु
हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृतः	सं०	त्	तौ	तः

विशेष—महीभृत् (राजा, पर्वत), परभृत् (कोयल), मरुत् (वायु), हरित्, इन्द्रजित्, शशभृत् (चन्द्रमा) आदि तकारान्त पुल्लिग शब्दों के रूप 'भूभृत्' के समान ही होते हैं।

तकारान्त—भगवत् (भगवान) शब्द पुं० संक्षिप्त रूप

भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः	प्र०	आन्	अन्तौ	अन्तः
भगवन्तम्	,,	भगवतः	द्वि०	अन्तम्	,,	अतः
भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः	तृ०	ता	द्भ्याम्	द्भिः
भगवते	,,	भगवद्भ्यः	च०	ते	,,	द्भ्यः
भगवतः	,,	,,	पं०	तः	,,	,,
,,	भगवतोः	भगवताम्	ष०	,,	तोः	ताम्
भगवति	,,	भगवत्सु	स०	ति	,,	त्सु
हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः	सं०	अन्	अन्तौ	अन्तः

विशेष—जिन शब्दों के अन्त में 'वत् या मत्' होता है उन सबके रूप प्रायः इसी प्रकार चलते हैं। जैसे—

भवत्	= आप	गतवत्	= गया हुआ	गुणवत्	= गुणी
श्रीमत्	= श्रीमान्	धनवत्	= धनी	रूपवत्	= सुन्दर
बुद्धिमत्	= बुद्धिमान	विद्यावत्	= विद्वान	ज्ञानवत्	= ज्ञानी

भवत्, श्रीमत् आदि शब्दों का स्त्रीलिंग भवती, श्रीमती आदि होते हैं। इनके रूप 'नदी' की तरह चलते हैं।

इन्नत पुं०—करिन् (हाथी) शब्द संक्षिप्त रूप

करी	करिणौ	करिणः	प्र०	ई	इनौ	इनः

Fanardan upadhyay

करिणम्	करिणौ	करिणः	द्वि०	इनम्	इनौ	इनः
करिणा	करिभ्याम्	करिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः
करिणे	,,	करिभ्यः	च०	इने	,,	इभ्यः
करिणः	,,	,,	पं०	इनः	,,	,,
,,	करिणोः	करिणाम्	ष०	,,	इनोः	इनाम्
करिणि	,,	करिषु	स०	इनि	,,	इषु
हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः	सं०	इन्	इनौ	इनः

विशेष - निम्न शब्दों के रूप भी इसी प्रकार चलते हैं—

धनिन्	= धनी	गुणिन्	= गुणी	पक्षिन्	= पक्षी
मन्त्रीन्	= मन्त्री	दुःखिन्	= दुःखी	ज्ञानिन्	= ज्ञानी
तपस्विन्	= तपस्वी	स्वामिन्	= मालिक	साक्षिन्	= गवाह

स्त्रीलिंग में 'इन्' अन्त में रखने वाले शब्दों के अन्त में 'इनी' हो जाता है और उसके रूप 'नदी' की तरह चलते हैं, अतः 'धनिनी, 'मानिनी' आदि ।

अन्नन्त पुं —आत्मन् (आत्मा) शब्द संक्षिप्त रूप

आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः	प्र०	आ	आनौ	आनः
आत्मानम्	,,	आत्मनः	द्वि०	आनम्	,,	अनः
आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः	तृ०	अना	अभ्याम्	अभिः
आत्मने	,,	आत्मभ्यः	च०	अने	,,	अभ्यः
आत्मनः	,,	,,	पं०	अनः	,,	,,
,,	आत्मनोः	आत्मनाम्	ष०	,,	अनोः	अनाम्
आत्मनि	,,	आत्मसु	स०	अनि	,,	असु
हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः	सं०	अन्	आनौ	आनः

विशेष—नकारान्त शब्द जिनके नकार से पूर्व 'म' या 'व' से युक्त वर्ण हों उनके रूप 'आत्मन्' के समान होंगे । जैसे —बह्मन्, अध्वन्, यज्वन्, द्विजमन् आदि ।

अन्नन्त पुं०—राजन् (राजा) शब्द

राजा	राजानौ	राजानः	प्र०	आ	आनौ	आनः

राजानम्	राजानौ	राज्ञः	द्वि०	आनम्	आनौ	नः
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	तृ०	ना	अभ्याम्	अभिः
राज्ञे	,,	राजभ्यः	च०	ने	,,	अभ्यः
राज्ञः	,,	,,	पं०	नः	,,	,,
,,	राज्ञोः	राज्ञाम्	ष०	,,	नोः	नाम्
राज्ञि, राजनि	,,	राजसु	स०	नि, अनि	,,	असु
हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः	सं०	अन्	आनौ	आनः

(अतिरिक्त) सकारान्त—विद्वस् (विद्वान्) शब्द

विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः	प्र०	
विद्वांसम्	,,	विदुषः	द्वि०	सूचना–साधारणतया
विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः	तृ०	अन्य किसी शब्द के रूप
विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः	च०	विद्वस् के तुल्य नहीं चलते
विदुषः	,,	,,	पं०	हैं।
,,	विदुषोः	विदुषाम्	ष०	
विदुषि	,,	विद्वत्सु	स०	
हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः	सं०	

(स्वरान्त (अजन्त) स्त्रीलिंग शब्द)

रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्री० संक्षिप्त रूप—आरान्त स्त्री०

रमा	रमे	रमाः	प्र०	आ	ए	आः
रामाम्	,,	,,	द्वि०	आम्	,,	,,
रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः	तृ०	अया	आभ्याम्	आभिः
रमायै	,,	रमाभ्यः	च०	आयैः	,,	आभ्यः
रमायाः	,,	,,	पं०	आयाः	,,	,,
,,	रमयोः	रमाणाम्	ष०	,,	अयोः	आनाम
रमायाम्	,,	रमासु	स०	आयाम्	,,	आसु
हे रमे	हे रमे	रे रमाः	सं०	ए	ए	आः

निर्देश—आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों का अन्तिम 'आ' हटाकर उनमें प्रत्यय (संक्षिप्त रूप) जोड़ देने से इनके रूप सुगमता से बन जाते हैं।

लता, विद्या, कथा, कला आशा, प्रभा, चिन्ता, लज्जा, भार्या, प्रजा, गंगा, सेवा, बालिका, देवता, कन्या, आदि के रूप 'रमा' के समान ही चलते हैं।

इकारान्त—मति (बुद्धि) शब्द संक्षिप्त रुप

मतिः	मती	मतय	प्र०	इ	ई	अयः
मतिम्	,,	मती	द्वि०	इम्	,,	ईः
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	तृ०	या	इभ्याम्	इभिः
मत्यै,मतये	,;	मतिभ्यः	च०	यै,अये	,,	इभ्यः
मत्याः,मतेः	,,	,,	पं०	याः,एः	,,	,,
,, ,,	मत्योः	मतीनाम्	ष०	,,	योः	ईनाम्
मत्याम्,मतौ	,,	मतिषु	स०	याम्,औ	,,	इषु
हे मते	हे मती	हे मतयः	सं०	ए	ई	अयः

निर्देश—इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों का अतिन्म 'इ' हटाकर उनमें प्रत्यय (संक्षिप्त रुप) जोड़ने से इनके रूप बासानी से बन जाते हैं—

रीति, जाति कीर्ति, गति, बुद्धि, भक्ति, प्रीति, स्मृति, भूमि, रुचि, अवनि, नीति, रात्रि, ओषधि धूलि आदि शब्दों के रूप इकारान्त 'मति' के समान चलते हैं।

ईकारान्त—नदी (नदी) स्त्री० संक्षिप्त रुप

नदी	नद्यौ	नद्यः	प्र०	ई	यौ	यः
नदीम्	,,	नदीः	द्वि०	ईम	,,	ईः
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः	तृ०	या	ईभ्याम्	ईभिः
नद्यै	,,	नदीभ्यः	च०	यै	,,	ईभ्यः
नद्याः	,,	,,	पं०	याः	,,	,,
,,	नद्योः	नदीनाम्	ष०	,,	योः	ईनाम्
नद्याम्	,,	नदीषु	स०	याम्	,,	ईषु
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः	सं०	इ	यौ	यः

निर्देश—ईकारान्त स्त्री० शब्दों की अन्तिम 'ई' हटाकर उनमें प्रत्यय (संक्षिप्त रुप) जोड़ने से इनके रुप सुगमता से बन जाते हैं—

पृथ्वी, जननी, दासी, गौरी, पत्नी, मही, देवी, कुमारी सखी, रजनी, सुन्दरी, सिंही, मृगी, नगरी आदि शब्दों के रूप ईकारान्त नदी के समान चलेंगे।

सूचना—लक्ष्मी, श्री, स्त्री आदि शब्दों के रूप कुछ भिन्न होते हैं।

उकारान्त—धेनु (गाय) शब्द संक्षिप्त रूप

धेनुः	धेनू	धेनवः	प्र०	उः	ऊ	ऊवः
धेनुम्	,,	धेनूः	द्वि०	उम्	,,	ऊः
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृ०	वा	उभ्याम्	उभिः
धेन्वै,धेनवे	,,	धेनुभ्यः	च०	वै,उवे	,,	उभ्यः
धेन्वा-,धेनोः	,,	,,	प०	वाः,ओः	,,	,,
,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्	ष०	,, ,,	वोः	ऊनाम्
धेन्वाम्,धेनौ	,,	धेनुषु	स०	वाम्,औ	,,	उषु
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः	स०	ओ	ऊ	अवः

निर्देश—उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों का अन्तिम (उ) हटाकर उनमें प्रत्यय (संक्षिप्त रुप) जोड़ने से इनके रूप सुगमता से बन जाते हैं।

निम्न शब्दो के रूप (धेनु) की तरह चलेंगे—

तनुः = शरीर रज्जुः = रस्सी हनुः = ठोड़ी

रेणुः = धूल चञ्चुः = चोंच उडुः = नक्षत्र

ऊकारान्त—वधू (बहू) स्त्री संक्षिप्त रूप

वधूः	वध्वौ	वध्वः	प्र०	ऊः	वौ	वः
वधूम्	,,	वधूः	द्वि०	ऊम्	,,	ऊः
वध्वा	वधुभ्याम्	वधूभिः	तृ०	वा	ऊभ्याम्	ऊभिः
वध्वै	,,	वधूभ्यः	च०	वै	,,	ऊभ्यः
वध्वाः	,,	,,	पं०	वा	,,	,,
,,	वध्वोः	वधूनाम्	ष०	,,	वोः	ऊनाम्
वध्वाम्	,,	वधूषु	स०	वाम्	,,	ऊषु
हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः	सं०	उ	वौ	वः

विशेष—निम्न शब्दों के रूप 'वधू' की तरह चलेंगे।

चमूः = सेना तनूः = शरीर जम्बूः = जामुन
श्वश्रूः = सास श्मश्रूः = दाढ़ी

(हलन्त (व्यंजनान्त) स्त्रीलिंग)

चकारान्त—वाच् (वाणी) शब्द				संक्षिप्त रूप		
वाक्–ग्	वाचौ	वाचः	प्र०	क्–ग्	चौ	चः
वाचम्	,,	,,	द्वि०	चम्	,,	,,
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	तृ०	चा	भ्याम्	भिः
वाचे	,,	वाग्भ्यः	च०	चे	,,	भ्यः
वाचः	,,	,,	पं०	चः	,,	,,
,,	वाचोः	वाचाम्	ष०	,,	चोः	चाम्
वाचि	,,	वाक्षु	स०	चि	,,	क्षु
हे वाक्–ग्	वाचौ	वाचः	सं०	क्,ग्	चौ	चः

निर्देश—चकारान्त स्त्री० शब्दों को अन्तिम "च्" हटाकर उनमें प्रत्यय (संक्षिप्त रूप) जोड़ने से इनके रूप आसानी से बन जाते हैं।

शुच् (शोक), रुच् (कान्ति), सृच् (माला), ऋच् (ऋचा) आदि के रूप "वाच्" के समान चलेंगे।

तकारान्त—सरित् (नदी) शब्द				संक्षिप्त रूप		
सरित्	सरितौ	सरितः	प्र०	अत्	अतौ	अतः
सरितम्	,,	,,	द्वि०	अतम्	,,	,,
सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः	तृ०	अता	अद्भ्याम्	अदभिः
सरिते	,,	सरिद्भ्यः	च०	अते	,,	अद्भ्यः
सरितः	,,	,,	पं०	अतः	,,	,,
,,	सरितोः	सरिताम्	ष०	,,	अतौ	अताम्
सरिति	,,	सरित्सु	स०	अति	,,	अत्सु
हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः	सं०	अत्	अतौ	अतः

विशेष—विद्युत् (बिजली), तडित् (बिजली), योषित् (स्त्री) आदि तकारान्त शब्दों के रूप "सरित्" के समान होंगे।

(नपुंसकलिंग)

नपुंसकलिंग अकारान्त शब्दों के रूप प्रथमा तथा द्वितीया को छोड़कर शेष सब विभक्तियों में अकारान्त पुल्लिग राम शब्द के समान होते हैं तथा प्रथमा एवम् द्वितीया में सभी शब्दों के रूप समान होते हैं ।

अकारान्त – गृह (घर) नपुं० संक्षिप्त रूप

गृहम्	गृहे	गृहाणि	प्र०	अम्	ए	आनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
गृहेण	गृहभ्याम्	गृहैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः
गृहाय	,,	गृहेभ्यः	च०	आय	,,	एभ्यः
गृहात्	,,	,,	पं०	आत्	,,	,,
गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्	ष०	अस्य	अयोः	आनाम्
गृहे	,,	गृहेषु	स०	ए	,,	एषु
हे गृह	हे गृहे	हे गृहाणि	सं०	अ	ए	आनि

विशेष—जल, फल, दल, बल, वन, पत्र, पुष्प, पुस्तक, नेत्र, सुख, कमल, धन, मित्र आदि के रूप नपुं० अकारान्त (गृह) के समान चलेंगे ।

इकारान्त—वारि (जल) नपुं० संक्षिप्त रूप

वारि	वारिणी	वारिणि	प्र०	इ	इनी	ईनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः
वारिणे	,,	वारिभ्यः	च०	इने	,,	इभ्यः
वारिणः	,,	,,	पं०	इनः	,,	,,
,,	वारिणोः	वारीणाम्	ष०	,,	इनोः	ईनाम्
वारिणि	,,	वारिषु	स०	इनि	,,	इषु
हे वारि, वारे	हे वारिणी	हे वारीणि	सं०	इ,ए	इनी	ईनि

इकारान्त—दधि (दही) (अपवाद) संक्षिप्त रूप

दधि	दधिनी	दधीनि	प्र०	इ	इनी	ईनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,

दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः	तृ०	ना	इभ्याम्	इभिः
दध्ने	,,	दधिभ्यः	च०	ने	,,	इभ्यः
दध्नः	,,	,,	पं०	नः	,,	,,
,,	दध्नोः	दध्नाम्	ष०	,,	नोः	नाम्
दधि, दधनि	,,	दधिषु	स०	नि, अनि	,,	इषु
हे दधि दधे	दधिनी	दधीनि	सं०	इ, ए	इनी	ईनि

नपुं० उकारान्त—मधु (शहद) शब्द संक्षिप्त रूप

मधु	मधुनी	मधूनि	प्र०	उ	उनी	ऊनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,	,,
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	तृ०	उना	उभ्याम्	उभिः
मधुने	,,	मधुभ्यः	च०	उने	,,	उभ्यः
मधुनः	,,	,,	पं०	उनः	,,	,,
,,	मधुनोः	मधूनाम्	ष०	,,	उनोः	ऊनाम्
मधुनि	,,	मधुषु	स०	उनि	,,	उषु
हे मधु, मधो	हे मधुनी	हे मधूनि	सं०	उ, ओ	उनी	ऊनि

विशेष—वस्त्रु, वसु, अश्रु, जानु, जतु, सानु आदि के शब्दों के रूप नपुं० 'मधु' के समान चलते हैं।

(हलन्त—नपुंसकलिंग शब्द)

सकारान्त—पयस (दूध, जल) शब्द संक्षिप्त रूप

पयः	पयसी	पयांसि	प्र०	अ	असी	आंसि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः	तृ०	असा	ओभ्याम्	ओभिः
पयसे	,,	पयोभ्यः	च०	असे	,,	ओभ्यः
पयसः	,,	,,	पं०	असः	,,	,,
,,	पयसोः	पयसाम्	ष०	,,	असोः	असाम्
पयसि	,,	पयस्सु, पयःसु	स०	असि	,,	अःसु, अस्सु
हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि	सं०	अः	असी	आंसि

निर्देश—सकारान्त नपुं० शब्दों का अन्तिम 'स' हटाकर उनमें प्रत्यय (संक्षिप्त रूप) जोड़ने से उनके रूप सुगमता से बन जाते हैं।

तपस् (तपस्या) वचस् (वाणी) नभस् (आकाश) रजस् (धूल) रक्षस् (राक्षस्) आदि के रूप 'पयस्' की तरह चलेंगे।

नकारान्त—शर्मन (कल्याण, सुख) संक्षिप्त रूप

शर्म	शर्मणी	शर्माणि	प्र०	अ	अनी	आनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभिः	तृ०	अना	अभ्याम्	अभिः
शर्मणे	,,	शर्मभ्यः	च०	अने	,,	अभयः
शर्मणः	,,	,,	पं०	अनः	,,	,,
,,	शर्मणोः	शर्मणाम्	ष०	,,	अनोः	अनाम्
शर्मणि	,,	शर्मसु	स०	अनि	,,	असु
हे शर्म, शर्मन्	हे शर्मणी	हे शर्माणि	सं०	अ, अन्	आनी	आनि

नकारान्त—जगत् (संसार) शब्द संक्षिप्त रूप

जगत्	जगती	जगन्ति	प्र०	अत्	अती	अन्ति
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः	तृ०	अता	अद्भ्याम्	अद्भिः
जगते	,,	जगद्भ्यः	च०	अते	,,	अद्भ्यः
जगतः	,,	,,	पं०	अतः	,,	,,
,,	जगतोः	जगताम्	ष०	,,	अतोः	अताम्
जगति	,,	जगसु	स०	अनि	,,	असु
हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति	सं०	अत्	अती	अन्ति

विशेष—गच्छत्, ददत्, पठन्, श्रीमत्, आदि शब्दों के रूप नपुंसक लिंग में "जगत्" के समान होते हैं।

नकारान्त—नामन् (नाम) शब्द संक्षिप्त रूप

नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि	प्र०	अ	नी, अनी	आनि
,,	,, ,,	,,	द्वि०	,,	,, ,,	,,
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः	तृ०	ना	अभ्याम्	अभिः
नाम्ने	,,	नामभ्यः	च०	ने	,,	अभ्यः

नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः	पं०	नः	अभ्याम्	अभ्यः
नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्	ष०	,,	नोः	नाम्
नाम्नि,नामनि	,,	नामसु	स०	नि,अन	,,	असु
हे नान,नामन्	हे नामी,नामनी	हे नामानि	सं०	अ,अन्	आनी	जानि

विशेष—व्योनन्, आकाश, प्रेमन् (प्रेम) आदि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार के होते हैं।

सकारान्त (मनस्) मन शब्द — संक्षिप्त रूप

मनः	मनसी	मनांसि	प्र०	अः	असी	आंसि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः	तृ०	असा	ओभ्याम्	ओभिः
मनसे	,,	मनोभ्यः	च०	असे	,,	ओभ्यः
मनसः	,,	,,	पं०	असः	,,	,,
,,	मनसोः	मनसाम्	ष०	,,	असोः	असाम्
मनसि	,,	मनःसु, स्सु	स०	असि	,,	अःसु, अस्सु
हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि	सं०	अः	असी	आंसि

(सर्वनाम)

जो शब्द संज्ञाओं के स्थान पर प्रयोग होते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे—सः, किम्, अस्मद् आदि।

सर्वनाम शब्दों के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं, और इनमें सम्बोधन नहीं होता, तथा नपुंसकलिंग में प्रथमा, द्वितीया के अतिरिक्त शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिंग के समान होते हैं। प्रयोग के अनुसार कभी-कभी विशेषण भी हो जाते हैं।

पुल्लिंग–सर्व (सब) — स्त्रीलिंग–सर्व (सब)

सर्वः	सर्वौ	सर्वे	प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	द्वि०	सर्वान्	सर्वे	सर्वाः
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	तृ०	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	च०	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम	सर्वेभ्यः	पं०	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः

सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	ष०	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सर्वेस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु	स०	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

नपुंसकलिंग—सर्व (सब)

प्रथमा—	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया—	,,	,,	,,

शेष विभक्तियाँ (सर्व) पुल्लिग के समान होती हैं।

पुल्लिग—पूर्व (पूर्व दिशा—पहले) स्त्रीलिंग—पूर्व

पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे	प्र०	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
पूर्वम्	,,	पूर्वान्	द्वि०	पूर्वाम्	,,	,,
पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः	तृ०	पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः
पूर्वस्मै	,,	पूर्वेभ्यः	च०	पूर्वस्यै	,,	पूर्वाभ्यः
पूर्वस्मात्	,,	,,	प०	पूर्वस्याः	,,	,,
पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्	स०	,,	पूर्वयोः	पूर्वासाम्
पूर्वस्मिन्	,,	पूर्वेषु	स०	पूर्वस्याम्	,,	पूर्वासु

नपुंसकलिंग—पूर्व

प्रथमा—	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
द्वितीया—	,,	,,	,,

शेष पुल्लिग शब्द 'पूर्व' के समान होते हैं।

तत् (वह)—पुल्लिग त्यो

प्रथमा—	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)
द्वितीया—	तम् (उसको)	तौ (उन दोनों को)	तान् (उनको)
तृतीया—	तेन (उससे, उसके द्वारा)	ताभ्याम् (उन दोनों के द्वारा)	तैः (उनके द्वारा)
चतुर्थी—	तस्मै (उसके लिये)	ताभ्याम् (उन दोनों के लिये)	तेभ्यः (उनके लिये)

पंचमी—तस्मात् (उससे)	ताभ्याम् (उन दोनों से)	तेभ्यः (उनसे)
षष्ठी—तस्य (उसका)	तयोः (उन दोनों का)	तेषाम् (उनका)
सप्तमी—तस्मिन् (उसमें)	तयोः (उन दोनों में)	तेषु (उनमें)

तत् (वह)-स्त्रीलिंग त्यो

				नपुंसकलिंग तत्-(वह)		
सा	ते	ताः	प्र०	तद्	ते	तानि
ताम्	ते	ताः	द्वि०	तद्	ते	तानि
तया	ताभ्याम्	ताभिः	तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	च०	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	प०	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
तस्याः	तयोः	तासाम्	ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्
तस्याम्	तयोः	तासु	स०	तस्मिन्	तयोः	तेषु

विशेष—तत् शब्द के रूपों से पहले 'ए' लगा देने से एतत् (वह) के रूप हो जाते हैं। जैसेः— एषः, एतौ ऐत आदि।

यत् (जो) पुल्लिंग यो (जो)

प्रथमा—यः (जो)	यौ (जो दोनों)	ये (जो सब)
द्वितीया—यम् (जिसको)	यौ (जिन दोनों को)	यान् (जिन सबको)
तृतीया—येन (जिसके द्वारा)	याभ्याम् (जिन दो के द्वारा)	यैः (जिनके द्वारा)
चतुर्थी—यस्मै (जिसके लिये)	याभ्याम् (जिन दोनों के लिये)	येभ्यः (जिनके लिये)
पंचमी—यस्मात् (जिससे)	याभ्याम् (जिन दोनों से)	येभ्यः (जिन सबसे)

षष्ठी—	यस्य	ययोः	येषाम्
	(जिसका)	(जिन दोनों का)	(जिन सबका)
सप्तमी—	यस्मिन्	ययोः	येषु
	(जिसमें)	(जिन दोनों में)	(जिन सबमें)

यत् (जो)-स्त्रीलिंग

या	ये	याः	प्र०
याम्	ये	याः	द्वि०
यया	याभ्याम	याभिः	तृ०
यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः	च०
यस्याः	याभ्याम	याभ्यः	पं०
यस्याः	ययोः	यासाम्	ष०
यस्याम्	ययोः	यासु	स०

यत् (जो)-नपुंसकलिंग

यत्, यद्	ये	यानि
यत्, यद्,	ये	यानि
येनः	याभ्याम्	यैः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
यस्य	ययोः	येषाम्
यस्मिन्	ययोः	येषु

किम् (कौन) पुलिंग

प्रथमा	कः	कौ
	(कौन)	(कौन दो)
द्वितीया	कम्	कौ
	(किसको)	(किन दो को)
तृतीया	केन	काभ्याम्
	(किसके द्वारा)	(किन दोनों के द्वारा)
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्
	(किसके लिये)	(किन दो के लिये)
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्
	(किससे)	(किन दो से)
षष्ठी	कस्य	कयोः
	(किसका)	(किन दोनों का)
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः
	(किसमें)	(किन दोनों में)

	के	(कौन सब)
	कान्	(किन सब को)
	कैः	(किनके द्वारा)
	केभ्यः	(किनके लिये)
	केभ्यः	(किन से)
	केषाम्	(किन सबका)
	केषु	(किनमें)

किम् (कौन) स्त्रीलिंग

का	के	काः	प्र०
काम्	के	काः	द्वि०
कया	काभ्याम्	काभिः	तृ०

किम् (कौन) नपुंसकलिंग

किम्	के	कानि
किम्	के	कानि
केन	काभ्याम्	कैः

कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः	च०	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
कस्या	काभ्याम्	काभ्यः	पं०	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
कस्याः	कयोः	कासाम्	ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
कस्याम्	कयोः	कासु	स०	कस्मिन्	कयोः	केषु

इदम् (यह)-पुल्लिंग

प्रथम	अयम् (यह)	इमौ (ये दोनों)	इमे (ये सब)
द्वितीया	इमम् (इसको)	इमौ (इन दोनों की)	इमान् (इन सबको)
तृतीया	अनेन (इसके द्वारा)	आभ्याम् (इन दो के द्वारा)	एभिः (इन सबके द्वारा)
चतुर्थी	अस्मै (इसके लिये)	आभ्याम् (इन दो के लिये)	एभ्यः (इन सबके लिये)
पंचमी	अस्मात् (इससे)	आभ्याम् (इन दोनों से)	एभ्यः (इन सबसे)
षष्ठी	अस्य (इसका)	अनयोः (इन दोनों का)	एषाम् (इन सबका)
सप्तमी	अस्मिन् (इसमें)	अनयोः (इन दोनों में)	एषु (इनमें)

इदम् (यह) स्त्रीलिंग

इयम्	इमे	इमाः	प्र०	
इमाम्	इमे	इमाः	द्वि०	
अनया	आभ्याम्	आभिः	तृ०	
अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः	च०	
अस्या	आभ्याम्	आभ्यः	प०	
अस्या	एनयोः अनयोः	आसाम्	ष०	
अस्याम्	एनयोः अनयोः	एषु	स०	

इदम् (यह) नपुंसकलिंग

इदम्	इमे	इमानि	प्र०	
इदम्	इमे	इमानि	द्वि०	
अनेन	आभ्याम्	एभिः	तृ०	
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	च०	
अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	प०	
अस्यः	अनयोः	एषाम्	ष०	
अस्मिन्	,,	एषु,	स०	

युष्मद् (तू, तुम) त लिखो

प्रथमा	त्वम् (तू या तूने)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
द्वितीया	त्वाम्, त्वा (तुझको)	युवाम्, वाम् (तुम दोनों को)	युष्मान्, वः (तुम सबको)
तृतीया	त्वया (तेरे द्वारा)	युवाभ्याम् (तुम दोनों के द्वारा)	युष्माभिः (तुम सबके द्वारा)
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते (तेरे लिए)	युवाभ्याम् (तुम दोनों के लिये)	युष्मभ्यम्, वः (तुम सबके लिए)
पंचमी	त्वत् (तुम से)	युवाभ्याम् (तुम दो से)	युष्मत् (तुम सब से)
षष्ठी	तव, ते (तेरा)	युवयोः, वाम् (तुम दो का)	युष्माकम्, वः (तुम सबका)
सप्तमी	त्वयि (तुझ में)	युवयोः (तुम दोनों में)	युष्मासु (तुम सब में)

अस्मद् (मैं हम) शब्द म

प्रथमा	अहम् (मैंने)	आवाम् (हम दोनों ने)	वयम् (हम सबने)
द्वितीया	माम्, मा (मुझको)	आवाम्, नौ, (हम दोनों को)	अस्मान्, नः (हम सबको)
तृतीया	मया (मेरे द्वारा)	आवाभ्याम् (हम दोनों के द्वारा)	अस्माभिः (हम सब के द्वारा)
चतुर्थी	मह्यम्, मे (मेरे लिये)	आवाभ्याम्, नौ, (हम दोनों के लिये)	अस्मभ्यम्, नः (हम सब के लिये)
पंचमी	मत् (मुझसे)	आवाभ्याम् (हम दोनों से)	अस्मत् (हम सब से)

षष्ठी	मम, मे (मेरा)	आवयोः, नौ (हम दोनों का)	अस्माकम्, नः (हमारा)
सप्तमी	मयि (मुझमें)	आवयोः (हम दोनों में)	अस्मासु (हम सब में)

विशेष :—अस्मद् तथा युष्मद् शब्दों के रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं।

(३—विशेषण)

संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। इनके लिंग अपने विशेष्यों के अनुसार होते हैं। जैसे :—सुन्दरः बालकः (पुल्लिग) सुन्दरी बालिका (स्त्रीलिंग), सुन्दर फलम् (नपुंसकलिंग) आदि। यहाँ 'सुन्दर' विशेषण हैं। जो अपने विशेष्यों बालकः, बालिका, और फलम् के अनुसार लिंग बदलता है।

संस्कृत में सर्वनामों का प्रयोग भी विशेषणों की भाँति ही होता है। जैसे :—एषः बालकः (यह लड़का) में 'एषः, सर्वनाम विशेषण की तरह आया है।

विशेषणों शब्दों के रूप प्रायः संज्ञा शब्दों के समान होते हैं। अकारान्त विशेषण—कृष्ण, श्वेत, कुशल आदि के रूप पुल्लिग में अकारान्त राम के समान तथा नपुंसकलिंग में अकारान्त फल के समान होंगे।

केवल संख्यावाचक विशेषण शब्दों के रूप स्वतन्त्र रूप से चलते हैं।

संख्यावाचक विशेषण

एक से चार तक का रूप तीनों लिंगों में चलते हैं। एक शब्द का रूप केवल एकवचन, द्वि का द्विवचन, त्रि का केवल बहुवचन में रूप चलते हैं तीन से अठारह तक संख्यावाचक शब्द केवल बहुवचन में ही होते हैं।

इक (नित्य एकवचनान्त)				द्वि (दो) शब्द		
नपुंसकलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग		पुल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
एकम्	एकः	एकोः	प्र०	द्वौ	द्वे	द्वे
"	एकं	एकाम्	द्वि०	द्वौ	द्वे	द्वे

एकेन	एकेन	एकया	तृ०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै	च०	,,	,,	,,
एकस्मात	एकस्मात्	एकस्याः	पं०	,,	,,	,,
एकस्य	एकस्य	एकस्याः	ष०	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्	स०	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि (तीन) शब्द				चतुर (चार) शब्द		
न०	पु०	स्त्री०		पु०	स्त्री०	न०
त्रयः	त्रयः	त्रीणि	प्र०	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
त्रीन्	त्रीन्	,,	द्वि०	चतुर	,,	,,
त्रिभिः	त्रिभिः	त्रिभिः	तृ०	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	च०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रिसृभ्यः	पं०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	त्रिसृणाम्	ष०	चतुर्णाम्	चतुसृणाम्	चतुर्णाम्
त्रिषु	त्रिषु	त्रिसृषु	स०	चतुर्षु	चतुसृषु	चतुर्षु

	पञ्चन (पाँच)	षष् (छः)	सप्तन् (सात)
प्र०	पञ्च	षट्	सप्त
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	पंचाभिः	षड्भिः	सप्तभिः
च०	पंचभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
पं०	,,	,,	,,
ष०	पंचानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्
सं०	पंचसु	षट्सु	सप्तसु

	अष्टन् (आठ)	नवन् (नौ)	दसन् (दस)
प्र०	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
द्वि०	,, ,,	,,	,,
तृ०	अष्टभिः, अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
च०	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पं०	,, ,,	,,	,,
ष०	अष्टनाम्, अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
स०	अष्टसु, अष्टासु	नवसु	दशसु

संस्कृत की गिनती

१ एक
२ द्वि
३ त्रि
४ चतुर्
५ पञ्चन्
६ षष्
७ सप्तन्
८ अष्टन
९ नवन्
१० दशन्
११ एकादशन्
१२ द्वादशन्
१३ त्रयोदशन्
१४ चतुर्दशन्
१५ पञ्चदशन्
१६ षोडशन्
१७ सप्तदशन्
१८ अष्टादशन्
१९ नवदशन्
या
एकोनविंशति
ऊनविंशति
एकान्नविंशति
२० विंशति
२१ एकविंशति
२२ द्वाविंशति
२३ त्रयोविंशति
२४ चतुर्विंति
२५ पञ्चविंशति
२६ षड्विंशति
२७ सप्तविंशति
२८ अष्टाविंशति
२९ नवविंशति
ऊनत्रिंशत्
एकान्नत्रिंशत्
एकोनत्रिंशत्
३० त्रिंशत्
३१ एकत्रिंशत्
३२ द्वात्रिंशत्
३३ त्रयस्त्रिंशत्
३४ चतुस्त्रिंशत्
३५ पञ्चत्रिंशत्
३६ षट्त्रिंशत्
३७ सप्तत्रिंशत्
३८ अष्टात्रिंशत्
३९ नवत्रिंशत्
एकोनचत्वारिंशत्
ऊनचत्वारिंशत्
एकान्नचत्वारिंशत्
४० चत्वारिंशत्
४१ एकचत्वारिंशत्
४२ द्वाचत्वारिंशत्
या
द्विचत्वारिंशत
४३ त्रयश्चत्वारिंशत्
या
त्रिचत्वारिंशत्
४४ चतुश्चत्वारिंशत्
४५ पञ्चचत्वारिंशत्
४६ षट्चत्वारिंशत्
४७ सप्तचत्वारिंशत्
४८ अष्टाचत्वारिंशत्
या
अष्टचत्वारिंशत्
४९ नवचत्वारिंशत्
एकोनपञ्चाशत्
ऊनपञ्चाशत्
एकान्नपञ्चाशत्
५० पञ्चाशत्
५१ एकपञ्चाशत्
५२ द्वापञ्चाशत्
या
द्विपञ्चाशत्
५६ त्रय:पञ्चाशत्
या
त्रिपञ्चाशत्
५४ चतु:पञ्चाशत्
५५ पञ्चपञ्चाशत्
५६ षट्पञ्चाशत्
५७ सप्तपञ्चाशत्
५८ अष्टापञ्चाशत्

या
अष्टपञ्चाशत्
५९ नवपञ्चाशत्
या
एकोनषष्टि
ऊनषष्टि
एकान्नषष्टि
६० षष्टि
६१ एकषष्टि
६२ द्वाषष्टि
या
द्विषष्टि
६३ त्रयःषष्टि
या
त्रिषष्टि
६४ चतुष्षष्टि
६५ पञ्चषष्टि
६६ षट्षष्टि
६७ सप्तषष्टि
६८ अष्टाषष्टि
या
अष्टषष्टि
६९ नवषष्टि
एकोनसप्तति

ऊनसप्तति
एकान्नसप्तति
७० सप्तति
७१ एकसप्तति
७२ द्वासप्तति
या
द्विसप्तति
७३ त्रयस्सप्तति
या
त्रिसप्तति
७४ चतुस्सप्तति
७५ पञ्चसप्तति
७६ षट्सप्तति
७७ सप्तसप्तति
७८ अष्टासप्तति
या
अष्टसप्तति
७९ नवसप्तति
या
एकोनाशीति
ऊनाशीति
एकान्नाशीति
८० अशीति
८१ एकाशीति

या अष्टपञ्चाशत्
८२ द्वयशीति
८३ त्रयशीति
८४ चतुरशीति
८५ पञ्चाशीति
८६ षडशीति
८७ सप्ताशीति
८८ अष्टाशीति
८९ नवाशीति
एकोनवति
ऊननवनि
एकान्ननवति
९० नवति
९१ एकनवति
९२ द्विनवति
द्वानवति
९३ त्रयोनवति
त्रिनवति
९४ चतुर्नवति
९५ पञ्चनवति
९६ षण्णवति
९७ सप्तनवति
९८ अष्टानवति
अष्टनवति
९९ नवनवति

१०० शत, २०० द्विशत, ३०० त्रिशत, ४०० चतुश्शत, ५०० पञ्चशत,

१००० सहस्र, १०,००० अयुत १,००,००० लक्ष (न०पु०) या लक्षा (स्त्री०), दस लाख, प्रयुत करोड़—कोटि (स्त्री०) ।

(क्रम बोधक संख्यावाचक विशेषण)

संख्या	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
१ एक	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
२ द्वि	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम
३ त्रि	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
४ चतुर	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
५ पञ्चन्	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चममे
६ षष्	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
७ सप्तन्	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
८ अष्टन्	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
९ नव	नवमः	नवमी	नवमम्

(विशेषणों की अवस्था)

वाक्यों में विशेषण का प्रयोग तीनों रूपों में दिखाई पड़ता है, जिन्हें विशेषणों की अवस्था (Degree) कहते हैं । ये निम्न हैं :—

(१) सामान्य अवस्था :-(Positive Degree) जब विशेषण अपने सामान्य या साधारण रूप में होता है और उसकी किसी से तुलना नहीं की जाती तब वह सामान्य अवस्था में होता है । जैसे :— 'रामः सुन्दरः बालकः अस्ति' यहाँ 'सुन्दरः' विशेषण सामान्य रूप में आया है, अतः यहाँ विशेषण की सामान्य अवस्था है ।

(२) उत्तर अवस्था :—जब किसी विशेषण के द्वारा किन्हीं दो व्यक्तियों या वस्तुओं में तुलना की जाती है तब वह विशेषण तुलनात्मक अवस्था में होता है । इसे तुलनात्मक विशेषण भी कहते हैं । इन विशेषणों को बनाने के लिये तर या ईयस् प्रत्ययों का प्रयोग होता है । जैसे—कृष्णः मोहनात् सुन्दरतरः अस्ति—कृष्ण मोहन से सुन्दर है । यह विशेषण उत्तर अवस्था में है ।

सामान्य अवस्था	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
महत्	महत्तरः	महत्तरा	महत्तरम्
लघु	लघुतरः	लघुतरा	लघुतरम
गुरु	गुरुत्तरः	गुरुतरा	गुरुतरम्
प्रिय	प्रियतरः	प्रियतरा	प्रियतरम्
श्रेष्ठः	श्रेष्ठतरः	श्रेष्ठतरा	श्रेष्ठतरम्

(३) **उत्तम अवस्था** :—जब किसी विशेषण द्वारा दो से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों में तुलना की जाती है तब विशेषण उत्तम अवस्था में होता है। इसे अतिशय वाचक विशेषण भी कहा जा सकता है। इन विशेषणों को बनाने के लिए 'तम' या 'इष्ठ' प्रत्यय लगाया जाता है जैसे—कृष्णः सर्वेषु बालकेषु सुन्दरतमः श्रेष्ठः वा आसीत्—कृष्ण सभी लड़को में सुन्दर या श्रेष्ठ थे। यहाँ विशेषण उत्तम अवस्था में हैं।

तमप् प्रत्यय

मूल शब्द	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
महत्	महत्तमः	महत्तमा	महत्तमम
लघु	लघुत्तमः	लघुत्तमा	लघुतमम्
अल्प	अल्पतमः	अल्पतमा	अल्पतमम्
गुरु	गुरुतमः	गुरुतमा	गुरुतमम्
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतमः	श्रेष्ठतमा	श्रेष्ठतमम्

सामान्य अवस्था	उत्तरावस्था (ईयस् प्रत्यय के द्वारा)	उत्तमावस्था (इष्ठत् प्रत्यय के द्वारा)
गुरुः	गरीयान्	गरिष्ठः
प्रियः	प्रेयान्	प्रेष्ठः
महत्	महीयान्	महिष्ठः

इस प्रकार दो व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना के लिये तर या ईयस् एवम् दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं में अन्य की अपेक्षा एक की विशेषता बतलाने के लिये तमप् या इष्ठन् प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

उपर्युक्त विशेषणवाची शब्दों के रूप पुल्लिग में राम,स्त्रीलिंग में रमा और नपुंसकलिंग मे पुस्तक के समान होते हैं। हलन्त शब्दों के रूप हलन्त शब्दों के समान होते हैं।

अभ्यास

शब्द रूपों का अभ्यास

१—नीचे लिखे शब्दों में से किसी एक का शब्द रूप तृतीया और दूसरे का सप्तमी में लिखिये :—दधि, मति। (हाईस्कूल १९६०)

२—निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक का रूप सब विभक्तियों में लिखिए—सरित्, राम, गुरु, गो, राजन् इदम्। (१९६१)

३—निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक का रूप सब विभक्तियों में लिखिये :—हरि, मति, सर्व दधि, युष्मद्, करिन्। (१९६२)

४–निम्नांकित शब्दों में से किसी एक का रूप द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी एवंस प्तमी विभक्तियों में लिखिये:-पितृ, रमा, नदी, भगवत्। (१९६३)

५-निम्नांकित शब्दों में से किसी एक के रूप द्वि०, प०, ष० तथा सप्तमी विभक्तियों में लिखिये :—गो, मति, युष्मद्, दधि, इदम्, (स्त्री०)। (१९६४)

६—निम्नांकित शब्दों में से किसी एक के रूप द्वि०, पं०, ष०, तथा सप्तमी विभक्तियों में लिखिये—पितृ, राजन्, किम् (स्त्री०), युष्मद्, सर्व। (१९६५)

७—निम्नांकित शब्दों में से किसी एक के रूप द्वितीय, पंचमी, षष्ठी तथा सप्तमी विभक्तियों में लिखिये :—गुरु,नदी, वाच्, मनस्, युष्मद्।(१९६६)

८—निम्नांकित शब्दों में से किसी के रूप द्वितीया, चतुर्थी तथा सप्तमी विभक्तियों में लिखिए :—गो, हरि, धेनु, पयस्, इदम् (स्त्री०) (१९६७)

९—नीचे लिखे शब्दों में से किसी एक के प्रथमा बहु०, चतुर्थी एकवचन, षष्ठी बहु० तथा सप्तमी एकवचन के रूप लिखिये। (१९६८)

भानु, धातृ, रमा, मति, सर्व, गो, वारि।

नीचे लिखे शब्दों में से किसी एक के प्रथमा बहु०, तृतीया एकवचन, चतुर्थी बहु० और पञ्चमी एकवचन के रूप लिखिए :— (१९६९)

सखि, राजन्, मधु, किम जगत्।

चतुर्थ अध्याय

क्रिया (धातु) विचार

जिस शब्द के द्वारा किसी काम का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं। संस्कृत की क्रियायें जिन मूलों से बनती हैं, उन्हें धातु कहते हैं। जैसे—"सः पुस्तकं पठति (वह पुस्तक पढ़ता है।) वाक्य में 'पठति' (पढ़ता है।) के द्वारा 'पढ़ने' का होना पाया जाता है, अतः 'पठति' क्रिया है। यह 'पठ्' मूल से बनती है, अतः 'पठ्' धातु है।

क्रिया धातुओं में प्रत्यय लगाने पर बनती है। इस आधार पर तिङन्त तथा कृदन्त दो प्रकार की क्रियायें होती हैं। जो क्रियाए तिङ् प्रत्यय अर्थात् तिप्, तस्, झि (अन्ति) आदि के संयोग से बनती हैं, उन्हें तिङन्त कहते हैं। जैसे भवति. भवतः, भवन्ति।

जो क्रिया क्त, क्तवतु आदि कृत् प्रत्ययों के संयोग से बनती हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं। जैसे :—गतः (गया), गतवान् (गया। आदि।

(क्रिया के भेद)

क्रियायें दो प्रकार की होती हैं :—(१) सकर्मक (२) अकर्मक।

(१) **सकर्मक** :—वे क्रियायें जो अपना कर्म रखती हैं, अर्थात् जिनके व्यापार का फल कर्त्ता को छोड़कर किसी अन्य पर पड़ता है, उन्हें सकर्मक क्रियायें कहते हैं। क्रिया के आगे 'किसको' अथवा 'क्या' लगाने पर उत्तर में आने वाला शब्द 'कर्म' होता है। जैसे—सः पुस्तकं पठति (वह पुस्तक पढ़ता है।) में 'पठति' क्रिया का फल 'पुस्तक' पर पड़ रहा है, और क्या पढ़ता है ? के उत्तर में भी 'पुस्तकम्' आता है अतः 'पुस्तकम्' कर्म तथा 'पठति' सकर्मक क्रिया है।

(२) **अकर्मक** :—वे क्रियाएँ जो कर्म नहीं रखतीं, तथा जिनका फल कर्त्ता पर ही पड़ता है, वे अकर्मक क्रियायें कहलाती हैं। जैसे—सः स्वपिति (वह सोता है।) में 'स्वप्' (सोना) का फल 'सः' पर है अतः 'स्वपिति' क्रिया अकर्मक है।

(लकार)

संस्कृत भाषा में दस काल अथवा वृत्तियाँ (Tenses and Moods) होती हैं। वे इस प्रकार हैं :—

(१) लट् (वर्तमान)। (३) लिट् (भूतकाल—परोक्ष)। (३) लुट् (भविष्य)। (४) लृट् (भविष्य)। (५) लोट् (आज्ञा तथा आर्शीवाद)। (६) लङ् (भूतकाल–अनद्यतन)। (७) विधिलिङ् (विधि, प्रार्थना आदि-चाहिए के अर्थ में)। (८) आर्शीलिङ् (आर्शीवाद) (९) लुङ् (भूतकाल)। (१०) लृङ् हेतु–हेतुमद्–भूतकाल)।

लकार के भेद

लकार दो प्रकार के होते हैं– (१) सार्वधातुक (२) आर्धधातुक। लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् को सर्वधातुक कहते हैं। शेष छः लकारों को आर्धधातुक कहते हैं।

सार्वधातुक लकारों को प्रत्ययों के जोड़ने से पहले धातुओं में परिवर्तन (विकार) कर दिया जाता है और आर्धधातुकों में यह विकार नहीं होता। जैसे :—गम् का गच्छ्, प्रच्छ् का पृच्छ् आदि।

(१) वर्तमान काल की क्रिया का प्रयोग वर्तमान समय में होने वाली वस्तु के विषय में किया जाता है, जैसे–सः गच्छति=वह जाता है।

(२) लोट् (आज्ञा) आज्ञा का प्रयोग किसी को करने की आज्ञा देने के लिए किया जाता है। जैसे :—त्वम् विद्यालयं गच्छ–तुम विद्यालय जाओ। आज्ञा बहुधा सामने उपस्थित मनुष्यों की दी जाती है, इसलिए आज्ञा का प्रयोग बहुधा मध्यम पुरुष में होता है। परन्तु कुछ ऐसे प्रयोग जैसे–मैं करूँ (अहम् करवाणि), वह करे (सः करोतु) आदि भी आवश्यकतानुसार होते हैं।

(३) विधि लिङ्—का प्रयोग किसी को आदेश देने के लिए किया जाता है यदि आज्ञा के रूप का प्रयोग हो तो नरम आदेश समझना चाहिए और यदि विधि लिङ् का प्रयोग हो तो कड़ा। विधि का प्रयोग 'चाहिए' अर्थ का बोध कराने के लिये भी होता है, जैसे—सः कुर्यात् (उसको करना चाहिये)

(४) लङ्, लिट्, लुङ्—तीन भूतकाल—संस्कृत में भूतकाल की क्रिया का बोध कराने के लिये तीन काल—अनद्यतनभूत, परोक्षभूत और सामान्यभूत हैं। इनके प्रयोग में थोड़ा अन्तर है। अनद्यतन का अर्थ है ऐसा भूतकाल जो आज न हुआ हो, अर्थात् इस काल के रूप ऐसी दशा में प्रयोग में लाये जाने चाहिए जब क्रिया आज समाप्त न हुई हो, कल या इस से पूर्व समाप्त हुई हो, जैसे – मैं आज पढ़ने गया, यहाँ गया शब्द का अनुवाद संस्कृत में अनद्यतनभूत की क्रिया से न होगा, बल्कि किसी दूसरे भूतकाल की क्रिया से होगा। परोक्षभूत का अर्थ है ऐसा अतीतकाल जो आँख के सामने न हुआ हो। यदि कोई क्रिया अपनी आँखों के सामने हुई है तो उस दशा में परोक्षभूत का प्रयोग न होगा। यहाँ जाने की क्रिया मेरे सामने हुई, इसलिए यहाँ 'गया' का अनुवाद परोक्षभूत के रूप से न करके किसी और भूतकाल के रूप से करना होगा। तीसरा भूतकाल अर्थात् सामान्यभूत सब कहीं प्रयोग में लाया जा सकता है। चाहे क्रिया आज समाप्त हुई हो अथवा बरसों पहले।

विशेष :—संस्कृत में वर्तमान काल की क्रिया के अनन्तर 'स्म' शब्द जोड़कर एक साधारण भूतकाल बनाया जाता है। यह प्राय: किस्से-कहानी में वर्णन के काम में लाया जाता है, जैसे—कश्चिद्राजा प्रतिवसति स्म (कोई राजा रहता था)।

(५) लुट्-लृट्-दोनों भविष्य काल :—भविष्यकाल की क्रिया का बोध कराने के लिए दो काल हैं : अनद्यतन भविष्य और सामान्य भविष्य। इनमें से पहले का प्रयोग ऐसी दशा में नहीं हो सकता जब क्रिया आज ही होने को हो, जैसे—मैं आज शाम को काशी जाऊँगा, इसका "अद्य सायंकाले काशीं गमिष्यामि" यह शुद्ध अनुवाद है। अगर "गमिष्यामि" न कहकर "गन्तास्मि" कह दिया जाता तो वाक्य अशुद्ध हो जाता है क्योंकि "गन्तास्मि" अनद्यतन भविष्य है। दूसरे (अर्थात् सामान्य) भविष्य का सब कहीं प्रयोग हो सकता है।

(६) आशीर्लिङ—इसका प्रयोग आशीर्वाद देने के लिये होता है, जैसे—तुम सौ वर्ष तक जियो – त्वम् जीव्याः शरदां शतम्। कभी-कभी आशीर्वाद अथवा अकांक्षा प्रकट करने के लिये आज्ञा का अथवा विधि का भी प्रयोग होता है, जैसे—त्वम् जीव शरदां शतम् जीवेम शरदां शतम् आदि।

(७) लङ्—इसका प्रयोग ऐसे अवसर पर होता है जहाँ एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर हो। जैसे–यदि वह आता तो मैं उसके साथ जाता (यदि सः आगमिष्यत्तर्हि अहं नूनं तेन सह अगमिष्यम्)।

पुरुष

सर्वनामों की भाँति क्रियाओं में भी प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष तथा उत्तमपुरुष होते हैं।

(१) प्रथमपुरुष–जिन क्रियाओं का प्रयोग प्रथमपुरुष के कर्त्ता (सः तौ, ते, कः रामः आदि) के लिये होता है, उन्हें प्रथमपुरुष कहते हैं। जैसे-रामः गच्छति—राम जाता है।

(२) मध्यमपुरुष—जिन क्रियाओं का प्रयोग मध्यमपुरुष के कर्त्ताओं (त्वम्, युवाम्, यूयम्) के साथ होता है वे मध्यमपुरुष की क्रियायें कही जाती हैं। जैसे—त्वम् गच्छसि–तुम जाते हो।

(३) उत्तमपुरुष–जिन क्रियाओं का प्रयोग उत्तमपुरुष के कर्त्ताओं (अहम, आवाम्, वयम्)के साथ होता है वे उत्तमपुरुष की क्रियाएँ कही जाती हैं। जैसे–अहम् गच्छामि–मैं जाता हूँ।

वचन

संज्ञाओं की भाँति क्रियाओं में भी एक वचन, द्विवचन और बहुवचन होते हैं। ये भी क्रियाओं के कर्त्ता के अनुसार प्रयुक्त होते हैं।

लिंग

संस्कृत में लिंग के कारण क्रियाओं में कोई अन्तर नहीं होता। जैसे—बालकः गच्छति, बालिका गच्छति, फलम् पतित (फल गिरता है।)

पद

क्रियाओं के रूप जिस सरणि के अनुसार चलते हैं, वे पद कहे जाते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं— १. परस्मैपद, २. आत्मनेपद ३. उभयपद।

पद के अनुसार धातु के भेद

पद के अनुसार धातुओं की क्रियायें तीन प्रकार की होती हैं—

१. परस्मैपदी. २. आत्मनेपदी, ३. उभयपदी।

(१) परस्मैपदी—वाक्य में जिस धातु का फल कर्त्ता को न मिले, किसी दूसरे को मिले, उसे परस्मैपदी कहते हैं। जैसे—रामः पठति, इस वाक्य में पढ़ने का फल राम को न मिलकर दूसरे को मिलता है—जिसके लिए वह पढ़ रहा है।

(२) आत्मनेपदी—वाक्य में जिस धातु का फल कर्त्ता को मिले, उसे आत्मनेपदी कहते हैं। जैसे—अहं भुञ्जे—मैं खाता हूँ, इस वाक्य में खाने का फल 'अहम्' कर्त्ता को मिल रहा है।

(३) उभयपदी—वाक्य में जिस धातु का फल कर्त्ता को और दूसरे को भी मिले, उसे उभयपदी धातु कहते हैं। जैसे—अध्यापकः कथयति कथयते वा—अध्यापक कहता है, इस वाक्य में कहने का फल अध्यापक को मिलता है और उसके लिए भी जिससे कहा गया हो।

विशेष—संस्कृत में इन धातुओं के नियम पूरी तरह लागू नहीं होते।

परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों के प्रत्यय भिन्न-भिन्न हैं और उभयपदी धातुओं में दोनों प्रकार के प्रत्यय लगते हैं। ऐसी धातुओं का रूप दोनों पदों (परस्मैपद तथा आत्मनेपद) में चलता है।

गण

रूप रचना के अनुसार सम्पूर्ण धातुओं (क्रियाओं) को जिन विभागों में बाँटा गया है, उन्हें गण कहते हैं। ये गण (विभाग) प्रधान रूप से दस हैं। प्रत्येक गण का नाम गण की पहली धातु के नाम पर रखा गया है। ये निम्न हैं।

१—भ्वादि गण	—	जिसमें धातु के रूप 'भू' धातु के समान हों।			
२—अदादिगण	—	,,	,,	अद्	,,
३—जुहोत्यादि गण	—	,,	,,	हु	,,
४—दिवादिगण	—	,,	,,	दिव्	,,
५—स्वादि गण	—	,,	,,	सु	,,
६—तुदादि गण	—	,,	,,	तुद्	,,
७—रुधादि गण		,,	,,	रुध्	,,
८—तनादि गण	—	,,	,,	तनु	,,

९—क्रयादि गण — ,, ,, क्री ,,
१०—चुरादि गण — ,, ,, चुर् ,,

लकारों के प्रत्यय इस प्रकार हैं—

(क) लट् (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र० पु०	ति	तस्	अन्ति	
म० पु०	थि	थस्	थ	परस्मैपद
उ० पु०	मि	वस्	मस्	
प्र० पु०	ते	इते	अन्ते	
म० पु०	से	इथे	ध्वे	आत्मनेपद
उ० पु०	इ	वहे	म	

विशेष—दूसरे, तीसरे, पाँचवे और नवें गण की धातुओं के उपरान्त आत्मनेपद में निम्नलिखित प्रत्यय लगाते हैं—

प्र० पु०	ते	आते	अन्ते	
म० पु०	से	आथे	ध्वे	आत्मनेपद
उ० पु०	ए	वहे	महे	

(ख) लोट् (आज्ञा)

प्र० पु०	तु	ताम्	अन्तु	
म० पु०	तु या तात्	तम्	त	परस्मैपद
उ० पु०	आनि	आव	आम	

विशेष—सभी गणों में ये ही प्रत्यय लगते हैं. केवल दूसरे, तीसरे, पाँचवें, सातवें, आठवें तथा नवें गण की धातुओं के म० पु० एक वचन में आ या तात् की जगह "हि" जोड़ा जाता है।

प्र० पु०	ताम्	इताम्	अन्ताम्	
म० पु०	स्व	इथाम्	ध्वम्	आत्मनेपद
उ० पु०	ऐ	आव है	आमहे	

विशेष—दूसरे, तीसरे, पाँचवें, सातवें, आठवें तथा नवें गण की धातुओं के उपरान्त आत्मने में निम्नलिखित प्रत्यय लगते हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र० पु०	ताम्	आताम्	अताम्	
म० पु०	स्व	आथाम्	ध्वम्	आत्मनेपद
उ० पु०	ऐ	आवहै	आमहै	

(ग) विधिलिङ् (इच्छा)

प्र० पु०	ईत्	ईताम्	ईयुः	
म० पु०	ईः	ईतम्	ईत	परस्मैपद
उ० पु०	ईयम्	ईव	ईम	
प्र० पु०	ईत	ईयाताम्	ईरन्	
म० पु०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्	आत्मनेपद
उ० पु०	ईय	ईवहि	ईमहि	

विशेष—दूसरे, तीसरे, पाँचवें, सातवें, आठवें तथा नवें गण की धातुओं के उपरान्त परस्मैपद में निम्नलिखित प्रत्यय लगते हैं—

प्र० पु०	यात्	याताम्	युस्	
म० पु०	यास्	यातम्	यात	परस्मैपद
उ० पु०	याम्	याव	याम	

(च) लङ्—अनद्यतन भूत

प्र० पु०	त्	ताम्	अन्	
म० पु०	स्	तम्	त	परस्मैपद
उ० पु०	अम्	व	व	
प्र० पु०	त	इताम्	अन्त	
म० पु०	थास्	इथाम्	ध्वम्	आत्मनेपद
उ० पु०	इ	वहि	महि	

विशेष—दूसरे, तीसरे, पाँचवें सातवें, आठवें तथा नवें गण की धातुओं के उपरान्त आत्मनेपद में निम्नलिखित प्रत्यय लगते हैं—

प्र० पु०	त	आताम्	अत	
म० पु०	थास्	आथाम्	ध्वम्	आत्मनेपद
उ० पु०	ई	वहि	महि	

(ज) लृट् (सामान्य भविष्य)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र० पु०	इष्यति	इष्यतः	इष्यन्ति	
म० पु०	इष्यसि	इष्यथः	इष्यथ	परस्मैपद
उ० पु०	इष्यामि	इष्यावः	इष्यामः	
प्र० पु०	इष्यते	इष्येते	इष्यन्ते	
म० पु०	इष्यसे	इष्येथे	इष्यध्वे	आत्मनेपद
उ० पु०	इष्ये	इष्यावहे	इष्यामहे	

विशेष—कुछ धातुओं में 'इष्यते' वाले रूप लगते हैं और कुछ में स्यते, स्येते, स्यन्ते आदि विना 'इ' वाले रूप लगते हैं।

(१—भ्वादिगण)

भ्वादिगण की प्रथम धातु "भू" है, इसलिए इस गण का यह नाम पड़ा। दशों गणों में यह प्रमुख है।

इस गण की धातुओं के अनन्तर (प्रत्यय लगाने के पूर्व) शय् (अ) जाड़ दिया जाता है तथा धातु की उपधा का ह्रस्व स्वर या धातु का अन्तिम स्वर गुण सन्धि को प्राप्त होता है। जैसे—भू धातु में वर्तमान के प्रत्यय जोड़ने हो तो—भ्+शय् (अ)+ति=भ्+ऊ+अ+ति=भू+ओ (गुण) +अ+ति=भू+अव्+अ+ति=भवति रूप प्रथम पुरुष के एक वचन में बनेगा। इसी प्रकार जि+शय् ति=जि+अ+ति=ज्+इ+अ+ति= ज+ए+अ+ति=ज+अय्+अ+ति=जयति। इसी प्रकार नयति आदि। उपधामत ह्रस्वस्वर का गुण, जैसे—बुध्+शय्+ति=ब्+उ+ध +अ+ति=ब्+ओ+ध्+अ+ति=बोधति। जिन धातुओं की उपधा में अथवा अन्त में अ होगा उनमें गुण सन्धि करने से अ ही रहता है,

(१-परस्मैपदी भू-होना)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	भवति	भवतः	भवन्ति

	म० पु० भवसि	भवथः	भवथ
	उ० पु० भवामि	भवावः	भवामः
लोट्	प्र० पु० भवतु	भवताम्	भवन्तु
	म० पु० भव	भवतम्	भवत
	उ० पु० भवानि	भवाव	भवाम
विधिलिङ्	प्र० पु० भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
	म० पु० भवेः	भवेतम्	भवेत
	उ० पु० भवेयम्	भवेव	भवेम
लङ्	प्र० पु० अभवत्	अभवताम्	अभवन्
	म० पु० अभवः	अभवतम्	अभवत
	उ० पु० अभवम्	अभवाव	अभवाम
लृट्	प्र० पु० भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
	म० पु० भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
	उ० पु० भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

२–परस्मैपदी—हस्—हंसना

लट्	प्र० पु० हसति	हसतः	हसन्ति
	म० पु० हससि	हसथः	हसथ
	उ० पु० हसामि	हसावः	हसामः
लोट्	प्र० पु० हसतु	हसताम्	हसन्तु
	म० पु० हस	हसतम्	हसत
	उ० पु० हसानि	हसाव	हसाम
विधिलिङ	प्र० पु० हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
	म० पु० हसेः	हसेतम्	हसेत
	उ० पु० हसेयम्	हसेव	हसेम
लङ्	प्र० पु० अहसत्	अहसताम्	अहसन्
	म० पु० अहसः	अहसतम्	अहसत
	उ० पु० अहसम्	अहसाव	अहसाम

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लृट्	प्र, पु. हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
	म. पु. हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
	उ. पु. हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

३—परस्मैपदी रक्ष्—बचाना

लट्	प्र. पु. रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
	म. पु. रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
	उ. पु. रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः
लोट्	प्र. पु. रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु
	म. पु. रक्ष	रक्षतम्	रक्षत
	उ, पु. रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम
विधिलिङ्	प्र. पु. रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः
	म. पु. रक्षः	रक्षेतम्	रक्षेत
	उ. पु. रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम
लङ्	प्र. पु. अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
	म. पु. अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षतम्
	उ. पु. अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम
लृट्	प्र. पु. रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
	म. पु. रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथः	रक्षिष्यथ
	उ. पु. रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	रक्षिष्यामः

५—परस्मैपदी बद्—बोलना

लट्	प्र. पु. वदति	वदतः	वदन्ति
	म. पु. वदसि	वदथः	वदथ
	उ. पु. वदामि	वदावः	वदामः
लोट्	प्र. पु. वदतु	वदताम्	वदन्तु
	म. पु. वद	वदतम्	वदत
	उ. पु. वदानि	वदाव	वदाम

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
विधिलिङ्	प्र. पु.	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
	म. पु.	वदेः	वदेतम्	वदेत
	उ. पु.	वदेयम्	वदेव	वदेम
लङ्	प्र. पु.	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
	म. पु.	अवदः	अवदतम्	अवदत
	उ. पु.	अवदम्	अवदाव	अवदाम
लृट्	प्र. पु.	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
	म. पु.	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
	उ. पु.	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

६—परस्मैपदी -पठ्—पढ़ना

लट्	प्र. पु.	पठति	पठतः	पठन्ति
	म. पु.	पठसि	पठथः	पठथ
	उ. पु.	पठामि	पठावः	पठामः
लोट्	प्र. पु.	पठतु	पठताम्	पठन्तु
	म. पु.	पठ	पठतम्	पठत
	उ. पु.	पठानि	पठाव	पठाम
विधिलिङ्	प्र. पु.	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
	म. पु.	पठेः	पठेतम्	पठेत
	उ. पु.	पठेतम्	पठेव	पठेम
लङ्	प्र. पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
	म. पु.	अपठः	अपठतम्	अपठत
	उ. पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम
लृट्	प्र. पु.	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यतः
	म. पु.	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्तथ
	उ. पु.	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

७—परस्मैपदी नम्—झुकना, नमस्कार करना

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	नमति	नमतः	नमन्ति
	म० पु०	नमसि	नमथः	नमथ
	उ० पु०	नमामि	नमावः	नमामः
लोट्	प्र० पु०	नमतु	नमताम्	नमन्तु
	म० पु०	नम	नमतम्	नमत
	उ० पु०	नमानि	नमाव	नमाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
	म० पु०	नमेः	नमेतम्	नमेत
	उ० पु०	नमेयम्	नमेव	नमेम
लङ	प्र० पु०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
	म० पु०	अनमः	अनमतम्	अनमत
	उ० पु०	अनमम्	अनमाव	अनमाम
लट्	प्र० पु०	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
	म० पु०	नस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
	उ० पु०	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

८—परस्मैपदी गम् (गच्छ्)—जाना

लट्	प्र० पु०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
	म० पु०	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
	उ० पु०	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः
लोट्	प्र० पु०	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
	म० पु०	गच्छ	गच्छम्	गच्छत
	उ० पु०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
	म० पु०	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
	उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ्	प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
	म० पु०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
	उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम
लृट्	प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
	म० पु०	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
	उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

९–परस्मैपदी दृश् (पश्य्)–देखना

लट्	प्र० पु०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
	म० पु०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
	उ० पु०	पश्यामि	पश्यामः	पश्यामः
लोट्	प्र० पु०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
	म० पु०	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
	उ० पु०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम
विधिलिङ्	प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
	म० पु०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
	उ० पु०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम
लङ्	प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
	म० पु०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
	उ० पु०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम
लृट्	प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
	म० पु०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
	उ० पु०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

१०–परस्मैपदी सद्–बैठना, डूबना, नष्ट होना

लट्	प्र० पु०	सीदति	सीदतः	सीदन्ति
	म० पु०	सीदसि	सीदथः	सीदथ
	उ० पु०	सीदामि	सीदावः	सीदामः

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लोट्	प्र० पु०	सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु
	म० पु०	सीद	सीदतम्	सीदत
	उ० पु०	सीदानि	सीदाव	सीदाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः
	म० पु०	सीदेः	सीदेतम्	सीदेत
	उ० पु०	सीदेयम्	सीदेव	सीदेम
लङ	प्र० पु०	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
	म० पु०	असीदः	असीदतम्	असीदत
	उ० पु०	असीदम्	असीदाव	असीदाम
लृट्	प्र० पु०	सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति
	म० पु०	सत्स्यसि	सत्स्यथः	सत्स्यथ
	उ० पु०	सत्स्यामि	सत्स्यावः	सत्स्यामः

११—परस्मैपदी—स्था (तिष्ठ्)—खडा होना, ठहरना

लृट्	प्र० पु०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
	म० पु०	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
	उ० पु०	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः
लोट्	प्र० पु०	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
	म० पु०	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
	उ० पु०	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम
विधिलिङ	प्र० पु०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
	म० पु०	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
	उ० पु०	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम
लङ्	प्र० ,,	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
	म० ,,	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
	उ० ,,	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम
लृट	प्र० ,,	स्थाष्यति	स्थाष्यतः	स्थाष्यन्ति

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म० पु०	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
	उ० ,,	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

१२—परस्मैपदी—स्म—याद करना

लट्	प्र० पु०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
	म० ,,	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
	उ० ,,	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः
लोट्	प्र० ,,	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
	म० ,,	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
	उ० ,,	स्मराणि	स्मराव	स्मराम
विधिलिङ्	प्र० ,,	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
	म० ,,	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
	उ० ,,	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम
लङ्	प्र० ,,	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
	म० ,,	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
	उ० ,,	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम
लृट्	प्र० ,,	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
	म० ,,	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
	उ० ,,	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

१३—परस्मैपदी—पा (पिब्)—पीना

लट्	प्र० पु०	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
	म० ,,	पिबसि	पिबथः	पिबथ
	उ० ,,	पिबामि	पिबावः	पिबामः
लोट्	प्र० ,,	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
	म० ,,	पिब	पिबतम्	पिबत
	उ० ,,	पिबानि	पिबाव	पिबाम
विधिलिङ्	प्र० ,,	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म० पु०	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
	उ० ,,	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम
लङ्	प्र० ,,	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
	म० ,,	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
	उ० ,,	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम
लृट्	प्र० ,,	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
	म० ,,	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
	उ० ,,	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

१४—परस्मैपदी—जि—जीतना

लट्	प्र० पु०	जयति	जयतः	जयन्ति
	म० ,,	जयसि	जयथः	जयथ
	उ० ,,	जयामि	जयावः	जयामः
लोट्	प्र० ,,	जयतु	जयताम्	जयन्तु
	म० ,,	जय	जयतम्	जयत
	उ० ,,	जयानि	जयाव	जयाम
विधिलिङ्	प्र० ,,	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
	म० ,,	जयेः	जयेतम्	जयेत
	उ० ,,	जयेयम्	जयेव	जयेम
लङ्	प्र० ,,	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
	म० ,,	अजयः	अजयतम्	अजयत
	उ० ,,	अजयम्	अजयाव	अजयाम
लृट्	प्र० ,,	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
	म० ,,	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
	उ० ,,	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

१५-आत्मनेपदी-सेव --सेवा करना

लट्	प्र० पु०	सेवते	सेवेते	सेवन्ते

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म० पु०	सेवसे	सेवथे	सेवध्वे
	उ० पु०	सेव	सेवावहे	सेवामहे
लोट्	प्र० पु०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
	म० पु०	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
	उ० पु०	सेवै	सेवावहै	सेवामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
	म० पु०	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
	उ० पु०	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि
लङ्	प्र० पु०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
	म० पु०	असेवथाः	असेवथाम्	असेवध्वम्
	उ० पु०	असेव	असेवावहि	असेवामहि
लृट्	प्र० पु०	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
	म० पु०	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
	उ० पु०	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

१६—आत्मनेपदी—लभ्— पाना

लट्	प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
	म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
	उ० पु०	लभे	लभावहे	लभामहे
लोट्	प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
	म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
	उ० पु०	लभै	लभावहै	लभामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
	म० पु०	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
	उ० पु०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि
लङ्	प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
	म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि
लृट्	प्र० ,,	लप्स्यये	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
	म० ,,	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
	उ० ,,	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

१७—आत्मनेपदी—वृध् – (वर्ध्)—बढ़ना

लट्	प्र० पु०	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
	म० ,,	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
	उ० ,,	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे
लोट्	प्र० ,,	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
	म० ,,	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
	उ० ,,	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै
विधिलिङ्	प्र० ,,	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
	म० ,,	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
	उ० ,,	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि
लङ्	प्र० ,,	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
	म० ,,	अवर्धेथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
	उ० ,,	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि
लृट्	प्र० ,,	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
	म० ,,	वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
	उ० ,,	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

अथवा

	प्र० ,,	वर्त्स्यति	वर्त्स्यतः	वर्त्स्यन्ति
	म० ,,	वर्त्स्यसि	वर्त्स्यथः	वर्त्स्यथ
	उ० ,,	वर्त्स्यामि	वर्त्स्यावः	वर्त्स्यामः

१८—आत्मनेपदी—मुद् (मोद्)—प्रसन्न होना

लट	प्र० पु०	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
	म० ,,	मोदसे	मोदथे	मोदध्वे

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	उ०	पु०	मोदे	मोदावहे	मोदामहे
लोट	प्र०	,,	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
	म०	,,	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
	उ०	,,	मोदै	मोदावहै	मोदामहै
बिधिलिङ्	प्र०	,,	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
	म०	,,	मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
	उ०	,,	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि
लङ्	प्र०	,,	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
	म०	,,	अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्
	उ०	,,	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि
लृठ्	प्र०	,,	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
	म०	,,	मोदिष्यसे	मौदिष्येथे	मोंदिस्यध्वे
	उ०	,,	मोदिस्ये	मोदिस्यावहे	मोदिस्यामहे

१९—आत्मनेपदी—सह्—सहना

लट	प्र०	पु	सहते	सहेते	सहन्ते
	म०	,,	सहसे	सहेथे	सहध्वे
	उ०	,,	सहे	सहावहे	सहामहे
लोट्	प्र०	,,	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
	म०	,,	सहस्व	सहेथाम्	सहध्वम्
	उ०	,,	सहै	सहावहै	सहामहै
विधिलिङ्	प्र०	,,	सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
	म०	,,	सहेथाः	सहेयाथाम्	सहेध्वम्
	उ०	,,	सहेय	सहेवहि	सहेमहि
लठ्	प्र०	,,	असहत	असहेताम्	असहन्त
	म०	,,	असहथाः	असहेथाम्	असहध्वम्
	उ०	,,	असहे	असहावहि	असहामहि
लृट	प्र०	,,	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म०	पु०	सहिष्यसे	सहिष्येथे	सहिष्यध्वे
	उ०	पु०	सहिष्ये	सहिष्यावहे	सहिष्यामहे

६—उभयपदी—पच्—पकाना (परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र०	पु०	पचति	पचतः	पचन्ति
	म०	पु०	पचसि	पचथः	पचथ
	उ०	पु०	पचामि	पचावः	पचामः
लोट्	प्र०	पु०	पचतु	पचताम्	पचन्तु
	म०	पु०	पच	पचतम्	पचत
	उ०	पु०	पचानि	पचाव	पचाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
	म०	पु०	पचेः	पचेतम्	पचेत
	उ०	पु०	पचेयम्	पचेव	पचेम
लङ्	प्र०	पु०	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
	म०	पु०	अपचः	अपचतम्	अपचत
	उ०	पु०	अपचम्	अपचाव	अपचाम
लृट्	प्र०	पु०	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
	म०	पु०	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
	उ०	पु०	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

पच् के रूप आत्मनेपद में

लट्	प्र०	पु०	पचते	पचेते	पचन्ते
	म०	पु०	पचसे	पचेथे	पचध्वे
	उ०	पु०	पचे	पचावहे	पचामहे
लोट्	प्र०	पु०	पचताम्	पचेताम्	पचन्ताम्
	म०	पु०	पचस्व	पचेथाम्	पचध्वम्
	उ०	पु०	पचै	पचावहै	पचामहै
विधि०	प्र०	पु०	पचेत	पचेयाताम्	पचेरन्
	म०	पु०	पचेथाः	पचेयाथाम्	पचेध्वम्

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	उ०	पु०	पचेय	पचेवहि	पचेमहि
लङ्	प्र०	पु०	अपचत	अपचताम्	अपचन्त
	म०	पु०	अपचथाः	अपचेथाम्	अपचध्वम्
	उ०	पु०	अपचे	अपचावहि	अपचामहि
लृट	प्र०	पु०	पक्ष्यते	पक्ष्येते	पक्ष्यन्ते
	म०	दु०	पक्ष्यसे	पक्ष्येथे	पक्ष्यध्वे
	उ०	पु०	पक्ष्ये	पक्ष्यावहे	पक्ष्यामहे

२२—उभयपदी—याच्—माँगना (परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र०	पु०	याचति	याचतः	याचन्ति
	म०	पु०	याचसि	याचथः	याचथ
	उ०	पु०	याचामि	याचावः	याचामः
लोट्	प्र०	पु०	याचतु	याचताम्	याचन्तु
	म०	पु०	याच	याचतम्	याचत
	उ०	पु०	याचानि	याचाव	याचाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
	म०	पु०	याचेः	याचेतम्	याचेत
	उ०	पु०	याचेयम्	याचेव	याचेम
लङ्	प्र०	पु०	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्
	म०	पु०	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत
	उ०	पु०	अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम
लृट्	प्र०	पु०	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
	म०	पु०	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
	उ०	पु०	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

याच् के रूप आत्मनेपद में

लट्	प्र०	पु०	याचते	याचेतें	याचन्ते
	म०	पु०	याचसे	याचेथे	याचध्वे
	उ०	पु०	याचे	याचावहे	याचामहे

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लोट्	प्र०	पु०	याचताम	याचेताम्	याचन्ताम्
	म०	पु०	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
	उ०	पु०	याचै	याचावहै	याचामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
	म०	पु०	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
	उ०	पु०	याचेय	याचेवहि	याचेमहि
लङ्	प्र०	पु०	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
	म०	पु०	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
	उ०	पु०	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि
लृट्	प्र०	पु०	यचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
	म०	पु०	याचिष्येसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
	उ०	पु०	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

२३—उभयपदी – नी—ले जाना (परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र०	पु०	नयति	नयतः	नयन्ति
	म०	पु०	नयसि	नयथः	नयथ
	उ०	पु०	नयामि	नयावः	नयामः
लोट्	प्र०	पु०	नयतु	नयताम्	नयन्तु
	म०	पु०	नय	नयतम्	नयत
	उ०	पु०	नयानि	नयाव	नयाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	नयेत्	नयेताम्	नययुः
	म०	पु०	नयेः	नयेतम्	नयेत
	उ०	पु०	नयेयम्	नयेव	नयेम
लङ्	प्र०	पु०	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
	म०	पु०	अनयः	अनयतम्	अनयत
	उ०	पु०	अनयम्	अनयाव	अनयाम
लृट्	प्र०	पु०	नेष्यति	नेष्यतः	नष्यन्ति

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म०	पु०	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
	उ०	पु०	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

२४—नी के रूप आत्मनेपद में

लट्	प्र०	पु०	नयते	नयेते	नयन्ते
	म०	पु०	नयसे	नयेथे	नयध्वे
	उ०	पु०	नये	नयावहे	नयामहे
लोट्	प्र०	पु०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
	म०	पु०	नयस्व	नयेथाम्	नयवध्म्
	उ०	पु०	नयै	नयावहै	नयामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
	म०	पु०	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
	उ०	पु०	नयेय	नयेवहि	नयेमहि
लङ्	प्र०	पु०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
	म०	पु०	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
	उ०	पु०	अनये	अनयावहि	अनयामहि
लृट	प्र०	पु०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
	म०	पु०	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
	उ०	पु०	नेष्ये	नष्यावहे	नेष्यामहे

२५—उभयपदी-हृ—चुराना, ले जाना (परस्मै० के रूप)

लट्	प्र०	पु०	हरति	हरतः	हरन्ति
	म०	पु०	हरसि	हरथः	हरथ
	उ०	पु०	हरामि	हराव	हरामः
लोट्	प्र०	पु०	हरतु	हरताम्	हरन्तु
	म०	पु०	हर	हरतम्	हरत
	उ०	पु०	हराणि	हराव	हराम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
	म०	पु०	हरेः	हरेतम्	हरेत

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	उ०	पु०	हरेय	हरेव	हरेम
लङ	प्र०	पु०	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
	म०	पु०	अहरः	अहरतम्	अहरत
	उ०	पु०	अहरम्	अहराव	अहराम
लृट्	प्र०	पु०	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
	म०	पु०	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
	उ०	पु०	हरिष्यामि	हरिष्यावा	हरिष्यामः

२६—हृ धातु के रूप आत्मनेपद में

लट्	प्र०	पु०	हरते	हरेते	हरन्ते
	म०	पु०	हरसे	हरेथे	हरध्वे
	उ०	पु०	हरे	हरावहे	हरामहे
लोट्	प्र०	पु०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
	म०	पु०	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
	उ०	पु०	हरै	हरावहै	हरामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	हरेत	हरेयाताम	हरेरन्
	म०	पु०	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
	उ०	पु०	हरेय	हरेय	हरेवहि
लङ्	प्र०	पु०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
	म०	पु०	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
	उ०	पु०	अहरे	अहरावहि	अहरामहि
लृट्	प्र०	पु०	हरिस्यते	हरिस्येते	हरिस्यन्ते
	म०	पु०	हरिस्यसे	हरिस्येथे	हरिस्यध्वे
	उ०	पु०	हरिष्ये	हरिस्यावहे	हरिस्यामहे

(२) अदादिगण

इस गण के आदि में अद् (खाना) धातु है, इसलिए इसका नाम अदादि है। धातु पाठ में इस गण की ७२ धातुएँ पठित हैं। इस गण की धातुओं

के उपरान्त ही प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं, धातु और प्रत्यय के बीच में भ्वादि-गण के शप (अ) की तरह कुछ नहीं लाया जाता। उदाहरणार्थ अद्+मि=अद्मि, अद्+ति=अत्ति, स्ना+ति=स्नाति।

परस्मैपदी आकारान्त धातुओं के अनन्तर अनद्यतनभूत के प्रथम पुरुष बहुवचन के अन् प्रत्यय के स्थान पर विकल्प से उस् आता है, जैसे—आदन् अथवा आदुः।

२७—परस्मैपदी—अद्—भोजन करना, खाना

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र०	पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
	म०	पु०	अत्सि	अत्थः	अत्थ
	उ०	पु०	अद्मि	अद्वः	अद्मः
लोट्	प्र०	पु०	अत्त	अत्ताम्	अदन्तु
	म०	पु०	अद्धि	अत्तम्	अत्त
	उ०	पु०	अदानि	अदाव	अदाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	अद्यात्	अद्याताम	अद्युः
	म०	पु०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
	उ०	पु०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम
लङ्	प्र०	पु०	आदत्	आत्ताम्	आदन्, आदुः
	म०	पु०	आदः	आत्तम्	आत्त
	उ०	दु०	आदम्	आद्व	आद्म
लृट्	प्र०	पु०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
	म०	पु०	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
	उ०	पु०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

२८—परस्मैपदी अस्—होना

लट्	प्र०	पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
	म०	पु०	असि	स्थः	स्थ
	उ०	पु०	अस्मि	स्वः	स्मः
लोट्	प्र०	पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म०	पु०	एधि	स्तम्	स्त
	उ०	पु०	असानि	असाव	असाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
	म०	पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
	उ०	पु०	स्याम्	स्याव	स्याम
लङ्	प्र०	पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
	म०	पु०	आसीः	आस्तम्	आस्त
	उ०	पु०	आसम्	आस्व	आस्म
लृट्	प्र०	पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
	म०	पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
	उ०	पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

२९—उभयपदी ब्रू—कहना, बोलना (परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र०	पु०	ब्रवीति, आह	ब्रूतः, आहतुः	ब्रुवन्ति, आहुः
	म०	पु०	ब्रवीषि, आत्थ	ब्रूथः, आहथुः	ब्रूथ
	उ०	पु०	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः
लोट्	प्र०	पु०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रूवन्तु
	म०	पु०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
	उ०	पु०	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
	म०	पु०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
	उ०	पु०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम
लङ्	प्र०	पु०	अब्रवीत	अब्रूताम	अब्रुवन्
	म०	पु०	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
	उ०	पु०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम
लृट्	प्र०	पु०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
	म०	पु०	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
	उ०	पु०	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

३०—परस्मैपदी—*पा—रक्षा करना

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र०	पु०	पाति	पातः	पान्ति
	म०	पु०	पासि	पाथः	पाथः
	उ०	पु०	पामि	पावः	पामः
लोट्	प्र०	पु०	पातु	पाताम्	पान्तु
	म०	पु०	पाहि	पाताम्	पात
	उ०	पु०	पानि	पाव	पाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	पायात्	पायातां	पायुः
	म०	पु०	पायाः	पायातम्	पायात
	उ०	पु०	पायाम्	पायाव	पायाम
लङ्	प्र०	पु०	अपात्	अपाताम्	अपान्,अपुः
	म०	पु०	अपाः	आपातम्	अपात
	उ०	पु०	अपाम्	अपाव	अपाम
लृट्	प्र०	पु०	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
	म०	पु०	पास्यसि	थास्यथः	पास्यथ
	उ०	पु०	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

३१—परस्मैपदी—रुद्—रोना

लृट्	प्र०	पु०	रोदिति	रुदतिः	रुदन्ति
	म०	पु०	रोदषि	रुदिथः	रुदथ
	उ०	पु०	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः
लोट्	प्र०	पु०	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु
	म०	पु०	रुदिहि	रुदितम्	रुदित
	उ०	पु०	रोदानि	रोदाव	रोदाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	रुद्यात्	रुद्यताम्	रद्युः
	म०	पु०	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
	उ०	पु०	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ्	प्र०	पु०	अरोदीत् / अरोदत	अरुदिताम्	अरुदन्
	म०	पु०	अरोदीः	अरुदितम्	अरुदित
	उ०	पु०	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम
लृट	प्र०	पु०	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
	म०	पु०	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
	उ०	पु०	रोदिष्यामि	रोदष्यावः	रोदिष्यामः

३२—उभयपदी—दुह—दुहना (परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र०	पु०	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
	म०	तु०	दोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
	उ०	पु०	दोह्म	दुह्वः	दुह्मः
लोट्	प्र०	पु०	दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु
	म०	पु०	दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध
	उ०	पु०	दोहानि	दोहाव	दोहाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्य :
	म०	पु०	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
	उ०	पु०	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम
लङ्	प्र०	पु०	अधोक्-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्
	म०	पु०	अधोक्-ग्	अदुग्धम्	अदुग्ध
	उ०	पु०	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म
लृट्	प्र०	पु०	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
	म०	पु०	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
	उ०	पु०	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः

३३—परस्मैपदी—स्वप्—सोना

लट्	प्र०	पु०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म०	पु०	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
	उ०	पु०	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः
लोट्	प्र०	पु०	स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु
	म०	पु०	स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित
	उ०	पु०	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	स्वप्यात्	स्वप्याताय्	स्वप्युः
	म०	पु०	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
	उ०	पु०	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम
लङ्	प्र०	पु०	अस्वपीत् अस्वपत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
	म०	पु०	स्वप्स्यसि अस्वपः	अस्वपितम्	अस्वपित
	उ०	पु०	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम
लृट्	प्र०	पु०	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
	म०	पु०	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
	उ०	पु०	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः

३३—परस्मैपदी हन् मारना

लट्	प्र०	पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
	म०	पु०	हंन्सि	हथः	हथ
	उ०	पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः
लोट्	प्र०	पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
	म०	पु०	जहि	हतम्	हत
	उ०	पु०	हनानि	हनाव	हनाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
	म०	पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
	उ०	पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम
लङ्	प्र०	पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म०	पु०	अहन्	अहतम्	अहत
	उ०	पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म
लृट्	प्र०	पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
	म०	पु०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
	उ०	पु०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

३५—परस्मैपदी—इ—जाना

लट्	प्र०	पु०	एति	इतः	यन्ति
	म०	पु०	एषि	इथः	इथ
	उ०	पु०	एमि	इवः	इमः
लोट्	प्र०	पु०	एतु	इताम्	यन्तु
	म०	पु०	इहि	इतम्	इत
	उ०	पु०	अयानि	अयाव	अयाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	इयात्	इयाताम्	इयुः
	म०	पु०	इयाः	इयातम्	इयात
	उ०	पु०	इयाम्	इयाव	इयाम
लङ्	प्र०	पु०	ऐत्	ऐताम्	आयन्
	म०	पु०	ऐः	ऐतम्	ऐत
	उ०	पु०	आयम्	ऐव	ऐम
लृट्	प्र०	पु०	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
	म०	पु०	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
	उ०	पु०	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः

३६—आत्मनेपदी—आस्—बैठना

लट्	प्र०	पु०	आस्ते	आसाते	आसते
	म०	पु०	आस्से	आसाथे	आध्वे
	उ०	पु०	आसे	आस्वहे	आस्महे
लोट्	प्र०	पु०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म०	पु०	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
	उ०	पु०	आसै	आसावहै	आसामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	आसीत्	आसीयाताम्	आसीरन्
	म०	पु०	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
	उ०	पु०	आसीय	आसीवहि	आसीमहि
लङ्	प्र०	पु०	आस्त	आसाताम्	आसत
	म०	पु०	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
	उ०	पु०	आसि	आस्वहि	आस्महि
लृट्	प्र०	पु०	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
	म०	पु०	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
	उ०	पु०	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे

३७—आत्मनेपदी—शी - सोना

लट	प्र०	पु०	शेते	शयाते	शेरते
	म०	पु०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
	उ०	पु०	शेये	शेवहे	शेमहे
लोट्	प्र०	पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
	म०	पु०	शष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
	उ०	पु०	शयै	शयावहै	शयामहे
विधिलिङ	प्र०	पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
	म०	पु०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
	उ०	पु०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि
लङ	प्र०	पु०	अशेत	अशेयाताम्	अशेरत
	म०	पु०	अशेथाः	अशेयाथाम्	अशेध्वम्
	उ०	पु०	अशेयि	अशेवहि	अशेमहि
लृट्	प्र०	पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म०	पु०	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
	उ०	पु०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

३८—*सू—पैदा करना

लट्	प्र०	पु०	सूते	सुवाते	सुवते
	म०	पु०	सूषे	सुवाथे	सूध्वे
	उ०	पु०	सुवे	सूवहे	सूमहे
लोट्	प्र०	पु०	सूताम्	सुवाताम्	सुवताम्
	म०	पु०	सूष्व	सुवाथाम्	सूध्वम्
	उ०	पु०	सुवै	सुवावहै	सुवामहै
विधिलिङ	प्र०	पु०	सुवीत	सुवीयाताम्	सुवीरन्
	म०	पु०	सुवीथाः	सुवीयाथाम्	सुवीध्वम्
	उ०	पु०	सुवीय	सुवीवहि	सुवीमहि
लङ	प्र०	पु०	असूत	असुवाताम्	असुवत
	म०	पु०	असूथाः	असुवाथाम्	असूध्वम्
	उ०	पु०	असुवि	असूवहि	असूमहि
लृट्	प्र०	पु०	सविष्यते	सविष्येथे	सविष्यन्ते
	म०	पु०	सविष्यसे	सविष्येथे	सविष्यध्वे
	उ०	पु०	सविष्ये	सविष्यावहे	सविष्यामहे
			अथवा		
	प्र०	पु०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
	म०	पु०	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
	उ०	पु०	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

(३) जुहोत्यादिगण

इस गण की प्रथम धातु हु (हवन करना) है। उसके रूप जुहोति आदि होते हैं। इसलिए इस गण का नाम जुहोत्यादिगण पड़ा। इस गण में २४ धातुएँ हैं। इनके उपरान्त प्रत्यय जोड़ते समय धातु और प्रत्यय के

बीच में कुछ नहीं लाया जाता, केवल धातु का अभ्यास किया जाता है, अर्थात धातु का रूप दोहरा कर दिया जाता है—जैसे दा से ददा आदि।

धातु के प्रथम स्वर को दो बार लाते हैं (जैसे उख का अभ्यस्त रूप उ उख; यदि प्रथम स्वर के पूर्व में कोई व्यंजन हो तो उस व्यंजन-सहित उस स्वर को लाते हैं। जैसे पत् से पपत्)। यदि आरंभ में संयुक्ताक्षर हो तो संयुक्ताक्षर के प्रथम व्यंजन के साथ स्वर आता है (जैसे प्रच्छ से पप्रच्छ), किन्तु यदि संयुक्ताक्षर के आदि में श्, ष्, स् में से कोई हो तो दूसरा अर्थात् श्, ष्, स् के बाद वाला ही व्यंजन साथ वाले स्वर के साथ आता है (जैसे स्पर्ध् से पस्पर्ध्)। अभ्यास में आने वाला अक्षर यदि पंचवर्गों का द्वितीय अथवा चतुर्थ हो तो क्रम से उसके स्थान पर प्रथम अथवा तृतीय आ जाते हैं। (जैसे छिद् से चिच्छिद्, भुज से बुभुज्)। कवर्गीय अक्षर का अभ्यास करना हो तो उसके जोड़ का चवर्गीय अक्षर लाना चाहिए; जैसे—कम् से चकम्; खन्=कखन्=चखन्। इसी प्रकार के स्थान पर ज (जैसे—हु से जुहु)। अभ्यास मे दीर्घ स्वर का ह्रस्व (जैसे दा से ददा, नी से निनी), ऋ का अ (जैसे कृ से चकृ), ए अथवा ऐ का इ (जैसे सेव् से सिषेव्) और ओ अथवा औ का उ (जैसे गोप् से जुगोप्, ढौक् से डुढौक्) हो जाता है।

इस गण में वर्तमान (लट्) के प्रथम पुरुष के बहुवचन में "अन्ति" के स्थान पर "अति" तथा अनद्यतनभूत (लङ) के प्रथम पुरुष के बहुवचन में अन् के स्थान पर "उस्" होता हैं। इस "उस्" प्रत्यय के पूर्व धातु के अन्तिम आ का लोप कर दिया जाता है और अन्तिम इ, उ, ऋ को गुण (धारा ८) प्राप्त होता है।

(४)—परस्मैपदी—हु—हवन करना

लट्	प्र०	पु०	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
	म०	पु०	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
	उ०	पु०	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः
लोट्	प्र०	पु०	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु
	म०	पु०	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	उ०	पु०	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
	म०	पु०	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
	उ०	पु०	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम
लङ्	प्र०	पु०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः
	म०	पु०	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
	उ०	पु०	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम
लृट्	प्र०	पु०	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
	म०	पु०	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
	उ०	पु०	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

३८—परस्मैपदी—भी—डरना

लट्	प्र०	पु०	बिभेति	बिभितः बिभीतः	बिभ्यति
	म०	पु०	बिभेषि	बिभिथः बिभीथः	बिभिथ बिभीथ
	उ०	पु०	बिभेमि	बिभिवः बिभीवः	बिभिमः बिभीमः
लोट्	प्र०	पु०	बिभेतु	बिभिताम् बिभीताम्	बिभ्यतु
	म०	पु०	बिभिहि बिभीहि	बिभितम् बिभीतम्	बिभित बिभीत
	उ०	पु०	बिभयाति	बिभयाव	बिभयाम
विधि०	प्र०	पु०	बिभियात् बिभीयात्	बिभियाताम् बिभीयाताम्	बिभियुः बिभीयुः
	म०	पु०	बिभियाः बिभीयाः	बिभियातम् बिभीयातम्	बिभियात बिभीयात

	उ०	पु०	बिभियाम्	बिभियाव	बिभियाम
			बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम
लङ्	प्र०	पु०	अबिभेत्	अबिभिताम् / अबिभीताम्	अबिभयुः
	म०	पु०	अबिभेः	अबिभितम् / अबिभीतम्	अबिभित / अबिभीत
	उ०	पु०	अबिभयम्	अबिभिव / अबिभीव	अबिभिम / अबिभीम्
लृट्	प्र०	पु०	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
	म०	पु०	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
	उ०	पु०	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

३९—उभयपदी – दा—देना (परस्मैपद के रूप)

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र०	पु०	ददाति	दत्तः	ददति
	म०	पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ
	उ०	पु०	ददामि	दद्व	दद्मः
लोट	प्र०	पु०	ददातु	दत्ताम	ददतु
	म०	पु०	देहि	दत्तम्	दत्त
	उ०	पु०	ददानि	ददाव	ददाम
बिधिलिङ्	प्र०	पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
	म०	पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
	उ०	पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
लङ्	प्र०	पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
	म०	पु०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
	उ०	पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म
लृट्	प्र०	पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
	म०	पु०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
	उ०	पु०	दास्यामि	दास्यायः	दास्यामः

उभयपदी दा धातु के आत्मनेपद में रूप

लट्	प्र०	पु०	दत्ते	ददाते	ददते
	म०	पु०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
	उ०	पु०	ददे	दद्वहे	दद्महे
लोट्	प्र०	पु०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
	म०	पु०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
	उ०	पु०	ददै	ददावहै	ददामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
	म०	पु०	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
	उ०	पु०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ्	प्र०	पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत
	म०	पु०	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
	उ०	पु०	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
लृट्	प्र०	पु०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
	म०	पु०	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
	उ०	पु०	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

४०–उभयपदी-धा-धारण करना (परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र०	पु०	दधाति	धत्तः	दधति
	म०	पु०	दधासि	धत्थः	धत्थ
	उ०	पु०	दधामि	दध्वः	दध्मः
लोट्	प्र०	पु०	दधातु	धत्ताम्	दधतु
	म०	पु०	धेहि	धत्तम्	धत्त
	उ०	पु०	दधानि	दधाव	दधाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः
	म०	पु०	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात
	उ०	पु०	दध्याम्	दध्याव	दध्याम
लङ्	प्र०	पु०	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म०	पु०	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त
	उ०	पु०	अदधाम्	अदध्व	अदध्म
लृट्	प्र०	पु०	धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति
	म०	पु०	धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ
	उ०	पु०	धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः

उभयपदी धा धातु के आत्मनेपद में रूप

लट्	प्र०	पु०	धत्ते	दधाते	दधते
	म०	पु०	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
	उ०	पु०	दधे	दध्वहे	दध्महे
लोट्	प्र०	पु०	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
	म०	पु०	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
	उ०	पु०	दधै	दधावहै	दधामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
	म०	पु०	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधध्वम्
	उ०	पु०	दधीय	दधीवहि	दधीमहि
लङ्	प्र०	पु०	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
	म०	पु०	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
	उ०	पु०	अदधि	अदध्वहि	धदध्महि
लृट्	प्र०	पु०	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
	म०	पु०	धास्यसे	धस्येथे	धास्यध्वे
	उ०	पु०	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे

४ दिवादिगण

इस गण की प्रथम धातु "दिव" जुआ खेलना है। इस कारण इसका नाम दिवादिगण है। इसमें १४० धातुएँ हैं। इस गण की धातुओं और प्रत्ययों के बीच में श्यन् (य) जोड़ा जाता है; जैसे—मन् धातु से मन्+य+ते =मन्यते। कुप्+य+ति=कुप्यति।

४१—परस्मैपदी—दिव्—जुआ खेलना. चमकना

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
	म० पु०	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
	उ० पु०	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः
लोट्	प्र० पु०	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
	म० पु०	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
	उ० पु०	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम
विधिलिङ्	प्र० पु०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
	म० पु०	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
	उ० पु०	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम
लङ्	प्र० पु०	अदीव्यत्	अदीव्ययाम्	अदीव्यन्
	म० पु०	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
	उ० पु०	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम
लृट्	प्र० पु०	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
	म० पु०	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
	उ० पु०	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

४३—परस्मैपदी गम् (नृत्)—नाचना

लट्	प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
	म० पु०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
	उ० पु०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः
लोट्	प्र० पु०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
	म० पु०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
	उ० पु०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम
विधिलिङ्	प्र० पु०	नृत्येत्	नृत्यताम्	नृत्येयुः
	म० पु०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
	उ० पु०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ्	प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
	म० पु०	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
	उ० पु०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम
लृट्	प्र० पु०	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
	म० पु०	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
	उ० पु०	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

अथवा-

	प्र० पु०	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
	म० पु०	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथ
	उ० पु०	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

४३–परस्मैपदी नश् (नष्ट)–होना

लट	प्र० पु०	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
	म० पु०	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
	उ० पु०	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः
लोट्	प्र० पु०	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
	म० पु०	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
	उ० पु०	नश्यानि	नश्याव	नश्याम
विधिलिङ्	प्र० पु०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
	म० पु०	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
	उ० पु०	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम
लङ्	प्र० पु०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
	म० पु०	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
	उ० पु०	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम
लृट्	प्र० पु०	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
	म० पु०	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
	उ० पु०	नशिष्याभि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

अथवा

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	प्र० पु०	नङ्क्ष्यति	नङ्क्ष्यतः	नङ्क्ष्यन्ति
	म० पु०	नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथः	नङ्क्ष्यथ
	उ० पु०	नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्यावः	नङ्क्ष्यामः

४४—परस्मैपदी भ्रम्—भूल—करना

लृट्	प्र० पु०	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
	म० पु०	भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ
	उ० पु०	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः
लोट्	प्र० पु०	भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
	म० पु०	भ्राम्य	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
	उ० पु०	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम
विधिलिङ्	प्र० पु०	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
	म० पु०	भ्राम्यः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत
	उ० पु०	भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम
लङ्	प्र० पु०	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
	म० पु०	अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत
	उ० पु०	अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम
लट्	प्र० पु०	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
	म० पु०	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
	उ० पु०	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

यही भ्रम् "चलने" के अर्थ में भ्वादिगणी होती है जिसके रूप इस प्रकार चलते हैं।

लट्	प्र० पु०	भ्रमति	भ्रमतः	भ्रमन्ति
	म० पु०	भ्रमसि	भ्रमथः	भ्रमथ
	उ० पु०	भ्रमामि	भ्रमावः	भ्रमामः
लोट्	प्र० पु०	भ्रमतु	भ्रमताम्	भ्रमन्तु

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म० पु०	भ्रम	भ्रमतम्	भ्रमत
	उ० पु०	भ्रमाणि	भ्रमाव	भ्रमाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	भ्रमेत्	भ्रमेताम्	भ्रमेयुः
	म० पु०	भ्रमेः	भ्रमेतम्	भ्रमेत
	उ० पु०	भ्रमेयम्	भ्रमेव	भ्रमेम
लङ्	प्र० पु०	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन्
	म० पु०	अभ्रमः	अभ्रमतम्	अभ्रमत
	उ० पु०	अभ्रमम्	अभ्रमाव	अभ्रमाम
लृट्	प्र० पु०	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यतः
	म० पु०	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्थ
	उ० पु०	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

४५-आत्मनेपदी-युध्-लड़ना

लट्	प्र० पु०	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
	म० पु०	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
	उ० पु०	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे
लोट्	प्र० पु०	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्
	म० पु०	युध्यस्व	युध्येताम्	युध्यध्वम्
	उ० पु०	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
	म० पु०	युध्येथाः	युध्येयाथाम	युध्येध्वम्
	उ० पु०	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि
लङ्	प्र० पु०	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
	म० पु०	अयुध्यथाः	अयुध्यथाः	अयुध्यध्वम्
	उ० पु०	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि
लृट्	प्र० पु०	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते
	म० पु०	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
	उ० पु०	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे

४६—आत्मनेपदी—जन्—पैदा होना

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	जायते	जायेते	जायन्ते
	म० पु०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
	उ० पु०	जाये	जायावहे	जायामहे
लोट्	प्र० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
	म० पु०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
	उ० पु०	जायै	जायावहै	जायामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
	म० पु०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम
	उ० पु०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि
लङ्	प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
	म० पु०	अजायथाः	आजायेथाम्	अजायध्वम्
	उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि
लृट्	प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
	म० पु०	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
	उ० पु०	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

५. स्वादिगण

इस गण की प्रथम धातु "सु" (रस निकालना) है, इस कारण इसका नाम स्वादि पड़ा। इसमें ३५ धातुएँ हैं। धातु और प्रत्यय के बीच में इस गण में श्नु (नु) जोड़ा जाता है। उदाहरणार्थ सु+नु+ते=सुनुते आदि।

नोट—प्रत्यय के व, म के पूर्व विकल्प से नु का उ गिराकप केवल न् जोड़ा जाता है, जैसे—सु+नु+वः=सुनुवः, सुन्वः अथवा सुनुमः, सुन्मः। किन्तु यदि नु के पूर्व कोई व्यंजन हो तो उ नहीं निकाला जाता जैसे साध+नु+मः =साध्नुमः।

४७—उभयपदी—सु—स्नान कराना, स्नान करना, रस निकालना (परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र० पु०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म० पु०	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
	उ० पु०	सुनोमि	सुनुवः / सुन्वः	सुनुमः / सुन्मः
लोट्	प्र० पु०	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु
	म० पु०	सुनु	सुनुतम्	सुनुत
	उ० पु०	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
	म० पु०	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
	उ० पु०	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम
लङ्	प्र० पु०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
	म० पु०	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
	उ० पु०	असुनवम्	असुनुव / असुन्व	असुनुम / असुन्म
लृङ्	प्र० पु०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
	म० पु०	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
	उ० पु०	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

Jaraz dan upadhyay

उभयपदी सु धातु के आत्मनेपद के रूप

लट्	प्र० पु०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
	म० पु०	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
	उ० पु०	सुन्वे	सुनुवहे / सुन्वहे	सुनुमहे / सुन्महे
लोट्	प्र० पु०	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
	म० पु०	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
	उ० पु०	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुवीरन्
	म० पु०	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
	उ० पु०	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ	प्र० पु०	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
	म० पु०	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
	उ० पु०	असुन्वि	असुनुवहि / असुन्वहि	असुनुमहि / असुन्महि
लृट्	प्र० पु०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
	म० पु०	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
	उ० पु०	सोष्ये	सोंष्यावहे	सोष्यामहे

४८—परस्मैपदी—आप्—पाना

लट्	प्र० पु०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
	म० पु०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
	उ० पु०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः
लोट्	प्र० पु०	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
	म० पु०	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
	उ० पु०	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
	म० पु०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
	उ० पु०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम्
लृङ्	प्र० पु०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
	म० पु०	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
	उ० पु०	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम
लृट्	प्र० पु०	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
	म० पु०	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्यथ
	उ० उ०	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

४९—परस्मपदी—शक्—सकना

लट्	प्र० पु०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
	म० पु०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
	उ० पु०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

		एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
लोट्	प्र० पु०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
	म० पु०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
	उ० पु०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
	म० पु०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
	उ० पु०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम
लोट्	प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
	म० पु०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
	उ० पु०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम
लङ्	प्र० पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
	म० पु०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
	उ० पु०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम
लृट्	प्र० पु०	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
	म० पु०	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
	उ० पु०	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

६ तुदादिगण

इस गण की प्रथम धातु तुद् (पीड़ा पहुंचाना) है, इसी से इसका नाम तुदादिगण है। इसमें १५७ धातुएँ हैं। धातु और प्रत्यय के बीच में इस गण में श (अ) जोड़ा जाता है। भ्वादिगण में भी अ जोड़ा जाता है, किन्तु वहाँ धातु की उपधा के अथवा अन्त के स्वर को गुण प्राप्त होता है, यहाँ तुदादिगण में ऐसा नहीं होता। यहाँ अन्तिम इ ई को इय् उ ऊ को उव् ऋ को रिय् तथा ऋ॒ को इर् हो जाता है, जैसे—रि+अ+ति=रियति। धु+अ+ति=धुवति। मृ+अ+ते=म्रियते। गृ॒+अ+ति=गिरति। कृष् धातु भ्वादिगण तथा तुदादिगण दोनों में है, भ्वादि में कृर्षति आदि और तुदादि में कृषति आदि रूप होते हैं।

५०—उभयपदी तुद् पीड़ा पहुँचाना (परस्मैपदी के रूप)

लट्	प्र० पु०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म० पु०	तुदसि	तुदथः	तुदथ
	उ० पु०	तुदामि	तुदावः	तुदामः
लोट्	प्र० पु०	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
	म० पु०	तुद	तुदतम्	तुदत
	उ० पु०	तुदानि	तुदाव	तुदाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
	म० पु०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
	उ० पु०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम
लङ्	प्र० पु०	अतुदत्	अतुताम्	अतुदन्
	म० पु०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
	उ० पु०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम
लृट्	प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
	म० पु०	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
	उ० पु०	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

५१—परस्मैपदी—इष् —चाहना

लट्	प्र० पु०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
	म० ,,	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
	उ० ,,	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः
लोट्	प्र० ,,	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
	म० ,,	इच्छ	इच्छतम	इच्छत
	उ० ,,	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम
विधिलिङ्	प्र० ,,	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
	म० ,,	इच्छेः	इच्छेतम	इच्छेत
	उ० ,,	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम
लङ्	प्र० ,,	ऐच्छत्	ऐच्छताम	ऐच्छन्
	म० ,,	ऐच्छः	ऐच्छतम	ऐच्छत
	उ० ,,	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट्	प्र०	पु०	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
	म०	पु०	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
	उ०	पु०	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

५२—आत्मनेपदी—स्पृश्—छूना

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लृट्	प्र०	पु०	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
	म०	पु०	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ
	उ०	पु०	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः
लोट्	प्र०	पु०	स्पृशतु	स्पृशतान्	स्पृशन्तु
	म०	पु०	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
	उ०	पु०	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
	म०	पु०	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
	उ०	पु०	स्पृशेयम्	स्पृयव	स्पृशेम
लङ्	प्र०	पु०	अस्पृत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
	म०	पु०	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
	उ०	पु०	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम
लृट्	प्र०	पु०	स्प्रक्ष्यति	स्प्रक्ष्यतः	स्प्रक्ष्यन्ति
	म०	पु०	स्प्रक्ष्यसि	स्प्रक्ष्यसि	स्प्रक्ष्यथः
	उ०	पु०	स्प्रक्ष्यामि	स्प्रक्ष्यावः	स्प्रक्ष्यामः
			अथवा		
	प्र०	पु०	स्पर्क्ष्यति	स्पर्क्ष्यतः	स्पर्क्ष्यन्ति
	म०	पु०	स्पर्क्ष्यसि	स्पर्क्ष्यथः	स्पर्क्ष्यथ
	उ०	पु०	स्पर्क्ष्यामि	स्पर्क्ष्याव	स्पर्क्ष्यामः

५—परस्मैपदी—प्रच्छ् (पृच्छ)—पूछना

लट्	प्र०	पु०	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
	म०	पु०	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
	उ०	पु०	पृच्छामि	पृच्छाव	पृच्छामः

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लोट्	प्र०	पु०	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
	म०	पु०	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
	उ०	पु०	पृच्छामि	पृच्छाव	पृच्छाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	पृच्छेः	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
	म०	पु०	पृच्छे	पृच्छेतम्	पृच्छेत
	उ०	पु०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम
लङ	प्र०	पु०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
	म०	पु०	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
	उ०	पु०	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम
लृट्	प्र०	पु०	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
	म०	पु०	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
	उ०	पु०	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्याव	प्रक्ष्यामः

५४—आत्मनेपदी—मृ—मरना

लट्	प्र०	पु०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
	म०	पु०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
	उ०	पु०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
लोट्	प्र०	पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
	म०	पु०	म्रियस्व	म्रियेथाम	म्रियेध्वम
	उ०	पु०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै
विधिलिङ	प्र०	पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
	म०	पु०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
	उ०	पु०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि
लङ्	प्र०	पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
	म०	पु०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
	उ०	पु०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
लृट्	प्र०	पु०	मयिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
	म०	पु०	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यन्ति
	उ०	पु०	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः

५५—उभयपदी मुच् (मुञ्च्)—छोड़ना - (परस्मैपद के रूप)

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र०	पु०	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
	म०	पु०	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
	उ०	पु०	मुञ्चामि	मुञ्चाव	मुञ्चामः
लोट्	प्र०	पु०	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चतु
	म०	पु०	मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत
	उ०	पु०	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः
	म०	पु०	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
	उ०	पु०	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम
लङ्	प्र०	पु०	अमुञ्चत	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
	म०	पु०	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
	उ०	पु०	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम
लृट्	प्र०	पु०	मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः	मोक्ष्यन्ति
	म०	पु०	मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथः	मोक्ष्यथ
	उ०	पु०	मोक्ष्यामि	मोक्ष्यावः	मोक्ष्यामः

उभयपदी मुच्धातु के आत्मनेपद में रूप

लङ्	प्र०	पु०	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
	म०	पु०	मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे
	उ०	पु०	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे
लोट्	प्र०	पु०	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
	म०	पु०	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
	उ०	पु०	मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
	म०	पु०	मुञ्चेथाः	मुञ्चेयाथाम्	मुञ्चेध्वम्
	उ०	पु०	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ्	प्र०	पु०	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
	म०	पु०	अमुञ्चथाः	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
	उ०	पु०	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि
लृट्	प्र०	पु०	मोक्ष्यते	मोक्ष्येते	मोक्ष्यन्ते
	म०	पु०	मोक्ष्यहे	मोक्ष्येथे	मोक्ष्यध्वे
	उ०	पु०	मोक्ष्ये	मोक्ष्यावहे	मोक्ष्यामहे

6. रुधादिगण

इस गण की प्रथम धातु "रुध" (रोकना, घेरना) है, इस कारण इसका नाम रुधादि है। इसमें २५ धातुऐं हैं। धातु के प्रथम स्वर के उपरान्त इस गण में श्नम् (न अथवा न्) जोड़ा जाता है जैसे—क्षुद्+ति=क्षु+न+=द्+ति=क्ष+ण+द्+ति=क्षुणत्ति । क्षुद् · यात्=क्षु+न्+द+यात्=क्षुन्द्यात् ।

५६—उभयपदी रुध्—ढकना, रोकना (परस्मैपद के रूप)

लट	प्र०	पु०	रुणाद्धि	रुन्द्ध	रुधन्ति
	म०	पु०	रुणात्सि	रुन्द्धः	रुन्द्ध
	उ०	पु०	रुणाद्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः
लोट	प्र०	पु०	रुणद्धु	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु
	म०	पु०	रुन्द्धि	रुन्द्धम्	रुन्द्ध
	उ०	पु०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्तायाम्	रुन्ध्यु
	म०	पु०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यातम्
	उ०	पु०	रुन्ध्याम	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम्
लङ्	प्र०	पु०	अरुणते-द्	अरुन्द्धाम्	अरुन्धन्
	म०	पु०	अरुणः / अरुणत्	अरुन्द्धाम्	अरुन्द्ध
	उ०	पु०	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लृट्	प्र० पु०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
	म० पु०	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
	उ० पु०	रोत्यस्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

उभयपदी रुध् धातु के आत्मनेपद में रूप

लट्	प्र० पु०	रुन्द्धे	रुन्धाते	रुन्धते
	म० पु०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्द्ध्वे
	उ० पु०	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे
लोट्	प्र० पु०	रुन्द्धाम्	रुन्द्धाताम्	रुन्द्धताम्
	म० पु०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्द्ध्वम्
	उ० पु०	रुणधै	रुणधावहे	रुणधामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
	म० पु०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
	उ० पु०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि
लङ्	प्र० पु०	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
	म० पु०	अरुन्द्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्द्ध्वम्
	उ० पु०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि
लृट्	प्र० पु०	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
	म० पु०	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
	उ० पु०	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे

५७—उभयपदी भुज्—खाना (आत्मनेपदी) और पालना (परस्मैपदी)

(परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र० पु०	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति
	म० पु०	भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ
	उ० पु०	भुनज्मि	भुञ्जवः	भुञ्ज्मः
लोट्	प्र० पु०	भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु
	म० पु०	भुङ्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		उ० पु०	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम
विधिलिङ्		प्र० पु०	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
		म० पु०	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
		उ० पु०	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम
लङ्		प्र० पु०	अभुनक्—ग्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्
		म० पु०	अभुनक्—ग्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त
		उ० पु०	अभुनजस्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म
लृट्		प्र० पु०	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति
		म० पु०	भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यथ
		उ० पु०	भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः

उभयपदी भुज् धातु के आत्मने० के रूप

लट्	प्र० पु०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
	म० पु०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
	उ० पु०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे
लोट्	प्र० पु०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
	म० पु०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
	उ० पु०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
	म० पु०	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीयाथाम्
	उ० पु०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि
लङ्	प्र० पु०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम	अभुञ्जत
	म० पु०	अङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
	उ० पु०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि
लृट्	प्र० पु०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
	म० पु०	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे
	उ० पु०	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

८. तनादिगण

इस गण की प्रथम धातु तन् (फैलाना) है, इसलिये इसका नाम तनादि है। इसमें दस धातुएँ हैं। धातु और प्रत्यय के बीच में, इस गण में उ जोड़ा जाता है; जैसे—तन्+उ+ते+ =तनुते।

उभयपदी तन् धातु—फैलाना (परस्मैपद में रूप)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
	म० पु०	तनोषि	तनुथः	तनुथ
	उ० पु०	तनोमि	तनुवः / तन्वः	तनुमः / तन्मः
लोट्	प्र० पु०	तनोतु	तनुताम्	तन्वतु
	म० पु०	तनु	तनुतम्	तनुत
	उ० पु०	तनवानि	तनवाव	तनवाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
	म० पु०	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
	उ० पु०	तनुयाम्	तनुयाव	तमुयाम
लङ्	प्र० पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
	म० पु०	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
	उ० पु०	अतनवम्	अतनुव / अतन्व	अतनुम / अन्तम
लृट्	प्र० पु०	तनिष्यति	ततिष्यतः	तनिष्यन्ति
	म० पु०	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
	उ० पु०	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तमिष्यामः

उभयपदी तन् धातु आत्मनेपद में रूप

लृट्	प्र० पु०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
	म० पु०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
	उ० पु०	तन्वे	तनुवहे, तन्वहे	तनुमहे, तन्महे
लोट्	प्र० पु०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	म० पु०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
	उ० पु०	तनवै	तनवावहै	तनवाहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
	म० पु०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
	उ० पु०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि
लङ्	प्र० पु०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
	म० पु०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
	उ० पु०	अतन्वि	अतनुवहि / अतन्वहि	अतनुमहि / अतन्महि
लृट्	प्र० पु०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
	म० पु०	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
	उ० उ०	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

५९—उभयपदी कृ धातु—करना (परस्मैपद में रूप)

लट्	प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
	म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
	उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः
लोट्	प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
	म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
	उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यः
	म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
	उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम
लङ्	प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
	म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
	उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लृट्	प्र०	पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
	म०	पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
	उ०	पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

उभयपदी कृ धातु के अत्मनेपद में रूप

लट्	प्र०	पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
	म०	पु०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
	उ०	पु०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लोट्	प्र०	पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
	म०	पु०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
	उ०	पु०	करवै	करवावहै	करवामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
	म०	पु०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथान्	कुर्वीध्वम्
	उ०	पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
लङ्	प्र०	पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
	म०	पु०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
	उ०	पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
लृट्	प्र०	पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
	म०	पु०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
	उ०	पु०	करिष्य	करिष्यावहे	करिष्यामहे

क्र्यादिगण

इस गण का प्रथम धातु क्री (मोल लेना) है, इस कारण इसका नाम क्र्यादिगण पड़ा। इसमें ६१ धातुयें हैं। धातु और प्रत्यय के बीच में, इस गण में श्ना (ना) जोड़ा जाता है। किन्ही प्रत्ययों के पूर्व ना न् हो जाता है, और किन्हीं के पूर्व नी। धातु की उपधा में यदि वर्गों का पञ्चम अक्षर अथवा अनस्वार हो तो उसका लोप हो जाता है।

व्यंजनान्त धातुओं के उपरान्त आज्ञा (लोट्) के म० पु० एकवचन में हि प्रत्यय के स्थान में आन होता है, जैसे—मुष् + हि = मुष् + आन = मुषाण।

६०——उभयपदी क्री धातु-मोल लेना (परस्मैपद के रूप)

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र०	पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
	म०	पु०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
	उ०	पु०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः
लोट्	प्र०	पु०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
	म०	पु०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
	उ०	पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम
विधिलिङ्	प्र०	पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
	म०	पु०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
	उ०	पु०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम
लङ्	प्र०	पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
	म०	पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
	उ०	पु०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम
लृट्	प्र०	पु०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
	म०	पु०	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
	उ०	पु०	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

उभयपदी क्री धातु के आत्मनेपद के रूप

लट्	प्र०	पु०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
	म०	पु०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
	उ०	पु०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे
लोट्	प्र०	पु०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम	क्रीणताम्
	म०	पु०	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
	उ०	पु०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
	म०	तु०	कीथीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
	उ०	पु०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ्	प्र०	पु०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
	म०	पु०	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
	उ०	पु०	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि
लृट्	प्र०	पु०	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यन्ते
	म०	पु०	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
	उ०	पु०	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

नोट—यदि 'क्री' धातु के पहले 'वि' उपसर्ग लग जाय तो उसका अर्थ "बेचना" हो जाता है।

६१—उभयपदी ग्रह् (ग्रह -पकड़ना (परस्मैपदी के रूप)

लट्	प्र०	पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
	म०	पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
	उ०	पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः
लोट्	प्र०	पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
	म०	पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
	उ०	पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम
विधि०	प्र०	पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
	म०	पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम	गृह्णीयात
	उ०	पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम
लङ्	प्र०	पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
	म०	पु०	अगृह्णा	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
	उ०	पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम
लृट्	प्र०	पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
	म०	पु०	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
	उ०	पु०	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

उभयपदी ग्रह के आत्मनेपद में रूप

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र०	पु०	गृह्णीते	गृह्णासे	गृह्णते
	म०	पु०	गृह्णाषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
	उ०	पु०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे
लोट्	प्र०	पु०	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
	म०	पु०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
	उ०	पु०	गृह्णे	गृह्णावहै	गृह्णामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
	म०	पु०	गृह्णाथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
	उ०	पु०	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णमहि
लङ्	प्र०	पु०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णीत
	म०	पु०	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
	उ०	पु०	अगृह्णि	अगृह्णावहि	अगृह्णमहि
लृट्	प्र०	पु०	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्ययेते	ग्रहीष्यन्ते
	म०	पु०	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
	उ०	पु०	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

६२—उभयपदी ज्ञा धातु जानना (परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र०	पु०	जानाति	जानीतः	जानन्ति
	म०	पु०	जानासि	जानीथः	जानीथ
	उ०	पु०	जानामि	जानीवः	जानीमः
लोट्	प्र०	पु०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
	म०	पु०	जानीह	जानीतम्	जानीत
	उ०	पु०	जानानि	जानाथ	जानान
विधिलिङ्	प्र०	पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
	म०	पु०	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
	उ०	पु०	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयात

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ्	प्र० पु०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
	म० पु०	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
	उ० पु०	अजानाम्	अजानीव	अजानीम
लृट्	प्र० पु०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
	म० पु०	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
	उ० पु०	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

उभयपदी ज्ञा धातु के आत्मनेपद के रूप

लट्	प्र० पु०	जानीते	जानाते	जानते
	म० पु०	जानीषे	जावाथे	जानीध्वे
	उ० पु०	जाने	जानीवहे	जातीमहे
लोट्	प्र० पु०	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
	म० पु०	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
	उ० पु०	जानै	जानावहै	जानामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
	म० पु०	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
	उ० पु०	जानीय	जानीवहि	जानीमहि
लङ्	प्र० पु०	अजानीत	अजानाताम्	अजातन
	म० पु०	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्व्
	उ० पु०	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि
लृट	प्र० पु०	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
	म० पु०	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यन्ते
	उ० पु०	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

१० चुरादिगण

इस गण की प्रथम धातु चुर् (चुराना) है, इस कारण इसका नाम चुरादिगण पड़ा। धातुपाठ में इस गण की ४११ धातुयें पठित हैं। इसमें

धातु और प्रत्यय के बीच में अय जोड़ दिया जाता है तथा उपधा के ह्रस्व स्वर (अ के अतिरिक्त) का गुण हो जाता है और यदि उपधा में ऐसा अ हो जिसके अनन्तर संयुक्तक्षर न हो तो उसकी और अन्तिम स्वर की वृद्धि हो जाती है;

उदाहरणार्थ—चुर् + अय + ति = चोर् + अय + ति = चोरयति । तड् + अय + ति = ताड् + अय + ति = ताडयति । नी + अय + ति = नै + अय + ति + नाय् = अय + ति = नायति ।

६३— उभयपदीचुर धातु-चुराना (परस्मैपद रूप)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
	म० पु०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
	उ० पु०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयाम
लोट्	प्र० पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
	म० पु०	चोरय	चोरयतम्	चोरयत्
	उ० पु०	चोदयाणि	चोरयांव	चोरयाव
विधिलिङ्	प्र० पु०	चोरयेत्	चोरगेताम्	चोरयेयु
	म० पु०	चौरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
	उ० पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम
लङ	प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
	म० पु०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयन
	उ० पु०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम
लृट्	प्र० पु०	चोरतिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
	म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरतिष्यथ
	उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

उभयपदी चुर् धातु के आत्मनेपद के रूप

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
	म० पु०	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
	उ० पु०	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे
लोट्	प्र० पु०	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
	म० पु०	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
	उ० पु०	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	चोरयेत	चोरयेताम्	चोरयेरन्
	म० पु०	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
	उ० पु०	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि
लङ्	प्र० पु०	अचोरयत	अचोरयताम्	अचोरयन्त
	म० पु०	अचोरयथा	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
	उ० पु०	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि
लृट	प्र० पु०	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
	म० पु०	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
	उ० पु०	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

६४—उभयपदी चिन्त्—सोचना (परस्मैपदी के रूप)

लट	प्र० पु०	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
	म० पु०	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ
	उ० पु०	चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः
लोट्	प्र० पु०	चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
	म० पु०	चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत
	उ० पु०	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः
	म० पु०	चिन्तयेः	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत
	उ० पु०	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ्	प्र० पु०	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
	म० पु०	अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
	उ० पु०	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम
लृट्	प्र० पु०	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
	म० पु०	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ
	उ० पु०	चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः

उभयपदी चिन्त् के आत्मनेपद के रूप

लट्	प्र० पु०	चिन्तयते	चिन्तयेते	चिन्तयन्ते
	म० पु०	चिन्तयसे	चिन्तयेथे	चिन्तयध्वे
	उ० पु०	चिन्तये	चिन्तयहै	चिन्तयामहै
लोट	प्र० पु०	चिन्तयताम्	चिन्तयेताम्	चिन्तयन्ताम्
	म० पु०	चिन्तयस्व	चिन्येयेथाम्	चिन्तयध्वम्
	उ० पु०	चिन्तयै	चिन्तयावहे	चिन्तयामहे
विधिलिङ्	प्र० पु०	चिन्तयेत	चिन्तयेयाताम्	चिन्तयेरन्
	म० पु०	चिन्तयेथाः	चिन्तयेयाथाम्	चिन्तयेध्वम्
	उ० पु०	चिन्तयेय	चिन्तयेवहि	चिन्तयेमहि
लङ्	प्र० पु०	अचिन्तयत	अचिन्तयेताम्	अचिन्तयन्त
	म० पु०	अचिन्तयथाः	अचिन्तयेथाम्	अचिन्तयध्वम्
	उ० पु०	अचिन्तये	अचिन्तयावहि	अचिन्तयामहि
लृट्	प्र० पु०	चिन्तयिष्यते	चिन्तयिष्येते	चिन्तयिष्यन्ते
	म० पु०	चिन्तयिष्यसे	चिन्तयिष्येथे	चिन्तयिष्यध्वे
	उ० पु०	चिन्तयिष्ये	चिन्तयिष्यावहे	चिन्तयिष्यामहे

इस चिन्त् धातु के रूप बिना 'णिच' वाले, भ्वादिगण में होते हैं।

लट्	प्र० पु०	चिन्तति	चिन्ततः	चिन्तन्ति
	म० पु०	न्तसि	चिन्तथः	चिन्तथ
	उ० पु०	चिन्तामि	चिन्ताव	चिन्तामः

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लोट्	प्र० पु०	चिन्ततु	चिन्तताम्	चिन्तन्तु
	म० पु०	चिन्त	चिन्ततम्	चिन्तत
	उ० पु०	चिन्तानि	चिन्ताव	चिन्ताम
विधिलिङ्	प्र० पु०	चिन्तेत्	चिन्तेताम्	चिन्तेयुः
	म० पु०	चिन्तेः	चिन्तेतम्	चिन्तेत
	उ० पु०	चिन्तेयम्	चिन्तेव	चिन्तेम
लङ्	प्र० पु०	अचिन्तत्	अचिन्तताम	अचिन्तन्
	म० पु०	अचिन्तः	अचिन्ततम्	अचिन्तत
	उ० पु०	अचिन्तम्	अचिन्ताव	अचिन्ताम
लृट्	प्र० पु०	चिन्तिष्यति	चिन्तिष्यतः	चिन्तिष्यन्ति
	म० पु०	चिन्तिष्यसि	चिन्तिष्यथः	चिन्तिष्यथ
	उ० पु०	चिन्तिष्यामि	चिन्तिष्यावः	चिन्तिष्यामः

६५—उभयपदी कथ्—कहना (परस्मैपद के रूप)

लट्	प्र० पु०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
	म० पु०	कथयसि	कथयथः	कथयथ
	उ० पु०	कथयामि	कथयावः	कथयामः
लोट्	प्र० पु०	कथयतु	कथयताम	कथयन्तु
	म० पु०	कथय	कथयतम्	कथयत
	उ० पु०	कथयानि	कथयाव	कथयाम
विधलिङ्	प्र० पु०	कथयेत्	कथयेताम	कथयेयुः
	म० पु०	कथयेः	कथयेतम	कथयेत
	उ० पु०	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम
लङ्	प्र० पु०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
	म० पु०	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
	उ० पु०	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम
लृट्	प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
	म० पु०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	उ० पु०	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

उभयपदी कथ् धातु के आत्मनेपदी के रूप

लट	प्र० पु०	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
	म० पु०	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
	उ० पु०	कथये	कथयावहे	कथयामहे
लोट्	प्र० पु०	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम
	म० पु०	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
	उ० पु०	कथयै	कथयावहै	कथयामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
	म० पु०	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
	उ० पु०	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि
लङ्	प्र० पु०	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
	म० पु०	अकथययाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
	उ० पु०	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि
लट्	प्र० पु०	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
	म० पु०	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
	उ० पु०	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

६६—उभयपदी—भक्ष्—खाना (परस्मैपदी के रूप)

लट्	प्र० पु०	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
	म० पु०	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
	उ० पु०	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः
लोट्	प्र० पु०	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
	म० पु०	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
	उ० पु०	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम
विधिलिङ्	प्र० पु०	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
	म० पु०	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
	उ० पु०	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लङ्	प्र०	पु०	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
	म०	पु०	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
	उ०	पु०	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम
लृट्	प्र०	पु०	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
	म०	पु०	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
	उ०	पु०	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

उभयपदी भक्ष् धातु के आत्मनेपद के रूप

लट्	प्र०	पु०	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
	म०	पु०	भक्षयसे	भक्षयेसे	भक्षयध्वे
	उ०	पु०	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे
लोट्	प्र०	पु०	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
	म०	पु०	भक्षयस्व	भक्षयेथाम्	भक्षतध्वम्
	उ०	पु०	भक्षयै	भक्षयावहै	भक्षयामहै
विधिलिङ्	प्र०	पु०	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
	म०	पु०	भक्षयेथाः	भक्षयेताथाम्	भक्षयेध्वम्
	उ०	पु०	भक्षयेय	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि
लङ्	प्र०	पु०	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
	म०	पु०	अभक्षयथाः	अभक्षयेथाम्	अभक्षध्वम
	उ०	पु०	अभक्षये	अभक्षयावहि	अभक्षयामहि
लृट्	प्र०	पु०	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	भक्षियिष्यन्ते
	म०	पु०	भक्षयिष्यसे	भक्षयिष्येथे	भक्षयिष्यध्वे
	उ०	पु०	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षयिष्यामहे

——

अभ्यास

१—निम्नलिखित धातुओं में से किसी एक का रूपलट् तथा लोट् में लिखिए— भुज, शी, भ्रम, आप् (हाई स्कूल १९६०)

२—निम्नलिखित धातुओं में से किसी एक का रूप लट् तथा लङ् में लिखिए— गम्, पच्, चुर्, तन् (हा० स्कूल१९६१)

३—निम्नलिखित धातुओं में से किसी एक का रूप लट् तथा लृट् में लिखिए— भू, अद्, नृत, दिव् । (हा० स्कूल १९६२)

४—निम्नलिखित धातुओं में से किसी एक का रूप विधिलिङ् तथा लङ् के प्रथम पुरुष में लिखिए— दृश पा, दा, कृ । (हा० स्कूल १९६३)

५—निम्नलिखित धातुओं में से किसी एक के रूप लट् लकार के उत्तम पुरुष तथा लृट् लकार के मध्यम पुरुष में लिखिए—
गम्, सह्, इ, भुज (भोजन) । (हा० स्कूल१९६४)

६—निम्नलिखित धातुओं में से किसी एक के रूप लोट् लकार के मध्यम पुरुष तथा लङ् लकार के उत्तम पुरुष में लिखिए—
मुद्, हन्, भी, कथ् । (हा० स्कूल१९६५)

७—निम्नलिखित में से किसी एक के रूप लट् लकार के मध्यम पुरुष तथा लोट् लकार के उत्तम पुरुष में लिखिए—
स्था, गम्, हन्, जन्, पठ्, जि । (हा० स्कूल १९६६)

८—निम्नलिखित धातुओं में से किसी एक के रूप लोट् लकार के उत्तम पुरुष तथा लृट् लकार के मध्यम पुरुष में लिखिए—
दृश्, शी, इष्, पृच्छ् । (हा० स्कूल१९६७)

९—निम्नांकित धातुओं में से किसी एक के लट् लकार मध्यम पुरुष अथवा लोट् लकार उत्तम पुरुष के रूप लिखिए—
गम्, हन्, श्रु, यज्, तन् । (हा० स्कूल१९६८)

१०—निम्ननिर्दिष्ट धातुओं में से किसी एक के लोट लकार प्रथम पुरुष अथवा लङ् लकार उत्तम पुरुष के रूप लिखिए—
जि, वद्, स्वप्, श्रो, मुद् । (हा० स्कूल १९६९)

अव्यय ऐसे शब्द को कहते हैं जिसके रूप में लिंग, विभक्ति, वचन के कारण कोई विकार न उत्पन्न हो, जो सदा एक सा रहे, वही अव्यय है।

सदृश त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेसु यत्न व्योति तदव्यय ॥

जैसे—उच्चैः (ऊँचे) अमितः (चारों ओर), च, हा आदि।

अव्यय चार प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग, (२) क्रिया विशेषण (३) समुच्चय बोधक शब्द तथा (४) मनोविकार सूचक शब्द।

१—उपसर्ग

धातु या धातु से बने हुए विशेषण, संज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जो जोड़े जाते हैं उनको उपसर्ग कहते हैं। इनके द्वारा धातु का अर्थ कुछ बदल जाता है, या अर्थ में कुछ विशेशषता आ जाती है। जैसे— "हार" से पहले प्र, आ, सम्, वि, हार उपसर्ग लगाने से प्रहार, आहार, संहार, विहार, परिहार आदि शब्द बनते हैं, जो अर्थों में बिलकुल भिन्न-भिन्न हैं।

उपसर्ग के भेद—उपसर्ग २२ होते हैं। वे निम्नलिखित हैं—

प्र, परा, अप, मम्, अत्, निस्, निर, दुस्, दूर्, वि, आड, नि, आधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

उपसर्गों के मुख्य अर्थ और उनके कुछ उदाहरण—

प्र–अधिक, जसे तणामः–अधिक झुकना।
परा–पीछे, उल्टा, विरोध-पराजयः। पराभवः। परागतः।
अप–खराब, हीदेता, जैसे उपहारः अपशब्दः, अपवादः।
सम्–अच्छी तरह, जैसे संस्कारः, संकल्पः।
अनु–पीछे, साथ, जैसे–अनुगामनः, अनुभवः।

अत्–दूर, नीचे, जैसे-अवतारः, अवगुणः ।
निस्–बिना, बाहर, जैसे-निःसारः निःशङ्कः ।
निर्–बाहर, जैसे-निर्गम्, निर्दोसः ।
दुस्–कठिन, जैसे-दुष्करः, दुःसहः ।
दुर्–बुरा, जैसे-दुराचारः, दुर्व्यवहारः ।
वि–बिना, जैसे-विचलः, वियोगः ।
आङ्–तक, कम, जेसे-आजन्म, आमरण ।
नि–नीचे, जैले-निपत्, निकाय ।
अधि–ऊपर, जैसे-अधिकारः, अधुपति ।
अति–बहुत अधिक, जैसे-अतिक्रमः, अतिबलः ।
सु–अच्छी तरह, जैसे-सुविचारः, सुकर्य ।
उन्–ऊपर, जैसे-उद्गमः, उत्पत् ।
अफि–ओर, चारों ओर, जैसे-अभिमान, अभिज्ञानम् ।
प्रति–ओर उल्टा, जैसे- प्रतिकारः, प्रतिगतम् ।
परि–चारों ओर, जेसे- परिखा, परितापः ।
उप्–निकट, जैसे-उपासकः, उपनामः ।

कुछ शब्द एक से अधिक उपसर्गों के योग से भी बनते हैं । जैसे—दुर्व्यहारः=दुर+अव+हारः ।

क्रिया-विशेषण

क्रिया के काल, स्थान आदि विशेषताओं को बतलाने वाले शब्दों को क्रिया-विशेषण कहते हैं । कुछ क्रिया-विशेषण सर्वनामों तथा संख्यावाची शब्दों से बनते हैं । कुछ सज्ञाओं में तद्धित प्रत्यय लगाकर प्रयोग में लाये जाते हैं । नीचे कुछ प्रचलित क्रिया-विशेहण दिये जाते हैं—

(क) नीचे अकारादिक्रम से मुख्य-मुख्य प्रचलित क्रियाविशेषण दिये जाते हैं—

अकस्मात्—इकबारगी
अग्रतः—आगे
अग्रे—पहिले
अतः इसलिए
अतीव—बहुत
अत्र—यहाँ

अचिरम्—
अचिरात्—
अचिरेण— } शीघ्र

अजस्रम्—निरन्तर

अन्तर—अन्दर

अपरम्—और

अपरेद्यु:—दूसरे दिन

अधुना—अब

अनिशम्—निरन्तर

अन्तरेण—बारे में

अन्तरा—बिना

अन्तरे—बीच में

अन्यच्च—और

अन्यत्र—दूसरी जगह

अन्यथा—दूसरी तरह

अभित:—चारों ओर, पास

अभीक्ष्णम्—निरन्तर

अर्वाक्—पहले

अलम्—बस

असकृत्—कई बार

असम्प्रति—
असाम्प्रतम्— } अनुचित

इत:—यहाँ से

इतस्तत:—इधर-उधर

इति—इस प्रकार

इत्थम्—इस प्रकार

इदानीम्—इस समय

किम्—क्या ? क्यों ?

अथ—तब, फिर

अथकिम्—हाँ, तो क्या

अद्य—आज

अध:—
अधस्तात्— } नीचे

इह—यहाँ

ईषत्—कुछ, थोड़ा

उच्चै:—ऊंचे

उभयत:—दोनों ओर

ऋते—सच

ऋतम्—बिना

एकत्र—एक जगह

एकदा—एक बार

एकधा—एक प्रकार

एकपदे—एक साथ

एतर्हि—अब

एव—ही

एवम्—इस तरह

कच्चित—
कच्चन— } क्या ?

कथञ्चन—
कथञ्चित्— } किसी प्रकार

कदा—कब ?

कदाचित्—कभी, शायद

कदापि—कभी

कदापि न—कभी नहीं

किंच—और

किन्तु—लेकिन

किमुत—और कितना ?
किम्वा—या
किल—सचमुच
कुतः—कहाँ से ?
कुत्र—कहाँ ?
कुत्रचित्—कहीं
कृतम्—बस हो गया
केवलम—सिर्फ
क्व—कहाँ ?
क्वचिन्—कहीं
खलु—निश्चय कर
चरम्—देर तक
जातु—कभी भी
झटिति—जल्दी
तत्—इसलिए
ततः—फिर
तत्र—वहाँ
तदा—तब
तदानीम्—तब
तथा—उस तरह
तथाहि—जैसे (विशदरूप से वर्णन)
तस्मात्—इसलिए
परेद्युः—दूसरे दिन (कल)
पर्याप्तम—काफी
पश्चात्—पीछे
पुनः—फिर
पुरतः, पुरः—, पुरस्तात } आगे

तर्हि—तब
तावत्—तब तक
तिरः—, तिर्यक— } तिर्छे
तूष्णीम्—चुपचाप
दिवा—दिन में
दिष्ट्या—सौभाग्य से
दूरम्—दूर
दोषा—रात को
द्राक्—शीघ्र, फौरन
ध्रुवम्—निश्चय ही
नक्तम्—रात को
न—नहीं
न वरम्—परन्तु
नाना—तरह-तरह से
नाम—नाम वाला, नामी
निकषा—निकट
नीचैः—नीचे
नूनम्—निश्चित
नो—नहीं
परम्—फिर, परन्तु
परश्वः—परसों
परितः—चारों ओ
मनाक्—थोड़ा
मिथः—परस्पर
मिथ्या—झूठ
मुधा—बेकार
मुहुः—बार-बार
मृषा—झूठ बोलकर

पुरा—पहले
पूर्वेद्यु:—पहले दिन (कल)
पृथक्—अलग-अलग
प्रकामम्—यथेष्ट, बहुत
प्रतिदिनम्—हर रोज
प्रत्युत—उल्टे
प्रसह्य—जबर्दस्ती
प्राक्—पहले
प्रात:—सबेरे
प्राय:—अक्सर
प्रेत्य—मरक़र, दूसरी दुनिया में
बलात्—जबरर्दस्ती
बहि:—बाहर
बहुधा—बहुत प्रकार से
भूय:—फिर फिर, अधिक
भृशम्—बार बार, अधिकाधिक
सततम्—बराबर, सब दिन
सदा—हमेशा
सद्य:—तुरन्त
सना—सब दिन
सपदि—तुरन्त, शीघ्र
समन्तात—चारों ओर
समम्—बराबर बराबर
समया—निकर
समीचीनम्—ठीक
समीपे, समीपम्—निकट
सम्प्रति—इस समय, अभी
यत्—जो, क्योंकि
यत:—क्योंकि
यत्र—जहां
यथा—जैसे
यथातथा—जैसे तैसे
यथायथा—जैसे जैसे
यदा—जब
यावत—जब तक
युगपत्—साथ साथ, इकबारगी
विना—बिना
वृथा—बेकार
वै—निश्चय
शनै:—धीरे-धीरे
श्व:—कल (आने वाला दिन)
शश्वत—सदा
सकृत—एक बार
सर्वथा—सब प्रकार से
सर्वदा—सब दिन
सह—साथ
सहसा—इकबारगी
सहितम्—साथ
साकम्—साथ
साक्षात्—आँखों के सामने
सार्धम—साथ
सायम्—शाम को
साम्प्रतम्—अब. उचित
सुष्ठु—अच्छी तरह

सम्मुखम्—सामने, मुंह दरमुंह
सम्यक्—भली प्रकार
सर्वतः—चारों ओर
सर्वत्र—सब कहीं
स्वस्ति—(आशीर्वाद)
स्वयम्—अपने आप
हि—इसलिए
ह्यः—कल (पूर्व दिन)

३—समुच्चयबोधक अव्यय

च—और शब्द का अर्थ संस्कृत में बहुधा च शब्द से बतलाया जाता है, किन्तु जहाँ 'और' हिन्दी में दो जोड़े हुए शब्दों के बीच में आता है, जैसे—राम और गोविन्द, वहाँ संस्कृत में च शब्द दोनों के उपरान्त आता है, अथवा अलग-अलग दोनों के उपरान्त; जैसे रामो गोविन्दश्च अथवा रामश्च गोविन्दश्च। च को बहुधा अन्य समुच्चयबोधक शब्दों के अनन्तर भी जोड़ देते हैं, जैसे—अथवा परञ्च, किञ्च।

अथ—अथो, अथ च—वाक्य के आदि में आते हैं और बहुधा 'तब' का अर्थ बताते हैं। इसके पूर्व कुछ वाक्य आ चुके हुए होते हैं अथवा प्रकरण में कुछ बीत चुका होता है।

तु—तो, वाक्य के आदि में नहीं आता, स तु गतः—वह तो गया आदि। किन्तु, परन्तु, परंच—लेकिन।

वा—या के अर्थ में च की तरह इसका भी प्रयोग प्रत्येक शब्द के उपरान्त अथवा दोनों के उपरान्त होता है, जैसे रामो गोविन्दो वा—राम या गोविन्द अथवा रामो वा गोविन्दो वा।

अथवा—इसका भी प्रयोग वा की तरह, उसी अर्थ में होता है।

चेत यदि—यदि, अगर।

तथापि—तब भी।

नोचेत—नहीं तो।

यदि—यदि।

तर्हि—तो।

तत्—इसलिए।

हि—क्योंकि।

यावत्—जब तक।

त्—तब तक।

यदा—जब।

तदा—तब

इति—वाक्य के अन्त में समाप्तिसूचक, जैसे—अहम् गच्छामि इति सोऽवदत्। इससे हिन्दी की 'कि' का बोध होता है। 'कि' का बोध यत् से भी ता है, किन्तु यह वाक्य के आदि में है, जैसे—सोऽवदत यदहं गच्छमि।

४--मनोविकारसूचक

इनका वाक्य से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। य क्रियाओं के अव्यय नीचे दिये जाते हैं—

हन्त--हर्षसूचक।

अः, हम्, हुम्—क्रोधसूचक।

हा, हाहा, हन्त—शोकसूचक।

बत—दयासूचक।

किम्, धिक्—धिक्कारसूचक।

अङ्ग, अयि, अये, अहोबत, भोः—आदर सहति बुलाने के काम में बाते हैं।

अरे, रे, रे रे—अवज्ञा से बुलाने में।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

अनुवाद-प्रकरण

रचना प्रकरण

संस्कृत अनुवाद करने के आवश्यक नियम

एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा में कहना "अनुवाद" कहलाता है। भाव परिवर्तन हुए बिना प्रत्येक शब्द का अनुवाद उत्तश समझा जाता है।

संस्कृत भाषा में वाक्यों में शब्द-विन्यास (शब्दों को रखने) का कोई स्थिर (व्यवस्थित) नियम नहीं हैं। किन्तु व्यवहार में सुगमता के लिए क्रमशः कर्त्ता, कर्म और तब क्रिया रखी जाती है। इसलिए किसी भी वाक्य का अनुवाद करते समय उसके कर्त्ता, कर्म, और क्रिया तथा अन्य कारकों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

संस्कृत अनुवाद के कुछ आवश्यक नियम दिये जा रहे हैं :—

(१) हिन्दी में केवल एक वचन बहुवचन होते हैं, लेकिन संस्कृत में एक वचन, द्विवचन तथा बहुवचन—ये तीन वचन होते हैं।

(२) संस्कृत में हिन्दी तरह प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष, ये तीन पुरुष होते हैं।

(३) इस प्रकार तीन वचनों के कारण तीनों पुरुषों को मिलाकर प्रत्येक क्रिया के काल (लकार) में ३ × ३ = ९ रूप होते हैं। जैसे—पठ् धातु के वर्तमान काल (लट् लकार) में—पठति, पठतः, पठन्ति। पठसि, पठथः, पठथ। पठामि, पठावः, पठामः। ये नौ रूप हैं।

(४) इसी प्रकार संस्कृत में ९ कर्त्ता भी होते हैं, जिन्हें हम इस प्रकार देख सकते हैं।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)
मध्यम	त्वम् (तुम, तू)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
उत्तम	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

(५) संस्कृत में कारकों को विभक्ति कहा जाता है। आठवाँ कारक (सम्बोधन) दोनों ही भाषाओं में होता है।

कारक	विभक्ति	हिन्दी में चिन्ह
१. कर्त्ता	प्रथमा	ने
२. कर्म	द्वितीया	को
३. करण	तृतीया	से, द्वारा (सहायता अर्थ में)
४. सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिए
५. अपादान	पंचमी	से (अलग होने के अर्थ में)
६ सम्बन्ध	षष्ठी	का, की, के, रा,री, रे, ना, नी, ने,
७. अधिकरण	सप्तमी	में, पर
८. सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अरे, रे, ऐ आदि।

(६) संस्कृत में अनुवाद करते समय सबसे पहले हमें कर्त्ता और उसकी क्रिया को खोजना चाहिए। कर्तृ वाच्य वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्त्ता के अनुसार होता है, अर्थात् कर्त्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होता है, क्रिया भी उसी पुरुष और वचन की होती है। इसके अतिरिक्त क्रिया जिस काल की हो, उसी काल की क्रिया का रूप लिखा जाता है। जैसे—वह पढ़ता है—यहाँ कर्त्ता "वह" प्रथम पुरुष, एक वचन का है। अतः उसके अनुसार क्रिया भी प्रथम पुरुष की होगी। 'पढ़ता है' क्रिया वर्त्तमान काल (लट्लकार) ही है, अतः पठ् धातु के वर्तमान काल का प्रयोग होगा। पठ् धातु के वर्तमान काल में प्रथम पुरुष, एक वचन का रूप होता है "पठति" अतः अनुवाद हुआ—सः पठति।

निम्न तालिका से कर्त्ता और क्रिया का प्रयोग स्पष्ट हो जायेगा—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सः पठति।	तौ पठतः।	ते पठन्ति।
	(वह पढ़ता है)	(वे दोनों पढ़ते हैं)	(वे सब पढ़ते हैं)
मध्यम	त्वम् पठसि।	युवां पठथः।	यूयं पठथ।
	(तुम पढ़ते हो)	(तुम दोनों पढ़ते हो	(तुम सब पढ़ते हो)
उत्तम	अहं पठामि।	आवां पठावः।	वयं पठामः।
	(मैं पढ़ता हूं)	(हम दोनों पढ़ते हैं)	(हम सब पढ़ते हैं)

[७] ऊपर कहे गये ९ कर्त्ताओं के अतिरिक्त जितने कर्त्ता होते हैं उनके साथ सदा प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे–सा गच्छति [वह जाती है], कः गच्छति [कौन जाता है], भवान् गच्छति [आप जाते हैं], रामः गच्छति [राम जाता है], छात्रौः (दो छात्र पढ़ते हैं) आदि।

इस प्रकार कर्त्ता और क्रिया से युक्त वाक्य बनते हैं इनके अतिरिक्त वाक्य में जितने शब्द आते हैं उनका प्रयोग उनके कारकों के अनुसार होता है। जैसे– "हम दोनों गुरु जी से पुस्तक पढ़ते हैं।"

ऊपर के वाक्य में क्रिया से पहले 'कौन' ? लगाने के अन्तर में 'हम दोनों' आता है। अः यह कर्त्ता है। हमने इसकी संस्कृत "आवाम्" लिखली। कर्त्ता 'उत्तम पुरुष, द्विवचन' का है और 'क्रिया' में वर्तमान काल' (लट्) है, अतः हमने 'पठ्' धातु के वर्तमान काल उत्तम पुरुष द्विवचन का रूप 'पठावः' लिख लिया। 'गुरू जी से' में अपादान कारक (पंचमी विभक्ति) का 'एक वचन' है अतः 'गुरु' शब्द का पंचमी विभक्त एक वचन' में

गुरु-शब्द के पंचमी विभक्ति–एक वचन का रूप

विभक्ति	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	—	—	—
द्वितीया	—	—	—
तृतीया	—	—	—
चतुर्थी	—	—	—
पंचमी	"गुरौः"	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः

इस प्रकार 'गुरू जी से' हिन्दी वाक्यांश का अनुवाद "गुरोः" हुआ। और इसी प्रकार 'पुस्तक को' की संस्कृत 'कर्मकारक' (द्वितीया विभक्ति) का एक का रूप है –

पुस्तक--शब्द के द्वितीया विभक्ति--एक वचन का रूप

विभक्ति	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	—	—	—
द्वितीया	पुस्तकम्		

इस प्रकार 'पुस्तक को' हिन्दी वाक्यांश का अनुवाद 'पुस्तकम्' हुआ। अतः उक्त वाक्य की संस्कृत "आवाम् गुरोः पुस्तकम् पठावः।" हुई।

अभ्यास—१

कर्त्ताकारक—लट्लकार (वर्तमान काल) प्रथम पुरुष—एक वचन

नियम १—वर्त्तमानकाल में लट्लकार का प्रयोग होता है। कर्तृ वाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है और उसी के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है।

नियम २—सः (वह, पुं०), सा (वह, स्त्री०), भवान् (आप, पुं०), भवती (आप, स्त्री०) किसी एक पुरुष या स्त्री का नाम या अन्य एक वचन की कोई संज्ञा प्रथम पुरुष एक वचन की होती है। अतः इनके साथ क्रिया का प्रयोग प्रथम पुरुष एक वचन के रूप का होता है।

नियम ३—लिंग में भेद होने के कारण क्रिया में कोई अन्तर नहीं आता है। जैसे—वाक्य १ में पुं० तथा २ में स्त्री० होने पर भी दोनों वाक्यों में क्रिया एक ही है।

आदर्श वाक्यः—

(१) बालकः पठति	=	लड़का पढ़ता है।	(पुंलिंग)
(२) बालिका पठति	=	लड़की पढ़ती है।	(स्त्रीलिंग)
(३) फलम् पतति	=	फल गिरता है।	(नपुंसकलिंग)
(४) सः गच्छति	=	वह जाता है।	(पुंलिंग)
(५) सा गच्छति	=	वह जाती है।	(स्त्रीलिंग)
(६) भवान् गच्छति	=	आप जाते हैं।	(पुंलिंग)
(७) भवती पठति	=	आप पढ़ती हैं।	(स्त्रीलिंग)
(८) कमलम् विकसति	=	कमल खिलता है	(नपुंसकलिंग)

(क) निम्नलिखित हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मोहन जाता है। (२) राम हँसता है। (३) मोहन पढ़ता है। (४) यशपाल खाता है। (५) मन्जू नाचती है। (६) देवेन्द्र खेलता है। (७) मीरा पढ़ती है। (८) बनीता आती है। (९) आप देखते हैं। (१०) वह दौड़ता है।

सहायक शब्द—हसति=हँसती है। खादति=खाती है। नृत्यति=नाचती है। क्रीड़ति=खेलता है। आगच्छति=आती है। पश्यति=देखते हो। धावति=दौड़ता है।

अभ्यास—२

कर्त्ताकारक—लट्लकार (वर्तमानकाल) प्रथम पुरुष—द्विवचन

नियम १—दो के लिए द्विवचन का प्रयोग होता है तथा कर्त्ता द्विवचन होने के कारण क्रिया में भी द्विवचन होता है।

नियम २—जब एक वाक्य में दो कर्त्ता होते हैं तथा वे 'च' (और) से जुड़े होते हैं, तो क्रिया द्विवचन की होती है। जैसे वाक्य ४

नियम ३—जब एक वाक्य में दो कर्त्ता 'वा' (अथवा, या) से जुड़े होते हैं तो क्रिया द्विवचन की न होकर एकवचन की होती है। जैसे वाक्य ५

नियम ४—हिन्दी में "और" तथा "अथवा" जिस शब्द से पहले आते हैं संस्कृत में उसी शब्द के बाद आते हैं जैसे वाक्य ४ तथा ५

आदर्श वाक्यः—

(१) बालकौ खादतः	=	दो बालक खाते हैं।	(पुंलिंग)
(२) बालिके गच्छतः	=	दो लड़कियाँ जाती हैं।	(स्त्रीलिंग)
(३) फले पततः	=	दो फल गिरते हैं।	(नपुंसकलिंग)
(४) रामः कृष्णः च धावतः	=	राम और कृष्ण दौड़ते हैं।	(द्विवचन)
(५) रामः कृष्णः वा धावति	=	राम या कृष्ण दौड़ता है।	(एकवचन)

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) वे दोनों पढ़ती हैं। (२) आप दोनों खेलते हैं। (३) दो घोड़े चरते हैं। (४) दो लड़कियाँ लिखती हैं। (५) वे दोनों हँसते हैं। (६) मन्जू और मीरा पढ़ती हैं। (७) राम या श्याम देखता है। (८) दो कुत्ते चलते हैं। (९) दो छात्र खेलते हैं। (१०) श्याम तथा मोहन दौड़ते हैं।

सहायक शब्द—अश्वः=घोड़ा। कुक्करः=कुत्ता। खरः=गधा।

अभ्यास—३

कर्त्ताकारक—लट्लकार (वर्तमानकाल) प्रथम पुरुष—बहुवचन

नियम १—दो से अधिक के लिए बहुवचन आता है कर्त्ता में बहुवचन होने के कारण क्रिया भी बहुवचन की होती हैं।

नियम २—जब एक वाक्य में कर्त्ता में दो से अधिक शब्द 'च' (और) से जुड़े होते हैं। तो क्रिया बहुवचन की होती है। जैसे वाक्य ६ में 'पश्यन्ति'।

नियम ३—जब एक वाक्य में कर्त्ता में 'वा' (वा, अथवा) से जुड़ होते हैं तो क्रिया एकवचन की होती है। जैसे वाक्य ७ में 'लिखति'

नियम ४—'च' (और) 'वा' (या, अथवा) अव्यय जिनको जोड़ते हैं उनके अन्त में ही आते हैं। जैसे वाक्य ६ तथा ७

आदर्श वाक्य—

(१) ते गच्छन्ति = वे जाते हैं। (पुलिंग)
(२) ता गच्छन्ति = वे जाती हैं। (स्त्रीलिंग)
(३) तानि विकसन्ति = वे (फूल) खिलते हैं। (नपुंसकलिंग)
(४) भवत्य पठन्ति = आप पढ़ती हैं (स्त्रीलिंग)
(५) बालकाः क्रीडन्ति = लड़के खेलते हैं (पुलिंग)
(६) रामः श्यामः कृष्णः च पश्यन्ति = राम, श्याम और कृष्ण देखते हैं।
(७) मोहनः सोहनः रामः वा लिखति = मोहन, सोहन या राम लिखता है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) चिड़िया बोलती हैं। (२) अध्यापक लोग आते हैं। (३) कवि लोग गाते हैं। (४) लड़के और लड़कियाँ पढ़ती हैं। (५) भँवरे गुनगुनाते हैं। (६) कुत्ते भोंकते हैं। (७) मोर नाचते हैं। (८) मीरा, बनीता, या मन्जू गाती है। (९) घोड़े हिनहिनाते हैं। (१०) वे सभी बैठते हैं।

सहायक शब्दः—चटका=चिड़िया। कूजन्ति=बोलती हैं। गायन्ति=गाते हैं। भ्रमर=भौंरा। गुञ्जन्ति=गुनगुनाते हैं। बुक्कन्ति=भौंकते हैं। लेषन्ते=हिनहिनाते हैं। तिष्ठन्ति=बैठते हैं।

अभ्यास—४ (दुहराना)

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मनुष्य सुनते हैं। (२) हिरन कूदते हैं। (३) लड़के बैठते हैं। (४) वे दोनों हँसते हैं। (५) आप जाते हैं। (६) सीता और राधा पढ़ती है। (७) सिंह दौड़ता है। (८) हरि या श्याम आता है। (९) लड़की देखती है। (१०) वे दोनों प्रवेश करते हैं।

(ख) निम्न वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(१) बालकः क्रीडन्ति। (२) मनुष्याः गायति। (३) रामः वदन्ति। (४) मयूराः नृत्यति। (५) मीन तरन्ति। (६) सः लिखतः। (७) खगाः खादति। (८) जलं वर्षन्ति। (९) फलानि पतति। (१०) वृक्षः फलति।

(ग) निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए:—

पुस्तकानि, फलति, नृत्यति, मयूरौ, धेनुः, भवति, सज्जनाः पश्यति

अभ्यास—५

लट् लकार (वर्तमान काल) मध्यम पुरुष–सभी वचन

कर्त्ता कारक

नियम १—संस्कृत में "तुम, तुम दोनों, तुम सब" मध्यम पुरुष के लिए "युष्मद" शब्द का प्रयोग "त्वम्, युवाम्, यूयम" होता है। इसके अतिरिक्त मध्यम पुरुष में अन्य कोई शब्द नहीं आता है।

नियम २—यदि मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का कर्ता हो तो क्रिया मध्यम पुरुष 'द्विवचन' की आती है। जैसे वाक्य ४

नियम ३—यदि मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का एक से अधिक कर्त्ता हो तो क्रिया मध्यम पुरुष 'बहुवचन' की आती है। जैसे वाक्य ५

नियम ४—यदि कई कर्त्ता 'वा' (या, अथवा) से जुड़े होते हैं, तो क्रिया अपने सबसे निकट (पास) के कर्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार होती है। जैसे वाक्य ६

नियम ५—मध्यम पुरुष के कर्त्ताओं तथा क्रियाओं में लिंग के कारण कोई अन्तर नहीं आता। जैसे वाक्य १, २, ३

आदर्श वाक्य—

(१) त्वम् पठसि=तुम पढ़ते हो या तुम पढ़ती हो।

(२) युवाम् गच्छथः=तुम दोनों जाते हो या जाती हो।

(३) यूयम् गच्छथ=तुम सब जाते हो या जाती हो।

(४) त्वम्, रामः च गच्छथः=तुम और राम जाते हो।

(५) युवाम्, रामः, कृष्ण च पठथ=तुम दोनों, राम और कृष्ण पढ़ते हो।

(६) त्वम्, यूयम्, अहम् वा गच्छामि=तुम, तुम सब या मैं जाता हूँ।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) तुम तैरते हो। (२) तुम सब दौड़ती हो। (३) तुम दोनों नाचती हो। (४) तू देखती है। (५) हम या तुम जाते हो। (६) तुम लोग या हम लोग पढ़ते हैं। (७) श्याम और तुम खेलते हो। (८) तुम, राम और श्याम गाते हैं। (९) तुम लोग प्रवेश करते हो। (१०) तुम या मैं सुनता हूँ।

सहायक शब्द—तरसि=तैरते हो। प्रविशथ=प्रवेश करते हो। शृणुथ=सुनते हो।

अभ्यास—६

लट् लकार (वर्तमान काल) उत्तम पुरुष—सभी वचन

कर्त्ता कारक

नियम १—संस्कृत में उत्तम पुरुष "मैं, हम दोनों, हम सब" के लिए "अस्मद्" शब्द का प्रयोग "अहम्, आवाम्, वयम्" होता है। इसके अतिरिक्त उत्तम पुरुष में अन्य कोई शब्द नहीं आता है।

नियम २—यदि वाक्य में एक से अधिक, दो या तीन कर्ता हों और वे "च" (और) से जुड़े हुए हों, तथा वे प्रथम, मध्यम तथा उत्तम पुरुष के हों तो क्रिया उत्तम पुरुष बहुवचन की होती हैं। जैसे वाक्य ४

नियम ३—किन्तु यदि 'च' अव्यय से जुड़े हुए उत्तम तथा मध्यम के ही दो कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष द्विवचन की होती हैं। जैसे वाक्य ५

नियम ४—यदि कई कर्त्ता 'वा' (अथवा, या) से जुड़े होते हैं, तो क्रिया अपने सबसे निकट (पास) के कर्त्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार होते हैं। जैसे वाक्य ६

नियम ५—उत्तम पुरुष के कर्त्ताओं तथा क्रियाओं में लिंग के कारण कोई अन्तर नहीं आता है। जैसे वाक्य १, २, ३

आदर्श वाक्य—

(१) अहम् हसामि=मैं हँसता हूँ या मैं हँसती हूँ।

(२) आवाम् पृच्छाव=हम दोनों पूछते हैं या पूछती हैं।

(३) वयम् गच्छामः=हम लोग जाते हैं या जाती हैं।

(४) त्वम्, अहम्, गोपालः च पठाथः—तुम, मैं और गोपाल पढ़ते हैं।

(५) त्वम्, वयम् च गच्छावः=तुम और हम जाते हैं।

(६) सः त्वम्, अहम् वा पठामि=वह, तुम या मैं पढ़ता हूँ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) हम लोग खेलते हैं। (२) मैं जाता हूँ। (३) हम दोनों सूँघते हैं। (४) राम, मैं और तुम पढ़ते हो। (५) तुम और मैं खाता हूँ। (६) तुम या राम गाता है। (७) मैं सोता हूँ। (८) हम दोनों प्रवेश करते हैं। (९) हम लोग सुनते हैं। (९०) तुम या मैं आता हूँ।

सहायक शब्द-जिघ्रावः=सूंघते हैं। शृणुमः=सुनते हैं। गायति=गाता है।

अभ्यास—७ (दुहराना)

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) वह भजन करता है। (२) तुम अनुभव करते हो। (३) मैं बैठता हूँ। (४) हम प्रवेश करते हैं। (५) आप उपदेश देती हैं। (६) तुम चलते हो। (७) हम कूदते हैं। (८) सिंह पीता है। (९) गाय, बैल और और घोड़े दोड़ते हैं। (१०) मोर या तोता बैठता है।

सहायक शब्द—भजति=भजन करता है। अनुभवसि=अनुभव करते हो। उपदिशति=उपदेश देती हो। कुर्दामः=कूदते हैं। चलसि=चलते हो।

(ख) निम्न वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(१) अहम् भजथः। (२) त्वम् कथयति। (३) युवाम् गच्छामि। (४) वयम् गायामि। (५) आवाम् भजथः। (६) यूयम् पृच्छसि। (७) सा गावन्ति। (८) शुकाः नृत्यति। (९) बालकः खादामि। (१०) भवती हससि।

(ग) निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

पठावः, करोति, तिष्ठामि, वदन्ति, अहम् रक्षसि, भवत्य, वयम्. सा, आगच्छामः।

अभ्यास—८

लृट् लकार (भविष्यकाल) सभी पुरुष तथा सभी वचन

कर्त्ताकारक

नियम १—जब कोई काम आगे आने वाले समय में होता है तब वह भविष्यकाल (लृट् लकार) में होता है।

शेष सभी नियम वर्तमान काल (लट्लकार) के समान होते हैं।

आदर्श वाक्य—

(१) सः गमिष्यति	=	वह जायेगा।
(२) सा द्रक्ष्यति	=	वह देखेंगी।
(३) फलानि पतिष्यन्ति	=	फल गिरेंगे।
(४) रामः श्यामः च गमिष्यतः	=	राम और श्याम जायेंगे।
(५) सः रामः वा पठिष्यति	=	वह या राम पढ़ेगा।

(क) **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(१) तुम पढ़ोगी। (२) आप लोग जाओगे। (३) लड़के खेलेंगे। (४) मैं पूछूँगा। (५) तुम और हरि आओगे। (६) तुम उपदेश दोगे। (७) राम या श्याम जायेगा। (८) मोर नाचेंगे। (९) मीरा गायेगी। (१०) हम दोनों रहेंगे।

सहायक शब्द—प्रक्ष्यामि=पूछूँगा। स्थास्यावः=रहेंगे। उपदेक्ष्यसि=उपदेश दोगे। नर्त्स्यन्ति=नाचेंगे।

(ख) **रिक्त स्थानों में भविष्यकाल के उचित रूप लिखिए—**

(१) त्वम्·····(भज्)। (२) ते·····(प्रविश)। (३) सा····· (प्रच्छ) (४) त्वम्·····(क्रीड़्)। (५) गुरुः·····(पठ) (६) वयम्··· (दा) (७) आवाम्·····(वद्)। (८) सा·····(आगम्)। (९) सः (प्रच्छ)। (१०) तौ·····(कथ)।

अभ्यास—९

लड् लकार (भूतकाल) सभी पुरुष व सभी वचन

कर्त्ताकारक

नियम १—जो काम बीते समय में हो चुका हो, उसके काल (समय) को भूतकाल कहते हैं। भूतकाल में लड्लकार होता है।

नियम २—कभी-कभी वर्त्तमान की क्रिया में 'स्म' जोड़कर भूतकाल व्यक्त किया जाता है। यह प्रायः 'था' के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे गच्छतिस्म=जाता था।

आदर्श वाक्य—

(१) बालकः अपठत्=लड़कों ने पढ़ा।
(२) भवान् अपश्यत्=आपने देखा।
(३) त्वम् अपठः =तुमने पढ़ा।
(४) रामः गच्छतिस्म=राम जाता था।
(५) सा पठति स्म =वह पढ़ती थी।

(क) **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(१) तुम दोनों ने खाया। (२) हमने कहा। (३) लड़के भाग गये। (४) छात्रों ने देखा। (५) कवियों ने गाया। (६) वह खाता था। (७)

उसने प्रवेश किया। (८) आप लोग चले गये। (९) कुत्ता दौड़ा। (१०) पुस्तक गिरी।

सहायक शब्द—अकथताम=कहा। अपलायत्=भाग गये। अपश्यन्=देखा।

अभ्यास—१०

अव्ययों का प्रयोग

नियम १—अव्ययों के रूप नहीं चलते, इसलिये वे वाक्य में ज्यों के त्यों लिखे जाते हैं। 'च', 'वा' आदि अव्यय हैं, इनका प्रयोग वाक्यों में जैसे का तैसा ही लिखा जाता है।

आदर्श वाक्यः—

(१) छात्राः अद्यः न पठिष्यन्ति	=	छात्र आज नहीं पढ़ेंगे।
(२) त्वम् कदा आगमिष्यसि	=	तुम कब आओगे।
(३) रामः कृष्णः वा तत्र गच्छतु	=	राम या कृष्ण वहाँ जाय।
(४) श्वः उत्सवः भविष्यति	=	कल उत्सव होगा।
(५) इदानीं ते कुत्र अगच्छन्	=	वे इस समय कहाँ गये।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मैं कल जाऊँगा। (२) यशपाल यहाँ नहीं आयेगा। (६) ईश्वर सब जगह है। (४) तुम कब उपदेश दोगे। (५) मैं शाम को प्रार्थना करता हूँ। (६) प्रातः विद्यार्थी पढ़ते हैं। (७) सूर्य सुबह निकलता है। (८) आप लोग शीघ्र जायें। (९) उसने वहाँ क्या देखा? (१०) क्या वह वहाँ गया?

सहायक शब्द—श्वः=कल। अत्र=यहाँ। सर्वत्र=सब जगह। कदा=कब। सायम्=शाम। आपि=क्या। तत्र=वहाँ। सद्यः=शीघ्र। किम्=क्या।

अभ्यास—११

सर्वनामों का प्रयोग

नियम १—तद् (वह), यद् (जो), इदम् (यह), एतत् (यह), किम् (कौन, क्या), सर्व (सब) युष्मद् (तुम), अस्मद् (मैं) आदि शब्द सर्वनाम हैं।

इनमें युष्मद् तथा अस्मद् मध्यम तथा उत्तम पुरुष के हैं। शेष सभी प्रथम पुरुष के हैं।

नियम २—सर्वनामों का प्रयोग विशेषणों की भाँति होता है, अतः इनके रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।

नियम ३—सर्वनामों का प्रयोग विशेषणों की भाँति होता है, जहाँ ये विशेषणों की तरह काम आते हैं, वहाँ उनके लिंग, वचन, और विभक्ति अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

आदर्श वाक्य—

(१) सः गच्छति = कौन जाता है ? (पुंलिंग, एकवचन)
(२) के पठन्ति = कौन पढ़ते हैं ? (पुंलिंग बहुवचन)
(३) का पश्यति = कौन देखती है ? (स्त्रीलिंग, एकवचन)
(४) सर्वे पश्यन्ति = सब देखते हैं ? (पुंलिंग, बहुवचन)
(५) अयं कः बालकः अस्ति = यह कौन बालक है ?
(६) यः चलति सः एव पतति = जो चलता है, वही गिरता है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) ये लोग कहाँ जाते हैं। (२) यहाँ कौन रहता है। (३) कौन गिरा। (४) यहाँ कौन रहता था। (५) वहाँ कोई आदमी नहीं है। (६) यह फूल है। (७) कोई आदमी देखता था। (८) जो जारहा है वह कौन है। (९) ये अब पढ़ेंगे। (१०) सब जाते हैं।

अभ्यास--१२

लोट्लकार (आज्ञा, इच्छा, प्रार्थना तथा आशीर्वाद आदि) अर्थ में कर्त्ताकारक

नियम १—लोट्लकार का प्रयोग आज्ञा, प्रार्थना, अनुमति, आशीर्वाद आदि अर्थों में होता है।

नियम २—प्रथम पुरुष में इस प्रकार का प्रयोग प्रायः आज्ञा तथा इच्छा आदि अर्थों में होता है।

नियम ३—मध्यम पुरुष में इसका प्रयोग प्रायः आज्ञा, प्रार्थना तथा आशीर्वाद में होता है। प्रायः आज्ञा तथा प्रार्थना में तू या तुम कर्त्ता छिप जाता है। ऐसी दशा में छिपे हुये कर्त्ता के अनुसार मध्यम पुरुष की क्रिया ही होती है जैसे वाक्य ४, ५

नियम ४—उत्तम पुरुष में इस प्रकार का प्रयोग इच्छा और प्रश्न के अर्थ में होता है। जैसे वाक्य ६, ७

आदर्श वाक्य—

(१) भवान् आगच्छतु	=	आप आयें।	(प्रार्थना)
(२) सा आगच्छतु	=	वह आयें।	(,,)
(३) त्वम् गच्छ	=	तुम जाओ।	(आज्ञा)
(४) चिरञ्जीवी भव	=	दीर्घायु हो।	(आशीर्वाद)
(५) आगच्छत, उपविशत च	=	आइए और बैठिए	(प्रार्थना)
(६) अहम् पठानि	=	मैं पढ़ूँ	(इच्छा)
(७) किम अहम् गच्छानि	=	क्या मैं जाऊँ ?	(अनुमति, प्रश्न)

(क) **संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—**

(१) तुम भजन करो। (२) तू दौड़। (३) तुम दोनों नमस्कार करो। (४) तुम पियो। (५) पानी बरसे। (६) मैं लिखूँ। (७) नौकर जाय। (८) उसे जाने दो। (९) वह चिरंजीव हो। (१०) अब मनुष्य खेलें।

सहायक शब्द—भज=भजन करो। नमतम्=नमस्कार करो। वर्षतु=बरसे। सेवकः=नौकर। उपविशतु=बैठे।

अभ्यास—१३

विधिलिङ् लकार (विधि, प्रश्न, इच्छा आदि) अर्थ में

कर्त्ता कारक

नियम १—किसी कार्य में लगाने के लिए प्रवृत करने के अर्थ में विधिलिङ् लकार होता है। जैसे वाक्य ५

नियम २—प्रश्न के अर्थ में विधि लिङ्लकार का प्रयोग होता है। जैसे ३।

नियम ३—इच्छा (अंग्रेजी में May के अर्थ) में इस लकार का प्रयोग होता है। जैसे वाक्य ४

नियम ४—हिन्दी में "चाहिए" से युक्त वाक्यों की संस्कृत में भी इसी लकार के द्वारा बनती है, किन्तु ऐसे वाक्यों में कर्त्ता में 'को' चिन्ह लगा होता है। इसे धोके से कर्मकारक का चिन्ह न समझना चाहिए। जैसे वाक्य ६।

नियम ५—अंग्रेजी में जहाँ (May, Might, Must, Should) का प्रयोग होता है। जैसे वाक्य १, २,

आदर्श वाक्यः--

(१) ते पठेयः = उनको पढ़ना चाहिए या वे पढ़ें ।
(२) बालकाः गच्छेयुः = लड़कों को जाना चाहिए।
(३) छात्रः किं कुर्यात् = छात्र क्या करें । (प्रश्न)
(४) सः सुखी भवेत् = वह सुखी होवे । (इच्छा)
(५) छात्रः तत्र गच्छेत् = छात्र वहाँ जाय । (विधि)
(६) रामः अद्यु ना स्वपेत = राम को अब सोना चाहिए ।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिये--

(१) छात्रों को पढ़ना चाहिए । (२) हम दोनों को बोलना चाहिए । (३) तुम सुखी रहो । (४) तुम्हें नमस्कार करना चाहिए । (५) क्या वह वहाँ जाय । (६) अब हम सोच न करें । (७) मुझे सुनना चाहिए । (८) हमें शाम को प्रार्थना करनी चाहिए । (९) तुम दौड़ो । (१०) मैं लिखूँ ।

अभ्यास— १४ (दुहराना)

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) प्रातः फिर होगा । (२) वे जा रही थीं । (३) तुम्हें भागना चाहिए । (४) गुरूजी पीटेंगे । (५) माली सींचता था । (६) शत्रु नष्ट होवे । (७) चिड़िया उड़ती हैं । (८) सिंह ने मारा । (९) पक्षी उड़ेंगे । (१०) लड़कियों ने कब लिखा ।

(ख) निम्न क्रियाओं को अपने वाक्यों प्रयोग करके हिन्दी लिखो ।

उदपतन, सिञ्चेत्, स्पृशनि, अयाचत, अपृच्छन्, भविष्यति, उत्पलति, याचति, अगायन् ।

अभ्यास—१५

कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

नियम १—क्रिया को करने वाले को कर्त्ता कहते हैं तथा कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है । इसका चिन्ह 'ने' है । यह कहीं-कहीं छिपा रहता है । जैसे कृष्णः खादति (कर्तृवाच्य) में कृष्णाः प्रथम विभक्ति का शब्द है ।

नियम २—संस्कृत में बिना विभक्ति लगाये, शब्द निरर्थक होते हैं । अतः अर्थ बताने के लिए संज्ञा शब्दों में प्रथमा विभक्ति आती है ।

जैसे—कृष्णः=कृष्ण । गज=हाथी । अश्वः=घोड़ा । आदि ।

नियम ३—पुंलिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग बनाने के लिए भी प्रथमा विभक्ति आती है । जैसे—तटः (पुं०), तटी (स्त्री०), तटम् (नपुं०) आदि ।

नियम ४—अव्ययों के साथ तथा केवल नाम के कथन में प्रथमा विभक्ति होती है । जैसे—गाँधी "बापू" इति प्रसिद्धः अस्ति—गाँधी बापू इस (नाम से) प्रसिद्ध हैं ।

आदर्श वाक्य—

(१) नेहरू नाम एक एव महापुरुषः अस्ति=नेहरु नाम के एक ही महापुरुष हैं ।
(२) त्वं मम विश्वासपात्रम् असि =तुम मेरे विश्वासपात्र हो ।
(३) गुणाः पूजास्थानं भवन्ति =गुण पूजा के स्थान होते हैं ।
(४) विद्वान श्रद्धापदं भवन्ति =विद्वान श्रद्धा के पात्र होते हैं ।

(क) **संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—**

(१) वे चिरकाल तक जियें । (२) सब स्वस्थ हों । (३) मथुरा एक प्रसिद्ध स्थान है । (४) तुम पत्र पढ़ सकते हो । (५) वे सब धीरे-चले गये । (६) ईश्वर करे सब स्वतन्त्र हों । (७) मैं चाहता हूँ कि राम सफल हो जाय । (८) छात्र सुबह उठें । (९) हम और तुम कल आयेंगे । (१०) मैं या तुम कल जायेंगे ।

अभ्यास—१६

कर्मकारक (द्वितीय विभक्ति)

नियम १—जिस वाक्य में प्रयोग किये पदार्थों में मे कर्त्ता जिसको सब से अधिक चाहता है । उसे कर्म कहते हैं अर्थात जिस पर क्रिया का फल समाप्त होता (पड़ता है) उसे कर्म कहते हैं । जैसे—रामः विद्यालयं गच्छति= राम स्कूल जाता है ।

हिन्दी में 'कर्म का चिह्न 'को' है लेकिन यह छिपा भी रहता है जैसे—रामः पुस्तकं पठति=राम पुस्तक पढ़ता है ।

क्रिया से पहले 'किसको' अथवा 'क्या' लगाने से जो उत्तर में आता है वह कर्म होता है ।

यदि कर्म एक होता है तो उसमें एकवचन, दो हो तो द्विवचन तथा दो से अधिक हो तो बहुवचन होता है । जैसे—राम पुस्तकं पठति=राम पुस्तक पढ़ता है । ते फलानि खादन्ति=वे फल खाते हैं ।

नियम २—कर्तृ वाच्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—आवाम् सूर्यम् अपश्यावः=हम दोनों ने सूर्य देखा।

आदर्श वाक्य—

(१) सः पुस्तकं पठति = वह पुस्तक पढ़ता है।
(२) छात्रः विद्यालयं गच्छति = छात्र विद्यालय को जाता है।
(३) अहं नाटकं पश्यामि = मैं नाटक देखता हूँ।
(४) वयं गुरुं प्रणमामः = हम गुरुजी को प्रणाम करते हैं।
(५) ते फलं न खादष्यन्ति = वे फल नहीं खायेंगे।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) हम फल खाते हैं। (२) मैं पत्र लिखता हूँ। (३) आप सत्य बोलते हैं। (४) तू गीत सुनता है। (५) बालक पानी पीता है। (६) कृष्ण ने कंस मारा। (७) राजा दान देता है। (८) राम या श्याम स्कूल जायेगा। (९) किसान गाँव में रहते हैं। (१०) तुम सब पुस्तक पढ़ो।

अभ्यास—१७

कर्म कारक—द्विकर्मक धातुएँ

नियम १—संस्कृत में दुह् (दुहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड् (दण्ड देना), रुध् (रोकना), प्रच्छ (पूछना), चि (बटोरना), ब्रू (बोलना), शास् (उपदेश देना), मथ् (मथना), मुष् (चुराना), नी (ले जाना), हृ (हरण करना), कृष् (खोद कर निकालना), वह (ढोना)—ये सोलह धातुएँ और इसके अर्थ वाली अन्य धातुयें द्विकर्मक (दो कर्म वाली) होती हैं। इनके योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

आदर्श वाक्यः—

(१) रामः धेनुं दुग्धं दोग्धि =राम गाय से दूध दुहता है।
(२) बालकः जनकं मोदकं याचते =बालक पिता से लड्डू माँगता है।
(३) अहं तण्डुलान् ओदनं पचामि =मैं चावलों से भात पकाता हूँ।
(४) चौरः रामं शतं मुष्णाति =चोर राम के सौ रुपये चुराता है।
(५) भृत्यः ग्रामं भारं वहति =नौकर गाँव को बोझा ले जाता है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) राम बकरी से दूध दुहता है। (२) मैं पिताजी से पुस्तक माँगता हूँ।

(३) वह फल घर ले जाता है। ४) पण्डित जी राम की कथा कहते हैं। (५) वह वृक्ष से फल चुनता है। ६) लोग पृथ्वी से रत्न निकालते हैं। (७) किसान अन्न को घर ले गया। (८) चोर ने किसान का धन चुराया। (९) मैं तुमसे एक प्रश्न पूछूँगा। (१०) पथिक किसान से रास्ता पूछता है।

अभ्यास—१८

कर्म कारक—उपपद विभक्ति रूप में

नियम १—जब कोई कार्य निरन्तर चलता है। तब समय वाचक शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—रामः चतुर्दश वर्षाणि वने अनिवसन्= राम चौदह वर्ष तक वन में रहे।

नियम २—शीङ् (सोना), स्था (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातु के पहले यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो, तो उनके आधार में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—रामः शिलामधि शेते=राम शिला पर सोता है।

नियम ३—यदि वस् धातु के पहले "उप, अनु, अधि, आङ्" उपसर्ग आयें तो इसके आधार में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—रामः गृहम् उपवसति= राम घर में रहता है।

अनु+वस्—रामः गृहम् अनुवसति = राम घर में रहता है।
अधि+वस्—रामः गृहम् अधिवसति = राम घर में रहता है।
आ+वस्—रामः गृहम् आवसति = राम घर में रहता है।

नियम ४—विश् धातु के पहले यदि अभि तथा नि उपसर्ग आवें, तो उसके आधार में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—रामः सन्मार्गम् अभिनिवशते= राम अच्छे मार्ग का अनुसरण करता है।

नियम ५—उभयतः (दोनों तरफ), सर्वतः (सब तरफ), धिक् (धिक्कार), उपर्युपरि (ठीक ऊपर), अधोऽधः (ठीक नीचे), अध्यधि (ठीक नीचे) शब्दों की जिसमें सन्निकटता प्रतीत होती है उसमें द्वितीया होती है। जैसे—

राजमार्गम् उभयतः वृक्षा सन्ति= सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं।
धिक्-धिक् मूर्खम् = मूर्ख को धिक्कार है।
उपर्युपरि लोकं हरि = हरि संसार के ठीक ऊपर है।
अधोऽधः भूमिं पातालः = भूमि के नीचे पाताल है।

नियम ६—अभितः (सब तरफ), परितः (चारों तरफ), समया (निकट),

निकषा (निकट), हा तथा प्रति (की तरफ, को के लिए) के प्रयोग में द्वितीया होती है। जैसे—

ग्रामम् **अभितः परितो** वा आम्र वृक्षाः सन्ति=गाँव के सब तरफ आम के पेड़ हैं।

विद्यालयं **निकषा समया** वा नदी अस्ति=विद्यालय के पास नदी है।

व्याघः हरिणं **प्रति** अपश्यत्=वहेलिये ने हरिण की तरफ देखा।

नियम ७—अन्तरा (बीच में), अन्तरेण (बिना), विना तथा ऋते (बिना) के योग में द्वितीया होती है। जैसे—

अन्तरा त्वां मां हरिः=हरि तुम्हारे हमारे बीच में है।

त्वाम् बिना वा कः तत्र गमिष्यति=तुम्हारे बिना वहाँ कौन जायेगा।

नियम ८—क्रिया विशेषण में द्वितीया होती है। जैसे—

मृगः सत्वरं धावति=हिरन तेज दौड़ता है।

गमनार्थक धातुओं के योग में (जहाँ जाया जाता है) उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—रामः वनं गच्छति=राम वन को (में) जाता है।

आदर्श वाक्य—

(१) अहम् गृहम् अधिशये = मैं घर में सोता हूं।
(२) सः विद्यालयं प्रति गतः = वह विद्यायय की ओर चला गया।
(३) बानरः वृक्षम् अधिष्ठिति = बन्दर वृक्ष पर बैठता है।
(४) ग्रामम् उभयतः वनं अस्ति = गाँव के दोनों ओर वन हें।
(५) लक्ष्मणः रामम् अनुच्छथि = लक्ष्मण राम के पीछे जाते हैं।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) उसने पाँच वर्ष तक संस्कृत पढ़ी। (२) बालक कुर्सी पर बैठ गया। (३) ऋषि गुफा में घुस गया। (४) वे पहाड़ पर चढ़ गये। (५) कुएँ के चारों तरफ हरि घास है। (६) दुर्जन को धिक्कार (७) हरि तेज दौड़ता है। (८) साधु सन्मार्ग पर चलते हैं। (९) संसार के सब ओर ईश्वर है। (१०) बिना परिश्रम के परीक्षा पास नहीं होती।

अभ्यास—१९ (दुहराना)

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मोहन सच बोलता है। (२) राजा अपराधी को दण्ड देता है।

(६) अन्न के बिना जीव नहीं है। (४) मोहन रसोई बनाता है। (५) ग्वाला गाय को जंगल ले जाता है। (६) तुम किस गाँव मे रहते हो। (७) घोड़ा नदी तक जाता है। (८) नदी के दोनों ओर खेत हैं। (९) पृथ्वी के नीचे पानी है। (१०) काशी के निकट गंगा है।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(१) छात्राः विद्यालये गच्छन्ति। (२) अस्माकम् विद्यालयः उभयतः मार्ग अस्ति। (३) मोहनः मम गृहस्य प्रति आगच्छति। (४) परपीडकाय धिक्। (५) अस्माकम् नगरस्य परितः उद्यानानि सन्ति। (३) तेषाम् ग्रामस्य अभितः कूपा सन्ति। (७) शिष्यः गुरोः अनुगच्छति। (८) अस्माकम् विद्यालयस्य सर्वतः पुष्पाणि सन्ति। (९) छात्राः विद्यालयस्य प्रति गच्छति। (१०) पुत्र पितु अनुगच्छति।

अभ्यास—२०

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

नियम १—जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है उसे करण कहते हैं। इस कारक के चिह्न 'से' या 'के द्वारा' हैं। लेकिन अपादान का चिह्न भी 'से' है, किन्तु अपादान में 'से' के द्वारा भिन्नता और करण के 'से' के द्वारा समीपता प्रकट होती है।

आदर्श वाक्य—

(१) अहं नेत्राभ्यां पश्यामि = मैं आँखों से देखता हूँ।
(२) रामः लगुडेन सर्पम् अहन् = राम ने डन्डे से साँप को मारा।
(३) सः पादाभ्याम् चलति = वह पैरों से चलता है।
(४) बालकः लेखन्या लिखति = लड़का कलम से लिखता है।
(५) सः हस्तेन पुस्तकम् गृह्णाति = वह हाथ से पुस्तक पकड़ता है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) लड़के शाम को गेंद से खेलते हैं। (२) धन से सुख होता है। (३) मैं पानी से पेड़ों को सींचता हूं। (४) अपने हाथों से कर्य करो। (५) तुम नाक से फल सूंघते हो। (६) विद्या से ज्ञान होता है। (७) धोबी पानी से कपड़े धोता है। (८) राम ने वाण के द्वारा रावण को मारा। (९) कुम्हार मिट्टी से वर्तन बनाता है। (१०) आप सब पैन से लिखते हो। (११) मैं पैदल ही स्कूल जाता हूं।

अभ्यास—२१

करण कारक—उपपद विभक्ति के रूप में

नियम १—भाव वाच्य तथा कर्म वाच्य के कर्त्ता तथा करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

रामेण रावणः हतः (कर्म वाच्य)=राम द्वारा रावण मारा गया।

रामेण सुप्यते (भाव वाच्य)=राम द्वारा सोया जाता है।

नियम २—जिस अंग के द्वारा शरीर में कोई विकार उत्पन्न हो जाता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

सः नेत्रेण काणः अस्ति=वह आँख से काना है।

नियम ३—साथ अर्थ रखने वाले "सह, समम्, साकम् तथा सार्धम्" शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। अर्थात् जिसके साथ जाया जाता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

पिता पुत्रेण सह गच्छति=पिता पुत्र के साथ जाता है।

नियम ४—हेतु अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

धनेन सम्मानं भवति=धन से आदर होता है।

नियम ५—पृथक्, विना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—रामेण विना दशरथः नाजीवत्=राम के बिना दशरथ जीवित नहीं रहे।

नियम ६—तुल्य के पर्यायवाची शब्दों के योग में भी तृतीया होती है। जैसे—कृष्णेन समः कोऽपि नास्ति=कृष्ण के समान कोई नहीं है।

नियम ७—कार्य, अर्थ, प्रयोजन, अलम् (नहीं) आदि प्रकट करने वाले अन्य शब्दों के योग में वस्तु में तृतीया होती है। जैसे—

सेवकेन किं प्रयोजनम्—सेवक की क्या आवश्यकता है?

आदर्श वाक्य—

(१) सत्येन आदरः भवति = सच बोलने से आदर होता है।

(२) मम अनुजः मया सह आगच्छत्=मेरा छोटा भाई मेरे साथ आया।

(३) सः स्वभावेन नम्रः अस्ति =वह स्वभाव से नम्र है।

(४) अयम् विवादेन =बहस मत करो।

(५) सः अध्ययतेन अत्र वसति =वह पढ़ने के कारण यहाँ रहता है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) राम पैर से लँगड़ा है। (२) वह गुरु जी के साथ स्कूल गया।

(३) राम स्वभाव से नम्र थे। (४) तुम लड़कों के साथ खेलो। (५) दुर्जन पुत्र से क्या लाभ। (६) मैं अपने भाई के साथ नहीं जाऊँगा। (६) हमें परिश्रम से पढ़ना चाहिए। (७) राम सीता के साथ वन गये। (८) राम के समान वीर कोई न था। (९) वे स्वभाव से धूर्त हैं। (१०) धन से सुख होता है।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(१) बालकः स्वजन कस्य सार्धम् गच्छामि। (२) छात्राः अध्यापकस्य सह विद्यालयं गच्छन्ति। (३) छात्रः पठनाय अत्र निवसति। (४) वणिक् व्यापाराय नगरम् गच्छति। (५) दुष्टस्य मित्रस्य किम् प्रयोजनम् अस्ति? (६) काणस्य नेत्रस्य कः अर्थः? (७) मम सखा नेत्रस्य काणः पादस्य च खञ्जः अस्ति। (८) सा बालिका कर्णयोः बधिरा। (९) छात्राः पुस्तकम् विना पठितुम् असमर्थाः सन्ति। (१०) सः पादयोः विना कथम् चलिष्यति?

अभ्यास—२२

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

नियम १—जिसे कोई वस्तु दी जाती है या जिसके लिए कोई काम किया जाता है उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसके चिह्न 'के लिए' या 'को' है। जैसे—राजा विप्राय गां ददाति = राजा ब्राह्मण को गाय देता है।

नियम २—जहाँ कोई वस्तु सदा के लिए दी जाती है और देने वाले का उस पर से अधिकार समाप्त हो जाता है, वहाँ चतुर्थी होती है। इसके विपरीत जहाँ कोई वस्तु थोड़े समय के लिए दी जाती है और दाता का उस पर से अधिकार समाप्त नहीं होता, वहाँ चतुर्थी विभक्ति नहीं होती बल्कि षष्ठी होती है। जैसे— अहं रजकस्य वस्त्रं यच्छामि = मैं धोबी को कपड़ा देता हूँ।

नियम ३—जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है, उसमें भी चतुर्थी होती है। जैसे—अहं छात्राय पुस्तकम् आनयामि = मैं विद्यार्थी के लिए पुस्तक लाता हूँ।

आदर्श वाक्य—

(१) माता पुत्राय दुग्धं यच्छति = माता पुत्र को दूध देती है।

(२) शिशुः भोजनाय मातरं याचते = बच्चा माता से भोजन के लिए कहता है।

(३) मोक्षाय हरिं भजते=मोक्षके लिए हरि का भजन करता है।
(४) श्यामः कृष्णाय पुस्तकं ददाति=श्याम कृष्ण को पुस्तक देता है।
(५) सुखाय यत्नं कुर्यात्=सुख के लिए यत्न करो।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिये--

(१) वह गरीब को धन देता है। (२) यह दूध पीने के लिए है। (३) सब छात्रों को भोजन दो। (४) राम श्याम को कलम देता है। (५) प्यासे को पानी दो। (६) हमें सुख के लिए प्रयत्न करना चाहिए। (७) तुम फूल लेने के लिए बगीचे जाते हो। (८) पिताजी के लिए पानी लाओ। (९) मैं गरीबों को अन्न दूँगा। (१०) हमें ज्ञान के लिए अध्ययन करना चाहिये।

अभ्यास—२३

सम्प्रदान कारक—उपपद विभक्ति के रूप में

नियम १—रुच् धातु (अच्छा लगना) के योग में जिसे कोई वस्तु अच्छी लगती है, उसमें चतुर्थी होती है। जैसे—कृष्णाय नवनीतम् रोचते=कृष्ण को मक्खन अच्छा लगता है।

नियम २—क्रुध् (गुस्सा होना) द्रुह (शत्रुता करना) ईर्ष्यु (डाह करना) असूय् (निन्दा करना) धातुओं तथा इनकी समानार्थक धातुओं के योग में उसके ऊपर क्रोध किया जाता है उसमें चतुर्थी होती है। जैसे—

गुरुः शिष्याय क्रुध्यति=गुरूजी शिष्य पर गुस्सा होते हैं।
रावणः रामाय द्रुह्यति=रावण राम से द्रोह करता है।

नियम ३—नमः स्वस्ति (कल्याण), स्वाहा, स्वधा, अलम् (समर्थ, अपर्याप्त) तथा वषट् के योग चतुर्थी होती है। जैसे—

रामाय नमः=राम को नमस्कार।
प्रजाभ्यः स्वस्ति=प्रजा का कल्याण हो।
अग्नये स्वाहा=अग्नि के लिए बलि है।

विशेष—परन्तु जब 'नमः' के साथ कृ धातु का प्रयोग होता तब द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे— देवम् नमस्करोमि=देवता नमस्कार करता हूँ।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मीरा को आम अच्छा लगता है। (२) गुरूजी शिष्य पर गुस्सा

होते हैं। (३) दुयर्धोन भीम से ईर्ष्या करता है। (४) गणेश जी को नमस्कार है। (५) दुष्ट सज्जन से ईर्ष्या करता है। (६) यशपाल को मिठाई अच्छी नहीं लगती है। (७) सुबह का टहलना अच्छा लगता है। (८) तुम दोनों से राम ईर्ष्या करता है। (९) छात्रों को पढ़ाई अच्छी लगती है। (१०) उसे खेलना पसन्द है।

(ख) निम्नलिखत वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(१) सः ब्राह्मणः धनम् ददाति। (२) इदम् पात्रम् जलस्य अस्ति। (३) अयम् कक्षः अध्ययनस्य अस्ति। (४) माता पुत्रान् दुग्धम् ददाति। (५) अयं पशुः यागस्य नस्ति। (६) इदम् तैलम् दीपकस्य अस्ति। (७) ज्येष्ठं भ्रातरम् नमः। (८) बालकम् क्रीड़ा रोचते। (९) धनिनः निर्धन क्रुध्यन्ति। (१०) मम अध्यापकः परिभ्रमणे अलम्।

अभ्यास—२४

अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

नियम १—जिससे किसी वस्तु का प्रत्यक्ष अथवा कल्पित रूप से अलग होना प्रकट होता है उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'से' है। जैसे—वृक्षात् पर्णानि पतन्ति=पेड़ से पत्तियाँ गिरती हैं। इस वाक्य में वृक्ष से पत्तियाँ अलग हो रही है, अतः वृक्ष से अपादान कारक है।

आदर्श वाक्य—

(१) गंगा हिमालयान् निर्गच्छति=गंगा हिमालय से निकलती है।
(२) रामः गृहात् आगच्छति=राम घर से आता है।
(३) वृक्षांत् फलानि पतन्ति=वृक्ष से फल गिरते हैं।
(४) तत् पात्रम् भवनात् अपतत्=वह पात्र भवन से गिरा।
(५) हस्तात् पुस्तकम् अपतत्=हाथ से पुस्तक गिरी।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मैं स्कूल आता हूं। (२) तू बाजार से फल लाता है। (३) बन्दर पेड़ से गिरा। (४) घुड़सवार घोड़े से गिरा। (५) पर्वत से पत्थर गिरा। (६) मेरे हाथ से पुस्तक गिर पड़ी। (७) वह बालक सहारनपुर से आया। (८) यमुना हिमालय से निकलती हैं।

(९) मैं तालाब से पानी लाऊँगा। (१०) घर से बाहर निकल जाओ।

अभ्यास—२५

अपादान कारक उपपद विभक्ति के रूप

नियम १—जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—साधुः पापात् विभेति=साधु पाप से डरता है।

नियम २—जिससे कोई वस्तु पैदा होती है तथा जिससे कोई वस्तु हटाई जाती है एवं जिससे नियम पूर्वक पढ़ा जाता है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—हिमालयात् गंगा प्रभवति=हिमालय से गंगा निकलती हैं।

शिष्यः गुरोः पठति=शिष्य गुरू से पढ़ता है।

नियम ३—अन्य (सिवाय), आरात् (समीप या दूर), इतर (दूसरा), ऋते (बिना) दिशावाचक तथा कालवाचक शब्दों के योग में पंचमी होती है। जैसे—रामात् अन्यः इतरो वा मम शरणं नास्ति=राम के सिवाय कोई मेरी शरण नहीं है।

आरात्—आरात् वनात्=वन से दूर या पास।

ऋते—ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः=ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।

दिशा वाचक शब्द—ग्रामात् उत्तरं नदी वहति=गाँव के उत्तर में नदी बहती है।

कालवाचक शब्द—चैत्रात् पूर्वः फाल्गुनः=चैत से पहले फागुन होता है।

नियम ४—जब किन्हीं दो वस्तुओ में तुलना की जाती है तब उससे तुलना की जाती है उसमें पंचमी होती है जैसे—दुग्धात् घृतं श्रेष्ठतरं भवति=दूध से घी श्रेष्ठ होता है।

तुलनार्थक शब्द—सुवर्ण दानात् अन्न दानं विशिष्यते=सोने के दान से अन्न दान बढ़कर है।

आदर्श वाक्य—

(१) अहं रामं सिंहात् रक्षामि=मैं सिंह से राम की रक्षा करता है।

(२) हिमालयात् पार्वती अजायत=हिमालय से पार्वती उत्पन्न हुई।

(३) रामः मोहनात् चतुरतरः अस्ति=राम मोहन से अधिक चतुर है।

(४) अनृतात् सत्यं श्रेयः=झूठ से सत्य अच्छा है।

(५) ग्रामस्य दूरात् विद्यालयः अस्ति=गाँव से दूर विद्यालय है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) हिरन शेर से डरता है। (२) मीरा मन्जू से चतुर है। (३) गोबर से बिच्छू पैदा होता है। (४) पापों से मेरी रक्षा करो। (५) मन्दिर नगर के पास है। (६) वृक्ष से फल उत्पन्न होते हैं। (७) सूर्य बादल से निकल रहा है। (८) तुम गुरूजी से संस्कृत पढ़ो। (९) छात्रों को कक्षा से निकाल दो। (१०) हम अध्यापक से गणित पढ़ेंगे।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(१) अपराधी दण्डेन बिभेति। (२) मम् भ्राता नगरेण आगच्छति। (३) वाटिकया पुष्पाणि आनय (४)कमलम् जलेन प्रजायते। (५)शिष्यः अध्यापकस्य अधीते। (६) सा बालिका मोहनेन जेष्ठा अस्ति। (७) दुग्धेन घृतम् उत्पद्यते। (८) जलस्य विना मृत्युः भविष्यति। (९) तिलैः तैलम् प्रभवति। (१०) तव वस्त्रम् मम वस्त्रेण पटुतरम् आसीत्।

अभ्यास—२६

सम्बन्ध कारक—षष्ठी विभक्ति

नियम १—जब एक वस्तु का दूसरी वस्तु से सम्बन्ध (स्वामी—सेवक, जन्य—जनक, कार्य—कारण आदि) प्रकट हो। तब उसमें षष्ठी विभक्ति होती है, जैसे—राज्ञः पुरुषः=राजा का पुरुष।

नियम २—बराबर या समान अर्थ रखने वाले तुल्य सदृश सम आदि शब्दों के योग में जिससे तुलना की जाती है, उसमें षष्ठी या तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

तुल्य—रामस्य (रामेण) वा तुल्यः कोऽपिनास्ति=राम के समान कोई भी नहीं है।

सदृश—कृष्णस्य (कृष्णेन) वा सदृशः कोऽपि नास्ति=कृष्ण के समान कोई भी नहीं है।

नियम ३—हेतु शब्द के प्रयोग में तथा तस् प्रत्यय वाले शब्दों के योग में हेतु तथा प्रयोजन सूचक शब्द में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—हेतु—

अध्ययनस्य हेतोः काश्या वसति=पढ़ने के निमित्त काशी में रहता है। तस् प्रत्यय—ग्रामस्य दक्षिणतः नदी प्रवाहति=गाँव के दक्षिण से नदी बहती है।

नियम ४—स्मरणार्थक धातु के योग में षष्ठी या द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—सः पितुः पितरं वा स्मरति=वह पिता का स्मरण करता है।

नियम ५—तव्य, अनीय, यत्, ण्यत्, घञ्, तृच्, ण्वुल् आदि (कृत्य) प्रत्ययों के योग में, या इनसे बनी संज्ञाओं के कर्त्ता में षष्ठी या तृतीया होती है। जैसे—मम इदं कार्य कर्तव्यम्—मुझे यह कार्य करना चाहिए।

विषस्य भोजनम्=विष का भोजन।

नियम ६—दूर, समीप आदि वाले शब्दों तथा कृते, मध्य, समक्ष आदि के योग में भी षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे—ग्रामस्य दूरम्=गाँव से दूर।

कृते—प्राणानां कृते=प्राणों के लिए।

मध्ये—एतेषां मध्ये कश्चौरः=इसमें कौन चोर है।

समक्ष—राज्ञः समक्षामेव सोऽकथयत्=राजा के सामने ही उसने कहा।

आदर्श वाक्य—

(१) रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्=राम दशरथ के पुत्र थे।
(२) धेनोः दुग्धं मधुरं भवति=गाय का दूध मीठा होता है।
(३) उद्यानस्य शोभां पश्य=बगीचे की शोभा को देखो।
४) वेदस्य अध्येता ब्राह्मणः अस्ति=वेद को पढ़ने वाला ब्राह्मण है।
(५) विदुषाम् आदरः सर्वतः भवति=विद्वानों का आदर सब जगह होता है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

(१) लक्ष्मण राम का भाई था। (२) सुदामा कृष्ण के मित्र थे। (३) भक्त ईश्वर का स्मरण करता है। (४) मैं अध्ययन हेतु विदेश जाऊँगा। (५) कुये का जल शीतल होता है। (६) ईश्वर हमारा रक्षक है। (७) सूर्य के प्रकाश को देखो। (८) वह समुद्र के समान गम्भीर है। (९) पत्तों का रंग हरा होता है। (१०) मेरा घर मथुरा में है। (११) मेरे गाँव के उत्तर में नदी बहती है।

(ख) **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए--**

(१) अयम् देवालयः शिवात् अस्ति। (२) इदम् रामाय पुस्तकम् अस्ति। (३) एतानि वृक्षे फलानि सन्ति। (४) अस्मिन् अश्वे वर्णः श्वेतः अस्ति। (५) इदम् मयि भ्रातरम् अस्ति। (६) सिंहः चतुष्पदान् श्रेष्ठः अस्ति। (७) अस्मिन् बिले मध्ये मूषकाः निवसन्ति। (८) छात्रालयम् अन्तः छात्रा निवसन्ति। (९) सिंहेन समक्षम् सर्वे विभ्यति। इदम् (१०) आम्रवृक्षः अस्ति।

अभ्यास—२७

अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

नियम १—क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं या जिस स्थान या वस्तु में कोई कार्य होता है उसे अधिकरण कहते हैं तथा अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। इसका चिन्ह "में" या "पर" है। जैसे—

सिंहः वने निवसति=शेर वन में रहता है।

नियम २—जब किसी समुदाय में किसी वस्तु या व्यक्ति की विशेषता बतलायी जाती है, तब समुदायवाचक शब्द में सप्तमी या षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—कविषु (कवीनां) वा कालिदासः श्रेष्ठः आसीत्=कवियों में कालिदास श्रेष्ठ थे।

नियम ३—जिसमें या जिस पर या जिस समय कोई काम किया जाय या हो, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—प्रथमे दिवस=पहले दिन।

नियम ४—जिसके लिए स्नेह, आसक्ति, सम्मान प्रदर्शित किया जाता है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—

स्नेह—माता पुत्रे स्निह्यति=माता पुत्र पर स्नेह रखती है।

सम्मान—गुरौ भक्तिः कर्तव्य=गुरु में भक्ति रखनी चाहिए।

नियम ५—जब किसी कार्य के हो चुकने पर दूसरा कार्य होता है तो पहले हुए कार्य में सप्तमी होती है। जैसे—सूर्ये अस्तगते गोपाः गृहं अगच्छन्=सूर्यास्त होने पर ग्वाले घर गये।

आदर्श वाक्य—

(१) वने मयूराः नृत्यन्ति=वन में मोर नाचते हैं ।
(२) धर्मे रतिः कर्त्तव्या=धर्म में प्रेम रखना चाहिए ।
(३) सः प्रातःकाले जागति=वह सवेरे उठता है ।
(४) उद्याने पुष्पाणि सन्ति=बगीचे में फूल हैं ।
(५) मम अध्ययने इच्छास्ति=मेरी पढ़ने के बारे में इच्छा है ।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) पात्र में जल है । (२) स्कूल में छात्र पढ़ते हैं । (३) पेड़ों पर चिड़िया बैठी हैं । (४) तालाब में मगर रहता है । (५) सूर्य निकलने पर हम यात्रा करेंगे । (६) राम सब से अधिक सुन्दर है । (७) पिता पुत्र पर स्नेह करता है । (८) हम लोग नदी में स्नान करते हैं । (९) लड़कों में श्याम श्रेष्ठ है । (१०) तू सब से अधिक धूर्त है ।

अभ्यास—२८

सम्बोधन

नियम १—जिसे पुकारा या आकृष्ट किया जाता है उसमें सम्बोधन कारक होता है । सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है । इसका चिन्ह, हे, अरे आदि है । ये चिन्ह शब्द के पहले लगते हैं । कभी-कभी ये छिपे भी रहते हैं । जैसे—

भो कृष्ण ! अत्रागच्छ=हे कृष्ण यहाँ आओ ।

नियम २—संस्कृत में सम्बोधन कारक के एक वचन में रूप बदलता है, शेष में कर्त्ता कारक के समान होते हैं ।

विशेष—क्रिया से सम्बन्ध न होने के कारण संस्कृत में सम्बोधन को कारक नहीं माना जाता, किन्तु सुविधा, के लिए यहाँ दिया गया है । सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता ।

आदर्श वाक्यः—

(१) राम ! त्वम् कुत्र गच्छसि=राम तुम कहाँ जाते हो ।
(२) रे धूर्त ! तिष्ठ तावत्=हे धूर्त ! ठहर तो सही ।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) हे गुरूजी ! पत्र में क्या लिखा है। (२) छात्रो ! परिश्रम से पढ़ो। (३) हे प्रभू ! मेरी रक्षा करो। (४) लड़कियो ! घर का काम करो। (५) लड़को ! कक्षा में शोर न करो। (६) लड़की ! तू क्या चाहती है। (७) बेटी ! प्रसन्न रहो। (८) हे राम ! तू सच बोल। (९) मोहन ! उस ग्वाले के घर से दूध लाओ। (१०) लड़कियो ! घर का काम करना चाहिए।

अभ्यास—२९ (दुहराना)

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) तुमने कल क्या लिखा। (२) मैंने कल एक पत्र पढ़ा। (३) साँप मोर से डरता है। (४) तुमने भिखारी को फल दिये। (५) हम बाजार से कपड़े लाये। (६) दमयन्ती ने नल से कहा कि मैं भी वन को चलूँगी। (७) दुष्टों के साथ बैर न करो। (८) हे गुरूजी ! क्या हम अन्दर आ सकते है। (९) मैं पढ़ने के लिए बनारस जाऊँगा। (१०) तुम गंगा में स्नान करते हो। (११) हम खेलने के लिए स्कूल जाते हैं। (१२) हम, तुम और राम पुस्तक पढ़ेंगे। (१३) राजा सिंहासन पर बैठता है। (१४) श्याम खेलने में बड़ा चतुर है। (१५) गंगा का जल पवित्र होता है। (१६) घर में पुस्तकें हैं।

अभ्यास—३०

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) राम श्याम से पुस्तक माँगता है। (२) मुझे सिनेमा अच्छा नहीं लगता है। (३) राम लड़कों के साथ घूमता है। (४) लता से पुष्प गिरे। (५) मोहन शहर से कहाँ जाय। (६) गाँव के समीप स्कूल है। धन के बिना सुख नहीं है। गंगा का पवित्र जल पीओ। (८) ताजमहल सब इमारतों में श्रेष्ठ है। पर्वत के ऊपर मेघ हैं। (१०) राम की बहुत गायें हैं। (११) तालाब के किनारे बाग है। (१२) वर्षा ऋतु में मोर नाचते हैं। (१३) विद्यार्थी रात में पढ़ता है। (१४) अन्न के बिना जीवन नहीं हैं। (१५) राम ने आज सिनेमा देखा।

(ख) निम्न शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

छात्रस्य, गंगायाः, कुशलः, गृहे, सयंकाले, वृक्षम्, नगरम्, हस्तेन, जलाय. पुत्रेभ्यः, पश्य, द्रक्ष्यसि, पठेयुः, देहि, पितामः ।

अभ्यास—३१

लिंग का विररण

संस्कृत के धातु रूप में लिंग के कारण कोई भेद नहीं होता है । कर्त्ता में कोई भी लिंग हो, धातु के रूप में इससे कोई अन्तर नहीं आता ।

आदर्श वाक्य—

(१) छात्राः राजमार्गे धावन्ति=विद्यार्थी सड़क पर दौड़ते हैं ।
(२) वर्षासु मेघाः गर्जन्ति=वर्षा में बादल गरजते हैं ।
(३) उद्याने वहतः वृक्षाः सन्ति=वगीचे में बहुत से वृक्ष हैं ।
(४) देवाः दैत्यानां शत्रतः आसन्=देवता लोग दैत्यों के शत्रु थे ।
(५) ईश्वरस्य सृष्टिः अति विचित्रा अस्ति=ईश्वर की सृष्टि बहुत विचित्र है ।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

(१) भारतवर्ष में अनेक तीर्थ स्थान हैं । (२) बन में मोर नाचते हैं । (३) कवियों में कालिदास श्रेष्ठ थे । (४) खेत में अन्न उत्पन्न होता है । (५) समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है । (६) मथुरा में बहुत विद्यालय हैं । (७) विद्या का महत्व बल से अधिक होता है । (८) मुझे आपका आगमन बहुत अच्छा लगता है । (९) ईश्वर की महिमा बड़ी विचित्र है । (१०) बनारस सब तीर्थों में श्रेष्ठ है ।

अभ्यास—३२

वचन का विवरण

आदर्श वाक्य—

(१) मानवः कर्म करोति=मनुष्य जाति कर्म करती है ।
(२) गुणाः पूजा स्थानं भवन्ति=गुण पूजा के स्थान होते हैं ।
(३) वयं श्रोत्राभ्यां शृणुमः=हम लोग कान से सुनते हैं ।
(४) वर्षासु मेघाः गर्जन्ति=बरसात के बादल गरजते हैं ।
(५) सिकतासु तैलं न भवति=बालू में तैल नहीं होता ।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) गुरु सदा पूजनीय होते हैं। (२) अक्षत तथा पुष्प से भगवान की पूजा करो। (३) विद्यालय में कितने छात्र पढ़ते हैं। (४) हम आँखों से देखते हैं। (५) मगध में अशोक नाम का राजा था। (६) किसान जल से पेड़ सींचता है। (७) वह चावलों से शिव पूजा करता है। (८) कवि लोग सदैव दयालु होते हैं। (९) तिल से तैल निकलता है। (१०) सिंह के डर से उसके प्राण चले गये।

अभ्यास—३३

पुरुष का विवरण

नियम १—संस्कृत में "मैं, हम दोनों, हम सब" (उत्तम पुरुष) के लिए अस्मद् "तुम दोनों, तुम सब" (मध्यम पुरुष) के लिए युष्मद् तथा वह, वे दोनों, वे सब एवं इनके अतिरिक्त सर्वत्र, प्रथम पुरुष का प्रयोग होता है। जैसे—

अहं गच्छामि, त्वं गच्छसिः सः गच्छति, बालकः गच्छति।

नियम २—सम्मान सूचक, मध्यम पुरुष के स्थान में भी प्रथम पुरुष ही आता है जैसे—गुरुदेव ! आगच्छतु=गुरुदेव ! आइए।

नियम ३—कभी-कभी आदर सूचक तुम की जगह "युष्मादृशाः" तथा मैं की जगह "मादृशः" का प्रयोग होता है। ऐसे प्रयोगों में क्रिया प्रथम पुरुष बहुवचन की होती है। जैसे—माहशास्तु न जानन्ति=हम जैसे लोग कुछ नहीं जानते।

नियम ४—यदि वाक्य में मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का एक कर्त्ता तो, तो क्रिया मध्यम पुरुष द्विवचन की होगी तथा यदि एक से अधिक कर्त्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष बहु वचनान्त होगी। जैसे—त्वं कृष्ण च अत्रागच्छतम्=तुम और कृष्ण यहाँ आओ।

नियम ५—यदि वाक्य में एक से अधिक दो या तीन कर्त्ता हों, और वे 'च' (और) अव्यय से जुड़े हुए हों तथा उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष के हों तो क्रिया उत्तम पुरुष बहुवचन की होगी। जैसे—त्वम् अहम् रामः च अस्मिन् विद्यालये पठामः=तुम, मैं और राम इस स्कूल में पढ़ते हैं।

नियम ६—किन्तु यदि उत्तम पुरुष व मध्यम पुरुष के दो ही कर्ता हों और "च" (अव्यय) से जुड़े हुए हों तो क्रिया उत्तम पुरुष द्विवचन की होती है। जैसे—त्वम् अहं च जलं पिवावः=तुम और मैं जल पीता हूँ।

नियम ७—परन्तु यदि मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का एक कर्त्ता या एक से अधिक कर्त्ता "च" (और) से जुड़े हुए न होकर "वा" या "अथवा" जुड़े हुए हों, तो क्रिया में पुरुष तथा वचन सबसे अन्तिम क्रिया के अनुसार होती है। जैसे—सः वा त्वम् वा अहं वा तत्र गमिष्यामि=वह, तुम या मैं वहाँ जाऊँगा।

त्वं वा बालकाः वा तत्र गच्छन्तु=तुम या राम वहाँ जाओ।

आदर्श वाक्य—

(१) त्वं च अहं च जलं पास्यावः=तुम और मैं जल पीऊँगा।

(२) त्वं रामः श्यामः च अत्रैव तिष्ठति=तुम और कृष्ण यहाँ ठहरो।

(३) सः रामः वा खादिष्यति=वह या राम खायेगा।

(४) त्वम् रामः गोपालः च तत्र गच्छत=तुम राम और गोपाल वहाँ जाओ।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) राम या श्याम इस वन में रहते हैं। (२) श्याम और मोहन अपना पाठ याद करें। (३) तुम राम और कृष्ण वहाँ जाओ। (४) हम और तुम कल वाराणसी चलेंगे। (५) कृष्ण, राम और तुम कल वहाँ अवश्य जाओगे। (६) महाराज! आइए और बैठिए। (७) मेरा जैसा ज्ञानी संसार में नहीं है। (८) राम या मोहन पुस्तक पढ़ेगा। (९) तुम या वह वहाँ जायेगा। (१०) मैं, तुम और वह अवश्य वहाँ जायेगा।

अभ्यास—३४

उपसर्ग युक्त धातुऐं

नियम १—उपसर्ग वे अव्यय हैं जो धातु के पूर्व (पहले) जुड़कर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं। जैसे—'गम्' धातु का अर्थ जाना होता है किन्तु उसके पहले 'निर्' उपसर्ग के जुड़ जाने से "निर्+गम्" का अर्थ 'निकलना' हो जाता है। जैसे—चन्द्रः मेघाद् बहि निर्गच्छति=चन्द्रमा बादल से बाहर निकल रहा है।

आदर्श वाक्यः—

(१) जनाः वाटिकायां बिहरन्ति=मनुष्य बाग में बिहार करते हैं।

(२) भक्तः प्रसन्नताम् अनुभवति=भक्त प्रसन्नता का अनुभव करता है।

(३) लक्ष्मणः रामम् अन्वगच्छत्=लक्ष्मण राम के पीछे गया।
(४) श्यामः प्रश्नम् उदरतत्=श्याम ने प्रश्न का उत्तर दिया।
(५) गंगा हिमालयात् निर्गच्छति=गंगा हिमालय से निकलती है।
(क) **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**
(१) स्वामी ने नौकर को आज्ञा दी। (२) वह ईश्वर को प्रणाम करता है। (३) छात्र कक्षा में घुसे। (४) छात्र स्कूल से घर लौटते हैं। (५) वे सब प्रसन्न होते हैं। (६) तुम बाजार से फल लाओगे। (७) उसने मुझे मूर्ख समझा। (८) वह प्रातःकाल घर से बाहर निकला। (९) अर्जुन कर्ण को जीतता है। (१०) वे कहानी सुनती हैं।

अभ्यास—३५
विशेषणों का प्रयोग

नियम १—जो शब्द संज्ञा की विशेषता बतलाता है, उसे विशेषण कहते हैं। जिसकी विशेषता प्रकट की जाती है उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे—सुन्दरः शिशुः=सुन्दर लड़का—इसमें सुन्दर विशेषण तथा लड़का विशेष्य है।

नियम २—जो लिंग, वचन तथा कारक विशेष्य में होता है, वही वचन लिंग और कारक उसके विशेषण में भी होता है। जैसे—मनोहरं पुष्पम्=मनोहर फूल।

नियम ३—युष्मद्, अस्मद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस् (वह), किम्, सर्व आदि सर्वनाम शब्दों का प्रयोग भी विशेषण की भाँति होता है। जहाँ ये विशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं, वहाँ इनके लिंग, वचन, तथा कारक अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे—अस्य बालकस्य=इस बालक का।

नियम ४—संस्कृत में किम् (क्या) शब्द के आगे 'चित्' जोडने से उसका अर्थ किसी हो सकता है। ऐसे स्थान पर 'किम्' का रूप उसके विशेष्य के अनुसार बनाकर 'चित्' जोड़ दिया जाता है तथा आवश्यकतानुसार वहाँ सन्धि भी करनी पडती है। जैसे—कस्यचित वनस्य=किसी वन का आदि।

नियम ५—तुम जैसा, मुझ जैसा आदि की संस्कृत बनाने के लिए इनके वाचक सर्वनाम शब्द से 'दृश' जोड़ देते हैं। ये शब्द भी अपने विशेष्य के अनुसार ही लिंग, वचन तथा विभक्ति रखते हैं। पुं० में इनके रूप 'राम'

स्त्री० में इनके रूप 'नदी' तथा नपुं० में इनके रूप 'गृह' की तरह चलते हैं। ये निम्न प्रकार बनते हैं। जैसे—

शब्द	पुं०	स्त्री०	नपुं०	अर्थ
युष्मद्	त्वादृशः	त्वादृशी	त्वादृशम्	तुम जैसा
अस्मद्	मादृशः	मादृसी	मादृशम्	मुझ जैसा
भवत्	भवादृशः	भवादृशी	भवादृशम्	आप जैसा
तत्	तादृशः	तादृशी	तादृशम्	वैसा, उस जैसा
एतत्	एतादृशः	एतादृशी	एतादृशम्	ऐसा, इस जैसा
यत्	यादृशः	यादृशी	यादृशम्	जैसा
इदम्	ईदृशः	ईदृशी	ईदृशम्	ऐसा
किम्	कीदृशः	कीदृशी	कीदृशम्	कैसा

नियम ६—संस्कृत में तुलनात्मक विशेषण भी होते हैं। इन्हें बनाने के लिए तरप्, तमप्, ईयस् और इष्ठन् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। इनमें दो व्यक्तियों अथवा दो वस्तुओं की तुलना में तरप् और ईयसुन् तथा दो से अधिक में तमप् और इष्ठन् प्रत्यय लगते हैं। जैसे—रामः मोहनात् सुन्दरतरा अस्ति =राम मोहन से अधिक सुन्दर है।

पशुषु सिंहः बलिष्ठः अस्ति=पशुओं में सिंह बलवान होता है।

आदर्श वाक्यः—

(१) एतानि पुस्तकानि मह्यं देहि=इन पुस्तकों को मुझे दो।

(२) त्वादृशः पुरुषः असत्यं न वदति=तुम जैसा पुरुष झूठ नहीं बोलता है।

(३) तस्मिन् भवने कः वसति=उस मकान में कौन रहता है।

(४) रामः सर्वेषु बालकेषु सुन्दरतमः अस्ति=राम सब बालकों में सबसे अधिक सुन्दर है।

(५) अहम् एक सुन्दर पुरुषं पश्यामि=मैं एक सुन्दर पुरुष को देखता हूँ।

(क) **संस्कृत में अनुवाद कीजिए**—

(१) रामायण श्रेष्ठ पुस्तक है। (२) मेरे बाग के फूल सुन्दर हैं। (३) आगरा बिशाल नगर है। (४) यह नदी छोटी है। (५) मेरे जैसे पुरुष को मत मारो। (६) किसी वन में एक शेर रहता था।

(७) गंगा संसार में सब से पवित्र नदी है। (८) मीरा मन्जू से अधिक चतुर है। (९) कैसा पुरुष माननीय होता है। (१०) ऐसे घर में न रहें।

अभ्यास—३६

(संख्या वाचक विशेषण)

नियम १—संख्या वाचक शब्द (एक, द्वि, त्रि, चतुर, पंचम्) आदि शब्द विशेषण होते हैं। अतः इनके रूप अपने विशेष्य के अनुसार तीनों लिंगों में होते हैं। जैसे—एक छात्रः (एक छात्र) छात्रा एका (एक छात्रा), एकम् फलम् (एक फल) आदि।

नियम २—प्रथमः (पहला) द्वितीयः, (दूसरा), तृतीया (तीसरा) आदि क्रमबोधक संख्या वाचक विशेषण सभी लिंगों और वचनों में अपने विशेष्य के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। जैसे—सः एका दश्याम् कक्षायां पठति=वह ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता है।

नियम ३—द्विगुणाः (दुगुना), त्रिगुणाः (तिगुना), चतुर्गुणाः (चौगुना) आदि आवृत्तिबोधक संख्या वाचक विशेषण संख्या वाचक शब्दों के आगे 'गुण' शब्द जोड़कर बनाते हैं और इनके रूप भी अपने विशेष्य लिंग, विभक्ति तथा वचन के अनुसार होते हैं। जैसे—द्विगुणाः छात्राः=दुगुने छात्र।

आदर्श वाक्य—

(१) अस्यां कक्षायां विंशतिः छात्राः सन्ति=इस कक्षा में बीस छात्र हैं।
(२) अस्मिन् उद्याने पंच वृक्षाः सन्ति=इस बाग में पाँच पेड़ हैं।
(३) चतुर्थे दिवसे सः अत्रागमिष्यति=चौथे दिन वह यहाँ आयेगा।
(४) तस्मात् द्विगुणाः छात्राः अत्र पठन्ति=उससे दुगुने छात्र यहाँ पढ़ते हैं।
(५) तौ द्वौ अपि भ्रातरौ निर्धनौ स्तः=वे दोनों भाई गरीब हैं।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) इन दोनों पुस्तकों को मुझे दो। (२) राम नवीं कक्षा में पढ़ता है। (३) मेरे स्कूल में उस स्कूल में दुगुने छात्र पढ़ते हैं। (४) तुम्हारे चारों पुत्र शिक्षित हैं। वेद चार होते हैं। (६) राजा दशरथ के तीन रानियाँ थीं। (७) मेरे पास १० रुपये हैं। (८) मैं एक लड़की को देखता हूँ। (९) यशपाल के घर में पाँच पेड़ हैं। (१०) मीरा के पास मुझसे तिगुने रुपये हैं।

अभ्यास—३७

कर्मवाच्य तथा भाव वाच्य

वाच्य तीन होते हैं—(१) कर्तृवाच्य, (२) कर्मवाच्य, (३) भाव वाच्य।

नियम १—कर्म वाच्य में कर्म की ही प्रधानता होती है क्रिया का पुरुष, वचन, तथा लिंग कर्म के पुरुष, वचन तथा लिंग के अनुसार ही होते हैं। कर्म वाच्य में कर्त्ता में तृतीया तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। कर्म वाच्य सकर्मक धातुओं से ही होता है। जैसे—छात्रैः निवन्धः लिख्यते (कर्तृ०)= छात्र निबन्ध लिखते हैं।

छात्रेण निबन्धः लिख्यते (कर्म०)=छात्रों के द्वारा निबन्ध लिखा जाता है।

विशेष—क्रिया के मूल रूप में 'य' जोड़कर आत्मनेपद बना लिया जाता है। जो धातुऐं आत्मनेपद हैं उनमें भी 'य' जोड़ते हैं। जैसे—सेवते=सेव्यते।

नियम २—अकर्मक धातुओं से भाव की प्रधानता होने पर भाव वाच्य होता है इसमें कर्त्ता में तृतीया होती है तथा क्रिया सदा प्रथम पुरुष एक वचन की होती है। जैसे—कर्तृवाच्य—राम गच्छति—रामेण गम्यते—कर्मवाच्य।

आदर्श वाक्य—

(१) बालकेन त्वं दृश्यसे=लड़कों के द्वारा तुम देखे जाते हो। (कर्मवाच्य)

(२) छात्रेणः आचार्यः सेव्यते=छात्र द्वारा आचार्य की सेवा की जाती है। (कर्मवाच्य)

(३) अस्माभिः स्थीयते=हमारे द्वारा खड़ा हुआ जाता है। (भाववाच्य)

(४) बालकेन स्थीयते=बालक द्वारा रहा जाता है। (भाववाच्य)

(क) **संस्कृत में अनुवाद कीजिए**—

(१) राम के द्वारा रावण मारा गया। (२) लड़कों द्वारा दूध पिया जाता है। (३) वह नौकर द्वारा फल घर ले जाता है। (४) विद्वान हर जगह पूजा जाता है। (५) रामायण तुलसीदास के द्वारा लिखी गई। (६) राम के द्वारा साँप मारा जाता है। (७) कवि द्वारा कविता की जाती है। (८) राजा के द्वारा प्रजा की रक्षा की जाती है। (९) अध्यापक द्वारा इनाम दिया गया। (१०) मेरे द्वारा उसे पीटा गया।

अभ्यास—३८

समास का प्रयोग

नियम १—अव्ययी भाव समास का प्रयोग सदा क्रिया-विशेषण की भाँति होता है। जैसे—वाक्य १

नियम २—समासों के प्रयोग से वाक्य में सुन्दरता आ जाती है तथा रूपों को चलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। जैसे—वाक्य १ में 'सूर्योदयात्' यहाँ सूर्य के उदय से की संस्कृत 'सूर्यस्य उदयात्' भी हो सकती है। लेकिन 'सूर्योदयात्' सूर्यस्य उदयात्' से अच्छी लगती है।

नियम ३—यद्यपि समासों के प्रयोग करने से रूप चलाने की कठिनता से बचा जा सकता है, किन्तु समास होने पर सन्धि अवश्य होती है, अतः समास करने से पहले इस सन्धि का ध्यान अवश्य कर लेना चाहिए। जहाँ 'स्वर' के बाद कोई 'व्यंजन' होता है वहाँ सन्धि की सम्भावना नहीं होती। अतः ऐसे स्थानों पर तो समास करना ही सरल होता है। जैसे वाक्य—३

नियम ४—द्वन्द्व समास में दो के लिए द्विवचन तथा अधिक के लिए बहुवचन होते हैं। अतएव वाक्य २ में माता पित्रोः।

नियम ५—बहुत से द्वन्द्व समास बहुतों में वाचक होने पर भी एकवचन में वे आते हैं। जैसे—पाणिपादम्।

नियम ६—'द्विगु' समास भी एकवचन में ही आता है। जैसे—पंचपात्रम्

आदर्श वाक्य—

(१) सः प्रतिदिन सूर्योदयात् पूर्वमेव जागती=वह प्रतिदिन सूर्य के उदय से पहले ही जग जाता है।

(२) माता पित्रोः (पित्रोः) आज्ञा मात्वां रामः वनम् अगच्छत्=माता और पिता की आज्ञा को मानकर राम वन को गये।

(३) चतुर पुरुषं (चतुरं पुरुषं) सर्वे नमन्ति=चतुर पुरुष को सब नमस्कार करते हैं।

(४) पाणिपादम् नित्यं प्रक्षालयेत्=हाथ पैरों को नित्य धोना चाहिए।

(५) मम गृहं पञ्चपात्रम् अस्ति=मेरे घर में पाँच बर्तन हैं।

(क) **संस्कृत में अनुवाद कीजिए**—

(१) मेरे घर में प्रतिवर्ष उत्सव होता है। (२) इस विद्यालय में पाँच कमरे हैं। (३) माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। (४) महापुरुषों

की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (५) अच्छे विद्यार्थियों को पढ़ना चाहिए। (६) मथुरा में प्रतिवर्ष सावन में मेला होता है। (७) पती-पत्नी अपने पुत्र को देखकर प्रसन्न होते हैं। (८) समुन्द ने शिव को विष दिया। (९) भाई-बहन का प्रेम अमर है। (१०) तुम्हारी कोमलवाणी से मैं प्रसन्न हूँ।

अभ्यास—३९

प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग

जहाँ कार्य स्वयं न करके किसी दूसरे से कराया जाता है वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे—धात्री शिशु दुग्धं पाययति।

यहाँ दूध पीने का कार्य धात्री स्वयं न करके शिशु से कराती है अतः 'पाययति' क्रिया प्रेरणार्थक है।

नियम १—प्रेरणार्थक क्रियाओं में साधारणतया जो प्रेरणा देता है या कार्य करवाता है उसमें प्रथमा विभक्ति होती है, कार्य करवाने की जिसे प्रेरणा दी जाती है या जिससे कार्य करवाया जाता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

नियम २—यद्यपि नियम २ के अनुसार जिससे या जिसके द्वारा कार्य करवाया जाता है, उसमें तृतीया होती है, किन्तु निम्न अवस्थाओं में उसमें तृतीया न होकर द्वितीया होती है। जैसे—पिता पुत्रम् विद्यालयं गमयति। अतः यहाँ 'पुत्रम्' तृतीया न होकर द्वितीया ही हुई है।

आदर्श वाक्य—

(१) मात्रा पुत्रं शाययति=माता पुत्र को सुलाती है।

(२) गुरुः शिष्यं हरिं दर्शयति=गुरुजी शिष्य को भगवान को दिखाते हैं।

(३) सः रामं रायायणं श्रावयति=वह राम को रामायण सुनवाता है।

(४) माता पुत्रेण देवं नामयति=माता पुत्र से देवता को नमस्कार करवाती है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) पिता पुत्र का शास्त्र पढ़ाता है। (२) पिता ने पुत्र को कानपुर दिखवाया। (३) राम नौकरों से काम करायें। (४) राम मोहन से भोजन करवाता है। (५) माता पुत्र को सुलाती है। (६) मैं तुम्हें जमीन पर सुलाऊँगा। (७) माँ बेटी से खाना पकवाती है।

(८) अध्यापक छात्र से पुस्तक पढ़वाता है। (९) मैं तुम से लिखवाता हूँ। (१०) मैं पुस्तकें प्रकाशित करवाता हूँ।

अभ्यास—४०

कृदन्त प्रयोग

धातुओं के बाद आने वाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहे जाते है तथा इनसे बनने वाले संज्ञा या अव्यय शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

क्तवतु (क्तवतु) प्रत्यय

क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल का अर्थ प्रगट करने के लिए किया जाता है। जब किसी धातु के साथ क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग होता है, तब इसमें से केवल 'तवत्' शेष रह जाता है और उसका रूप 'भगवत्' जैसा बनता है। जैसे—भगवान, भगवन्तो, भगवन्तः। इनमें लिंग तथा वचन के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है।

स्त्रीलिंग कर्त्ता शब्द के साथ इस प्रत्यय के बाद 'ई' लग जाती है और 'नदी' शब्द के समान रूप बनते हैं।

आदर्श वाक्य—

(१) रामः सलिलं पीतवान्=राम ने जल पीया।

(२) छात्रा विद्यालयं गतवन्तः=छात्र विद्यालय गये।

(३) सीता रामेण सह वनं गतवती=सीता राम के साथ वन गई।

(४) श्वः रात्रौ अहं शीघ्रम् शयितवान्=कल रात मैं जल्दी सो गया।

(५) अहम् पुस्तकानि क्रीतवान्=मैंने पुस्तक खरीदी।

क्तवतु प्रत्यय के प्रयोग से बने हुऐ कुछ शब्द—

कथ=कथितवान्	गम्=गतवान्	श्रु=श्रुतवान्
अर्च्=अर्चितवान्	पठ्=पतितवान्	प्रच्छ=पृष्टवान्
त्यज्=त्यक्तवान्	दा=दत्तवान्	नी=नीतवान्
हन्=हतवान्	याच्=याचितवान	स्मृ=स्मृतवान्
हस=हसितवान्	पी=पीतवान्	क्षिप=क्षिप्तवान्

(क) **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(१) राम ने रावण को मारा। (२) मीरा ने गीत गाया। (३) मैंने अपने मित्र जो पत्र लिखा। (३) क्या छात्रों ने पुस्तकें खरीद ली।

(४) अध्यापक ने शिष्य से प्रश्न पूछा। (५) मीरा और मँजू आज बाजार को गईं। (६) तुमने पुस्तकें क्यों छुईं। (७) मैंने जंगल में दो शेर देखे। (८) क्या सन्तोष ने दूध नहीं पीया। (९) मैंने कल चार आम खाये। (१०) आज सन्तोष ने नौकर पीटा।

अभ्यास—४१

क्त प्रत्यय

क्त प्रत्यय का प्रयोग करके भी भूतकाल का अर्थ प्रकट करने के लिए किया जाता है। जब किसी धातु के साथ क्त प्रत्यय का प्रयोग होता है तब उसमें से 'त' शेष रहता है। जैसे—कृतः, पठितः, पृष्टः। किन्तु क्त प्रत्यय का प्रयोग करके अनुवाद करना कुछ कठिन होता है। इस प्रकार अनुवाद के लिए निम्न बातें आवश्यक हैं—

यह प्रत्यय सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार की धातुओं में प्रयोग होता है। जब सकर्मक धातु के साथ क्त प्रत्यय का प्रयोग होता है तब कर्त्ता तृतीया विभक्ति में तथा कर्म प्रथमा विभक्ति में प्रयोग होता है एवं क्रिया का लिंग तथा वचन कर्म के अनुसार होता है। जैसे रामेणः पुस्तकं पठितम् = राम ने पुस्तक पढ़ी।

अकर्मक धातुओं में जब क्त प्रत्यय का प्रयोग कर्त्ता और भाव में होता है। ऐसी दशा में 'क्तान्त' शब्द कर्त्ता के अनुसार प्रथमा में होता है। जैसे—रामः ग्रामं गतः = राम ग्राम गया।

जब अकर्मक धातु में भाव में क्त प्रत्यय होता है तब क्यान्त शब्द नपुं० के एक वचन में होता है। जैसे—बालकेण तत्र शयितम् = बालक वहाँ सोया।

कुछ क्त प्रत्ययान्त शब्द—

दृश = दृष्टः	हन् = हतः	गम् = गतः
क्री = क्रीतः	शिक्ष् = शिक्षितः	लभ् = लब्धः
गै = गीतः	हस = हसितः	दण्ड् = दण्डितः
दा = दत्तः	लिख = लिखितः	जि = जितः

आदर्श वाक्य—

(१) रामेण इदम् कार्यं कृतम् =

(२) छात्रैः गुरुः सेवितः =

(३) रामेण रावणः हतः =
(४) बालकेन फलानि भुक्तानि =
(५) त्वया पुस्तके लब्धे =

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मैंने बाग में एक साँप देखा। (२) हमने सूर्योदय होने पर प्रस्थान किया। (३) मैं बाजार गया। (४) तुम क्यों हँसे। (५) तुमने पिता को पत्र लिखा। (६) मैंने मोहन को पुस्तक दी। (७) लड़कों ने गेंद फेंकी। (८) तुमने उसे क्यों मारा। (९) राम ने बोलना सीख लिया। (१०) लड़के राम को गाँव ले गये।

अभ्यास—४२

तव्यत्–प्रत्यय

तव्यत् प्रत्यय का प्रयोग 'चाहिऐ' अर्थ में होता है। जब किसी धातु में तव्यत् प्रत्यय का प्रयोग होता है तब उसमें से 'तव्य' शेष रहता है और इसका प्रयोग कर्म के अनुसार होता है। तव्यत् प्रत्यय का प्रयोग होने पर कर्त्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है। अर्थात् कर्म का जो वचन और लिंग होता है वही लिंग और वचन क्रिया का होता है। जैसे—त्वया पुस्तकानि पठित व्यानि = तुम्हें पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

तव्यत् के प्रयोग से बने कुछ रूप—

क्षम् = क्षन्तव्य	पठ् = पठितव्य	जि = जेतव्य
दृश् = द्रष्टव्य	हन् = हन्तव्य	दा = दातव्य
श्रु = श्रोतव्य	पत् = पतितव्य	प्रच्छ = प्रष्टव्य
भी = भेतव्य	शी = शयितव्य	त्यजू = त्यक्तव्य

आदर्श वाक्य—

(१) त्वया लज्जितव्यम् = तुम्हें लजाना चाहिए।
(२) मया अवश्यं गन्तव्यम् = मुझे अवश्य जाना चाहिए।
(३) बालकैः परिश्रमः कर्त्तव्यः = लड़कों को परिश्रम करना चाहिए।
(४) तेन इदम् कार्यं कर्त्तव्यम् = उसे यह कार्य करना चाहिए।
(५) कदापि असत्यं न वदितव्यम् = कभी असत्य नहीं बोलना चाहिए।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) तुम्हें पुस्तकें पढ़नी चाहिए। (२) राम को वन में जाना चाहिए। (३) मुझे यह कार्य करना चाहिए। (४) हमें गुरूजी को प्रणाम करना चाहिए। (५) दिन में नहीं सोना चाहिए। (६) यशपाल को गाँव जाना चाहिए। (७) दुष्ट बालक को दण्ड देना चाहिए। (८) तुम्हें स्वच्छ जल पीना चाहिए। (९) सज्जन पुरुषों के साथ रहना चाहिए। (१०) सदैव मेहनत करनी चाहिए।

अभ्यास—४३

अनीयर प्रत्यय—

अनीयर प्रत्यय का प्रयोग 'तस्यत्' प्रत्यय के समान चाहिए अर्थ में होता है। इसका प्रयोग होने पर 'अनीय' शेष रहता है और पठनीयः, ग्रहणीय आदि रूप बनते हैं। इस प्रत्यय का प्रयोग होने पर कर्त्ता में तृतीया विभक्ति कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है तथा क्रिया का लिंग, वचन, कर्म के अनुसार होता है तव्यत् और अनीयर प्रत्यय का प्रयोग कर्म वाच्य तथा भाव वाच्य में होता है। जैसे—त्वया ईश्वरः वन्दनीयः = तुम्हें ईश्वर की वन्दना करनी चाहिए।

अनीयर प्रत्यय के प्रयोग से बने हुए रूप—

दा = दानीय	सह = सहनीयः	श्रु = श्रवणीयः
त्यज् = त्यजनीयः	कृ = करणीयः	बु = वचनीयः
दृश् = दर्शनीयः	हृ = हरनीयः	पा = पानीयः

आदर्श वाक्य—

(१) त्वया कार्यं करणीयम् = तुम्हें काम करना चाहिए।

(२) बालकैः अत्र न स्थानीयम् = बालकों को यहाँ नहीं बैठना चाहिए।

(३) त्वया प्रतिदिनं पाठः स्मरणीयः = तुम्हें प्रतिदिन पाठ याद करना चाहिए।

(४) गोः मधुरं दुग्धं पानीयम् = गाय का मीठा दूध पीना चाहिए।

(५) बलवताः दुर्बलः रक्षणीयः = बलवान को दुर्बल की रक्षा करनी चाहिए।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) छात्रों को पुस्तक पढ़नी चाहिए। (२) पशुओं की रक्षा करनी चाहिए। (३) हमें ताजी फल खाने चाहिए। (४) सदैव सत्य बोलना चाहिए।

(५) माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। (६) सब को प्रातः उठना चाहिए। (७) प्रतिदिन रामायण पढ़नी चाहिए। (८) हमें सुबह स्नान करना चाहिए। (९) कष्टों को सहन करना चाहिए। (१०) रात को जल्दी सो जाना चाहिए।

अभ्यास—४४

शतृ प्रत्यय

हिन्दी वाक्यों में "जाता हुआ" "खाता हुआ" आदि वर्तमान काल के वृदन्त शब्दों का संस्कृत में अनुवाद करने के लिए शतृ प्रत्यय का प्रयोग होता है। शतृ में से 'अत्' शेष रह जाता है और उसका रूप गच्छन्, गच्छन्तौ, गच्छन्तः के समान बनता है। स्त्री० रूप बनाने के लिए बहुवचनान्त रूप में 'ई' प्रत्यय का प्रयोग करके 'गच्छन्ती' रूप बनता है। जैसे—बालकः पठन् खादति = बालक पढ़ता हुआ खाता है।

रहा, रहे, रही, अर्थ को प्रकट करने के लिए भी शतृ प्रत्यय का प्रयोग होता है और इसका रूप भी पहले के समान पठन्, पठन्ती, पठन्तः आदि रूप बनता है। स्त्री० में इस अर्थ को प्रकट करने के लिए बहु० शब्द में 'ई' प्रत्यय का प्रयोग 'नदी' शब्द के समान रूप बनते हैं। इस अर्थ में शतृ प्रत्ययान्त शब्द के अन्त में 'अस' धातु का प्रयोग होता है। जैसे—रामः विद्यालयं गच्छन् अस्ति = **राम विद्यालय जा रहा है।**

शतृ प्रत्यान्त शब्द—

धातु०	पु०	स्त्री०	नपु०
दा (देना)	ददन्	ददती	ददत्
इष् (इच्छा करना)	इच्छन्	इच्छन्ती	इच्छत्
चिन्त (सोचना)	चिन्तयन्	चिन्तयन्ती	चिन्तयत्
पश्य (देखना)	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
रच् (बनाना)	रचयन्	रचयन्ती	रचयत्
स्था (ठहरना)	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती	तिष्ठत्

आदर्श वाक्य—

(१) बालकाः गच्छन्तः खादन्ति = बालक जाते हुऐ खाते हैं।
(२) गच्छन्त बालकः पश्य = जाते हुऐ बालक को देखो।
(३) अहं रुदन्त बालकं अपश्यम् = मैंने रोते हुए बालक को देखा।

(४) सा ग्रामं गच्छन् आसीत् = वह ग्राम जा रही थी ।
(५) श्वः सीता लेखं लिखन् भविष्यति = कल सीता पत्र लिख रही होगी ।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिये--

(१) जल पीते हुए बालक को देखो । (२) गाँव जाता हुआ बालक रोता है । (३) मेरी माता जी भोजन बना रही थी । (४) क्या तुम पत्र लिख रहे हो । (५) वृक्ष से पत्ते गिर रहे हैं । (६) पेड़ से फल गिर रहे हैं । (७) लड़के पाठ याद कर रहे होंगे । (८) नाचते हुऐ मोर को देखो । (९) हम गाना गाते हुऐ चलते हैं । (१०) मैं रुकता हुआ आया ।

अभ्यास—४५

शानच् प्रत्यय

शानच् प्रत्यय का प्रयोग आत्मने पदी धातुओं में 'देखती हुई', 'पढ़ती हुई' अर्थ को बताने के लिए होता है । उस प्रत्यय में से " 'आन' 'मान' शेष रहता है तथा उसका प्रयोग होने पर 'आ' प्रत्यय भी लगता है जिसका रूप 'सेवमाना, कम्पमाना' होता है । शतृ और शानच् प्रत्यय के प्रयोग से बने हुऐ वे शब्द जिनका अर्थ' 'सेवा करता हुआ' आदि होता है सदा कर्त्ता के विशेषण के रूप में प्रयोग होता है । जैसा—कम्पमानः रामः अत्र आगच्छत् = कँपता हुआ राम यहाँ आया ।

शानच् प्रत्यय से बने रूप—

हृ=हरमाणः	शी=शयानः	दा=ददानः
नी=नयमानः	वन्द=बन्दमाणः	चेष्ट=चेष्टमाणः
कृ=कुर्वाणः	लभ्=लभमानः	दय=दयमाणः
ज्ञा=जानानः	सह=सहमाणः	मन्=मन्यमाणः

आदर्श वाक्य--

(१) मोदमानः बालकः गृहं गतः—
(२) गुरुम् सेवमानः अहं प्रसन्नः अस्ति—
(३) मम माता भोजनं पचमाना आसीत्—
(४) शयानः मोहनः गृहे अस्ति—
(५) पुत्रं ईक्षमानः पिता प्रसन्न भवति—

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मैं मन्दिर में बैठा हुआ था। (२) उसने जाते हुए बालक को पीटा। (३) सोता हुआ बालक डर गया। (४) हँसती हुई मीरा ने कहा। (५) सोते हुए बालक को मत जगाओ। (६) सन्तोष हँसता हुआ यहाँ आया। (७) प्रसन्न होती हुई सीता वन को गई। (८) दया करते हुऐ पुरुष को देखो। (९) मैंने सोते हुऐ पत्र लिखा। (१०) वह लड़ता हुआ गिर गया।

अभ्यास—४६

तुमुन् प्रयय

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग 'को' के लिए अर्थ को प्रकट करने के लिए किया जाता है। इस प्रत्यय का प्रयोग होने पर 'तुम' शेष रहता है तथा यह अव्यय शब्द बन जाता है, इसी लिऐ उसके रूप में परिवर्तन नहीं होता है। जैसे—कर्तुम्, पठितुम् स्नातुम् आदि। जैसे—अहं विद्यालयं पठितुम् गच्छामि—मैं पढ़ने के लिए विद्यालय जाता हूँ।

विशेष—तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग निम्न दशाओं में भी होता है:—

(१) इच्छार्थक क्रिया के योग में। जैसे—अहं धनं प्राप्तं निच्छामि —मैं धन प्राप्त के लिए निकला हूँ।

(२) समय शब्द के योग में। जैसे—समयोऽयं विद्यालयं गन्तुम्—

(३) शक्र (सकना) ज्ञा (जानना) क्रम धातु के योग में। जैसे– बालकः चलितु शक्नोति — बालक चल सकता है।

तुमुन् प्रत्यय से बने रूप—

त्यज	त्यक्तुम्	प्रच्छ्	प्रष्टुम्	स्था	स्थतुम्
लभ्	लब्धम	मुज्	मोक्तुम्	कथ्	कथयितुम्
जि	जेतुम्	स्मृ	स्मर्तुम्	ग्रह	ग्रहीतुम्
रुद्	रोदितुम्	पा	पातुम्	श्रु	श्रोतुम्

आदर्श वाक्य

(१) छात्राः नदीं स्नातुं अगच्छन् — बालक नहाने के लिए नदी पर गये।

(२) बालकः शावितुं इच्छति — बालक सोना चाहता है।

(३) सः गृहं गन्तुम् इच्छति — वह घर जाना चाहता है।

(४) राजा दानं दातुं समर्थः अस्ति— राजा दान देने में समर्थ है।

(५) रामः रावणं हन्तु शम्तोति — राम रावण को मार सकता है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मैं आज वृन्दावन जाना चाहता हूँ। (२) तुम पुस्तक पढ़ सकते हो। (३) राम कक्षा सुनने के लिए जायेगा। (४) लड़के भोजन के लिए गये। (५) यह पढ़ने का समय है। (६) खेलने के लिए वहाँ जाओ। (७) राम यह काम कर सकता है। (८) वे अब खेलना चाहते हैं। (९) मैं आज स्कूल जाना चाहता हूँ। (१०) क्या तुम वहाँ जाने में असमर्थ हो।

अभ्यास—४७

क्त्वा—प्रत्यय (धातु + ई (९८)

'पढ़कर' 'जाकर' 'लिखकर' आदि पूर्वकालिक कृदन्त शब्दों का अनुवाद संस्कृत में 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग करके किया जाता है। जब किसी धातु में इसका प्रयोग होता है तब इसमें से 'त्वा' शेष रह जाता है। जैसे—पठित्वा (पढ़कर), लिखित्वा (लिखकर), कृत्वा (करके) आदि यह शब्द अव्यय होता है इसलिए प्रत्येक दशा में वह एक समान ही रहता है। पुरुष तथा वचन के अनुसार इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे—अहं भोजनं कृत्वा विद्यालयं गच्छामि = मैं भोजन करके विद्यालय जाता हूँ।

क्त्वा प्रत्यय से बने रूप—

कृ	= कृत्वा	नी	= नीत्वा	दा	= दत्वा
याँच	= याचित्वा	पच	= पक्त्वा	दृश	= दृष्ट्वा
नम्	= नत्वा	स्मृ	= स्मृत्वा	स्था	= स्थित्वा
शी	= शयित्वा	प्रच्छ	= पृष्ट्वा	घ्रा	= घ्रात्वा

आदर्श वाक्य—

(१) सः गृहं गत्वा पठति = वह घर जाकर पढ़ता है।
(२) बालकः दुग्धं पीत्वा शेते = लड़का दूध पीकर सोता है।
(३) अयं छात्रः पठित्वा गृहं गच्छति = यह छात्र पढ़कर घर जाता है।
(४) छात्राः पाठं स्मृत्वा आगच्छन् = छात्र पाठ याद करके गये।
(५) त्वं पुस्तकं गृहीत्वा पठ = तुम पुस्तक गृहण करके पढ़ो।

(क) संस्कृत मे अनुवाद कीजिए—

(१) मैं कथा सुन कर आऊँगा। (२) तुम पत्र लिखकर जाओगे। (३) छात्र पुस्तक लेकर विद्यालय गये। (४) सन्तोष पत्र पढ़कर प्रसन्न होता है।

(५) गेंद लेकर मैदान में जाओ। (६) बच्चा सोकर उठा। (७) मैं गाँव में रहकर आऊँगा। (८) राम पढ़कर विद्वान हुआ। (९) वह उठकर पढ़ने जायेगा। (१०) तुम छुट्टी में घर जाओ।

अभ्यास—४८

ल्यप् प्रत्यय

'आकर' 'लेकर' आदि कृदन्त प्रत्यान्त शब्दों का संस्कृत में अनुवाद करने के लिए कहीं पर क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। इसमें से 'य्' शेष रहता है किन्तु यदि 'य' ह्रस्व स्वर के बाद आता है तो इसके पूर्व 'त' लग जाता है। जैसे—आदाय (लेकर), आगत्य (आकर)

विशेष—क्त्वा के स्थान में 'ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग उसी दशा में होता है जब धातु से पूर्व उपसर्ग का प्रयोग होता हो।

ल्यप् प्रत्यय के योग से बने कुछ रूप—

अनुभूय = अनुभव करके निर्जित्य = जीतकर अधीत्य = पढ़कर
उपलभ्य = प्राप्त करके संचिन्त्य = सोचकर अधिशय्य = सोकर
उत्थाय = उठकर प्रविश्य = प्रवेश करके समाघ्राय = सूँघकर
निपत्य = गिरकर उत्थाय = उठकर संस्थाप्य = स्थापित करके

आदर्श वाक्य—

(१) बालकाः पुस्तकं आदाय आगताः = बालक पुस्तक लेकर आये।
(२) त्वां परित्यज्य ते कुत्र गच्छन्ति ? = तुम्हें छोड़कर वे कहाँ जाते हैं।
(३) दुखं अनुभूय सुखं प्राप्स्यसि = दुःख का अनुभव करके सुख प्राप्त करोगे।
(४) व्यापारिणः वस्त्राणि विक्रीय गच्छन्ति = व्यापारी वस्त्र बेचकर जाते हैं।
(५) वृक्षं आरुह्य सः फलानि त्रोटयति = वृक्ष पर चढ़कर वह फल तोड़ता है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) संस्कृत पढ़कर बाजार जाओ। (२) गुरू को पूछकर घर गया। (३) वे पत्र लिखकर घर गये। (४) वे दोनों धन पाकर प्रसन्न हुए। (५) लड़के हँसकर बोले। (६) बालक सोकर उठा। (७) नदी में घुसकर नहाओ। (८) घोड़े पर चढ़कर मैं नगर जाऊँगा। (९) तुम्हें जल लाकर भोजन करना चाहिए। (१०) काम करके वह सो गया।

अभ्यास—४९

कुछ व्यापारिक ज्ञातव्य नियम

नियम १—प्रायः संस्कृत की प्रत्येक क्रिया के अर्थ को उस क्रिया से सम्बन्धित संज्ञा को कर्मकारक में रखकर उसके आगे 'कृ' करोति आदि धातु का आवश्यक रूप लगाकर प्रकट किया जा सकता है। जैसे—सः पठति = सः पठनं करोति। रामः रावणं व्यापादयत् = रामः रावणस्य वधम् अकरोत्।

नियम २—ऊपर कहे गये दूसरे प्रकार से अनुवाद करते समय मुख्य क्रिया का जो कर्म होता है, क्रिया को दो टुकड़ों में विभाजित करने से पहले जो कर्म होता है, जिसमें "को" चिह्न जुड़ा रहता है, उसमें षष्ठी विभक्ति हो जाती है। जैसे—पुस्तकं पठति = पुस्तकस्य पठनं करोति। इसकी दूसरी संस्कृत बनाते समय "पुस्तक" की द्वितीया की जगह 'पुस्तकस्य' षष्ठी हो गयी है।

नियम ३—आजकल रेल, मोटर, आदि सवारियाँ, आगरा, मथुरा आदि शहर, नेहरू, गाँधी, आदि पुरुष, ताजमहल आदि इमारत इत्यादि अनेक शब्द प्रचलित हैं, इसके संस्कृत में किस प्रकार रूप चलाये जायँ, इस विषय में काफी मतभेद है। अतः इनका अनुवाद करते समय सवारियों के आगे "यान" शहरों के आगे 'नगर' पुरुषों के आगे 'महोदय' इमारतों के आगे 'भवन' आदि जोड़कर उन शब्दों को संस्कृत मय बना लेना चाहिए।

नियम ४—देश का नाम केवल बहुवचन में ही आता है।

आदर्श वाक्य—

(१) आगरा नगरे "ताजमहल" नामक भवनम् अस्ति = आगरा में ताजमहल है।

(२) गाँधी जी महोदयस्य कथनम् सत्यम् अस्ति = गाँधी जी का कथन सत्य है।

(३) अहं मोटर यानेन मथुरां गमिष्यामि = मैं मोटर से मथुरा जाऊँगा।

(४) काश्मीरे श्रीनगरं प्रसिद्धम् अस्ति = काश्मीर में श्रीनगर प्रसिद्ध है।

(५) गोविन्दः मम मित्रम् अस्ति = गोविन्द मेरा मित्र है।

(क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) तुम सब आज पत्र लिखोगे। (२) वे मोटर से वृन्दावन गये।

(३) हम लोग आज सहारनपुर गमन करेंगे। (४) मथुरा में छपाई का काम अच्छा होता है। (५) तुम आज देहली जाओ। (६) लालबहादुर शास्त्री का स्वर्गवास इसी वर्ष हुआ। (७) भारत में दिल्ली प्रसिद्ध नगर है। (८) राम ने वाण से बालि का बध किया।

कारकों के नियम एक दृष्टि में

१—प्रथमा

(१) रामः पठति—पढ़ता है (कर्तृवाच्य)

(२) रामेण पठ्यते—राम के द्वारा पढ़ा जाता है (कर्मवाच्य)

(३) हेराम ! माँ रक्ष हे राम ! मेरी रक्षा करो—सम्बोधन में

(४) राम इति नाम चकार—राम ऐसा नाम रखा—अव्यय के साथ

(५) नलो नाम राजा आसीत्—नल नाम के राजा थे—नाम मात्र में

(६) सः मम कृपापात्रमस्ति—वह मेरा कृपा पात्र है—पात्र, आस्पद आदि के योग में।

२—द्वितीया

(१) ईश्वरः लोकान् पालयति—ईश्वर लोगों को पालता है।

(२) विद्यां विना ज्ञानं न भवति—विद्या के बिना ज्ञान नहीं होता। ऋते, अन्तरा, विना, अन्तरेण आदि के योग में।

(३) मम ग्राममभितः वनमस्ति—मेरे गाँव के चारों ओर वन हैं। अभितः परितः, उभयतः, उपरि-उपरि, समया, निकषा आदि के योग में।

(४) अनु—शिष्यः आचार्यमनुगच्छति—शिष्य गुरु के पीछे चलता है।

धिक्—पापिनं त्वां धिक्—पापी तुम्हें धिक्कार है।

प्रति—दीनं प्रति दया कुरु—दीनों पर दया करो।

(५) अधि+शी—भृत्यः शिलामधिशेते—सेवक शिला पर सोता है।

अधि+स्था—कृष्णः गृहमधितिष्ठति—कृष्ण घर में स्थित है।

अधि+आस्—राजा सिंहासनमध्यास्ते—राजा सिंहासन पर बैठते हैं।

(६) अनु+वस्—शिवः कैलाशमनुवसति—शिव कैलाश पर रहते हैं ।
अधि+वस्—शिवः काशीमधिवसतु—शिव काशी में रहे ।
आ+वस्—छात्रः विद्यालयमावसति—छात्र विद्यालय में घुसते हैं ।

३—तृतीया

(१) सः हस्तेन लिखति—वह हाथ से लिखता है । (करण)

(२) छात्रेण पुस्तकं पठयते—छात्र के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है ।

(कर्मवाच्य)

(३) रामेणसह सीता अगच्छत—राम के साथ सीता गईं । सह, समम् आदि के योग में ।

(४) भरतेन समोऽनुजः– भरत के समान भाई । सदृश अर्थ में ।

(५) विद्या धर्मेण शोभते—विद्या धर्म से सुशोभित होती है। हेतु अर्थ में

(६) धनेन हीन जनः—धन से हीन मनुष्य । हीन अर्थ में ।

(७) सः प्रकृत्या साधुः—वह प्रकृति से साधु है । स्वभाव अर्थ में ।

(८) अलं महीपाल तव श्रमेण—हे राजन् परिश्रम मत करो । अलम् अर्थ में ।

(९) अक्षणा काणः—आँख से अन्धा । अंग विकार अर्थ में ।

(१०) प्रयोजन, फल प्राप्ति, लक्षण बोध आदि में तृतीया ।

४–चतुर्थी

(१) सः विप्रायः धनं ददाति—वह ब्राह्मण को धन देता है । सम्प्रदान अर्थ में ।

(२) विद्या ज्ञानाय भवति—विद्या ज्ञान के लिए होती है । निमित्त अर्थ ।

(३) कृष्णाय मोदकं रोचते—कृष्ण को लड्डू अच्छे लगते हैं । रुचि अर्थ

(४) श्रीगणेशाय नमः—गणेशजी को नमस्कार है । नमः स्वस्ति स्वाहा, स्वधा आदि के योग में ।

(५) पठनाय (पठितुं) गच्छति—पढ़ने के लिए जाता है । तुमुन् अर्थ में

(६) रामाय क्रुध्यति द्रुह्यति वा—राम से क्रुद्ध होता है । क्रुध, द्रुह्, ईर्ष्या असूया आदि में ।

५—पंचमी

(१) सा गृहत् गच्छति—वह घर से जाती है—अलग होने के अर्थ में।

(२) चौराद्बिभेति = चोर से डरता है। भय अर्थ में।

(३) स्नानात् पूर्वम् = नहाने से पहले। पूर्व आदि के योग में।

(४) ऋते, बिना, अन्य, आरात्, प्रभृति, काल, मार्ग, विराम आदि में पंचमी।

६—षष्टी

(१) दशरथस्य पुत्रः = दशरथ के पुत्र। सम्बन्ध अर्थ में।

(२) शिशोः शयनम्, धनस्यदानम् = बालक का सोना, धन का दान। कृदन्त कर्ता और कर्म में।

(३) अध्ययनस्य हेतोः—पढ़ने के हेतु। हेतु शब्द के प्रयोग में।

(४) कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः = कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं। निर्धारण में।

(५) अनादर अर्थ में षष्ठी।

७—सप्तमी

(१) विद्यालये पठामि = स्कूल में पढ़ाता हूँ। अधिकरण में।

(२) रामे गते नृपः प्राणांस्तत्याज = राम के जाने पर राजा ने प्राण छोड़ा। भाव अर्थ में।

(३) रुदति शिशौ माता गता = शिशु के रोते रहने पर माँ चली गई। स्नेह अनादर आदि अर्थ में।

(४) जीवेसु मानवः श्रेष्ठ = प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है। निर्धारण में।

(५) ग्रामस्य दूरे वसति = गाँव से दूर रहता है। दूर, अन्तिक आदि अर्थ में।

(५) गंगा हिमालयात प्रभवति = गगा हिमालय से निकलती है।

(६) पापान्निवारयति = पाप से दूर करता है। निवारण अर्थ मे।

(७) उपाध्यायात अधीते = गुरु से अध्ययन करता है। नियमित अध्ययन में।

(८) जननी स्वर्गादपि गरीयसी = माता स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। उत्कर्ष प्रकट करने में।

मुख्य क्रियाओं के

धातु	अर्थ	लट् (वर्तमान)	लृट् (भविष्यत्)	लङ् (भूतकाल)
भू	होना	भवति	भविष्यति	अभवन्
पठ	पढ़ना	पठति	पठिष्यति	अपठत्
गम्	जाना	गच्छति	गमिष्यति	अगच्छत्
पृच्छ	पूछना	पृच्छति	प्रक्ष्यति	अपृच्छत्
पा	पीना	पिबति	पास्यति	अपिबत्
अनु + भू	अनुभव करना	अनुभवति	अनुभविष्यति	अन्वभवत
खाद्	खाना	खादति	खादिष्यति	अखादत
धाव	दौड़ना	धवति	धाविष्यति	अधावत्
पत्	गिरना	पतति	पतिष्यति	अपतत्
नृत्	नाचना	नृत्यति	नर्तिष्यति	अनृत्यत्
हस्	हँसना	हसति	हसिष्यति	अहसत्
दृश्	देखना	पश्यति	द्रक्ष्यति	अपश्यत
क्रीड	खेलना	क्रीडति	क्रीडिष्यति	अक्रीडत्
गै	गाना	गायति	गास्यति	अगायत्
उप + दिश्	उपदेश देना	उपदिशति	उपदेक्ष्यति	उपादिशत
आ + दिश्	आज्ञा देना	आदिशति	आदेक्ष्यति	आदिशत
प्र + विश्	घुसना	प्रविशति	प्रवेक्ष्यति	प्राविशत
उप + विश्	बैठना	उपविशति	उपवेक्ष्यति	उपाविशत्
वद्	बोलना	वदति	वदिष्यति	अवदत्
चल्	चलना	चलति	चलिष्यति	अचलत्

संक्षिप्त रूप

लोट्	लिङ्	शतृ	क्त्वा	तुमुन्
भवतु	भवेत्	भवन्	भूत्वा	भवितुम्
पठतु	पठेत्	पठन्	पठित्वा	पठितुम्
गच्छतु	गच्छेत्	गच्छन्	गत्वा	प्रष्टुम्
पृच्छतु	पृच्छेत्	पृच्छन्	पृष्ट्वा	प्रष्टुम्
पिवतु	पिवेत्	पिवन्	पीत्वा	पातुम्
अनुभवतु	अनुभवेत्	अनुभवत्	अनुभूय	अनुभवितुम्
खादतु	खादेत्	खादन्	खानित्वा	खादितुम्
धावतु	धावेत्	धावन्	धावित्वा	धावितुम्
पततु	पतेत्	पतन्	पतित्वा	पतितुम्
नृत्यतु	नृत्येत्	नृत्यन्	नर्तित्वा	नर्तितुम्
हसतु	हसेत्	हसत्	हसित्वा	हसितुम्
पश्यतु	पश्येत्	पश्यन्	दृष्ट्वा	द्रष्टुम्
क्रीडतु	क्रीडेत्	क्रीडन्	क्रीडित्वा	क्रीडितुम्
गायतु	गायेत्	गायन्	गात्वा	गासुम्
उपदिशतु	उपदिशेत	उपदिशन्	उपदिश्य	उपदेष्टुम्
आदिशतु	आदिशेत	आदिशन	आदिश्य	आदेष्टुम्
प्रविशतु	प्रविशेत्	प्रविशन्	प्रविश्य	प्रवेष्टुम्
उपविशतु	उपविशेत	उपविशन्	उपविश्य	उपवेष्टुम्
वदतु	वदेत	वदन्	वदित्वा	वदितुम्
चलतु	चले	चलन्	चलित्वा	चलितुम्

धातु	अर्थ	लट्	लृट्	लङ्
स्मृ	याद करना	स्मरति	स्मरिष्यसि	अस्मत्
भज्	भजन करना	भजति	भजिष्यति	अभजत्
नम्	प्रणाम करना	नमति	नंस्यति	अनमत
वि+सद्	दुःखी होना	विषीदति	विषेत्ययि	व्यषीदत्
दह्	जलना	दहति	धक्ष्यति	अदहत्
वस्	रहना	वसति	वत्स्यति	अवसत
चुर्	चुराना	चोरयति	चोरयिष्यति	अचोरयत्
वर्ष	बरसना	वर्षति	वर्षिष्यति	अवर्षत
दा	देना	ददाति	दास्यति	अदात
घ्रा	सूँघना	जिघ्रति	घ्रास्यति	अजिघ्रत्
स्था	ठहरना	तिष्ठति	स्थास्यति	अतिष्ठत्
उत्+स्था	उठना	उत्तिष्ठति	उत्थास्यति	उदतिष्ठत
प्र+क्षाल्	धोना	प्रक्षालयति	प्रक्षालयिष्यति	प्राक्षालयत्
नश्	नाश होना	नश्यति	नशिष्यति	अनश्यत्
रक्ष	रक्षा करना	रक्षति	रक्ष्यति	अरक्षत
रच्	बनाना	रचयति	रचयिष्यति	अरचयत्
स्पृश्	छूना	स्पृशति	स्प्रक्ष्यति	अस्पृशत्
ताड्	पीटना	ताडयति	ताडयिष्यति	अताडयत्
नी	ले जाना	नयति	नेष्यति	अनयत्
आ+नी	ले आना	आनयति	आनेष्यति	आनयत्
लिख्	लिखना	लिखति	लेखिष्यति	अलिखत्

लोट	लिङ	शतृ	क्त्वा	तुमुन्
स्मरतु	स्मरेत्	स्मरन्	स्मृत्वा	स्मर्तुम्
भजतु	भजेत्	भजन्	भक्त्वा	भक्तुम्
नमतु	नमेत्	नमन्	नत्वा	नन्तुम्
विषीदतु	विषीदेत्	विषीदन्	विषीदीय	विषीदितुम्
दहतु	दहेत	दहन्	दग्ध्वा	दग्धुतुम्
वसतु	वसेत्	वसन्	उषित्वा	वसितुम्
चोरयतु	चोरयेत्	चोरयेन्	चोरयित्वा	चोरयितुम्
वर्षतु	वर्षेत्	वर्षन्	वर्षित्वा	वर्षितुम्
ददातु	दद्यात्	ददन्	दत्वा	दातुम्
जिघ्रतु	जिघ्रत	जिघ्रन	घ्रात्वा	घ्रातुम्
तिष्ठतु	विष्टेत्	तिष्ठन	स्थित्वा	स्थातुम्
उत्तिष्ठतु	उत्तिष्ठेत्	उत्तिष्ठन्	उत्थाय	उत्थातुम्
प्रक्षालयतु	प्रक्षालेयेन्	प्रक्षालयन्	प्रक्षाल्य	प्रक्षालयितुम्
नश्यतु	नश्येत	नश्यन्	नष्ट्वा	नष्टुम्
रक्षतु	रक्षेत्	रक्षन्	रक्षित्वा	रक्षितुम्
रचयतु	रचयेत्	रचयन्	रचयित्वा	रचयितुम्
स्पृशतु	स्पृशेत्	स्पृशन्	स्पृष्ट्वा	स्प्रम्ष्टुम्
ताडयतु	तडयेत्	ताडयन्	ताडयित्वा	ताडयितुम्
नयतु	नयेत्	नयन्	नीत्वा	नतुम्
आनयतु	आनयये	आनयन्	आनीय	आनेतुम्
लिखितु	लिखेत्	लिखन्	लिखित्वा	लेखितुम्

धातु	अर्थ	लट्	लृट्	लङ्
हन्	मारना	हन्ति	हनिष्यति	अहन्
निर्+गम्	निकालना	निर्गच्छति	निर्गमिष्यति	निरगच्छत्
आ+गम्	आना	आगच्छति	आगमिष्यति	आगच्छत्
अव+गम्	जानना	अवगच्छति	अवगमिष्यति	अवागच्छत्
प्रति+आ+गम्	लौटना	प्रत्यागच्छति	प्रत्यागमिष्यति	प्रत्यागच्छत्
प्र+हर्	प्रहार करना	प्रहरति	प्रहरिष्यति	प्राहरत्
वि+हर्	विहार करना	विहरति	विहरिष्यति	व्यहरत्
तृ	तैरना	तरति	तरिष्यति	अतरत्
इष्	इच्छा करना	इच्छति	एषिष्यति	ऐच्छत्
कृ	करना	करोति	करिष्यति	अकरोत्
क्री	खरीदना	क्रीणाति	क्रेष्यति	अक्रीणात्
वि+क्री	बेचना	विक्रीणाति	विक्रेष्यति	व्यक्रीणात्
त्यज्	छोड़ना	त्यजति	त्यक्ष्यति	अत्यजत्
श्रु	सुनना	श्रणोति	श्रोष्यति	अश्रृणोत्
ज्ञा	जानना	जानाति	ज्ञास्यति	अजानात्
क्रुध	क्रोध करना	क्रुध्यति	कोपिष्यति	अक्रुध्यत्
वाञ्छ	चाहना	वाञ्छति	वाञ्छिष्यति	अवाञ्छत
अस्	होना	अस्ति	भविष्यति	आसीत्

———

लोट्	लिङ्	शतृ	क्त्वा	तुमुन्
हन्तु	हन्यात्	हनन्	हत्वा	हन्तुम्
निर्गच्छतु	निर्गच्छेत्	निर्गच्छन्	निर्गत्य	निर्गन्तुस्
आगच्छतु	आगच्छेत्	आगच्छन्	आगत्य	आगन्तुम्
अवगच्छतु	अवगच्छेत्	अवगच्छन्	अवगत्य	अवगन्तुम्
प्रत्यागच्छतु	प्रत्यागच्छेत्	प्रत्यागच्छेन्	प्रत्यागत्य	प्रत्यागन्तुम्
प्रहरतु	प्रहरेत्	प्रहरन	प्रहार्य	प्रहर्तुम्
विहरतु	विहरेत्	विहरन्	विहार्य	विहर्तुम्
तरतु	तरेत्	तरन्	तीर्त्वा	तीर्तुम्
इच्छतु	इच्छेत्	इच्छन्	इष्ट्वा	इष्टुम्
करोतु	कुर्यात	कुर्वन्	कृत्वा	कर्तुम्
क्रीणातु	क्रीणीयात्	क्रीणान्	क्रीत्वा	क्रेतुम्
विक्रीणात्	विक्रीणीयात्	विक्रीणन	विक्रीय	विक्रेतुम्
त्यजतु	त्यजेत्	त्यजन	त्कत्वा	त्यक्तुम्
शृणोतु	शृणुयात्	शृण्वन्	श्रुत्वा	श्रोतुम्
जानातु	जानीयात्	जानन्	ज्ञात्वा	ज्ञातुम्
कुप्यतु	कुप्येत्	कुप्यन	कुपित्वा	कोपितुम्
वाञ्छतु	वाञ्छेत्	वाञ्छन	वाञ्छित्वा	वाञ्छितम्
अस्तु	स्यात्	भवन्	भूत्वा	भवितुम

———

उत्तर प्रदेश हाई स्कूल परीक्षा प्रश्न प्रश्न

(११)

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) सूर्यवंशी राजा भागीरथ के पूर्वज कपिल मुनि के शाप से भस्म हो गये थे। इनको तारने के लिए उन्होंने घोर तप किया और तब स्वर्ग से उतर कर गंगा जी पृथ्वी पर आयीं।

पहले पहल गंगाजी महादेव जी की जटाओं पर गिरी थीं, इसीलिए यह कहा जाता है कि गंगाजी शिव जी की जटाओं से निकली हैं।

(३) गंगाजी के विषय में हिन्दू धर्म ग्रन्थों में अनेक कथायें प्रचलित हैं। गंगाजी की उत्पत्ति की भी बड़ी मनोहर और विचित्र कथा है।

(४) यह बात निर्विवाद है कि गंगाजी का जल और नदियों के जल की अपेक्षा अधिक निर्मल एवं पवित्र है, लोगों का यह अनुभव है कि गंगाजी का जल बहुत आरोग्यवर्द्धक है। (१९४०)

सहायक शब्द—उतर कर=अवतीर्य। पहले पहल=सर्वप्रथमम्। अन्यासाम्=और

(१२)

(१) युद्ध के आरम्भ में जब अर्जुन ने देखा कि राज्य के लिए मुझे अपने सम्बन्धियों को मारना पड़ेगा, तब उनको बड़ी ग्लानि हुई। उस समय श्रीकृष्ण ने यह उपदेश देकर शत्रुओं को मारने और अपने क्षत्रिय धर्म का प्रतिपादन करने पर प्रस्तुत किया।

(२) लोग कहते हैं कि आजकल संस्कृत कहीं नहीं बोली जाती। काशी क्षेत्र में प्रतिदिन संस्कृत संभाषण की ध्वनि सुनाई देती है। समस्त भारतवर्ष में हिन्दुओं के तीर्थ स्थानों में प्रथम गणना काशीधाम की है। इसी कारण भिन्न-भिन्न प्रान्तों के असंख्य नरनारी आकर अपने जन्म को सफल करते हैं।

(३) भीष्म ने कहा—राजा की सेवा तो सब लोग करते ही हैं पर तुमने जब मेरी सेवा की, तब तुम जानती न थी कि मैं राजा हूँ। परमात्मा की

कृपा से मेरा राज्य मुझे फिर मिल गया है मेरा पहला काम यह था कि मैं तुम्हें धन्यवाद देता। अब तुम्हारा जो जी चाहे मुझसे माँग लो।

(४) भाद्रपद महीने की कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि को भगवान कृष्ण चन्द्र का जन्म हुआ था। इसी कारण हिन्दू लोग इस तिथि को अत्यन्त पवित्र दिन मानते हैं। आज के दिन लोग व्रत करते हैं और कृष्ण जन्म की कथा बाँचते हैं। आज के दिन स्थान-स्थान पर उत्सव मनाया जाता है। मन्दिरों की शोभा देखने योग्य होती है। (१९४)

सहायक शब्द—वधः अनिवार्यः भविष्यत=मारना पड़ेगा। प्रार्थय=माँग लो। मन्यते=मानते हैं। पठन्ति=बाँचते हैं। दर्शनीया=देखने योग्य। हन्तुम्=मारने। कुर्वन्त्येव=कहते ही हैं। याचस्व=माँग लो।

(१)

(१) एक दिन जीमूत वाहन समुद्र के किनारे के वनों को देखने गया। वहाँ उसे शंखचूड़ नामक नाग मिला, जिसकी माता "हा पुत्र" "हा पुत्र" इस प्रकार क्रन्दन कर रही थी।

(२) कारण यह था कि सर्पों के राजा ने गरुड़ से यह निश्चय किया था कि वह प्रत्येक सर्प को न मारे। उसके भोजन के लिए प्रत्येक दिन एक साँप गरुड़ के पास जाया करेगा।

(३) उस दिन गरुड़ के पास जाने की बारी शंखचूड़ की ही थी। इसलिए उसकी माता पुत्र का अन्त निकट जानकर पुत्र शोक से व्याकुल होकर आर्त्त स्वर से विलाप कर रही थी।

(४) जीमूत वाहन ने शंखचूड़ से कहा कि "यदि ऐसा है तो दुःख मत करो, क्योंकि आज मैं तुम्हारी जगह गरुड़ के पास जाऊंगा और अपने जीवन को अर्पण करके तुम्हारी रक्षा करूंगा।" (१९४२)

सहायक शब्द—न मारयतु=न मारे। गमिष्यसि=जाया करेगा। समयः=बार। ज्ञात्वा=जानकर। व्यलपत्=विलाप करने लगी।

(१४)

(१) लड़कों को चाहिए कि अपने बड़ों का सदा आदर करें माता-पिता को साक्षात् देवता समझें। उनकी आज्ञाओं का सदा पालन करें। (२) लड़कों

को अच्छी संगति करनी चाहिए। जीवन में संगति का बड़ा प्रभाव पड़ता है, उसी तरह अच्छी पुस्तकों के पढ़ने से चरित्र सुधरता है।

(३) व्यायाम से मनुष्य स्वस्थ रहता है। प्रत्येक मनुष्य को अपनी शक्ति के अनुसार व्यायाम करना चाहिए। प्रातः और सन्ध्या व्यायाम के लिए उपयुक्त समय है।

(४) व्यायाम से शरीर में लाघव होता है। और काम करने की शक्ति बढ़ती है। जो लड़के व्यायाम नहीं करते और सदा पढ़ा ही करते हैं वे निर्बल होते हैं और उनमें कार्य करने की कम शक्ति होती है।

सहायक शब्द—श्रेष्ठं भवति=सुधरता है। यथाशक्ति=शक्ति के अनुसार। वर्धते=बढ़ती है। न्यूना, अल्पा=कम। (१९४३)

(१५)

(१) बंग देश में एक विख्यात राजा था जो अपनी प्रजा को पुत्रवत् पालता था। एक समथ उसके राज्य में अत्यन्त दुर्भिक्ष हुआ, जिससे सारी प्रजा अत्यन्त पीड़ित हुई।

(२) जो धर्मात्मा है शरणागत का त्याग नहीं करते, विपत्ति में भी धर्म में दृढ़ रहते हैं। इसी कारण उनका यश बढ़ता है। बड़ों के निरादर से मनुष्य नीच दशा को प्राप्त होता है।

(३) सूर्य की किरणों से व्याकुल होकर दो कुत्ते एक वृक्ष की छाया में बैठ गये और वार्तालाप करने लगे। एक ने कहा—"भाई! संसार में मूर्ख लोग व्यर्थ ही लड़ते हैं और दुखित होते हैं।" दूसरे ने उत्तर दिया, "मित्र! तुम सत्य कहते हो। कलह करना अनुचित है।"

(४) अपने कर्त्तव्य को प्रसन्नता से करो। उसके करने में उदास या निराश मत हो, अपने कर्तव्य को मनोरञ्जक बनाओ। इस तरह वह कार्य सुख से सिद्ध होगा। (१९४४)

सहायक शब्द—वार्तालापं कर्तुमारभत=वार्तालाप करने लगे। कलहं कुर्वन्ति=लड़ते हैं। उदासीनः=उदास।

(१६)

(१) वह योग्य बालक है जो सदा स्कूल में उपस्थित रहता है। (२) महाराज दशरथ ने विवश होकर राम को वन में भेज दिया। (३) ठीक है, बलवान और निर्बल की लड़ाई में निर्बल की हानि होती है। (४) एक-समय दो मित्रों ने साथ-साथ यात्रा की और प्रतिज्ञा की कि विपत्ति में एक दूसरे की सहायता करेंगे। (उ० प्र० १९४४)

सहायक शब्द—प्रेषयत्=भेज दिया। सत्यम् अस्ति=ठीक है।

(१७)

(१) नारद ने युधिष्ठर से कहा कि सत्य श्रेष्ठ धर्म है। (२) लड़का सो गया है, उसको जगाना ठीक नहीं है। (३) अनाथों के रक्षक दीनानाथ के सिवाय और कौन है। (४) महाराज चन्द्रगुप्त पाटिलपुत्र में निवास करते थे। (१९४६)

सहायक शब्द—सुप्तः=सो गया है। प्रबोधयितुम्=जगाना। अन्यः=सिवाय।

(१८)

(१) सच्चा मित्र वही है जो अपने मित्र के दुःख से दुःखी होता है। (२) जो संयमी होते हैं वे ही संसार में उन्नति करते हैं। (३) राम ने पिता की आज्ञा से जंगल में जाना अपना कर्तव्य समझा। (४) भारतवर्ष एक बार फिर संसार को शांति का मार्ग बतलायेगा। (१९४७)

सहायक शब्द—सन्मित्रम्=सच्चा मित्र। अमन्यत=समझा। सकृत्=एक बार। बोधयिष्यति=बतलावेगा।

(१९)

(१) मैं चाहता हूँ कि सभी लोग सुखी रहें। (२) बालकों को अपना काम ध्यान से करना चाहिए। (२) गंगा स्नान करने से सभी प्रसन्न रहते हैं। (४) गंगा हिमालय से निकल कर समुद्र को जाती है। (१९४८)

सहायक शब्द—तिष्ठन्तु=रहें। निगत्यं=निकल कर।

(२०)

(१) प्रत्येक मनुष्य को अपना काम ठीक समय पर करना चाहिए। (२) प्रातःकाल उठने से स्वास्थ्य को लाभ होता है। (३) मैंने ज्वर के कारण कल भोजन नहीं किया था। (४) हम आज तीसरे पहर वैद्य के पास जावेंगे। (१९४९)

सहायक शब्द—उचित समये=ठीक समय पर। उत्थानेन=उठने से। ह्यः=कल। अपान्ह=तीसरे पहर।

(२१)

(१) अध्यापक ने लड़कों से कई प्रश्न पूछे, लेकिन वे उत्तर न दे सके। (२) देखो-देखो बच्चा क्यों रो रहा है? (३) गाय तिनके खाती है और हमको ताकत देने वाला दूध देती है। जब हाथी तालाब में घुसा, नाके ने उसकी टाँग पकड़ली। (१९५०)

सहायक शब्द—अनेकान् प्रश्नान्=अनेक प्रश्न। उत्तरं दातुं न अशक्नुवन्=उत्तर न दे सके। शक्तिदायक=ताकत देने वाला। नक्रः=नाका।

(२२)

(१) मैं नहीं जानता कि मेरे मरने के बाद क्या होगा। (२) सिपाही जो बहादुरी के साथ लड़ेंगे, अपने दुश्मनों को जीत लेंगे। (३) विद्यार्थी पाठशाला को गये, और अध्यापक को नमस्कार किया। (४) माँ बाप यह चाहते हैं कि उनके बच्चे बहुत दिनों तक जीवें। (१९५१)

सहायक शब्द—मरणान्तरम्=मरने के बाद। चिरम्=बहुत दिनों तक। वीर तया=बहादुरी के साथ। योत्स्यन्ति=लड़ेंगे।

(२३)

(१) लड़को को चाहिए कि वे अपने माता, पिता तथा बड़ों को रोज सवेरे प्रणाम करें: (२) पिता की आज्ञा से राम 'सीता' लक्ष्मण सहित वन को चले गये। (३) वर्षा के मौसम में बादलों की आवाज सुनकर मोर नाचते हैं। (४) राजा दशरथ ने अपने प्यारे पुत्र राम और लक्ष्मण को ऋषि विश्वामित्र की यज्ञ की रक्षा करने के लिए भेजा। (५) लगातार परिश्रम द्वारा ही बिद्यार्थी परीक्षा में सफल हो सकेंगे। (१९५२)

सहायक शब्द—ऋतौ=मौसम में। निरन्तरम्=लगातार। बालकानांकर्तव्यमस्ति=लड़कों को चाहिए।

(२४)

(१) कल मैंने एक मोर जंगल में नाचते देखा। (२) अन्धेरे में अकेला बच्चा भय मानता है। (३) परमात्मा अन्यायियों को उचित सजा दें। (४) जब तक जिओ, सत्य के रास्ते को न छोड़ो। (५) स्वतन्त्र देश के रहने वालों को न्याय करना चाहिए। (१९५३)

सहायक शब्द—नृत्यन्तम्=नाचते हुए। एकाकी=अकेला। दण्डयतु=सजा दें। जीवेः=जीओ।

(२५)

(१) सच बोलने वालों की सदा जीत होती है और झूठ बोलने वालों की हार होती है। (२) रामचन्द्र लक्ष्मण और सीता के साथ वन गये। (३) कालिदास संस्कृत के कवियों में श्रेष्ठ हैं। (४) विजय के बड़े भाई का नाम प्रकाश है। (५) व्यायाम से शरीर के अंग प्रत्यंग मजबूत होते हैं। (१९५४)

सहायक शब्द—सत्यवादिनाम्=सच बोलने वालों की। मजबूत=पुष्टानि।

(२६)

(१) अयोध्या नगरी में दशरथ नाम के राजा रहते थे। (२) इनके कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा तीन रानियाँ थीं। (३) उनके बड़े लड़के का नाम राम, दूसरे का भरत, तीसरे का लक्ष्मण और चौथे का शत्रुघ्न था। (४) चारों पुत्र बहुत गुणी थे। (५) उनमें भी राम सबसे अच्छे थे। (१९५५)

सहायक शब्द—महिष्यः राज्ञ्यः=रानियाँ। द्वितीयस्य=दूसरे का। श्रेष्ठः=अच्छा। चतुर्थस्य=चौथे का।

(२७)

(१) विद्या धन सब धनों में श्रेष्ठ धन है। (२) इसे कोई चोर चुरा नहीं सकता है। (३) कोई दूसरा इसे छीन भी नहीं सकता। (४) भाई-बन्धु

भी इसे बाँट नहीं सकते। (५) यह धन दान या भोग से क्षीण नहीं होता, किन्तु और बढ़ता है। (६) विदेश में विद्या बन्धु के समान सहायता करती है। (७) जिसके पास धन होता है वह सुख और गौरव प्राप्त करता है। (८) विद्वान् सब जगह पूजा जाता है। (९) राजा अपने राज्य में ही आदर पाता है। (१०) विद्वान् की कीर्ति अमर होती है। (१९५६)

सहायक शब्द—चुरा नहीं सकता=चोरयतुं न शक्नोति। छीन नहीं सकता=अपहर्तुं न शक्नोति। बाँट नहीं सकते=विभक्तुं न शक्यते। और बढ़ता है=अधिकं वर्धते। पूजा जाता है=पूज्यते।

(२८)

(१) विद्या की शोभा धर्म से होती है। (२) विद्वान् होकर भी जो आचारवान् नहीं होता, उसकी विद्या व्यर्थ है। (३) उस विद्या का मूल्य नहीं होता, जो आचरण में नहीं आती। (४) केवल विद्या से तो मनुष्य का ज्ञान ही बढ़ता है। (५) हृदय की महत्ता तो उसके आचरण से ही होती है। (६) इसीलिए हम लोग महात्मा की पूजा करते हैं। (७) चित्त की महत्ता से ही मनुष्य महात्मा होता है। (८) आचरण के बिना ज्ञान भी व्यर्थ होता है। (९) आचरणहीन को तो वेद भी पवित्र नहीं करते। (१०) इसीलिए जीवन में आचरण का महत्व है। (१९५७)

सहायक शब्द—होकर भी=भूत्वा अपि। व्यर्थ=विफला।

(२९)

(१) आज के छात्र कठिन परिश्रम नहीं करना चाहते हैं। (२) इससे केवल छात्रों की नहीं, सम्पूर्ण देश की हानि है। (३) यह सरोवर जल से पूर्ण है। (४) इसी के जल से हम अपने खेत भी सींचते हैं। (५) राजा को पिता की तरह प्रजा का पालन करना चाहिए। (६) तपस्वियों का काम क्षमा से ही सिद्ध होता है। (७) क्रोध से चिरकाल संचित तप का तत्क्षण नाश हो जाता है (८) अतः क्रोध ही हमारा प्रधान बैरी है। (९) सुख चाहने वाले विद्या छोड़ देती है। (१०) सत्य से ही धर्म की रक्षा होती है।

सहायक शब्द—आधुनिकाः=आज के । सुखार्थिनम्=सुख चाहने वाले को ।

(३०)

(क) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत मे अनुवाद कीजिए—

१—संसार के सभी पहाड़ों में हिमालय सबसे बड़ा है ।

अथवा

हमारे देश में जितनी नदियाँ हैं, उनमें गंगा सबसे प्रसिद्ध और पवित्र मानी जाती है ।

२—गुरु की आज्ञा का पालन, परस्पर सद्भाव और सचाई ये तीन अच्छे विद्यार्थी के गुण हैं ।

अथवा

मेरे छोटे और बड़े भाई, दोनों ही मुझसे बहुत स्नेह करते हैं।

३—स्वतन्त्रता दिवस के दिन राष्ट्रध्वज के चारों ओर लोग खड़े होते हैं और राष्ट्रगान गाते हैं ।

अथवा

वह मुझसे पाठ्योपयोगी पुस्तक माँगता है किन्तु मैं उसे देना नहीं चाहता।

४—आजकल बरसात है, आकाश में बादल उठ रहे हैं और बिजलियाँ चमक रही हैं ।

५—आज रविवार है, आज से पाँच-छः दिनों में, मैं वाराणसी जाऊंगा ।

६—मेरे विद्यालय के पास एक फुलवाड़ी है, जिनमें फूल तोड़ने के लिए मैं प्रतिदिन प्रातःकाल जाया करता हूं ।

७—मेरा एक सहपाठी है, जो गणित में बड़ा तेज है और मैं उसी से गणित पढ़ता हूँ ।

८—जब मैं आम के पेड़ के नीचे बैठा था, तब एक पका आम मेरे सामने गिर पड़ा ।

९—परिश्रम के बिना विद्या नहीं मिल सकती और विद्या के बिना सुख नहीं मिल सकता ।

१०—मेरे सहपाठी ने मुझसे कहा—बिना प्रश्न के समझे उत्तर न देना ।

अथवा

जब विद्यालय के प्रधानाचार्य विद्यालय में आये, तब सभी विद्यार्थी चुप हो गये ।

(ख) निम्नलिखित किन्हीं पाँच पदों का, स्वरचित संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

तारस्वरेण, अधिगच्छति, प्रणम्य, एकदा, क्षुधा, प्रतिभाति, आतिथ्यम्, प्रारभ्यते। (१९६३)

सहायक शब्द—यावत्यः=जितनी। परितः=चारों ओर। वाटिका=फुलवाड़ी। उत्तम छात्रस्य=अच्छे विद्यार्थी। पक्वः=पका।

(३१)

(क) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत अनुवाद कीजिए—

१—मोहन सोहन के साथ विद्यालय जाता है।

२—विद्यालय में जाकर वह गुरुओं को प्रणाम करता है।

३—जो छात्र परिश्रम से विद्या पढ़ेंगे वे उत्तीर्ण होंगे।

४—छात्रों को नित्य प्रातःकाल उठना चाहिए।

५—विद्या से मस्तिष्क और व्यायाम से शरीर पुष्ट होता है।

६—हम सब आज उद्यान में घूमने गये थे।

७—हमेशा ईश्वर का भजन करो और सत्य बोलो।

८—वीर बालक सिंह से भी भयभीत नहीं होते।

९—राम के राज्य में प्रजा सुखी थी।

१०—जिस राजा के राज्य में प्रजा दुःखी होती है वह नरक को जाता है।

(ख) निम्नलिखित किन्हीं पाँच पदों का स्वरचित संस्कृत वाक्यों मे प्रयोग कीजिए—

गत्वा, कदा, आदर्श, सर्वत्र, बहुशः कस्मिंश्चित्, भोक्तव्यम्, रोचते, सह, कृतवान्। (१९६४)

सहायक शब्द—भ्रमितुम्=घूमने के लिए। प्रणमति=प्रणाम करता है।

(३२)

(क) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) अयोध्या एक सुन्दर नगरी थी। (२) अयोध्या में दशरथ नाम के राजा राज्य करते थे। (३) दशरथ के चार पुत्र थे। (४) राम सब पुत्रों में ज्येष्ठ थे। (५) गुरु ने कहा—"तुम सब अयोध्या जाओ।" (६) वह

श्री रामचन्द्र की जन्मभूमि है। (७) तीर्थ स्थानों के दर्शन से पुण्य होता है। (८) राम के बिना अब अयोध्या सूनी है। (९) अयोध्या की कीर्ति विश्व में सदा रहेगी। (१०) हम सब गुरु के साथ वहाँ जावेंगे।

(ख) निम्नलिखित पदों में से किन्ही पाँच पदों का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

तत्र, तदा, प्रातःकाले, सह, अपठत्, यः, जानाति, दीपयन्ति, पूज्यते, सर्वस्य।

सहायक शब्द—चत्वारः=चार। शून्या=सूनी। विश्वस्मिन्=विश्व में।

(३३)

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अच्छे विद्यार्थी नित्य अपना पाठ याद करते हैं।

(ख) सत्य की विजय होती है।

(ग) मनुष्य को सदा सच बोलना चाहिए।

(घ) जो सच बोलेगा, वह सुखी होगा।

(ङ) राजा हरिश्चन्द्र सदा सच बोलते थे।

(च) मरने पर धर्म ही मनुष्य के साथ जाता है।

(छ) सत्पुरुष को सब मनुष्य नमस्कार करते हैं।

(ज) धर्म से हीन मनुष्य पशु के तुल्य होता है।

(झ) धर्म से धन और धन से सुख होता है।

(ञ) भारतवर्ष में प्राचीन काल में धर्मात्मा पुरुष रहते थे।

निम्नलिखित पदों में से किन्हीं पाँच पदों का स्वरचित संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

कृत्वा, रोचते, गमिष्यन्ति, गंगा तीरे, तत्र, सायंकाले, जानाति, पूज्यते, शनैः शनैः, मनोहरः। (१९६६)

(३४)

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) सब बालकों को प्रातः शीघ्र उठना चाहिए।

(ख) प्रभात वेला में सूर्य का दर्शन होता है।

(ग) सूर्य हमें प्रकाश देता है।

(घ) वही अन्न और फलों को पकाता है।
(ङ) उसकी किरणें रोगों को हरती हैं।
(च) सूर्य के ही ताप से बादल बनते हैं।
(छ) क्या तुमने बादलों का गर्जन सुना है ?
(ज) अब आकाश से पानी बरसेगा।
(झ) वृष्टि से भूमि सस्यश्यामला हो जायगी।
(ञ) तुम मेघ की स्तुति करो।

निम्नलिखित पदों में से किन्हीं पाँच का स्वरचित संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

१—कुत्र २—सर्वे ३—इतस्ततः ४—परस्परम् ५—त्यक्तुम् ६—जायते। ७—तिस्रः ८—हनिष्यामि ९—कुर्वन्। (१९६७)

अनुवाद

(क) सर्वे बालकाः प्रातःकाले शीघ्रम् उत्तिष्ठेयुः।
(ख) प्रभात वेलायां सूर्यस्य दर्शनं भवति।
(ग) सूर्यः अस्मभ्यं प्रकाशं ददाति।
(घ) स एव अन्नानि फलानि च पक्वानि करोति।
(ङ) तस्य किरणानि रोगान् अपहरन्ति।
(च) सूर्यस्यैव तापेन मेघाः भवन्ति।
(छ) किं त्वं मेघानां गर्जनम् अशृणोः ?
(ज) इदानीम् आकाशात् जलं पतिष्यति।
(झ) वृष्ट्या भूमिः सस्यश्यामला भविष्यति।
(ञ) त्वंमेघस्य स्तुतिं कुरु।

वाक्य प्रयोग—

१–त्वं कुत्र गच्छसि। २–सर्वे छात्राः गच्छन्ति। ३–बालकाः इतस्ततः धावन्ति। ४–छात्राः परस्परं कलहं कुर्वन्ति। ५–त्वं कथं मां त्क्तुम् इच्छसि। ६–कमलं जलात् जायते। ७–तिस्रः स्त्रियः समागच्छन्ति। ८–अहं हनिष्यामि ९–कोलाहलं कुर्वन् छात्रः गच्छति। (१९६७)

———

Janardan

★ निबन्ध-प्रकरण ★

५

१—इन्दिरा गांधी

१. अस्माकम् देशे नार्यः अपि राजकार्येषु पुरुषाणामिव चातुर्यं प्रदर्शयन्ति ।
२. पुराऽपि अनेकाः महिलाः राज्ञीपदं अलंकुर्वन् ।
३. अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई आदयः इतिहास प्रसिद्धाः नार्यः सन्ति ।
४. इदानीम् तु इन्दिरागांधी अस्माकं देशस्य प्रधान मन्त्री नस्ति ।
५. सा अस्माक प्रिय राष्ट्रनायकस्य नेहरूमहोदयस्य दुहिता अस्ति ।
६. स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री महोदस्य पश्चात् सा प्रधानमन्त्री अभवत् ।
७. राजकार्येषु तस्या रुचिः बाल्यकालादेव आसीत् ।
८. इन्दिरा प्रियदर्शिनी स्व पितुः एव राजनीति-दीक्षां अलभत् ।
९. अधुना सा अतिनिपुणतया शासन सञ्चालनं करोति ।
१०. सामान्यजनाः ताम् प्रगतिशील राष्ट्रनायिका रूपे पश्यन्ति ।
११. चतुर्दश अधिकोष संस्थानाम् (बैंक) राष्ट्रीयकरणं सा एव कृतवान ।
१२. कांग्रेसस्य आन्तरिक संघर्षेऽपि सा स्व-दृढतां अदर्शयत् ।
१३. सा राष्ट्रं तीव्रगत्या अग्रसर कर्त्तुमिच्छति ।
१४. सा सामान्य जनस्य स्नेह पात्री आदर पात्री च अस्ति ।
१५. वयं तस्याः नेतृत्वे देशस्य उन्नत्याः कामनां कुर्मः ।

हिन्दी अनुवाद

१. हमारे देश में नारियाँ भी राज्यकार्य में पुरुषों की भाँति चतुरता दिखलाती हैं ।
२. प्राचीनकाल में भी अनेक महिलाओं ने रानीपद को अलंकृत किया था ।
३. अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई इत्यादि इतिहास प्रसिद्ध नारियाँ हैं ।
४. इस समय इन्दिरागाँधी हमारे देश की प्रधानमन्त्री है ।
५. वह हमारे राष्ट्रनायक नेहरू की लड़की है ।
६. स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री के बाद वह प्रधानमंन्त्री हुई थीं ।
७. राज्यकार्यों में इनकी रुचि बचपन से ही थी ।
८. प्रियदर्शिनी इन्दिरा ने अपने पिता से राजनीति की दीक्षा ली थी ।

९. इस समय वह अत्यन्त निपुणता से शासन संचालन कर रही है।
१०. सामान्य जन उसे प्रगतिशील राष्ट्रनायिका के रूप में देखते हैं।
११. चौदह बैंकों का राष्ट्रीयकरण इसने किया।
१२. काँग्रेस के आन्तरिक संघर्ष के समय भी इसने अपनी दृढ़ता को दिखलाया।
१३. वह राष्ट्र को तीव्र गति से आगे बढ़ाना चाहती हैं।
१४. वह सामान्य जन की स्नेहपात्री और आदरपात्री हैं।
१५. हम उनके नेतृत्व में देश की उन्नति की कामना करते हैं।

२—जवाहरलाल नेहरू

१. भारत मातुः अंकस्य "लालं" तस्याः मुकुटस्य च 'जवाहरं क. भारतीय. न जानाति।
२. तस्य नाम अखिल भूमण्डले अद्वितीय प्रभया चकास्ति।
३. मोतीलाल नेहरू महोदस्य एकमात्र पुत्रस्य श्री जवाहरलालस्य आरम्भिक जीवनं सर्वसुख सम्पन्नं आसीत्।
४. राजपुत्रवत् तस्य लालनं अभवत्।
५. गान्धी महोदस्य प्रभावेण राष्ट्रीय आन्दोलने आगच्छत्।
६. आनन्दभवनस्य स्वर्गिक-सुखानि त्यक्त्वा सः कारागारस्य कष्टानि असहत्।
७. स्व त्यागतपस्या च सः भारतस्य प्रथम प्रधानमन्त्री अभवत्।
८. जवाहरलालः प्रधान मन्त्री पदे स्थित्वा भारत राष्ट्रस्य अविस्मरणीय सेवां अकरोत्।
९. प्रजातंत्रे तस्य दृढ़ विश्वासः आसीत्।
१०. सः भारते प्रजातंत्र-भावनायाः आधार भित्तिं सुदृढ़ं अकरोत्।
११. तस्य शासनकाले भारतः बहुमुखी उन्नति अकरोत्।
१२. सः विश्वं सहअस्तित्वस्य सौहार्द्रस्य च नूतनांदिशां अदर्शयत्।
१३. तटस्थतायाः राजनीति अविष्कृत्य भारतस्य गौरव अवर्धयत्।
१४. तस्य व्यक्तित्वस्य महानतां सर्वेमहापुरुषाः आदृतवन्तः।
१५. न केवलं भारतवर्षस्य अपितु विश्वस्य इतिहासे तस्य नाम अमरं अस्ति।

हिन्दी अनुवाद

१. भारतमाता की गोदी के लाल, उसके मुकुट 'जवाहर' को कौन सा भारतीय नहीं जानता ।

२. उनका नाम समस्त भूमण्डल में अद्वितीय प्रभा से चमक रहा है ।

३. मोतीलाल नेहरू के एकमात्र पुत्र श्री जवाहरलाल का प्रारंभिक जीवन सब सुखों से पूर्ण था ।

४. राजपुत्र के समान इनका लालन हुआ था ।

५. गाँधी जी के प्रभाव से वह राष्ट्रीय आन्दोलन में आये ।

६. आनन्दभवन के स्वर्गिक सुखों को त्यागकर उसने कारागार के कष्टों को सहा ।

७. अपनी त्याग तपस्या से वह भारत का प्रथम प्रधानमन्त्री हुए ।

८. जवाहरलाल ने प्रधानमन्त्री पद पर रहकर राष्ट्र की अविस्मरणीय सेवा की ।

९. प्रजातन्त्र में उसका दृढ़ विश्वास था ।

१०. उसने भारत की प्रजातन्त्र भावना की आधारशिला को दृढ़ किया ।

११. उनके शासनकाल में भारत ने बहुमुखी उन्नति की ।

१२. उन्होंने विश्व को सह-अस्तित्व एवं सौहार्द की नूतन दिशा दिखलाई ।

१३. तटस्थता की राजनीति को आविष्कृत कर भारत के गौरव को बढ़ाया ।

१४. उसके व्यक्तित्व की महानता का आदर सभी महापुरुष करते थे ।

१५. केवल भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विश्व के इतिहास में उसका नाम अमर है ।

३—लालबहादुर शास्त्री

१. जवाहरलालस्य स्वर्गवासो परान्ते सर्वे देशवासिनः चिन्तिताःआसन ।

२. विदेशियाः तु भारतगणराज्यस्य विच्छिन्नत्वं अकल्पयन् ।

३. अस्मिन्नेव अवसरे भारतस्य राजनीति आकाशे एकस्य अद्वितीस्य नक्षत्रस्य उदयो अभवत् ।

४. सः साधारण स्तरस्य पुरुषः असाधारण-प्रतिभया विश्वं चमत्कृतवान् ।

५. लालबहादुरस्य जन्म साधारण परिवारे अभवत् ।
६. स्व दृढ़तया सः शनैः शनैः महत्व पूर्ण स्थानं प्राधावान ।
७. राष्ट्रीय आन्दोलने सः घोरकष्टानि असहत ।
८. स्वतंत्रे भारते स उत्तरप्रदेशस्य गृहमंत्री पदं अलंकरोतिस्म ।
९. तत्पश्चात् सः केन्द्रीय मंत्रिमण्डले परिवहन मंत्री अभवत ।
१०. यदा १९६४ तमेवर्षे जवाहरस्य ज्योतिः अस्त गता तदा प्रधान मंत्री पदस्य गुरूतरं भारं लाल बहादुर एव ग्रहीतवान् ।
११. आरम्भे तु सर्वे जनाः तस्य असफलता प्रति विश्वस्ताः आसन् ।
१२, किन्तु कायेन वामनः हृदयेन च हिमालयः अयं महापुरूषः अद्भुतं साफयलं अदर्शयत ।
१३. पाकिस्तानेन सह युद्धे तस्य नीति कौशल्यं शौर्यं च स्पष्टौ अभवताम् ।
१४. युद्धान्ते सः रूस देशे ताशकन्द-वार्त्तायां सम्मिलितो अभवत् ।
१५. किन्तु हृदयगति निरोधात तस्य देहावसानं अभवत् ।
१६; तस्य लघुत्तमं राजनीतिक जीवन मपि स्व महत्वेन महत्तमं अस्ति ।

हिन्दी अनुवाद

१. जवाहर लाल जी के स्वर्गवास के उपरान्त सभी देशवासी चिन्तित थे ।
२. विदेशियों ने भारतगणराज्य के छिन्न भिन्न होने की कल्पना की ।
३. इसी अवसर पर भारत के राजनीतिक आकाश में एक अद्वितीय नक्षत्र का उदय हुआ ।
४. उस साधारण स्तर के पुरुष ने असाधारण प्रतिभा से विश्व को चमत्कृत कर दिया ।
५. लालबहादुर का जन्म साधारण परिवार में हुआ था ।
६. उन्होंने अपनी दृढ़ता से धीरे धीरे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया ।
७. राष्ट्रीय आन्दोलन में उन्होंने घोर कष्ट सहे ।
८. स्वतंत्र भारत में उन्होंने उत्तरप्रदेश के गृहमंत्री पद को अलंकृत किया था ।
९. इसके बाद वह केन्द्र में परिवहन मंत्री हो गए ।
१०. जब सन् १९६४ में जवाहर की ज्योति अस्त होगई तब प्रधानमंत्री पद के गुरूतर भार को लाल बहादुर शास्त्री जी ने ग्रहण किया ।

११. आरभं में सभी लोग उसकी असफलता के वारे में विश्वस्त थे ।
१२. किन्तु काया से वामन (बोना) और हृदय से हिमालय इस महापुरूष ने अद्भुत सफलता दिखलाई ।
१३. पाकिस्तान के साथ युद्ध में उनकी नीति कुशलता एवं शौर्य स्पष्ट होगया ।
१४. युद्ध के बाद वह रूस देश में ताशकंद वार्ता में सम्मिलित हुए ।
१५. किन्तु हृदय गति रूक जाने से उनका देहावसान होगया ।
१६ उनका छोटा सा राजनीतिक जीवन भी अपने महत्व से महान था ।

४—मम अध्यापकः

१. छात्र जीवनं मानव जीवनस्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण समयंअस्ति ।
२. अस्मिन्नेव काले सः स्वस्य भविष्यस्य निर्माणं करोति ।
३. छात्रस्यव्यक्तित्व निर्माणे अध्यापकस्य महदयोगां वर्त्तते ।
४. अतः छात्रः अध्यापकस्य ययोचितं आदर कुर्याति ।
५. अहं तु स्व संस्कृत अध्यापक श्री शिव शर्मा महोदयं विस्मरितुं न शक्नोमि ।
६. तस्य सरल हृदयः, अप्रतिम विद्वत्ता, उदार व्यवहारं च सर्वथा अभिनन्दनीयः ।
७. सः छात्रषु पुत्रवत् आचरति ।
८. स्व अध्यापन-विषये तस्य अपूर्वं पाण्डित्यं दर्शनीयः ।
९. सः सूक्तीनाम् अन्तर्कधानाम् च भाण्डागारः अस्ति ।
१०. सः यदा कक्षायां पाठयति, सर्वे छात्राः मंत्रमुग्धाः भूत्वा तिष्ठन्ति ।
११. सः अनुशासन प्रियः अपि अस्ति ।
१२. निर्धनानां किन्तु अध्ययन शीलनां छात्राणाम् सः यथाशक्य सहायतां करोति ।
१३. अध्यापकाः अपि तस्य सद्व्यवहारस्य प्रशंसों कुर्वन्ति ।
१४. सः काव्य रचनायां अपि प्रवीणः अस्ति ।
१५. अहं तमेव स्वजीवनस्य आदर्शरूपे पश्यामि ।

हिन्दी अनुवाद

१. छात्रजीवन मानव जीवन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण समय है।
२. इसी समय में वह अपने भविष्य का निर्माण करता है।
३. छात्र के व्यक्तित्व के निर्माण में अध्यापक का महान योग होता है।
४. अतः छात्र को अध्यापक का यथोचित आदर करना चाहिए।
५. मैं तो अपने संस्कृत अध्यापक श्री शिव शर्मा महोदय को नहीं भूल सकता।
६. उनका सरल हृदय, अप्रतिम विद्वत्ता, उदार व्यवहार सर्वथा अभिनन्दनीय है।
७. वह छात्रों से पुत्र के समान आचरण करते हैं।
८. उनका अध्यापन विषय में अपूर्व पाण्डित्य दर्शनीय है।
९. वह सूक्तियों के अन्तर्ककथाओं के भण्डार हैं।
१०. जब वह कक्षा में पढ़ाते हैं, सभी छात्र मंत्रमुग्ध होकर बैठे रहते हैं।
११. वह अनुशासन प्रिय भी हैं।
१२. निर्धन किन्तु अध्ययनशील छात्रों की वह यथा सम्भव सहायता करते हैं।
१३. अध्यापक भी उसके सद्व्यवहार की प्रशंसा करते हैं।
१४. वह काव्य रचना में भी प्रवीण हैं।
१५. मैं उन्हीं को अपने जीवन का आदर्शरूप देखता हूं।

५—विद्यालयस्य वार्षिकोत्सव

१. अस्माकं विद्यालस्य वार्षिकोत्सवः बसन्त पंचमी दिने भवति।
२. अस्मिन्नेव दिने विद्यालयस्य आधारशिला प्रस्थापिता अभवत्।
३. इदमस्माकं विद्यालस्य प्रथम प्रधानाचार्यस्य श्रीरामचन्द्र भार्गवस्य जन्मदिनं अपि अस्ति।
४. इदानीं तु अस्माकं विद्यालयस्य अनेकाः शाखाः प्रशाखाः वर्त्तन्ते।
५. किन्तु इदं माध्यमिक विद्यालयं एव सर्वेषा मातृसंस्था।
६. अतएव वार्षिकोत्सवे सर्वाः संस्थाः भागं गृहणन्ति।
७. वार्षिकोत्सवस्य अभ्यास-कार्याणि अनेक दिन पूर्वमेव आम्भन्ति।

८. सभाकक्षस्य अभावे मण्डपस्य निर्माणं क्रियते ।
९. मण्डपे अतिथीनां, महिलारां, छात्राणां च स्थानानि नियताः भवन्ति ।
१०. मुख्य उत्सवात् प्रथमे दिने वृहत् अभ्यासो भवति ।
११. तस्मिन् याः त्रुटयः लक्षिताः भवन्ति तेषां परिमार्जनं क्रियते ।
१२. उत्सवस्य दिने विद्यालये अपूर्व एव दृश्यं भवति ।
१३. एन. सी. सी. छात्राः अतिथीनाम् अभिवादनं कुर्वन्ति ।
१४. मुख्य अतिथि महोदस्य स्वागतस्य माल्यार्पणस्य च पश्चात् कार्यक्रमं आरम्भं भवति ।
१५. नृत्यं, संगीतं, नाटकं तथा एकाभिनयं आदि अनेकानि मनोहराणि कार्यक्रमाणि प्रस्तुतानि भवन्ति ।
१६. वस्तुतः वार्षिकोत्सवः विद्यालय-कार्यस्य महत्वपूर्णं अङ्गमस्ति ।

हिन्दी अनुवाद

१. हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव वसंत पंचमी के दिन होता है ।
२. इसी दिन विद्यालय की आधारशिला रखी गई थी ।
३. यह हमारे विद्यालय के प्रथम प्रधानाचार्य श्री रामचन्द्र भार्गव का जन्म दिन भी है ।
४. इस समय तो हमारे विद्यालय की अनेक शाखा प्रशाखा है ।
५. किन्तु यह माध्यमिक विद्यालय ही सबकी मातृ संस्था है ।
६. इसलिए वार्षिकोत्सव पर सभी संस्थाएँ इसमें भाग लेती हैं ।
७. वार्षिकोत्सव के अभ्यास कार्य अनेक दिन पूर्व आरम्भ हो जाते हैं ।
८. हाल के अभाव में मंडप का निर्माण होता है ।
९. मंडप में अतिथियों, महिलाओं और छात्रों के स्थान नियत होते है ।
१०. मुख्य उत्सव से एक दिन पूर्व ग्रान्ड रिहर्सल होता है ।
उसमें जो कमियाँ होती हैं उनको ठीक किया जाता है ।
१२. उत्सव के दिन विद्यालय का अपूर्व ही दृश्य होता है ।
१३. एन. सी. सी. के छात्र मुख्य अतिथि का अभिवादन करते हैं ।
१४. मुख्य अतिथि के स्वागत के एवं माल्यार्पण के बाद कार्यक्रम आरम्भ

१५. नृत्य, संगीत, नाटक तथा एकांकी अभिनय इत्यादि अनेक मनोहर कार्य-क्रम प्रस्तुत होते हैं।

१६. वास्तव में वार्षिकोत्सव विद्यालय कार्य का महत्वपूर्ण अङ्ग है।

६—कृषक

१. अन्नं जीवनस्य आधारं अस्ति।

२. कृषकः सर्वेषां अन्नदाता अस्ति।

३. सः कठोर परिश्रमेण कृषि कर्म करोति।

४. वर्षा, शीतं, आतपं च प्रसन्नतया सहति।

५. भारतीय कृषकस्य जीवनं नु अति कठोरं वर्त्तते।

६. तस्य जीवनं तपस्वीनाम जीवन अस्ति।

७. आधुनिकतम नाम् कृषि यंत्राणाम् अभावे तस्य श्रमस्य पूर्णोपयोग भवति।

८. निर्धनता तस्य जीवनस्य अभिशापं अस्ति।

९. सः निर्धनतायां एव जायते तस्यामेव तस्य निर्धन् भवति।

१० अपव्ययं अशिक्षा च तस्य उन्नत्या बाधकौ स्तः।

११. अधुना अनेकाः कृषकाः आधुनिक यंत्राणां खादनाम् च प्रयोग कुर्वन्ति।

१२. कृषको अस्माकम् देशस्य वास्तविक प्रतिनिधिः।

१३. तस्यैव उन्नत्या राष्ट्रस्य उन्नतिः भविष्यति।

१४. ग्रामेषु सुशिक्षायाः प्रचारं एव कृषकस्य उन्नत्यां सहायकं भविष्यति।

१५. राज्येन् समाजेन च तम् प्रति आदरभाव प्रदर्शनम् अनिवार्य अस्ति।

हिन्दी अनुवाद

१. अन्न जीवन का आधार है।

२. किसान सबका अन्नदाता है।

३. वह कठोर परिश्रम से खेती का कार्य करता है।

४. वर्षा, शीत और घाम वह प्रसन्नता से सहता है।

५. उसका जीवन तपस्वियों का जीवन होता है।

६. भारतीय किसान का जीवन अत्यन्त कठोर होता है।

७. आधुनिकतम कृषियन्त्रों के अभाव में उसके श्रम का पूर्ण उपयोग नहीं होता।

८. निर्धनता उसके जीवन का अभिशाप है।

९. वह निर्धनता में ही पैदा होता है और उसी में मर जाता है।

१०. अपव्यय और अशिक्षा उसकी उन्नति में बाधक हैं।

११. वर्तमान में अनेक किसान आधुनिक यन्त्रों एवं खादों का प्रयोग करते हैं।

१२. किसान हमारे देश का वास्तविक प्रतिनिधि होता है।

१३. उसीकी उन्नति से राष्ट्र की उन्नति होगी।

१४. गाँवों में सुशिक्षा के प्रचार से ही किसान की उन्नति होगी।

१५. राज्य द्वारा उसके प्रति आदर भाव प्रदर्शन अनिवार्य है।

७—प्रिय-पुस्तकम्

१. पुस्तकानां मानव जीवने महत् प्रभावं भवति।

२. रामचरितमानसम् एक विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ रत्नं अस्ति।

३. इदं मम अति प्रिय पुस्तकं अस्ति।

४. तुलसी दासेन मर्यादा पुरुषोत्तमस्य भगवत् रामचन्द्रस्य पावन चरित्रं अस्मिन् वर्णितः।

५. अस्मिन् ग्रन्थे सप्त काण्डानि सन्ति।

६. बालकाण्डं, अयोध्याकाण्डं, अरण्यकाण्डं, किष्किधाकाण्डं, सुन्दरकाण्डं, लंकाकाण्डं, उत्तरकाण्डं च तेषाम् नामानि।

७, मानसे राम जन्मात् तस्य राज्याभिषेक पर्यन्तस्य कथा अतीव मनोहरतया वर्णिता अस्ति।

८. भारतीय धर्मस्य आ चारस्य दर्शनस्य, च इदं ग्रन्थम् पूर्ण प्रतिनिधिअस्ति

९. अस्य कथा शैली अत्यन्तां रोचका अस्ति।

१०. अस्य ग्रन्थस्य ऐतिहासिक महत्वमपि न्यूमं नास्ति।

११. निराशायाः अतलगर्ते पतितायाः हिन्दू जात्याः इदमेव उद्धारकं आसीत्।

१२. शौर्यस्य सौन्दर्यस्य, शीलस्य च समाहारं रामं सृष्ट्वा तुलसी अजर-अमरो अभवत् ।

१३. अस्य संसारस्य अनेकासु भाषासु अनुवादं कृतास्ति ।

. धार्मिके काव्य दृष्ट्यापि अस्य अपूर्वं महत्वं अस्ति ।

१५. अहं नित्यप्रतिअस्य अनुशीलनं करोमि ।

हिन्दी अनुवाद

१. पुस्तकों का मानव जीवन में बहुत प्रभाव होता है ।

२, रामचरित मानस एक विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ रत्न है ।

३. यह मेरी प्रिय पुस्तक है ।

४. महात्मा तुलसीदास ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र के पावन चरित्र का इसमें वर्णन किया है ।

५. इस ग्रन्थ में सात कांड हैं ।

६. बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुन्दरकांड लंकाकांड, एवं उत्तरकांड उनके नाम हैं ।

७. रामचरित मानस में राम जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा अत्यन्त मनोहरता से वर्णित की गई है ।

८. भारतीय धर्म, आचार और दर्शन का यह ग्रन्थ पूर्ण प्रतिनिधि है ।

९. इसकी कथा शैली अत्यन्त रोचक है ।

१०. इस ग्रन्थ का ऐतिहासिक महत्त्व भी कम नहीं है ।

११. निराशा के अतलगर्त में डूबी हिन्दू जाति का यही उद्धारक था ।

१२. शौर्य, सौन्दर्य एवं शील के समाहार भगवान राम की सृष्टि कर तुलसी अजर अमर हो गये ।

१३. इस ग्रन्थ का संसार की अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया है ।

१४. धार्मिक काव्य की दृष्टि से भी इसका बहुत महत्व है ।

१५. मैं नित्यप्रति इसका अनुशीलन करता हूँ ।

८—यात्रा

१. मनुष्यः कौतुक-प्रियः प्राणी अस्ति ।

२. नवनव स्थान दर्शने तस्य अतीव रुचिः वर्त्तते ।

३. अतएव यात्रायाम् तस्य जीवनस्य परमप्रिय प्रसंगानि भवन्ति ।
४. मम अपि यात्रासु महती रुचिः अस्ति ।
५. ग्रीष्मावकाशे अहं स्वमित्रैः सह शिमला प्रदेशं अगच्छम् ।
६. यदा वयं वाष्प गन्त्री स्थाने अगच्छाम तत्र महत् जन संमर्द कोलाहल च आसीत् ।
७. केनचित् प्रकारेण टिकिट प्राप्य वयं एकस्मिन प्रकोष्ठे प्रविष्टाः अभवाम ।
८. तत्रापि अतिकाठिन्येन स्थान प्राप्तिः अभतत् ।
९. मार्गे विभिन्न प्रकाराणि प्राकृतिक दृश्यानि दृष्टिपथे आगताः ।
१०. शस्य श्यामलाः क्षेत्राः नद्यः वनप्रदेशाश्च अस्माकं हृदयं मुग्धं अकुर्वन् ।
११. यदा वयं पर्वतीय प्रदेशे प्रविष्टाः तदा नयनाभिराम-दृश्यानि दृष्ट्वा चकिताः अभवाम् ।
१२. दिनत्रय पर्यन्त वयं तत्र निवासम कुर्म ।
१३. तत्रत्याः रमणीय-स्थलानि वयं कदापि न विस्मरिष्यामः ।
१४. यात्रा न केवलं मनोरंजनं एव भवति अपितु ज्ञानवर्धनं अपि भवति ।
१५. विद्यार्थिनः यात्राः अवश्यमेव करणीयाः ।

हिन्दी अनुवाद

१. मनुष्य कौतुक प्रिय प्राणी है ।
२. नये नये स्थानों के हेतु उसकी अत्यन्त रुचि होती है ।
३. अतः यात्रा में उसके परमप्रिय प्रसंग होते हैं ।
४. मेरी भी यात्रा में बहुत रुचि है ।
५. ग्रीष्मावकाश में मैं अपने मित्रों के साथ शिमला प्रदेश गया ।
६. जब हम रेल्वे स्टेशन पर गये तब वहाँ बहुत भीड़ एवं कोलाहल था ।
७. किसी प्रकार से टिकट प्राप्त करके हम एक डिब्बे में घुस गये ।
८. वहाँ भी अत्यन्त कठिनता से स्थान मिला ।
९. मार्ग में अनेक प्रकार के प्राकृतिक दृश्य दिखाई दिये ।
१०. हरे भरे खेतों ने, नदियों और वन प्रदेशों ने हमारे हृदयों को मुग्ध किया ।

११. जब हम पर्वतीय प्रदेश में घुसे तब अत्यन्त सुन्दर दृश्यों को देखकर चकित हो गये ।

१२. तीन दिन तक हमने वहाँ निवास किया ।

१३. वहाँ के रमणीक स्थानों को हम कभी भी न भूकेंगे ।

१४. यात्रा से केवल मनोरंजन ही नहीं अपितु ज्ञान वर्द्धन भी होता है ।

१५. विद्यार्थियों को यात्रा अवश्य करनी चाहिए ।

९—प्रसिद्ध मेलकं

१. मथुरा श्रीकृष्णस्य जन्मभूमिः अस्ति ।

२. अत्र भाद्रपद मासे कृष्णपक्षस्य अष्टम्यां एकं वृहद् मेलकं भवति ।

३. पुरातत्वविदाः नगरस्य पश्चिमे केशवदेव मन्दिरस्य स्थिति एव कृष्णस्य मूल जन्मस्थलं मन्यन्ते ।

४. अत्रैव अस्य मेलकस्य आयोजनं भवति ।

५. अस्यारम्भं प्रतिपदाया भवति एकादश दिन पर्यन्तं च चलति ।

६. अस्मिन् मेलके सुदूर प्रदेशेभ्यः आपाणिकाः आगच्छन्ति क्रीडा—कौतुकानि अपि समायुज्यन्ते ।

७. जन्मस्थानस्य मंचे रासलीलायाः दैनिक प्रदर्शनं भवति ।

८. अष्टम्यां नगरे श्रीकृष्ण-विग्रह शोभायात्रा निर्गच्छति ।

९. जनाः कीर्त्तनं कुर्वन् जन्मस्थानं आगच्छन्ति ।

१०. अत्र अनेकानि आकर्षकानि कार्यक्रमाणि भवन्ति ।

११. मध्य निशायां श्री कृष्ण जन्मोत्सवः भवति ।

१२. आकाशवाणी मथुरायाः केन्द्रात् अस्य उत्सवस्य सम्प्रसारणं भवति ।

१३. अस्मिन्न मेलके बालकेभ्यः रुचिकराणि अनेकानि मनोरंजन साधनानि उपस्थिता भवन्ति ।

१४. ते चक्रेषु दोलयन्ति, भ्रामकेषु भ्रमन्ति विभिन्नानि जन्तूनि च दृष्ट्वा प्रसन्नाः भवन्ति ।

१५. मह्यं तु इदं मेलकं अत्यन्तं रोचते ।

हिन्दी अनुवाद

१. मथुरा श्रीकृष्ण की जन्मभूमि है ।

२. यहाँ भादों के महीने में कृष्णपक्ष में अष्टमी के दिन एक बहुत बड़ा मेला होता है ।

३. पुरातत्व के वेत्ता नगर के पश्चिम में केशवदेव के मन्दिर की स्थिति को ही कृष्ण का मूल जन्म स्थल मानते हैं ।

४. यहीं पर इस मेले का आयोजन होता है ।

५. इसका आरम्भ पड़वा को होता है और ग्यारह दिन तक चलता है ।

६. इस मेले में बहुत दूर के प्रदेशों से दूकानें आती हैं, क्रीड़ा कौतुकों का भी आयोजन होता है ।

७. जन्मस्थान के मञ्च पर रासलीला का दैनिक प्रदर्शन होता है ।

८. अष्टमी के दिन नगर में श्रीकृष्ण की शोभा यात्रा निकलती है ।

९. मनुष्य कीर्त्तन करते हुए जन्मस्थान पर आते हैं ।

१०. यहाँ पर अनेक आकर्षक कार्यक्रम होते हैं ।

११. मध्य रात्रि में श्रीकृष्ण जन्ममहोत्सव होता है ।

१२. आकाशवाणी मथुरा के केन्द्र से इस उत्सव का प्रसारण होता है ।

१३. इस मेले में बालकों के लिए अनेक रुचिकर मनोरञ्जन के साधन उपस्थित होते हैं ।

१४. वे चक्र में घूमते हैं, झूमकों में भ्रमण करते हैं, विभिन्न जन्तुओं को देखकर प्रसन्न होते हैं ।

१५. मुझे तो यह मेला अत्यन्त सुन्दर लगता है ।

१०—वैज्ञानिक आविष्कारणि

१. वर्त्तमाने विज्ञानस्य दुन्दुभिघोषः अखिलविश्वे गुन्जितं अस्ति ।

२. तस्य नित्य नवाविष्कार-परम्परा मानवं चकितं करोति ।

३. जले, थले, आकाशे, अन्तरिक्षे च सर्वत्रैव विज्ञानस्य जयघोषः श्रूयते ।

४. जीवनस्य प्रत्येके क्षेत्रे विज्ञानस्य अपूर्व प्रवेशः विद्यते ।

५. भवन निर्माणे, वस्त्र रचनायाम्, यातायाते, कृषिकर्मसु, औषधि कल्पने सर्वत्र विज्ञानैव अधिष्ठितम् दृश्यते ।

६. विशालानाम् सेतूनाम्, बन्धानाम् च निर्माणं वास्तु क्षेत्रे विज्ञानस्य उन्नतिं दर्शयति ।

७. मोटर, रेल, वायुयान, जलयान, अन्तरिक्षयान इत्यादेः निर्माणं यातायाते क्रान्ति प्रदर्शयति ।

८. चमत्कार कारिण्यः पेन्सलीन, स्ट्रप्टोमायसिन प्रभृतिभिः औषधिभिः असाध्य रोग निवारणं विज्ञानस्य एव चमत्कारम् ।

९. कृषि कार्येषु कृषि यन्त्राणाम्, रासायनिक खाद्यानाम् च प्रयोगः अतीव फलदायकं भवति ।

१०. यथा विज्ञानात् कल्याण कारक उपकरणानि उद्भूतानि सन्ति तथैव विनाशकारका अपि ।

११. अणुशस्त्रणाम अविष्कारः ईदृशैव निर्माण अस्ति ।

१२. यदि विज्ञानेन मानव कल्याणस्य उपकरणानि निर्मिता तदा तस्य विनाशस्य साधानानि अपि प्रदत्तानिः ।

१३. मानवः विज्ञानं सेवक पदवी एव दद्यात् च न तु स्वामिनाः पदवीम् ।

१४. चन्द्रलोके मानवस्य अवतरणं विज्ञानस्य सर्वाधिक आश्चर्यकारिका सफलता अस्ति ।

१५. अपोलो द्वादशस्य चन्द्रावतरणं किञ्चित नूतन रहस्य उद्घाटनं करिष्यति ।

हिन्दी अनुवाद

१. वर्तमानकाल में विज्ञान की दुन्दुभी सारे विश्व में गूञ्ज रही है ।

२. उसके नित्य नये अविष्कारों की परम्परा मानव को चकित करती है ।

३. जल में, थल में, आकाश में और अन्तरिक्ष में सभी जगह विज्ञान का जयघोष सुनाई देता है ।

४. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान का अपूर्व प्रवेश है ।

५. भवन निर्माण में, वस्त्र रचना में यातायात में, कृषिकर्म में, औषधि बनाने में, सभी जगह विज्ञान अधिष्ठित दिखलाई देता है ।

६. विशाल पुलों का और बाँधों का निर्माण वास्तु क्षेत्र में विज्ञान का उन्नति को बताता है ।

७. मोटर, रेल, वायुयान, जलयान, अन्तरिक्षयान आदि का निर्माण यातायात में क्रान्ति दिखलाता है।

८. चमत्कारी पैंसलीन, स्टैप्टोमायसिन इत्यादि औषधियों से असाध्य रोगों का निवारण, विज्ञान का ही चमत्कार है।

९. खेती के कार्यों में, खेती के यन्त्रों का, रसायनिक खादों का प्रयोग अत्यन्त फलदायक होता है।

१०. जैसे विज्ञान से कल्याणकारी उपकरण उत्पन्न हुए हैं उसी प्रकार विनाश कारक भी।

११. अणुशस्त्रों का आविष्कार एक ऐसा ही निर्माण है।

१२. यदि विज्ञान ने मानव कल्याण के उपकरण बनाए हैं तो उसके विनाश के साधन भी।

१३. मानव द्वारा विज्ञान को सेवक की पदवी दी जानी चाहिए न कि स्वामी की।

१४. चन्द्रलोक पर मानव का उतरना विज्ञान की सबसे अधिक आश्चर्यजनक सफलता है।

१५. अपोलो १२ का चन्द्रमा पर उतरना किसी नूतन रहस्य का उद्घाटन करेगा।

११—संघे शक्ति कलियुगे

१. तृन-तन्तुवः सहज भँगुराः भवन्ति।

२. तानि अपि यदा एकत्र भूत्वा रज्जूभावं प्राप्नुवन्ति तदा गजं अपि आवध्नान्ति।

३. संगठने महाशक्तिः वसति नात्र संशयः।

४. कलियुगे तु संगठनस्य महती आवश्यकता अस्ति।

५. मानवेषु वैयक्तिकतुक्षमता अत्यल्पा अस्ति।

६. अतः पारस्परिक संगठन भावेनैव ते कठिन कार्येषु सफलाः भवितुं शक्नुवन्ति।

७. प्रजातन्त्र शासने तु संघ शक्तत्याः महत्वं सुविदितं।

८. अत्र सर्वाणि कार्याणि बहुमतेन एव सम्पादयन्ते।

९. अन्यायस्य अत्याचारस्य वा विरोधे अपि संगठितं प्रतिरोधं एव सफलं भवति ।

१०. सम्प्रति तु भारतयेभ्यः संघशक्तयाः महती आवश्यकता ।

११. अस्माकं राष्ट्रं शत्रुभिः समस्याभिश्च संवृत्तः अस्ति ।

१२. यदि वयं एक सूत्रे आबद्धाः न भविष्यन्ति तदास्माकं स्वातन्त्र्यस्य विनाशो भविष्यति ।

१३. राष्ट्रीय ऐक्यस्य अनिवार्यत्वं सर्वथा स्पष्टं अस्ति ।

१४. संगठनं उन्नतयाः मूलमन्त्रं अस्ति ।

१५. सामाजिक जीवनस्य आधारः संघशक्तिरेव ।

हिन्दी अनुवाद

१. रुई के तन्तु सहज में नष्ट होने वाले होते हैं ।

२. वे भी जब एकत्र होकर रस्सी बन जाते हैं तो हाथी को भी बाँध लेते हैं ।

३. संगठन में महान शक्ति है इसमें कोई संशय नहीं है ।

४. कलियुग में संगठन की अतीव आवश्यकता है ।

५. मनुष्यों में व्यक्तिगत क्षमता तो बहुत कम होती है ।

६. अतः पारस्परिक संगठन की भावना से ही वे कठिन कार्यों को करने में सफल हो सकते हैं ।

७. प्रजातन्त्र शासन में संगठन की शक्ति का महत्व सबको पता है ।

८. यहाँ सभी कार्य बहुमत से सम्पन्न होते हैं ।

९. अन्याय एवं अत्याचार के विरोध में भी संगठित प्रतिरोध ही सफल होता है ।

१०. इस समय भारतीयों में संगठन शक्ति की बहुत आवश्यकता है ।

११. हमारा राष्ट्र शत्रुओं और समस्याओं से घिरा हुआ है ।

१२. यदि हम एक सूत्र में न बँधेंगे तो हमारी स्वतन्त्रता का विनाश हो जायेगा ।

१३. राष्ट्रीय एकता की अनिवार्यता सर्वथा स्पष्ट है ।

१४. संगठन उन्नति का मूलमन्त्र है।
१५. सामाजिक जीवन का आधार संगठन शक्ति है।

१२ – कः परः प्रियवादिनाम्

१. सत्यभाषणम् अभिनन्दननीयं भवति।
२. पर प्रिय भाषणं ततोऽपि अधिकं वरणीयं भवति।
३. प्रकृतिरपि अस्मान् प्रिय भाषणस्य महत्व प्रदर्शयति।
४. काकः कटु भाषी, निरादर पात्रो भवति।
५. कोकिला च मधुरेण स्वरेण सर्वेषां अपि मनांसि मोहयति।
६. प्रियवादी तु भवेत् परं असत्य भाषी न भवेत्।
७. परचित्तानुरञ्जनाय असत्य-प्रियस्य भाषणं सर्वथा अनुचितं।
८. केचित् पुरुषाः स्वभावेनैव प्रियभाषिणः भवन्ति।
९. अपराश्च स्वार्थ सिध्यर्थं नम्रतया वा प्रिय वदन्ति।
१०. स्वार्थवशाः प्रिय वक्ताः अत्यन्त हानिकारकाः भवन्ति।
११. ते तु पयोमुखाः विषकुम्भाः भवन्ति।
१२. संसारे प्रिय भाषकस्य कोऽपि शत्रु न भवति।
१३. सर्वे मनुष्याः तस्यै बन्धुवत भवन्ति।
१४. प्रियवक्ताः यत्र गच्छति तत्रैव सौहार्द्रं अर्जयति।
१५. प्रिय-भाषणे एका अपूर्वा शक्तिः निहिता भवति या परत्वं सहजैव नाशयति।

हिन्दी अनुवाद

१. सत्य भाषण अभिनंदनीय होता है।
२. लेकिन उससे भी अधिक श्रेष्ठ प्रिय भाषण होता है।
३. प्रकृति भी हमारे प्रिय भाषण के महत्व को बतलाती है।
४. कटुभाषी कौआ निरादर का पात्र होता है।
५. और कोयल अपने मधुर स्वर से सबके ही मन को मोहित करती है।
६. प्रियवादी तो होना चाहिए परन्तु असत्यभाषी नहीं होना चाहिए।
७. परचित्तानुरञ्जन के हेतु असत्य एवं प्रिय भाषण सर्वथा अनुचित है।

८. कुछ पुरुष स्वभाव से ही प्रिय भाषी होते हैं।
९. दूसरे स्वार्थ सिद्धि के हेतु नम्रता से प्रिय बोलते हैं।
१०. स्वार्थवश प्रियवक्ता अत्यन्त हानिकारक होते हैं।
११. वे विष से भरे घड़े वाले जिसके मुखपर दूध होता है ऐसे होते हैं।
१२. संसार में प्रिय भाषणकर्ता का कोई शत्रु नहीं होता।
१३. सभी मनुष्य उसके बन्धु के समान होते हैं।
१४. प्रिय वक्ता जहाँ भी जाता है सौहार्द्र को प्राप्त करता है।
१५. प्रिय भाषण में एक अपूर्व शक्ति निहित है जो परता के भाव को सहज ही नष्ट कर देती है।

१३—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

१. जन्मभूमिं प्रति सर्वेषां अपि जीवानाम् हृदये आकर्षणं भवति।
२. पशुवः पक्षिणश्च देशान्तरेषु भ्रमित्वा सायंकाले स्वावास भूमिं प्रति आगच्छन्ति।
३. माता तु वात्सल्यस्य साक्षात् मूर्त्तिरेव भवति।
४. अपत्याम् ताम् प्रति सहज-स्नेहः भवति।
५. जन्मभूमिः अन्न दानेन, स्थल दानेन, संस्कृतेः इतिहासस्य च गौरव प्रदानेन मनुष्यस्योपरि महानं उपकारं करोति।
६. जननी स्वयं घोराणि कष्टानि सहति किन्तु सन्तानस्य हि चिन्तने एव निरता दृश्यते।
७. स्वयं बुभुक्षिताऽपि पुत्राय भोजनं भोजयति स्वयं नग्नाऽपि पुत्र आच्छादयति।
८. तस्या ऋणं प्रतिकर्त्तुं कः समर्थः ?
९. ईदृशैव जन्मभूम्याः उपकार परम्पराऽपि अपारं वर्त्तते।
१०. जनाः तस्याः एव अङ्के क्रीडन्ति, कूर्दन्ति, अभ्रंकष प्रासादान् निर्मायन्ति, रत्न, धातु, फल, ओषध इत्यादयः सर्वान् जीवनोपयोगी-पदार्थान् प्नुवन्ति।
११. अस्माकं सामाजिक जीवनस्य आधारः जन्म भूमिरेव अस्ति।
१२. वैकुण्ठ वासिनः देवगणा अपि भारत भूमौ अवतरितुमच्छिन्ति।

१३. स्वयं भगवान श्रीरामः अवधपुरीं वैकुण्ठादपि सुखदायिका अकथयत् ।
१४. स्वर्गः तु केवलं पुण्यवताम् एव धारयति जन्मभूमि सर्वेभ्यः एव स्थानं ददाति ।
१५. निश्चय एव जननी जन्मभूमिश्चय स्वर्गादपि गरीयसी ।

हिन्दी अनुवाद

१. जन्मभूमि के प्रति सभी जीवों का आकर्षण होता है ।
२. पशु और पक्षी देशान्तरों में घूमकर सायंकाल अपनी निवास भूमि पर आ जाते हैं ।
३, माता वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति होती है ।
४. सन्तानों के प्रति उसका सहज स्नेह होता है ।
५. जन्मभूमि अन्नदान से, स्थल दान से, संस्कृति और इतिहास को गौरव प्रदान के द्वारा मनुष्य के ऊपर महान उपकार करती है ।
६. माँ स्वयं घोर कष्टों को सहती है किन्तु सन्तान के हित चिन्तन में निरत दिखलाई देती है ।
७. स्वयं भूखी रहकर पुत्र को खिलाती है स्वयं नंगी रहकर पुत्र को ढकती है ।
८. उसका ऋण कौन चुका सकता है ।
९. इसी प्रकार जन्मभूमि की उपकार परम्परा भी अपार है ।
१०. मनुष्य उसी की गोदी में खेलते हैं, कूदते हैं, गगन चुम्बी भवन बनाते है, रत्न, धातु, फल, औषधि इत्यादि सभी जीवनोपयोगी पदार्थों को प्राप्त करते हैं ।
११. हमारे सामाजिक जीवन का आधार जन्मभूमि ही है ।
१२. वैकुण्ठवासी देवता भी भारतभूमि पर अवतरित होना चाहते हैं ।
१३. स्वयं भगवान राम ने अवधपुरी को वैकुंठ से भी अधिक सुखदायी कहा था ।
१४. स्वर्ग तो केवल पुण्यवानों को धारण करता है, जन्मभूमि तो सबको स्थान देती है ।
१५. निश्चय ही जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है ।

१४—जन्तुशाला

१. संसारे असंख्य प्रकाराणां जन्तुवः सन्ति ।

२. तेषाम् आकृतयः, स्वभावाः, निवास स्थलानि च भिन्नाः भवन्ति ।

३. न सर्वे जनाः देशान्तरेषु गत्वा इमानि जीवानि दृष्टुं समर्थाः ।

४. किन्तु जन्तुशालायां गत्वा ते एकस्मिन्नेव स्थाने विभिन्न देशीया नृजन्तवः पश्यन्ति ।

५. दिल्ली नगरे एका विशाला जन्तुशाला अस्ति ।

६. तत्र विलक्षणानाम् पशु पक्षीनाम् अपूर्व संग्रहः वर्त्तते ।

७. एकस्मिन् दिवसे वयं तत्र अगच्छाम् ।

८. जन्तुशाला इयं 'चिड़ियाघर' नाम्ना प्रसिद्ध अस्ति ।

९. प्रवेशद्वारस्य सम्मुखे एव कारण्डवाः कलरव रताः आसन् ।

१०. मृगाः, रिशा, बानराः विभिन्नेषु प्रकोस्टेषु क्रीड़ा मग्नाः आसन् ।

११. सिंहानाम् पिंजराः परिघया संवृत्तः आसीत् ।

१२. तत्र जल घोटक नाम्नः एकः विशालः पशुः आसीत् ।

१३. विभिन्न जातीनाम् शुकाः, कपोताः, कुक्कुटाः, मयूराश्च स्व स्व मण्डपेषु भ्रमन् आसन् ।

१४. जन्तुशालां दृष्टवा अस्माकं हृदयं अत्यन्तं प्रसन्नं जातः ।

१५. यदा कदापि अहं पुनः दिल्ली नगरं गमिष्यामि तदा अहं जन्तुशालां द्रक्ष्यामि :

हिन्दी अनुवाद

१. संसार में असंख्य प्रकार के जन्तु हैं ।

२. उनकी आकृतियों, स्वभाव और निवास स्थल भिन्न-भिन्न होते हैं ।

३. सभी मनुष्य देशान्तरों में जाकर इन सब जीवों को देखने में समर्थ हो सकते हैं ।

४. किन्तु जन्तु शाला (जू) में जाकर वे एक ही स्थान पर विभिन्न देशों के जीवों को देख लेते हैं ।

५. दिल्ली में एक विशाल जन्तुशाला (जू) है ।

६. वहाँ विलक्षण पशु पक्षियों का अपूर्व संग्रह हैं।
७. एक दिन हम वहाँ गये।
८. यह जन्तुशाला चिड़ियाघर के नाम से प्रसिद्ध है।
९. प्रवेश द्वार के सामने ही पक्षी कलरव कर रहे थे।
१०. हिरन, रीछ, बन्दर भिन्न-भिन्न कोनों में क्रीड़ा मग्न थे।
११. सिंहों के पिंजरे परिधा से (खाई से) घिरे थे।
१२. वहाँ दरियाई घोड़ा नामक एक विशाल पशु था।
१३. विभिन्न जातियों के तोते, कबूतर, कुक्कुट और मयूर अपने-अपने मण्डपों में घूम रहे थे।
१४. जन्तुशाला को देखकर हमारा हृदय अत्यन्त प्रसन्न होगया।
१५. जब कभी भी मैं दिल्ली नगर को जाऊँगा तब मैं जन्तुशाला को देखूंगा।

१४—अस्माकं राष्ट्रपतिः

१. भारतस्य संविधानं संघीय प्रकारस्य अस्तिः भवति।
२. अस्य सर्वोच्च पदाधिकारी राष्ट्रपतिः भवति।
३. राष्ट्रपतेः बहूनि अधिकाराणि सन्ति।
४. भारतस्य सर्वप्रथमं राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसादः आसीत्।
५. तस्य उत्तराधिकारी श्रीयुत राधाकृष्णन अभवत्।
६. राधाकृष्णन् महोदयः महान दार्शनिकः आसीत्।
७. तत्पश्चात् श्री जाकिर हुसैन महादयेन राष्ट्रपतिपदं अलंकृतं कृतः।
८. जाकिर हुसैन महोदस्य देहावसानान्तरं उपराष्ट्रपति पदे स्थितः गिरि महोदयः तस्य स्थानं ग्रहीतवान।
९. गिरि महोदयस्य निर्वाचने अभूतपूर्व-संघर्ष अभवत्।
१०. गिरि महोदयस्य प्रमुखः प्रतिद्वन्दी रेड्डी महाशयः आसीत्।
११. किन्तु सः पराजितो अभवत्।
१२. विधानमण्डलानाम् निर्वाचिताः सदस्याः संसदस्य च निर्वाचिताः सदस्याः विशिष्ट प्रणाल्या राष्ट्रपतेः चयनं कुर्वन्ति।

१३. राष्ट्रपतिः गिरि महोदयः देशस्य सुपरीक्षितः सुपरिचितः समाजसेवी अस्ति ।

१४. वयोवृद्धोऽपि सः युवकोचित स्फूर्त्या परिपूर्णः अस्ति ।

१५. अस्य व्यक्तित्वं स्वपदस्य गौरवस्यानुकूल एव अस्ति ।

हिन्दी अनुवाद

१. भारतवर्ष का संविधान संघीय प्रकार का है ।

२. इसका सर्वोच्च पदाधिकारी राष्ट्रपति होता है ।

३. राष्ट्रपति के बहुत से अधिकार होते हैं ।

४. भारतवर्ष के सर्वप्रथम राष्ट्रपति श्रीराजेन्द्रप्रसाद जी थे ।

५. उनके उत्तराधिकारी श्रीयुत राधाकृष्णन् हुए ।

६. राधाकृष्णन् महान दार्शनिक थे ।

७. इसके बाद श्री जाकिरहुसैन महोदय ने राष्ट्रपति पद को अलंकृत किया ।

८. जाकिर हुसैन महोदय के देहावसान के बाद उपराष्ट्रपति पद पर स्थित गिरि महोदय ने उसका स्थान ग्रहण किया ।

९. गिरि महोदय के निर्वाचन के समय अभूतपूर्व संघर्ष हुआ ।

१०. गिरि महोदय के प्रमुख प्रतिद्वन्दी श्री रेड्डी महोदय थे ।

११. किन्तु वे पराजित होगये ।

१२. विधानमण्डल के निर्वाचित सदस्य एवं संसद के निर्वाचित सदस्य विशिष्ट प्रणाली से राष्ट्रपति का चयन करते हैं ।

१३. राष्ट्रपतिगिरि देश के सुपरीक्षित एवं सुपरिचित समाज सेवी हैं ।

१४. वयोवृद्ध होने पर भी वह युवकोचित स्फूर्ति से परिपूर्ण हैं ।

१५. इनका व्यक्तित्व अपने पद के गौरव के अनुकूल ही है ।

१६—देशाटनं

१. देशान्तरेषु अटनं देशाटनं कथ्यते ।

२. देशाटनस्य बहूनि प्रयोजनानि भवन्ति ।

३. मुख्यतया तु मानवस्य नवनवानाम् वस्तूनाम् दर्शनेच्छा एव अस्य मूले वर्त्तते ।

४. मनोरंजनाय, शिक्षाप्राप्त्यर्थं, व्यावसायिक कारणेन राजनीतिकेन उद्देश्येन्यपि देशाटनं क्रियते ।
५. भूमण्डले सहस्रशः देशाः सन्ति ।
६. प्रत्येकस्य देशस्य स्वैव विशेषता भवति ।
७. केचित् प्राकृतिक सौन्दर्यण सम्पन्नाः केचित वास्तु कलायाः केन्द्राणि केचित् औद्योगिक दृष्ट्या दर्शनीयाः ।
८. देशाटनेन् अनेकाः लाभाः भवन्ति ।
९. मानवस्य व्यवहार कौशलं वर्धते ।
१०. तस्य ज्ञान क्षेत्रस्य विस्तारं भवति ।
११. देशान्तरेषु गमनागमनेन् पारस्परिक बन्धुत्व भावं वर्धते ।
१२. वर्त्तमान समये तु आवागमनस्य साधनेषु अपारा वृद्धि संजाता ।
१३. वायुयानैः अत्यल्प समये यात्राः सम्पन्नाः भवन्ति ।
१४. मनुष्यभिः देशाटनं अवश्यमेव करणीयम् ।
१५. देशाटनेन् मानवाः महोन्नतिं कर्तुम् शक्यन्ते ।

हिन्दी अनुवाद

१. देशान्तरों में घूमना देशाटन कहलाता है ।
२. देशाटन के बहुत से प्रयोजन होते हैं ।
३. मुख्यतया मानव की नयी-नयी वस्तुओं को देखने की इच्छा ही इसके मूल में होती है ।
४. मनोरंजन के लिये, शिक्षा प्राप्ति के लिये, व्यावसायिक कारण से, राजनीतिक उद्देश्य से भी देशाटन किया जाता है ।
५. भूमण्डल पर अनेक देश हैं ।
६. प्रत्येक देश की अपनी ही विशेषता होती है ।
७. कुछ प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण हैं, कुछ वास्तु कला के केन्द्र हैं कुछ औद्योगिक दृष्टि से दर्शनीय है ।
८. देशाटन से अनेक लाभ होते हैं ।
९. मनुष्य की व्यवहार कुशलता बढ़ती है ।

१०. उसके ज्ञान क्षेत्र का विस्तार होता है ।
११. देशान्तरों में आने जाने से पारस्परिक बन्धुत्व का भाव बढ़ता है ।
१२. वर्तमान समय में आवागमन के साधनों में अपार वृद्धि हुई है ।
१३. वायुयानों से थोड़े ही समय में यात्रा सम्पन्न हो जाती है ।
१४. मनुष्यों को देशाटन अवश्य करना चाहिए ।
१५. देशाटन से मनुष्य महोन्नति कर सकते हैं ।

१७—गोपालनम्

१. गोः भारतीय संस्कृतेः प्रतीकं अस्ति ।
२. सा अस्मभ्यं मातृवत् संपूज्या अस्ति ।
३. अस्माकम् ऋषयः गोपालनम् धर्मस्य अत्रं अघोषयन् ।
४. भगवान श्रीकृष्णस्य तु गो विहीना कल्पनाऽपि असम्भवम् ।
५. चित्रेषु तम् गोपालवेशे प्रदर्श्यते ।
६. गोचारणं तस्य जीवनस्य महत्वपूर्णं कार्यं आसीत् ।
७. अतएव भारतीय शासकाः गोरक्षणं अत्यधिकं अवदन् ।
८. ब्राह्मणेभ्यः धेनु दानं परं पवित्रं धर्मकृत्यं आसीत् ।
९. यदा विदेशीयाः भारते आगच्छन् तदा ते मूढ़तया गोवधं अकुर्वन् ।
१०. अद्यापि स्वराज्ये धेनुवः उपेक्षिताः असंरक्षिताः च वर्त्तन्ते ।
११. अनेनैव कारणेन देशे दुग्धस्य घृतस्य च महद् अभावं अस्ति ।
१२. राजनीतिज्ञाः क्षुद्रेषु लोभेषु लग्नाः भूत्वा गोधनस्य विनाशे सहायकाः भवन्ति ।
१३. गोभ्यः अस्मान् अनेकानि जीवनोपयोगि वस्तूनि उपलब्धानि भवन्ति ।
१४. घृतं, दुग्धं, नवनीतं, इन्धनं, चर्म सर्वोऽपरि च वृषभाः धेनूभ्यः अपि प्राप्ताः भवन्ति ।
१५. भारतीय समाजे अधुना गोपालस्य महती आवश्यकता अस्ति ।

हिन्दी अनुवाद

१. गौ भारतीय संस्कृति का प्रतीक है ।
२. वह हमारे लिए माता के समान पूजनीय है ।
३. हमारे ऋषियों ने गोपालन को धर्म का अंग घोषित किया ।

४. भगवान श्रीकृष्ण की गौ से रहित कल्पना भी असम्भव है।
५. चित्रों में उसे गोपाल वेश में ही दिखाया जाता है।
६. गोचारण उसके जीवन का महत्वपूर्ण कार्य था।
७. अतः भारतीय शासकों ने गोरक्षण को अत्यधिक महत्व दिया।
८. ब्राह्मणों के लिए गाय-दान परम पवित्र धार्मिक कृत्य था।
९. जब विदेशी भारत आए तब उन्होंने मूर्खता से गौवध किया।
१०. आज भी स्वराज्य में गायें उपेक्षित एवं असंरक्षित हैं।
११. इसी कारण से देश में दूध और घी की बहुत कमी है।
१२. राजनीतिज्ञ क्षुद्र लोभ में लगकर गायों के विनाश में सहायक हो रहे हैं।
१३. गायों से हमारे लिए अनेक जीवनोपयोगी वस्तु उपलब्ध होती हैं।
१४. घी, दूध, नवनीत, ईंधन, खाल और सर्वोपरि बैल और गायें भी प्राप्त होती हैं।
१५. भारतीय समाज में इस समय गोपालन की अत्यन्त आवश्यकता है।

१८—महात्मा गान्धेः मार्गंत्

१. महात्मा गान्धिः अस्य विश्वस्य महान् विभूतिः आसीत्।
२. सः स्व जीवनं मानवतायाः सेवायां समर्पितवान।
३. भारत भूमि तस्य जन्मस्थल्याः गौरवः प्राप्तः अस्ति।
४. महात्मा गान्धी अन्यायस्य अत्याचारस्य च विरोधिः आसीत्।
५. शोषितान् पीड़ितान् च मानवान् सः संघर्षस्य नूतनं पथं अदर्शयत्।
६. सत्याग्रह-आन्दोलनं तस्य सर्वथा नूतना अविष्कृतिः आसीत।
७. सत्यस्य अहिंसायाश्च सम्बलं ग्रहीत्वा सः आङ्ग्लजनैः सह अभिनवं युद्धं कृतवान।
८. लोकाः प्रथमं तु तस्य उपहासं अकुर्वन्।
९. कोऽपि अहिंसा द्वारा स्वातंत्र्यस्य प्राप्तिम् सम्भवम् न अमन्यत्।
१०. किन्तु श्री गान्धिः विनैव शस्त्रैः स्वातंत्र्य-संग्रामं अजयत्।
११. तस्य वाण्याम् अद्भुता शक्ति आसीत्।
१२. तस्य संकेत मात्रे देशवासिनः प्राण परित्यागस्य समुत्सुकाः आसन्।

१३. सः न केवलं भारतस्योद्धारकः आसीत् प्रत्युत अनेकानि परतंत्राणि राष्ट्रानि तस्यैव मार्गेण स्वाधीनतां प्राप्तवन्तः ।

१४. महात्मा-बुद्धस्य पवित्र-सन्देशः तेनैव पुनः प्रचारितः ।

१५. अधुना विश्वस्य अशान्ति-परिस्थित्याम् गान्धेः एव मार्गं अनुसृत्य मानवस्य कल्याणं भविष्यति ।

हिन्दी अनुवाद

१. महात्मा गांधी इस विश्व की महान विभूति थे ।

२. उन्होंने अपना जीवन मानवता की सेवा में समर्पित किया ।

३. भारतभूमि को उसकी जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है ।

४. महात्मा गाँधी अन्याय एवं अत्याचार के विरोधी थे ।

५. शोषित एवं पीड़ित मनुष्यों के लिए उन्होंने संघर्ष का नूतन पथ दिखलाया था

६. सत्याग्रह आन्दोलन उनका सर्वथा नूतन आविष्कार था ।

७. सत्य और अहिंसा का सम्बल लेकर उन्होंने अंग्रेजों के साथ अभिनव युद्ध किया ।

८. मनुष्यों ने पहले तो उनका उपहास किया ।

९. कोई भी अहिंसा द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति को सम्भव नहीं मानता था ।

१०. किन्तु श्री महात्मा गाँधी ने बिना ही शस्त्रों के स्वतंत्रता संग्राम को जीत लिया ।

११. उनकी वाणी में अद्भुत शक्ति थी ।

१२. उसके संकेत मात्र पर देशवासी प्राण परित्याग के लिए समुत्सुक थे ।

१३. वह न केवल भारत के उद्धारक थे लेकिन अनेक परतंत्र राष्ट्रों ने उसी के मार्ग से स्वाधीनता प्राप्त की थी ।

१४. महात्मा बुद्ध के पवित्र सन्देश को पुनः उसी ने ही प्रचारित किया था ।

१५. इस समय विश्व की अशान्त परिस्थितियों में गान्धी जी के मार्ग का अनुसरण कर मानव का कल्याण हो सकता है ।

१९—स्वार्थ त्याग

१. सृष्टिः स्वार्थ मूलका अस्ति ।
२. सर्वे प्राणिनः स्वगावेन स्वार्थ प्रिया भवन्ति ।
३. परन्तु मनुष्य जीवनस्य शोभा स्वार्थ त्यागे एव अस्ति ।
४. पशुवः तु स्वोदरम्भराः भवन्ति, परेषां चिन्ता तेषु न भवति ।
५. मनुष्यः केवलं स्व हित चिन्तनेन मनुष्य संज्ञाया अधिकारी न भवति ।
६. तस्य जीवन यात्रा स्वार्थ त्यागेन बिना सम्भवं नास्ति ।
७. सामाजिक जीवनस्य मूलाधारः स्वार्थ परित्यागे एव निहितः ।
८. कौटुम्बिक जीवनमपि विनां स्वार्थ त्यागेन न स्थास्यति ।
९. प्रकृतिः अपि प्रतिक्षणं परार्थ चिन्तनांय उपदेशयति ।
१०. मेघाः परार्थमेव वर्षन्ति ।
११. नद्यः स्वार्थाय न वहन्ति, वृक्षास्त्व परार्थमेव फलन्ति ।
१२. सज्जनाः अपि परार्थमेव जीवनं यंपयन्ति ।
१३. स्वार्थी मनुष्यः सर्वेषाम् घृणा पात्रं भवति ।
१४. स्वार्थस्य कृते सः महत्तमपि पापं कर्तुं प्रस्तुतः भवति ।
१५. सम्प्रति तु अस्माकं देशाय निस्वार्थिनः नागरिकाणाम् महती आवश्यकता अस्ति ।
१६. स्वार्थ त्याग्रेनैव राष्ट्रस्य कल्याणं सम्भवम् अस्ति ।

हिन्दी अनुवाद

१. सृष्टि स्वार्थ मूलक है ।
२. सभी प्राणी स्वभाव से स्वार्थ प्रिय होते हैं ।
३. परन्तु मनुष्य जीवन की शोभा स्वार्थ त्याग में ही होती है ।
४. पशु तो अपना उदर भरने वाले होते हैं, दूसरों की चिन्ता उन्हें नहीं होती ।
५. मनुष्य केवल अपना हित चिन्तन से ही मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं होता ।
६. उसकी जीवन यात्रा स्वार्थ त्याग के बिना सम्भव नहीं है ।

७. सामाजिक जीवन का मूलाधार स्वार्थ त्याग में ही छिपा है।
८. कौटुम्बिक जीवन भी बिना स्वार्थ त्याग के नहीं टिकेगा।
९. प्रकृति भी हर समय परार्थ चिन्तन का उपदेश देती है।
१०. मेघ भी दूसरों के लिए बरसते हैं।
११. नदियों स्वार्थ के लिए नहीं बहतीं, पेड़ दूसरों के लिए ही फलते हैं।
१२. स्वार्थी मनुष्य सबका घृणापात्र होता है।
१३. स्वार्थ के लिए वह बड़े बड़े पाप करने के लिए तैयार रहता है।
१४. इस समय हमारे देश के लिए निस्वार्थी नागरिकों की बड़ी आवश्यकता ।
१५. स्वार्थ त्याग से ही राष्ट्र का कल्याण सम्भव है।

२०—संस्कृतस्य कश्चित् कविः

१. संस्कृत भाषायाम् सत्साहित्यस्य स विशाल भण्डार अस्ति।
२. संस्कृत सुकवयः स्व प्रतिभा प्रकाशेन साहित्याकाशं प्रकाशितं अकुर्वन्।
३. कविषु कालिदास्य नाम सर्वोऽपरि तिष्ठति।
४. कालिदासस्य बहुमुखी प्रतिभा अद्यापि साहित्य रसज्ञानाम् अनुरञ्जनं करोति।
५. नाटकेषु 'शाकुन्तलम्' काव्येषु 'रघुवशम्' मुक्तकेषु च 'मेघदूत' कालिदासस्य यशस्तम्भानि सन्ति।
६. कालिदासस्य काव्यं सर्वाभिः दृष्टिभिः श्रेष्ठं अस्ति।
७. रसेषु, अलंकारेषु, छन्देषु, रीतिषु, च तस्य प्रतिद्वन्दी कोऽपि नास्ति।
८. तस्य उपमा तु जगत्प्रसिद्धा अस्ति।
९. शाकुन्तले भारतीय संस्कृतेः उदात्तं चित्रं, रघुवंशे कवेः बहुश्रुत्वं, मेघे प्रकृतेः सूक्ष्मनिरीक्षणं कस्य मनः न मोहयति।
१० सूक्तीनाम् तु सः आकरः अस्ति।
११ मानवीय- मनोभावनानाम् कालिदासः चतुर चित्रकारः अस्ति।
१२. तस्य पात्राणि सजीवानि स्वाभाविकानि च सन्ति।
१३. कालिदासस्य प्रतिभायाः सम्मुखं वैदेशिकाः जनाः मुग्धाः सन्ति।

१४. जर्मन देशीयः कविः 'गेटे' कालिदासस्य महा प्रशंसकः आसीत् ।
१५. अस्मादेव कारणात् सः 'कविकुलगुरू' इति संज्ञा धारयति ।

हिन्दी अनुवाद

१. संस्कृत साहित्य में सत्साहित्य का विशाल भण्डार है ।
२. संस्कृत के सुकवियों ने अपनी प्रतिभा के प्रकाश से साहित्याकाश को प्रकाशित किया ।
३. कवियों में कालिदास का नाम सबसे ऊपर है ।
४. कालिदास की बहुमुखी प्रतिभा आज भी साहित्य प्रेमियों का अनुरञ्जन करती है ।
५. नाटकों में 'शकुन्तला' काव्यों में 'रघुवंश' और मुक्तकों में मेघदूत कालिदास के यश स्तंभ हैं ।
६. कालिदास का काव्य सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ है ।
७. रस में, अलंकार में, छन्द में और रीति में उसका कोई प्रतिद्वन्दी नहीं है ।
८. उसकी उपमा तो जगतप्रसिद्ध है ।
९. शकुन्तला नाटक में भारतीय संस्कृति का उदात्त चित्र, 'रघुवंश' में कवि का बहुज्ञान, 'मेघदूत' में प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किसके मन को मोहित नहीं करता ।
१०. सूक्तियों का तो वह खजाना है ।
११. मानवीय मनोभावनाओं का कालिदास चतुर चित्रकार है ।
१२. उनके पात्र सजीव एवं स्वाभाविक हैं ।
१३. कालिदास की प्रतिभा के सामने विदेशी मनुष्य भी मुग्ध हैं ।
१४. जर्मन देश का कवि 'गेटे' कालिदास का बहुत प्रशंसक था ।
१५. इसी कारण वह 'कवि कुल गुरू' के नाम से प्रसिद्ध है ।

अथवा

इसी कारण वह 'कविकुलगुरू' के नाम को धारण कारता है ।

२१—पठनं क्रीडनं च

१. शिक्षया मानवस्य सर्वाङ्गीण विकासं भवेत् ।
२. पठनं क्रीडनञ्च च उभौ शिक्षायाः महत्वपूर्ण अंगे स्तः ।

३. अध्ययनेन छात्रस्य मानसिक विकासो भवति क्रीडया च शारीरिकः ।
४. अतएव विद्यालयेषु पठनमिव क्रीडनमपि पाठय क्रमे स्थानं प्राप्नोति ।
५. गम्भीरतया चिन्तनेन इदं स्पष्टं यत क्रीडऽपि एकस्य प्रकारस्य प्रशिक्षणं एव ।
६. सहयोगस्य, प्रतिद्वन्द्वतायाः, दल भावनायाश्च विकासः क्रीडया एव सम्भवं ।
७. अध्ययनस्योपरान्तं मनः ग्लानि अनुभवति ।
८. क्रीडया मनः पुनः नव स्फूर्तिं प्राप्नोति ।
९. अधुना विद्यालयेषु बहुविधाः क्रडाः प्रचलिताः सन्ति ।
१०. कन्दुक क्रीडा तु सर्वजन मनोरञ्जन कारिणी क्रीडा अस्ति ।
११. शिक्षाविदः शिशूनाम् शिक्षायाम् साभि प्रायेण क्रीडा योजयन्ति ।
१२. ते क्रीडयैव शिक्षादानस्य महत्वं प्रतिपादयन्ति ।
१३. परन्तु क्रीडनस्य पठनस्य च संतुलित प्रयोगेनैव छात्रस्य उन्नतिः भवति ।
१४. अतः विद्यार्थिनः पठन समये पठनं क्रीडन समये च क्रीडनं कुर्युः ।
१५. केवलं क्रीडनेन, केवलं पठनेन वा तेषां सम्यक् प्रगतिः न भविष्यति ।

हिन्दी अनुवाद

१. शिक्षा से मानव का सर्वाङ्गीण विकास होता है ।
२. पढ़ना और खेलना दोनों शिक्षा के महत्वपूर्ण अङ्ग हैं ।
३. अध्ययन से छात्र का मानसिक विकास होता है और खेलने से शारीरिक ।
४. इसलिए विद्वानों में पढ़ने के समान खेलना भी पाठ्यक्रम में स्थान पाता है ।
५. गम्भीरता से सोचने से यह स्पष्ट है कि खेल भी एक प्रकार की शिक्षा हीहै ।
६. सहयोग, प्रतिद्वन्दता एवं दल-भावना का विकास खेल से ही होता है ।
७. अध्ययन के बाद मन दुःखित हो जाता है ।
८. क्रीडा से मन फिर नवीन स्फूर्ति प्राप्त करता है ।
९. इस समय विद्यालयों में अनेक प्रकार के खेल प्रचलित हैं ।

१०. गेंद का खेल तो सभी मनुष्यों को मनोरञ्जन करने वाला खेल है ।
११. शिक्षा विद शिशुओं की शिक्षा में साभिप्राय खेल को जोड़ते हैं।
१२. वे खेल से ही शिक्षा दान के महत्व को प्रतिपादित करते हैं ।
१३. लेकिन खेलने और पढ़ने के सन्तुलित प्रयोग से ही छात्र की उन्नति होती है ।
१४. अतः विद्यार्थियों को पढ़ने के समय पढ़ना और खेलने के समय खेलना चाहिए ।
१५. केवल खेलने से ही अथवा केवल पढ़ने से ही उनकी सम्यक् प्रगति नहीं हो सकती ।

२६—सत्संगति

१. मनुष्यः स्वभावतः दुर्विचारान् विचारयति, दुष्कर्माणि करोति ।
२. तदर्थम एतत् आवश्यकम् यत् किमपि तादृशं साधनं भवेत् येन मानवः अधः गच्छेत् ।
३. उन्नतेः साधनानि बहूनि सन्ति ।
४. सर्वेषु साधनेषु उत्तमः उपायः सत्संगति अस्ति ।
५ सज्जनानां सङ्गतिः सत्ससगति कथयते ।
६. भारतीय शास्त्रेषु सज्जनानां बहूनि लक्षणानि वर्णितानि ।
७. सज्जनस्य आचरणः शोभनः, सदः सरलश्च भवति ।
८. सज्जनानाम् संगत्या मानवः विनीतः भवति ।
९. केनचित् कविय सत्यम् उक्तम्—
मलयाचल गन्धेन इन्धनं चन्दनायते ।
तथा सज्जनसंगेन दुर्जनः सज्जनायते ।
१०. महात्मा तुलसीदासेन रामायणे उक्तम्—
शठ सुधरहिं सत्संगति पाई ।
पारस परस कुधातु सुहाई ॥
११. सत्संगत्या मानवस्य प्रतिष्ठा कीर्तिश्च वर्द्धते ।
१२. सत्संगत्या खिन्नः सुप्रसन्नो भवति ।
१३. सत्संगत्या नीचाः दुष्टाः अपि साधवः भवन्ति ।

१४. साधु संगति चन्द्र चन्दनाभ्याम् अपि शीतला भवति ।

१५. केनचित् कविना उक्तम्—

जाड्यंधियो हरति सिंचति नाचि सत्यम् ।
मानोन्नतिं दिशति पापमपा करोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्
सत्संगति कथय किं न करोति पुंसाम् ।।

हिन्दी अनुवाद

१. मनुष्य स्वभाव से बुरे विचार सोचता है, दुष्कर्मों को करता है ।

२. इसके लिए ऐसा अवश्य कोई साधन होना चाहिए जिससे मनुष्य नीचे न जाए ।

३. उन्नति के बहुत से साधन है ।

४. सभी साधनों में उत्तम उपाय सत्संगति है ।

५. सज्जनों की संगति सत्संति कहलाती है ।

६. भारतीय शास्त्रों में सज्जनों में बहुत से लक्षण कहे गये हैं ।

७. सज्जन के आंचरण शोभन् सद एवं सरल होंता है ।

८. सज्जनों की संगति में मनुष्य विनीत होता है ।

९. किसी कवि ने सत्य कहा है—
मलयाचल की गंध से ईंधन भी चन्दन हो जाता है । तथा सज्जनों को संगति से दुर्जन भी सज्जन हो जाते हैं ।

१०. महात्मा तुलसीदास ने रामायण में कहा है—
शठ सत्संगति में सुधर जाते हैं । पारस का स्पर्श कर कुधातु भी शोभित हो जाती है ।

११. सत्संगति से मानव की प्रतिष्ठा और कीर्ति बढ़ती है ।

१२. सत्संगति के प्रभाव से दुःखी प्रसन्न हो जाता है ।

१३. सत्संगति से नीच एवं दुष्ट प्राणी भी साधु हो जाते हैं ।

१४. साधुसंगति चन्द्रमा एवं चन्दन से भी शीतल होती है ।

१५. किसी कवि वे कहा है—

बुद्धि की जड़ता को हरण करती है, वाणी में सत्य का संचार करती है, मान को बढ़ाती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है, दिशाओं में कीर्ति को बढ़ाती है, कहिए सत्संगति मनुष्य के लिए क्या नहीं करती।

२७—उद्योगः

१. उद्योगः अध्यवसायस्य पर्यायः अस्ति ।
२. यः कार्येषु निरालस्यम् भवति स उद्योगी नरः अस्ति ।
३. उद्योगिनस्तु जगति किमपि असाध्यं नास्ति ।
४. उद्योगिनः दुर्लभानि लभते, धनानि अर्जयति ।
५. उद्योग बलेन मूर्खोऽपि विद्वान् भवितुमर्हति ।
६. उद्योगः खलु वृणुते साफल्यम् ।
७. अनेकदा असफलो अपि जनः अध्यवसायत् सुनिश्चितां सिद्धिम् लभते ।
८. कार्याणि उद्यमेन हि सिध्यन्ति ।
९. कार्यार्थिनः मनस्वी सुखं दुखं न गणयति ।
१०. लक्ष्मी गृहनासीव सेवते उद्योगिन· जनः ।
११. उद्यौगो हि सर्व भद्राणां निदाम्, निखिल सम्पदा मूलम् अस्ति ।
१२. उद्योगोहि धर्मकामकोक्षाणं च साधनम् अस्ति ।
१३. उद्योगी धनम् लभते ।
१४ उद्योगी मानम लभते ।
१५. उद्योगी नभते सुखम् ।
१६. उद्योगिनं पुरुषम् आश्रयते उत्साहः विमुञ्चति दीर्घसूत्रता ।
१७. केनापि कविना उक्तम्—

सोद्योगं नरमायात्ति विवशाः सर्वं सम्पदाः ।
निपानमिव मण्डूकाः सरःपूर्णं मिवाण्डजाः ॥

हिन्दी अनुवाद

१. उद्योग अध्यवसाय का पर्याय है ।
२. जो कार्यों में आलस्य रहित होता है वह उद्योगी मनुष्य होता है ।

३. उद्योगी के लिए संसार में कुछ भी असाध्य नहीं है।
४. उद्योगी दुर्लभ को प्राप्त करता है, धन पैदा करता है।
५. उद्योग के बल से मूर्ख भी विद्वान हो सकता है।
६. उद्योग से सफलता आती है।
७. अनेक बार असफल हुआ भी मनुष्य अध्यवसाय से सुनिश्चित सिद्धि को प्राप्त करता है।
८. कार्य उद्यम से ही सिद्ध होते हैं।
९. कार्य को करने का इच्छुक सुख दुःख को नहीं गिनता।
१०. लक्ष्मी गृहदासी के समान उद्योगी के घर का सेवन करती है।
११. उद्योग समस्त कल्याणों का घर है एवं समस्त सम्पत्तियों का मूल है।
१२. उद्योग ही धर्म अर्थ काम और मोक्ष का साधन है।
१३. उद्योगी धन प्राप्त करता है।
१४. उद्योगी मान प्राप्त करता है।
१५. उद्योगी सुख प्राप्त करता है।
१६. उद्योगी का उत्साह अश्रय लेता है, दीर्घ सूत्रता छोड़ देता है।
१७. किसी कवि ने कहा है—
उद्योगी पुरुष के पास विवश सारी सम्पत्तियाँ आजाती हैं। सरोवर पर जैसे मेंढक एवं पूर्ण सरोवर पर अंडज।

२८—भगवान बुद्ध

१. प्राचीन भारते एका कपिलवस्तु नाम नगरी आसीत्।
२. तत्र गौतम गोत्रे शाक्यवंशीयाः क्षत्रियाः नृपतयः वभूकः।
३. तेपु शुद्धोदनः नाम राजा आसीत्।
४. तस्य महिषी माया देवी नाम्नी आसात्।
५. एषाम् पुत्रः सिद्धार्थः आसीत्।
६. कालादयं बुद्धदेव इति ख्यातिं जगाम।
७. बाल्यकालेनैव सिद्धार्थः कुशाग्र बुद्धि आसीत्।
८. स्वल्पेनैव कालेन सिद्धार्थः नाना विद्यासु पारदर्शी वभूव।
९. बाल्यकाले नैव एतस्य चितस्य वैराग्यम् अपि विवृधे।

१०. यशोधरा सिद्धार्थस्य पत्नी आसीत् ।
११. राहुल नाम्नः सिद्धार्थ तस्य पुत्रः आसीत् ।
१२. परंच संसारस्य कष्टान् दृष्टवा तस्य हृदयं अत्यधिकं दूयते स्म ।
१३. अस्य उपायं ज्ञातुं स एकस्यां निशायां पितरं, पत्नीं, नवकुमारं राज्यादिकं च परिहास गृहात् बहिः जगाम ।
१४. ज्ञानं प्राप्य सः बुद्धः अभवत् ।
१५. तेन धर्मस्य प्रचारम् अकरोत् । सः धर्मः बौद्धधर्मः इति कथ्यते ।
१६. बुद्धदेवस्य बहवः शिष्याः बभूवुः ।
१७. ते पृथिवीं सर्वतः बौद्धमत प्रचारयामास ।

हिन्दी अनुवाद

१. प्राचीन भारत में एक कपिलवस्तु नाम की नगरी थी ।
२. वहाँ पर गौतम गोत्र में शाक्यवंशीय क्षत्री राजा थे ।
३. उनमें शुद्धोदन नाम का राजा था ।
४. उसकी रानी मायादेवी नाम की थी ।
५. सिद्धार्थ इनका बेटा था ।
६. कुछ समय बाद यह बुद्धदेव के नाम से प्रसिद्ध हुए ।
७. बाल्यकाल से ही सिद्धार्थ कुशाग्र बुद्धि थे ।
८. थोड़े ही समय में सिद्धार्थ अनेक विद्याओं पारदर्शी हो गए ।
९. बचपन से ही इनके हृदय में वैराग्य भी बढ़ गया ।
१०. यशोधरा सिद्धार्थ की पत्नी थी ।
११. राहुल नामक सिद्धार्थ का पुत्र था ।
१२. लेकिन संसार के कष्टों को देखकर इनका हृदय बहुत अधिक दुखित होता था ।
१३. इसका उपाय जानने के लिए वह एक रात को पिता, पत्नी, नवकुमार एवं राज्यादिक को छोड़कर बाहर चला गया ।
१४. ज्ञान प्राप्त कर वह बुद्ध हो गया ।
१५. उसने धर्म का प्रचार किया । वह धर्म बौद्ध कहलाता है ।

१६. बुद्धदेव के अनेक शिष्य हुए।
१७. उन्होंने पृथ्वी पर चारों ओर बौद्धमत का प्रचार किया।

२९—वायुयानम्

१. वायुना याति इति वायुयानम्।
२. इदम् व्योयमानं विमानं वा कथ्यते।
३. इदम् अन्तरिक्षयात्रा साधन अस्ति।
४. पुरा भारतीया महर्षयः वायुयानम् आविश्चक्रुः।
५. बाल्मीकि रामायणे पुष्पक विमानस्य वर्णनः अस्ति।
६. राजर्षयः अन्ये च भारतीय वैज्ञानिकाः विमान निर्माणविषयकान् ग्रन्थान् व्यरचयन्।
७. महर्षिः भारद्वाजः यन्त्र सर्वस्वम् अनिखत्।
८. नारायणः विमान चन्द्रिकाम् व्यरचयत्।
९. अधुना तु महावायुयानं गैस द्वारा खे प्रधावते।
१०. तृतीयस्यां शताब्धां फ्रांसदेशे जोसफ जाबेम्सौ प्रथमं लीलया निर्मितम् कार्गलं व्योमयनं आकाशपथम् उड्डपयाभास।
११. अनन्तरं चार्ल्स अभिधेयः वैज्ञानिकः परिशनगराद् हायड्रोजन परिचालिनेन व्योमयानेन ख मण्डलं परिबभ्राम।
१२. ततः अस्य समुन्नतये फ्रांसे इग्लैंडे च बहवो विद्वासः प्रायतन्त।
१३. इदानीं महन्ति वायुयानानि सन्ति।
१४. अधुना तु सर्वत्र एव उपनिवेशेषु राजकीयेन प्रबन्धेन आकाशमार्गेण यात्रा समारब्धा।
१५. इदानीम् भारतवर्षे इन्द्रप्रस्थ मोहमयी, कलिकाता, मद्रास, योधपुरादिषु नगरेषु व्योमयानानाम् अवस्थानसंघा सन्ति।
१६. एतेषाम् आकाशमार्गेण सार्वजनीने यात्रासौकर्यम् भवति।

हिन्दी अनुवाद

१. वायु में जो चले वह वायुयान होता है।
२. इसे व्योमयान या विमान भी कहा जाता है।

३. यह अन्तरिक्ष यात्रा का साधन है।
४. प्राचीनकाल में भारतीय महर्षियों ने विमान का आविष्कार किया था।
५. वाल्मीकि रामायण में पुष्पक विमान का वर्णन है।
६. राजर्षियों एवं अन्य भारतीय वैज्ञानिकों ने विमान निर्माण से सम्बन्धित ग्रन्थों को रचा था।
७. महर्षि भारद्वाज ने 'यंत्र सर्वस्व' नामक ग्रन्थ लिखा।
८. नारायण ने विमान चन्द्रिका लिखी थी।
९. वर्तमान में बड़े बड़े वायुयान गैस द्वारा आकाश में दौड़ते हैं।
१०. तीसरी शताब्दी में फ्रांसदेश में जौसफ एवं जौवेक्स ने खेल में बनाए हवाई जहाज को आकाश में उड़ाया।
११. इसके बाद चार्ल्स नामक वैज्ञानिक पेरिस नगर से हायड्रोजन के द्वारा चलाये गये व्योमयान से आकाश में उड़े।
१२. इसके बाद इसकी उन्नति के लिए फ्रांस एवं इगलैंड में बहुत से विद्वानों ने प्रयत्न किए।
१३. इस समय बहुत से वायुयान हैं।
१४. इस समय सभी उपनिवेशों में राजकीय प्रबन्ध से आकाश मार्ग से यात्रा प्रारम्भ कर दी हैं।
१५. इस समय भारतवर्ष में दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, जोधपुर आदि नगरों में हवाई अड्डे हैं।
१६. इनमें आकाशमार्ग से सार्वजनिक यात्रा सुलभ होती है।

३०—सत्पुरुष के लक्षण

१. अस्मिन् जगति प्राणिनां मध्ये मानवः सर्वश्रेष्ठः अस्ति।
२. मानवानां बहु प्रकाराः भवन्ति।
३. केचित् सज्जनाः, केचित् दुर्जनाः केचित् अधमाः भवन्ति।
४. सत्पुरुषस्य लक्षणानि अनेकानि सन्ति।
५. यस्य आचरणः श्रेष्ठः मधुरः, सरलः भवति स एव सत्पुरुषः कथ्यते।
६. वेद व्यासेन उक्तम् "सर्वत्र च दयावन्तः सन्तः करुण वेदिनः"।

७. महाकवि कालिदासेनापि उक्तम्—"प्रासादसौम्यानि सतां सुहृज्जने पतंति चक्षूंषि न दासणाः शराः"।

८. साधवः शूर्य वत् भवन्ति।

९. साधवः शूर्यवत् दोषान् त्यत्ति गुणान् च गृह्णन्ति।

१०. सत्पुरुषः अन्यान् जनान् कष्टं कदापि न ददाति।

११. सत्पुरुषः परेषां दुःखानि हर्तुम् सदैव प्रयतेत।

१२. सत्पुरुषः निःस्वार्थं भावेनैव परोपकारं करोति।

१३. सत्पुरुषस्य हृदयः नवनीतवत् भवति।

१४. सत्पुरुषः सर्वदा मृदुभाषी भवति।

१५. महाकवि भर्तृहरिणा उक्तम्—

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा,
स्त्रिभुवनमुपकार श्रेणिभिः प्रीणयन्तः
परगुण परमाणून् पर्वती कृत्यं नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।

हिन्दी अनुवाद

१. इस संसार में प्राणियों के बीच मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है।

२. मनुष्य के अनेक प्रकार होते हैं।

३. कुछ सज्जन होते हैं, कुछ दुर्जन और कुछ अधम होते हैं।

४. सत्पुरुष के लक्षण अनेक हैं।

५. जिसका आचरण श्रेष्ठ, मधुर, सरल होता है उसी को सत्पुरुष कहते हैं।

६. वेद व्यास ने कहा है कि सज्जनों का यह लक्षण है कि वे सदा दया करने वाले और करुणाशील होते हैं।

७. महाकवि कालीदास ने कहा है—सज्जन अपने मित्रों पर कृपा की दृष्टि डालते हैं शरों की वर्षा नहीं करते।

८. साधू लोग रूप के समान होते हैं।

९. साधू रूप के समान दोषों को त्याग देते हैं और गुणों को ग्रहण करते हैं।

१०. सत्पुरुष अन्य पुरुषों को कभी भी कष्ट नहीं देता।

११. सत्पुरुष दूसरों के दुखों को दूर करने के लिये सदैव प्रयत्न करता है।
१२. सत्पुरुष निस्वार्थ भाव से ही परोपकार करता है।
१३. सत्पुरुष का हृदय नवनीत के समान होता है।
१४. सत्पुरुष सदैव मीठा बोलने वाला होता है।
१५. महाकवि भर्तृहरि ने कहा है—

मन वचन और शरीर में पुण्यामृत से परिपूर्ण, उपकारों से तीनों लोकों को तृप्त करने वाले और दूसरों के अणुमात्र गुण को पर्वत के बराबर मानकर अपने हृदय में प्रसन्न होने वाले सज्जन कितने हैं। अर्थात् इन गुणों से सम्पन्न सज्जन संसार में इने गिने हैं।

३१—सदाचारः

१. सतां सत्पुरुषाणाम् आचारः सदाचार कथ्यते।
२. स्व कर्तव्यपालनमपि सदाचारः उच्यते।
३. यः आचारः मधुरः भवति, येन जनानां जीवनं सफलं भवति स एव सदाचार धर्मः कथ्यते।
४. सदाचारी पुरुषाः उदार चरिताः भवन्ति।
५. सर्वे वेदाः उपदिशन्ति यत् आचारः परमोधर्मः, आचारात् लभते अपु।
६. ये जनाः सदाचारिणः भवन्ति ते सदैव विश्वकल्याणं कुर्वन्ति।
७. सर्वेजनाः सदाचारिणाम् आहरं कुर्वन्ति।
८. सदाचारी एव उन्नतिपथम् अरोहति।
९. सदाचार बलेनैव मानवः यशं प्राप्नोति, धनं अर्जयति।
१०. सदाचार बलेनैव मानवः परलोक सिद्धिम् अपि प्राप्नोति।
११. दुराचारस्य परिणामः दुःखदः भवति, सदाचारस्य परिणामः सुखदः भवति।
१२. सदाचरस्य रक्षणार्थम् केनापि उक्तम्—

अक्षीणोऽपि ततः क्षीणः वृत्ततस्तु हतो हतः।
वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्त मायाति याति च॥

१३. मनुष्यः सदाचारणेनैव समाजस्य देशस्य उन्नतिं कृतुं शक्नोति।

१४. सदाचरणेनैव भीष्म पितामहः, दिलीपः महात्मा गांधि प्रभृतय, ख्याति प्राप्तवान् ।

१५. अतः वयं सदाचारिणः भवति व्यम् ।

हिन्दी अनुवाद

१. सज्जनों, सत्पुरुषों के आचरण को सदाचार कहते हैं ।

२. कर्त्तव्य का पालन भी सदाचार कहलाता है ।

३. जो आचरण मधुर होता है, जिससे मनुष्यों का जीवन सफल होता है वह ही सदाचार कहलाता है ।

४. सदाचारी पुरुष उदार चरित्र होते हैं ।

५. सारे वेद उपदेश देते हैं कि आचरण परम धर्म है और आचरण से आयु की प्राप्ति होती है ।

६. जो मनुष्य सदाचारी होते हैं वे सदैव विश्व कल्याण किया करते हैं ।

७. सभी मनुष्य सदाचारियों का आदर करते हैं ।

८. सदाचारी ही उन्नति पथ पर चढ़ता है ।

९. सदाचार के बल से ही मनुष्य यश प्राप्त करता है धन पैदा करता है ।

१०. सदाचार के बल से ही मनुष्य परलोक सिद्धि भी प्राप्त करता है ।

११. दुराचार का परिणाम दुखदाई होता है और सदाचार का परिणाम सुखदायी होता है ।

१२. सदाचार की रक्षा के लिये किसी ने कहा है—
धन से हीन होने पर भी क्षीण नहीं होता, आचरण से हीन होने पर वह मर जाता है । अतः आचरण की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि धन तो आता जाता रहता है ।

१३. मनुष्य सदाचार से ही समाज और देश की उन्नति कर सकता है ।

१४. सदाचार से ही भीष्म पितामह, दिलीप, महात्मा गांधी आदि ने यश प्राप्त किया ।

१५. अतः हमको भी सदाचारी होना चाहिए ।

७. चोरः विद्यांनहर्तुम् शक्नोति ।
८. विद्या अनेकाः लाभाः सन्ति ।
९. विद्ययाः सर्वाणि सुखानि प्राप्तुं शक्नोति ।
१०. विद्या विनयं ददाति ।
११. विनयात् पात्रताम् आयाति, पात्रत्वात् नरः धनं प्राप्नोति ।
१२. धनात् धर्मः भवति ततः नरक सुखं प्राप्नोति अनेन प्रकारेण विद्यया सर्वे लाभाः सन्ति ।
१३. केनचित् हिन्दी भाषया. कविना उक्तम्—
विद्या के सम धन नहीं, जग में कहत सुजान ।
विद्या ही से मनुज लघु, होवे भूप समान ॥
१४. विद्यया अमृत अश्नुते ।
१५. आचार्य चाणक्ये उक्तम् —
रूप यौवन सम्पन्नाः विशाल कुल सम्भवाः ।
विद्या हीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥
१६. अनेन सिध्यति यत् विद्या सर्वस्य भूषणम् अस्ति ।

हिन्दी अनुवाद

१. शास्त्र का ये वचन है कि विद्या सब का भूषण है ।
२. राजा केवल स्वदेश में पूजा जाता है परन्तु विद्वान सब जगह पूजा जाता है ।
३. विद्वान सब जगह सम्मान पाता है, उच्च पदवी पाता है ।
४. एक सुसंस्कृत वाणी पुरुष का अलंकरण करती है ।
५. समस्त अभूषण नष्ट हो जाते हैं परन्तु वाणी रूपी भूषण कभी भी नष्ट नहीं होता ।
६. विद्या का अपूर्व खजाना है ।
७. चोर विद्या को चुरा नहीं सकता ।
८. विद्या से अनेक लाभ हैं ।
[illegible] से सब सुख प्राप्त हो सकते हैं ।
१२. सज्जन [illegible] है ।
१३. जो मनुष्य अप[illegible]

११. विनय से पात्रता आती है और पात्रता से धन।

१२. धन से धर्म होता है, इससे मनुष्य सुख पाता है, इस प्रकार से विद्या से अनेक लाभ हैं।

१३. किसी हिन्दी भाषा के कवि ने कहा है—
विद्या के समान धन नहीं है, ऐसा विद्वान कहते हैं। विद्या से छोटा आदमी भी राजा के समान हो जाता है।

१४ विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है।

१५. आचार्य चाणक्य ने कहा है—
सुन्दर तरुणाई से युक्त और बड़े कुल में उत्पन्न भी विद्या हीन मनुष्य ऐसे शोभित नहीं होते जैसे गन्धहीन पलाश के फूल।

१६. इससे सिद्ध होता है कि विद्या सबका भूषण है।

३४—विद्या धर्मेण शोभते

१. सुखस्य कारणम् धर्म अस्ति। इति तु सर्वे भारतीयाः जानन्ति।

२. धर्मस्य कारणं विद्या अस्ति।

३. विद्यया एव मनुष्यः योग्यो भवति।

४. विद्या सर्वसुखानां कारणं वर्तते।।

५. यथा अन्धकारे विद्यमानं अपि वस्तुं नरः न पश्यति तथैव विद्या विहीनः अन्यस्य महत्ताम् न पश्यति।

६. परन्तु केचित् क्षुद्र जनाः अल्पेनैव ज्ञानेन आत्मानं सर्वं ज्ञान मन्यन्ते।

७. एते मदान्धः हस्ती इव दर्पयुक्ताः भवन्ति।

८. ये जनाः शास्त्रस्य विपरीतं आचरन्ति ते निन्दिताः भवन्ति।

९. एतेः जनाः सर्वनाशम् प्राप्नुवन्ति।

१०. नीति शास्त्रे कथितम—
विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्ति परेषां परपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीत मेतत्।
ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय।।

११. खलानां विद्या परपीडनाय भवति ।
१२. सज्जनानां विद्या परेषां हितसाधनार्थं भवति ।
१३. ये जनाः स्व विद्यया धर्मम् कुर्वन्ति ते समानस्य उन्नतिं कुर्वन्ति ।
१४. रावणः महाविद्वान् विद्यावान् च आसीत् परंच स अधर्मी आसीत् अनेन कारणेन रामः तस्य वधं अकरोत् ।
१५. विद्यया परेषां हितं करणीयम्, अस्मिन् एव विद्याया, सार्थक त्वं अस्ति ।
१६. शास्त्रस्य अपि वचनं इदं अस्ति—
विद्या धर्मेण शोभते ।

हिन्दी अनुवाद

१. सुख का कारण धर्म है इसे सब भारतीय जानते हैं ।
२. धर्म का कारण विद्या है ।
३. विद्या से मनुष्य योग्य होता है ।
४. विद्या सब सुखों का कारण है ।
५. जैसे अन्धकार में विद्यमान वस्तु को भी मनुष्य नहीं देख सकता उसी प्रकार विद्या विहीन अन्य की महत्ता को नही देखते ।
६. लेकिन कुछ क्षुद्र मानव थोड़े से ही ज्ञान से अपने को सर्वज्ञ मानते हैं ।
७. ये मदान्ध हाथी के समान दर्पयुक्त होते हैं ।
८. जो मनुष्य शास्त्र के विपरीत आचरण करते हैं वे निन्दित होते हैं ।
९. ये मनुष्य सर्वनाश को प्राप्त होते हैं ।
१०. नीति शास्त्र में कहा गया है—
विद्या विवाद के लिये, धन मद के लिए, शक्ति दूसरों को पीड़ा देने के लिये दुष्टों को होती है परन्तु साधुओं के लिये ये चीजें विपरीत होती हैं विद्या ज्ञान के लिये, धन दान के लिये और शक्ति दूसरों की रक्षा के लिये होती है ।
११. खलों को विद्या परपीडन को होती है ।
१२. सज्जनों के लिए विद्या दूसरों के हित साधनार्थ होती है ।
१३. जो मनुष्य अपनी विद्या से धर्म करते हैं वे समाज की उन्नति करते हैं ।

१४. रावण महाविद्वान और विद्यावान था लेकिन अधर्मी था इस कारण से राम ने उसका वध कर दिया।
१५. विद्या से दूसरों का हित करना चाहिए इसी में विद्या की सार्थकता है।
१६. शास्त्र का भी वचन यह है कि विद्या धर्म से सुशोभित होती है।

३५—बसन्त ऋतु

१. एकस्मिन् वर्षे षडऋतवः भवन्ति।
२. ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त, शरद्, शिशिरः, वसन्तश्च ऋतूनाम् नामानि सन्ति।
३. एतेषु बसन्तऋतु सर्वश्रेष्ठः अस्ति।
४. एषः बसन्त ऋतु अतीव मनोहराः अस्ति अतः ऋतूनाम एजा इयम् कथ्यते।
५. अस्माकं देशे सर्वेऽपि ऋतवः क्रमेण आयान्ति।
६. माघमासस्य शुक्लपक्षे पञ्चमीतः अस्य प्रारम्भः भवति।
७. बसन्तेः प्रकृतिः रम्यं रूपं धारयति।
८. बसन्ते आगते सर्वे वनस्पतयः नवपल्लवैः नव अङ्कुरैश्च शोभिताः भवन्ति।
९. प्रातः सर्वेषां वृक्षाणां पुष्पसमृद्धिः इदानीमेव भवति।
१०. अस्मिन् एव काले आम्रवृक्षेषु मञ्जर्यः शोभन्ते।
११. अस्मिन् एवकाले कोकिलानां काकली श्रूयते।
१२. अस्मिन् एवकाले सरोवरेषु कमल पुष्पाणि विकसन्ति।
१३. विकसितानि पुष्पाणि अस्माकं चेतांसि मोहयन्ति।
१४. अस्मिन् ऋतौ केवलं वृक्षेषु नवजीवन संचारः न भवति अपितु प्राणिनां शरीरेष्वापि नवरक्तस्य संचारो भवति।
१५. सर्वेषां मनांसि नवचेतना, नवीना भावना, नूतन मादकता चोत्पद्यते।
१६. गीतायां भगवद्वचनम् अस्ति 'ऋतूनां कुसुमाकरः अहं अस्ति।

हिन्दी अनुवाद

१. एक वर्ष में छः ऋतु होती हैं।
२. ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त, शरद्, शिशिर और बसन्त ऋतुओं के नाम हैं।

३. इनमें वसन्त ऋतु सर्वश्रेष्ठ है।
४. यह बसन्त ऋतु अत्यन्त मनोहर है अतः इसे ऋतुओं का राजा कहा जाता है।
५. हमारे देश में सभी ऋतुएँ क्रम से आती हैं।
६. माघ मास की शुक्लपक्ष की पंचमी से इसका प्रारम्भ होता है।
७. बसन्त ऋतु में प्रकृति रम्य रूप धारण करती है।
८. वसन्त के आने पर सभी वनस्पतियाँ नवीन पल्लवों और नवीन अंकुरों से शोभित हो जाती हैं।
९. प्रायः सभी वृक्षों की पुष्प समृद्धि इसी समय होती है।
१०. इस समय ही आम के पेड़ों में मंजरी शोभित होती हैं।
११. इसी समय में कोयलों की कूक सुनी जाती है।
१२. इसी समय सरोवरों में कमल पुष्प खिलते हैं।
१३. विकसित पुष्प हमारे चितों को मोहित करते हैं।
१४. इस ऋतु में केवल वृक्षों मे नवजीवन का संचार नहीं होता अपितु प्राणियों के शरीर में भी नये रूप का संचार होता है।
१५. सब के मन में नव चेतना, नवीन भावना, नूतन मादकता उत्पन्न होती है।
१६. गीता में भगवान का वाक्य है कि ऋतुओं मे मैं कुसुमाकर हूँ।

३६—वर्षाऋतु

१. बसन्तः ऋतुराज अस्ति परंच वर्षर्तुः ऋतुराजस्थ मंत्री अस्ति।
२. सर्वेषां ऋतूनां समृद्धिः वर्षाधीना एव अस्ति।
३. वर्षायाः प्राक् ग्रीष्म ऋतु भवति।
४. ग्रीष्मः जनान् प्रकृतिम् च अपि कथयति।
५. तद् कथया पीड़िताः जनाः अस्य ऋतोः आगमनं प्रतीक्षन्ते।
६. यदा अयं ऋतुः समायाति तर्हि नभे सजलाः मेघाः सर्वत्र दूरीश्यन्ते।
७. मेघाः वर्षाम् विधाय मनुष्याणां मनांसि मोदयन्ते।
८. वर्षा नहि केवलम् प्राणिनाम् उपकार कर्त्री अस्ति।
९. वर्षा वन नदी तडागानां जीवन धायिनी है।

१०. वर्षाकाले शुष्का वनश्रीः कोमले, शोभनं हरित परिधानं धारयति ।
११. नीलमेघा श्रिताः विद्युत् प्रकाशं करोति ।
१२. मेघः स्वध्वनिभिः मयूरान् नर्तयति ।
१३. अस्मिन् एव काले वने भ्रमराः गुञ्जन्ति, मयूराः नृत्यन्ति, गजेन्द्राः पशवश्च विचरन्ति ।
१४. अस्मिन् एव काले गगन मण्डले सुरेन्द्रचाप विभाव्यते ।
१५. इत्थं अयं ऋतुः सर्वान् सुखं ददाति ।
१६. वर्षा बिन कस्यापि समृद्धिः भवितुम नहिति ।

हिन्दी अनुवाद

१. वसन्त ऋतुराज है लेकिन वर्षा ऋतु ऋतुराज का मन्त्री है ।
२. सभी ऋतुओं की समृद्धि वर्षा के आधीन ही है ।
३. वर्षा से पूर्व ग्रीष्म ऋतु होती है ।
४. ग्रीष्म मनुष्यों एव प्रकृति को भी पीड़ित करती है ।
५. उस व्यथा से पीड़ित मनुष्य इस ऋतु के आगमन की बाट देखते हैं ।
६. जब यह ऋतु आती है तो नभ में सजल मेघ सब जगह दिखलाई देते हैं ।
७. मेघ वर्षा करके मनुष्यों के मनों को मोहित करते हैं ।
८. वर्षा केवल प्राणियों का उपकार करने वाली नहीं है ।
९. वर्षा वन नदी और तालाबों को जीवन देने वाली है ।
१०. वर्षाकाल में सूखी वन की शोभा कोमल, शोभन हो वस्त्र धारण करती है ।
११. नीले मेघों में रहने वाली बिजली प्रकाश करती है ।
१२. बादल अपनी ध्वनि से मोरों को नचाते हैं ।
१३. इसी समय ही वन में भौंरे गूञ्जते हैं मयूर नृत्य करते हैं, हाथी और पशु विचरण करते हैं।
१४. इसी समय में आकाश में इन्द्रधनुष दिखलाई देता है।
१५. इस प्रकार यह ऋतु सबको सुख देती है ।
१६. वर्षा के बिना किसी की भी समृद्धि नहीं हो सकती ।

३७ – शरद ऋतु

१. एकास्मिन् वर्षे षड् ऋतवः भवन्ति ।
२. एतेषु शरद ऋतु एकः सुन्दर ऋतु अस्ति ।
३. वर्षा कालस्य समाप्तौ एषः ऋतु आविर्भवति ।
४. अस्मिन् ऋतौ नभः मेघहीन प्रकाशते ।
५. सूर्यतापः सह्यः भवति ।
६. अस्मिन् काले न अधिका उष्णता भवति न अधिका शीतलता भवति ।
७. अस्मिन् ऋतौ शरच्चन्द्र ज्योत्स्ना परिपूरिताः सर्वादिशः प्रतिभान्ति ।
८. सर्वत्र वनेषु उपवनेषु श्वेतिमा दृश्यते ।
९. अस्मिन ऋतौ विकसित कमलवतानि स्वचारूहासं प्रकटयन्ति ।
१०. सर्वेषां वृक्षाणां शाखा पुष्पानाम् भारेण अवनताः जाताः ।
११. अस्मिन् काले वर्षाकाले पंकेन अवरुद्ध मार्गाः स्वच्छा भवन्ति ।
१२. नदीनां, सरोवराणां मलिनं जलं स्वच्छं भवति ।
१३. अस्मिनैव काले विजयादशमी, दीपमालिका च इति द्वौ उत्सवौ भवतः ।
१४. शरत्कालीनं दृश्यमतीव रमणीयम् भवति ।
१५. स्वास्थ्य लाभार्थम् अयं कालः अति उपयुक्तः भवति ।

हिन्दी अनुवाद

१. एक वर्ष में छः ऋतु होती हैं ।
२. इनमें से शरद ऋतु एक सुन्दर ऋतु है ।
३. वर्षाकाल के बाद यह ऋतु आती है ।
४. इस ऋतु में आकाश मेघहीन दिखाई देता है ।
५. सूर्य का ताप सह्य होता है ।
६. इस समय न अधिक गर्मी होती है और न अधिक शीतलता होती है ।
७. इस ऋतु से शरद चन्द्र की चाँदनी परिपूरित होकर सारी दिशाओं में चमकती है ।
८. सभी जगह वनों में उपवनों में श्वेतिमा दिखलाई देती है ।
९. इस ऋतु में विकसित कमल वन अपने सुन्दर हास्य को प्रकट करते हैं ।

१०. सारे वृक्षों की शाखाएं पुष्पों के भार से झुक गई हैं ।
११. इस समय वर्षाकाल में कीचड़ से अवरुद्ध मार्ग साफ हो जाते हैं ।
१२. नदियों, सरोवरों का मलिन जल स्वच्छ हो जाता है ।
१३. इसी समय में ही विजयादशमी, दीपमालिका ये दो उत्सव होते हैं ।
१४. शरत्कालीन दृश्य अत्यन्त रमणीक होता है ।
१५. स्वास्थ्य लाभ के लिये ये समय अत्यन्त उपयुक्त होता है ।

३८—ग्रीष्म ऋतु

१. एकस्मिन् वर्षे षड् ऋतवः भवन्ति ।
२. ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त, शरद्, शिशिरः वसन्तश्च ऋतूनाम् नामानि सन्ति ।
३. ग्रीष्म ऋतुः वसन्त ऋतोः अनन्तरं अयाति ।
४. ज्येष्ठः आषाढ़श्च इमौ द्वौ मासौ ग्रीष्मः इति कथ्यते ।
५. अस्मिन् ऋतौ उष्णता सर्वाधिका भवति ।
६. उष्मणाऽभिसंतप्ताः जनाः सर्वदा आतपं विहाय छायां एव इच्छन्ति ।
७. ग्रीष्मस्य प्रचण्ड आतपेन सम्पूर्ण लोकाः मूर्च्छित इव भवति ।
८. प्रस्वेदेन सर्वेषां शरीराणि आद्राणि भवन्ति ।
९. ग्रीष्मस्य प्रचण्ड आतपेन सन्तप्ताः जनाः अमृत वर्षिणं चन्द्रम् अभिलषन्ति ।
१०. अस्मिन् एवकाले वायुः अपि शीतलतां विहाय उष्णतां धारयति ।
११. सम्पूर्णः जगतः दग्धे इव प्रति भाति ।
१२. ग्रीष्मे सर्वे तडागाः शुष्काः भवन्ति ।
१३. अस्मिन् एव काले समस्तं जगत् तपोवनमिव दृश्यते ।
१४. आम्र जम्बूमधूकाणां शोभा अस्मिन् ऋतौ अधिका भवति ।
१५. केनचित् कविना उक्तम्—

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीय चन्द्रमाः
सदावगाहक्षम—वारि संचयः ।
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथे ।
निदाघकालोऽयमुपागतः प्रिये ॥

हिन्दी अनुवाद

१. एक वर्ष में छः ऋतु होती हैं।
२. ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त, शरद, शिशिर और वसन्त ऋतुओं के नाम हैं।
३. ग्रीष्मऋतु वसन्त ऋतु के बाद आती है।
४. ज्येष्ठ और आषाढ़ ये दो महीने ग्रीष्म कहलाते हैं।
५. इस ऋतु में गर्मी सबसे अधिक होती है।
६. गर्मी से संतप्त मनुष्य हमेशा गर्मी को छोड़कर छाया ही चाहते हैं।
७. ग्रीष्म के प्रचण्ड आतप से सम्पूर्ण लोक मूर्च्छित के समान हो जाता है।
८. पसीने से सबके शरीर भीग जाते हैं।
९. ग्रीष्म के प्रचण्ड आतप से सन्तप्त मनुष्य अमृत वर्षी चन्द्रमा को चाहते हैं।
१०. इसी समय ही वायु भी शीतलता को छोड़कर गर्मी धारण कर लेती है।
११. सारा संसार जला सा दिखलाई देता है।
१२. गर्मी में सारे तालाब सूख जाते हैं।
१३. इसी समय में सारा संसार तपोवन जैसा दिखलाई देता है।
१४. आम, जामुन और महुक की शोभा इस ऋतु में अधिक होती है।
१५. किसी कवि ने कहा है—

सूर्य प्रचण्ड है, चन्द्रमा अच्छा लगता है, जलाशयों में सदैव स्नान किये जाने योग्य हैं, सन्ध्या अच्छी लगती हैं, कामदेव शान्त हो गया है, ऐसी यह ग्रीष्म ऋतु आगई है।

३९—शिक्षायाः महत्व

१. आहार निद्रादयः प्रवृत्तयः मनुष्येषु पशुषु च समानाः।
२. धर्मेणैव मनुष्यः पशुभ्यः उच्च तिष्ठति।
३. धर्माधर्मस्य ज्ञानं शिक्षया विना न भवति।
४. अतः विद्याहीनः पुरुषः पशु तुल्यः अस्ति।
५. अद्यावधि पर्यन्तं मानवस्य यः बहुमुखी विकासो अस्ति तस्य परिचायिकाऽपि विद्या एव अस्ति।
६. स्व इतिहासस्य, संस्कृते, च परिचयं अपि वयं शिक्षया एव प्राप्नुमः।

७. शिक्षाहीन पुरुषः कूपमण्डूकवत् भवति ।
८. तस्य ज्ञानस्य क्षेत्रं अत्यन्त सीमितं भवति ।
९. वर्त्तमाने तु शिक्षाहीनस्य केनापि प्रकारेण उन्नतिः सम्भवं नास्ति ।
१०. ज्ञान-विज्ञानेषु, अशिक्षितस्य चञ्चु प्रवेशोऽपि न भवति ।
११. अशिक्षिताः नागरिकाः राष्ट्रस्य भारस्वरूपाः भवति ।
१२. ते स्वाधिकाराणां कर्त्तव्यानां च महत्वं न जानन्ति ।
१३. अस्माकम् देशे शिक्षायाः न्यूनता देशस्य उन्नत्यां बाधा भवति ।
१४. अशिक्षिताः जनाः जातेः धर्मस्य, लोभस्य वा आधारे स्व मतस्य दुरुपयोगं कुर्वन्ति ।
१५. अतः निजस्य, देशस्य च उन्नत्यर्थं वयं स्वयं शिक्षिताः भवाम देशे च शिक्षायाः प्रचारं करवामं ।

हिन्दी अनुवाद

१. अहार, निद्रा इत्यादि प्रवृत्तियाँ मनुष्यों एवं पशुओं में समान हैं।
२. धर्म से ही मनुष्य पशुओं से ऊँचा होता है ।
३. धर्म अधर्म का ज्ञान शिक्षा के बिना नहीं होता ।
४. अतः विद्या से रहित पुरुष पशु तुल्य होता है ।
५. आज तक मानव का जो बहुमुखी विकास है उसकी परिचायिका भी भी विद्या ही है ।
६. अपने इतिहास का, संस्कृति का परिचय भी हम शिक्षा से ही पाते हैं ।
७. शिक्षा से रहित मनुष्य कूप मंडूक के समान होता है ।
८. उसके ज्ञान का क्षेत्र बहुत सीमित होता है ।
९. वर्तमान में तो शिक्षा से हीन मनुष्य की उन्नति किसी भी प्रकार से संभव नहीं हो सकती ।
१०. ज्ञान विज्ञान में अशिक्षित का थोड़ा भी प्रवेश नहीं होता ।
११. अशिक्षित नागरिक राष्ट्र के भारस्वरूप होते हैं ।
१२. वे अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के महत्व को नहीं जानते ।
१३. हमारे देश में शिक्षा की कमी देश की उन्नति में बाधक होती हैं ।

१४. अशिक्षित मनुष्य जाति, धर्म और लोभ के आधार पर अपने मत का दुरुपयोग करते हैं ।

१५. अतः अपनी और देश की उन्नति के हेतु हम स्वयं शिक्षित हों और देश में शिक्षा का प्रचार करें ।

४०—संस्कृत भाषा

१. संस्कृत भाषा विश्वस्य प्राचीनातमासु भाषासु गण्यते ।

२. वेदाः अस्याः भाषायः एव आदि ग्रन्थानि सन्ति ।

३. न कश्चिदपि भाषायाः इयत् प्राचीनं साहित्यं उपलभ्यते ।

४. संस्कृत भाषायाः आदि कवि महर्षिः वाल्मीकिः आसीत् ।

५. सः आदि काव्यस्य रामायणस्य रचनां कृतवान् ।

६. महामुनि व्यासः अस्याः द्वितीया विभूतिः अस्ति ।

७. सः विश्वस्य अद्वितीयं ग्रन्थं महाभारते प्रणीतवान् ।

८. संस्कृतस्य सर्वप्रमुखः वैयाकरणः महर्षि पणिनिः आसीत् ।

९. तस्य अष्टाध्यायी व्याकरणस्य अद्भुतं ग्रन्थ अस्ति ।

१०. संस्कृते जीवनस्य सर्वेषु विषयेषु असंख्या ग्रन्थ राशिः उपलब्धा अस्ति ।

११. नाटकानि, काव्यानि, कथाः, प्रबन्धामि, ललितकला—साहित्यम्, वैज्ञानिक साहित्यम् सर्वे अत्र विराजन्ते ।

१२. संस्कृत भाषायाः स्वर माधुर्यं सर्वेषां मनांसि मोहयति ।

१३. संस्कृत भाषायां अस्माकं संस्कृतिः सुरक्षिता अस्ति ।

१४. प्रत्येकस्य भारतीयस्य इदं पावनं कर्त्तव्यं यत् सः संस्कृतस्याध्ययनं कुर्यात् ।

१५. संस्कृत भाषायाः महत्वं वेदिशिका अपि जनाः मुक्तकण्ठेन स्वीकुर्वन्ति ।

हिन्दी अनुवाद

१. संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में गिनी जाती है ।

२. वेद इस भाषा के ही प्राचीन ग्रन्थ हैं ।

३. किसी भी भाषा का इतना प्राचीन साहित्य नहीं मिलता ।

४. संस्कृत भाषा के आदि कवि बाल्मीकि थे ।

५. उन्होंने आदि काव्य रामायण की रचना की ।

६. महामुनि व्यास इसकी दूसरी विभूति थे ।
७. उन्होंने विश्व का अद्वितीय ग्रन्थ महाभारत रचा ।
८. संस्कृत के सर्व प्रमुख वैयाकरण महर्षि पाणिनि थे ।
९. उनकी अष्टाध्यायी व्याकरण का अद्भुत ग्रन्थ है ।
१०. संस्कृत में जीवन से सम्बन्धित सभी विषयों पर अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं ।
११. नाटक, काव्य, कथा, प्रबन्ध, ललितकला साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य सभी इसमें हैं ।
१२. संस्कृत भाषा की स्वर मधुरता सब के मनों को मोहित करती है ।
१३. संस्कृत भाषा में हमारी संस्कृत सुरक्षति है ।
१४. प्रत्येक भारतीय का यह पावन कर्त्तव्य है कि उसे संस्कृत का अध्ययन करना चाहिये ।
१५. संस्कृत भाषा के महत्व को विदेशी भी मुक्तकंठ से स्वीकार करते हैं ।

४१—दानम्

१. दीयते इति दानम् ।
२. दानं हि सर्वोत्कृष्टः गुणः ।
३. इदं हि वशीकरणं मंत्रं अस्ति ।
४. अनेन देवाः असीदन्ति, मित्राणि अनुरञ्जन्ति, शत्रवः मित्राणि भवन्ति ।
५. केनापि कविना सत्य उक्तम् —
दानेन भूतानि वशी भवन्ति,
दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम्
परोऽपि बन्धुत्वमुपैति दानैः—
दानं हि सर्व व्यसनानि हन्ति ।
६. दानं अनेक विधे कवितुमर्हति ।
७. विद्यादानं, भूमिदानं, धनदानं, जलदानं, कन्यादानम् इत्यादिकम् ।
८. दानेन पाणिः शोभा भवति न तु कंकणेन ।
९. दातारः परमदुर्लभाः भवन्ति ।
१०. अस्मिन् जगति त्यागोहि महान गुणः ।
११. दानेनैव गौरवेयशश्च लोके लाभः ।

१२. प्राचीन भारते बलि, शिवि, कर्ण, श्रीहर्षः, विक्रमादित्य, हरिश्चन्द्रादयः महानतमः राजानः आसन् ।

१३. पुरा दानस्य माहात्म्यं भारतीयाः जानन्ति स्म ।

१४. दानस्य माहात्म्यं भारतीयेषु ग्रन्थेषु वर्णिताः ।

१५. दानस्य प्रभावं इदं श्लोकं अपि उद्घाटयति ।

"को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ।
भृंदगो मुखलेपेन करोति मधुरध्वनिम् ।।

हिन्दी अनुवाद

१. जो दिया जाय वह दान कहलाता है ।

२. दान सर्वोत्कृष्ट गुण है ।

३. यह वशीकरण मंत्र हैं ।

४. इससे देवता प्रसन्न होते हैं । मित्र प्रसन्न होते हैं, शत्रु मित्र होते हैं ।

५. किसी कवि ने सत्य कहा है—

दान से प्राणी वश में होते हैं ।
दान से वैरियों का नाश हो जाता है ।
पराये भी दान से अपने हो जाते हैं ।
दान से सारी आपत्तियों का विनाश हो जाता है ।

६. दान से अनेक प्रकार होते हैं ।

७. विद्यादान, भूमिदान, धनदान, जलदान, कन्यादान इत्यादि ।

८. दान से हाथ की शोभा होती है कंगन से नहीं ।

९. दाता लोग परम दुर्लभ होते हैं ।

१०. इस संसार में त्याग ही महान गुण है ।

११. दान से ही गौरव और यश लोक में मिलता है ।

१२. प्राचीन भारत में राजा बलि, शिवि, कर्ण, श्रीहर्ष, विक्रमादित्य, हरिश्चन्द्र इत्यादि महान दाता राजा हुए थे ।

१३. प्राचीनकाल में भारतीय लोग दान का माहात्म्य जानते थे ।

१४. दान का माहात्म्य भारतीय ग्रन्थों में वर्णित हैं ।

१५. दान के माहात्म्य को यह श्लोक भी उद्घटित करता है।
इस संसार में मुख को पिंड से पूरित कर देने पर कौन वश में नहीं हो जाता। मृदंग भी मुख पर चून का लेप करने से मधुर ध्वनि करने लगती है।

४२—गौः

१. गौः मंगलदर्शना भवति।
२. इमे प्रकृत्या अकारेण च परमा साध्वी भवति।
३ अस्याः चत्वारः पादाः भवन्ति।
४. अस्याः पुच्छं लम्बम् भवति।
५. अस्याः सरलं शृंग युगलम्, शोभने विशाले च नेत्रे, शिक्षिते कर्णद्वयम् भवति।
६. गावः अपि बहुवर्ण भवन्ति।
७. ताः श्वेताः, कृष्णाः चित्रिता, रक्ता, धूसराः च भवन्ति।
८. गावः साधारणतया सर्वस्मिन् अपि देशे लभन्ते।
९. किन्तु आंग्लदेशोद्भवा गावः वर्तमानसमये बहु क्षीर प्रदायिन्याः भवति।
१०. गावः घासं बुसे च खादन्ति।
११. गावः भोजनान्तरम् भूमौ उपविश्य रोमन्थं कुर्वन्ति।
१२. एषा अस्मभ्वे दुग्धेददाति।
१३. अस्याः एव दुग्धेन शिशवः जीवन्ति।
१४. अस्याः दुग्धात् दधि भवति, दधः तक्रम् भवति, तक्रात् नवनीतम् भवति, नवनीतात् घृतं भवति।
१५. इयं बलीवर्धनां जननी अस्ति।
१६. ये बलीवर्धः हलेन अस्माकं क्षेत्राणि कृष्टवा धान्यम् उत्पादयन्ति।
१७. पुरा गोधनं जनानां मुख्यं धनं आसीत्।
१८. पुरा श्रीकृष्णः गोव्रजं रक्षित्वा 'गोपाल' इति नाम्ना प्रसिद्धः अभवत्।
१९. केनापि उक्तम्—
भुक्त्वा तृणानि शुष्काणि पीत्वा तोयं जलाशयात।
दुग्धं ददाति लोकेभ्यः गावो लोकस्य मातरः।

हिन्दी अनुवाद

१. गाय मंगल दर्शन होती है अर्थात् गाय का दर्शन शुभ होता है।
२. यह प्रकृति और आकार से परम साध्वी होती है।
३. इसके चार पैर होते हैं।
४. इस की पूंछ लम्बी होती है।
५. इसके दो सरल सीग, शोभन दो विशाल नेत्र और शिथिल दो कान होते हैं।
६. गायें बहुत रंगों की होती हैं।
७. वे श्वेत, कृष्ण, चित्रित, लाल और धूसर वर्ण की होती हैं।
८. गाय साधारणतया सभी देशों में पाई जाती हैं।
९. किन्तु इंगलैंड में होने वाली गायें आजकल बहुत दूध देने वाली होती है।
१०. गायें घास-भूसा खाती हैं।
११. गायें भोजन के बाद पृथ्वी पर बैठकर जुगाली करती हैं।
१२. यह हमें दूध देती है।
१३. इसी के दूध से बच्चे जीते हैं।
१४. इसके दूध से दही होता है, दही से मठा, मठा से मक्खन और मक्खन से घी होता है।
१५. यह हमारे बैलों की माँ है।
१६. जो बैल हलों से हमारे खेतों को जोतकर अनाज पैदा करते हैं।
१७. प्राचीन काल में गोधन मुख्य धन था।
१८. प्राचीनकाल में श्रीकृष्ण गायों की रक्षा करके गोपाल इस नाम से हुए।
१९. किसी ने कहा है—

सूखी घास खाकर, तालाब से जल पीकर जो संसार को दूध देती है, ऐसी गाय संसार की माता है।

४३—गजः

१. चतुष्पदां मध्ये गजः दर्शनीयः पशु अस्ति ।
२. अस्य शरीरः भूधराकार भवति ।
३. अस्य मुखं कन्दराकारं भवति च लम्बमात्र शुण्डा भवति ।
४. अस्य नेत्रौ अति लघु भवति ।
५. अस्य कर्णौः शूर्पानुकारौ भवतः ।
६. अस्य स्तम्भानुकल्पै सुदृश्ढै चतुर्भिः पादैः शामते ।
७. शुण्डा एव अस्य नासिका भवति ।
८. इयम् शुण्ड अस्य हस्त स्थाने वर्तते ।
९. शुभ्राभ्यां सुदृढ़ाभ्यां दन्ताभ्याम् अयं शोभते ।
१०. गजाः लंकायाम्, अफ्रीका प्रान्तेषु अपि अन्यत्र स्थाने च लभन्ते ।
११. गजाः प्रामेण मेघ श्याम कान्तयः भवन्ति ।
१२. कश्चिद धवला अपि श्रूयन्ते ।
१३. गजाः वन्य फलानि, वेशदलानि लताः पत्राणि इक्षु दण्डानि च खादन्ति ।
१४. गजाः महावतस्य आदेशं अनुपालयन्ति ।
१५. ब्रह्मदेशे, भारते अपि च गजाः काष्ठभारान् बहन्ति ।
१६. अयं गजः माङ्गलिकवस्तुषु गण्यते ।

हिन्दी अनुवाद

१. चौपायों में हाथी दर्शनीय पशु होता है ।
२. इसका शरीर पर्वताकार होता है ।
३. इसका मुख गुफा जैसा और लम्बी सूंड होती है ।
४. इसके नेत्र छोटे होते है ।
५. इसके कान सूप के आकार के होते हैं ।
६. इसके हाथी के खंभे के समान सुदृढ़ चार पैर शोभित होते हैं ।
७. सूंड ही इसकी नाक होती है ।
८. यह सूंड इसके हाथ के स्थान पर होती है ।
९. सफेद, मजबूत दाँतों से इसकी शोभा होती है ।
१०. हाथी लंका में, अफ्रीका के प्रान्तों में अन्य स्थानों पर भी पाये जाते हैं ।

११. हाथी प्रायः काले होते हैं।
१२. कुछ सफेद भी सुने जाते हैं।
१३. हाथी वन्य फलों को, बासों के डण्डों को, लता, पत्रों को ईख के डण्डों को खाते हैं।
१४. हाथी महावत के आदेशों को मानते हैं।
१५. ब्रह्म देश एवं भारत में गज लकड़ी के भारों को ढोते हैं।
१६. यह हाथी मांगलिक वस्तुओं में गिना जाता है।

४४—मयूरः

१. मयूरः पक्षिषु मनोज्ञतमः अस्ति।
२. अयं नीलकण्ठः सान्द्रनीलपक्षति युगलः चेतांसि रमयति।
३. तस्य सुचञ्चु मुखम्, शिरसि मुकुटलक्षणेव शोभमाना शिखा च विराजते।
४ अस्य पुच्छम् अनेकं नील सौवर्णेश्चन्द्रकै चकाशमानं शोभते।
५. इदं बर्हमपि कथ्यते।
६. अयं भारतदेशः एव मयूरस्य जन्मभूमिः अस्ति।
७. अधुना तु अयं चीन, जापान, जर्मनी, अमेरिका आदि देशेषु अपि लभ्यते।
८. मयूरः फलानि, सस्यानि, विविधान् सरस्टियान्, कीटांश्च खादति।
९. अस्य पादौ स्थिरौ, सुदृढौ च भवतः सेन सवेनं धावितुं शक्नोति।
१०. अयं उड्डयितुम् अपि समर्थो भवति।
११. मयूरो नीडं न करोति।
१२. वृक्षेषु दिवा विरमति, रात्रौ शयन करोति।
१३. मयूराणां घनगर्जितं प्रियं भवति।
१४. घनगर्जनं श्रुत्वैव ऐते प्रसन्नाः सन्त तारस्वरेण केकां कर्तुम् आरभन्ते च प्रसार्य बर्हाणि नृत्यन्ति।
१५. अयं शंकरस्य पुत्रस्य षडानस्य वाहनम् अस्ति।

हिन्दी अनुवाद

१. मोर पक्षियों में सब से सुन्दर होता हैं।
२. यह नीलकण्ठ सुन्दर नीली पंखों वाला हृदयों को सुन्दर लगता है।

३. उसका सुन्दर चोंच वाला मुख, शिर पर मुकुट के समान शोभित होता है।
४. इसकी पूँछ अनेक नीले और सुनहरी रंग की चन्द्रिकाओं से चमकती हुई सुशोभित होती है।
५. इसे 'बर्ह' भी कहते हैं।
६. यह भारत देश ही मोर की जन्मभूमि है।
७ इस समय यह चीन, जापान, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में प्राया होता है।
८. मोर फलों को, अनाज को, अनेक प्रकार के सर्पों को और कीड़ों को खाता है।
९. इसके पैर स्थिर और दृढ़ होते हैं जिनसे यह तेज दौड़ सकता है।
१०. यह उड़ने में भी समर्थ होता है।
११. मोर घोंसला नहीं बनाता।
१२. वृक्षों पर दिन में रुकता है रात को सोता है।
१३. मोरों को बादलों का गर्जन प्रिय लगता है।
१४. बादलों की गर्जना को सुनकर ये प्रसन्न हो जाते हैं और जोर से ध्वनि करना प्रारम्भ कर देते हैं और पंखों को फैलाकर नाचना प्रारम्भ कर देते हैं।
१५. यह शंकर जी के पुत्र षडानन का वाहन है।

४५—उद्यान

१. प्रकृति इह पदे पदे सौन्दर्यम् कौतूहलानि च समुपस्थापयति।
२. प्रकृतेः स्वरूपं उद्याने साक्षात् दृष्टिगोचरं भवति।
३. उद्यानानाम् अपि अनेकाः प्रकाराः भवन्ति।
४. केचित् पुष्पोद्यानानि भवन्ति पत्र नानाविधानि पुष्पाणि एव जायन्ते।
५. केचित् फलोपवनानि भवन्ति पत्र बहुविधानि फलानि उद्भवन्ति।
६. केचित् चायवनानि भवन्ति पत्र अनेक विधाः चापक्षुपाः प्राप्पन्ते।
७. गृहपरिसरेषु समारोपितानि गृहोपवनानि कथ्यन्ते।

८. राजभ्यः भ्रमणार्थम्, मनोविनोदार्थम् च प्रमुखानि भवन्त ।
९. महानगरेषु राजकीयमहोपवनानि भवन्ति पत्र नानाविधानि रम्याणि वृक्ष वल्लरी पुष्पक्षुय कूपबापीतडागाः आदि भवन्ति ।
१०. तानि प्रारामः इति कथ्यते ।
११. उद्यानेषु विविधास्तरूणां जातयः नानाप्रकारा विचित्र लताः अनेक जातीनि चित्र विचित्राणि पुष्पाणि, विविधानि फलानि भवन्ति ।
१२. उद्यानेषु परिभ्रमणं विनोदजननं श्रमापह च भवति ।
१३. उद्यानानां मन्दः सुगन्धः शीतलश्च पवनः जनानाम चेतांसि आनन्दयति ।
१४. भूतले उद्याने हि रमणीय तमं स्थानं अस्ति ।
१५. अस्मिन् स्थले आगत्य नरः दुःखानि विस्मरति ।

हिन्दी अनुवाद

१. प्रकृति यहां पग पग पर सौन्दर्य एवं कौतूहल स्थापित करती है ।
२. प्रकृति का स्वरूप उद्यान में साक्षात् दिखलाई देता है ।
३. उद्यानों के अनेक प्रकार होते हैं ।
४. कुछ पुष्पोद्यान होते जहाँ अनेक प्रकार के पुष्प पैदा होते हैं ।
५. कुछ फलों के बाग होते हैं जहाँ अनेक प्रकार के फल होते हैं ।
६. कुछ चाय के बाग होते हैं जहाँ अनेक प्रकार के चाय के पौधे मिलते हैं ।
७. घर के आंगन में लगाये गये गृहोपवन कहलाते हैं ।
८. राजाओं को घूमने के लिये और मनोविनोद के लिए प्रमोदवन होते हैं ।
९. बड़े-बड़े नगरों में राजकीय महोपवन होते हैं जहाँ अनेक प्रकार के सुन्दर वृक्ष, बेलें, पुष्पों के पौधे, कूए, बावड़ी और तालाब होते हैं ।
१०. इन्हें आराम कहा जाता है ।
११. बगीचों में अनेक प्रकार के पेड़े, नाना प्रकार की विचित्र लताएं, अनेक जाति के चित्र विचित्र पुष्प और अनेक फल होते हैं ।
१२. उद्यानों में घूमना विनोदकारी और श्रम को दूर करने वाला होता है ।
१३. बागों की शीतल मन्द सुगन्ध पवन मनुष्यों के हृदयों को आनन्दित करती है ।

१४, पृथ्वी पर उद्यान रमणीय स्थल हैं ।
१५, यहाँ आकर मनुष्य दुःखों को भूल जाता हैं ।

४६—व्यायामः

१. स्वस्थे शरीरे एव स्वस्थ-मस्तिष्कः वसति ।
२. शरीरस्य स्वास्थ्यः नियमिते व्यायामे एव अस्तिः अस्ति ।
३. व्यायामेन मांसपेशयः पुष्टा भवन्ति ।
४. रुधिरस्य प्रवाहः तीव्रं भवति तस्य शुद्धिरपि भवति ।
५. व्यायामे यत् श्रमं भवति तेन पाचन यन्त्राणि अधिकानि सचेष्टानि भवन्ति ।
६. व्यायामशीलस्य पुरुषस्य सहनशक्तयां अपि वृद्धिः भवति ।
७. ये छात्राः व्यायामं न कुर्वन्ति तेषाम् शरीराणि सदैव रोगाक्रान्ताः दृश्यन्ते ।
८. व्यायामः अनेक प्रकारस्य भवति ।
९. भ्रमण, धावनं, अंगानाम् संचालनं आदयः सुपरिचितानि व्यायाम-स्वरूपाणि सन्ति ।
१०. क्रीडनमपि व्यायामस्य एक सुगम रुपं अस्ति ।
११. विद्यार्थिनां कृते तु व्यायामः अत्यन्तं आवश्यक अस्ति ।
१२. व्यायामेन सर्वाङ्गीण विकासो भवति ।
१३. शरीरेव धर्मस्यापि साधनं अस्ति अतः धार्मिकाणां कृतेऽपि व्यायामः लाभदायकः अस्ति ।
१४. ये जनाः नियमित व्यायाम कर्त्तारः तेषां वृद्धावस्था सुखपूर्णा भवति ।
१५. अतः वयं अवश्यमेव व्यायाम कुर्याम ।

———